UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182488
UNIVERSAL
LIBRARY

विप्लव प्रकाशन संख्या —१७

तुर्कमानिस्तान में जीवन-मरण के लोमहर्ष की कहानी

पक्का कदम

अनुवादक

यशपाल

मूल लेखक

बर्दी केर्बाबायेव

द्वितीय सस्करण

प्रकाशक

बिप्लव कार्यालय, लखनऊ

जुलाई १९५६]

मूल्य ५)

प्रकाशक :—

विप्लव कार्यालय

लखनऊ

Checked 1968

अनुवाद की प्रस्तुत लिपि के प्रकाशन का अधिकार अनुवादक द्वारा सुरक्षित है

Checked 1969

मुद्रक

साथी प्रेस

लखनऊ

समर्पण:—

मानवता की मुक्ति और उत्थान के कार्य में
सक्रिय भाग लेने वाले साथियों को
सादर—

यशपाल

जिला जेल,
लखनऊ
६ मार्च १९४९

परिचय

गत फरवरी मास में हमारी 'राष्ट्रीय' सरकार नें कोई भी कारण या अपराध बताये बिना मुझे राजनैतिक बन्दी बनाकर जेल में डाल दिया। अब यही अनुमान करना पड़ा कि हमारी 'राष्ट्रीय' सरकार की दृष्टि में मेरे विचार सार्वजनिक कार्य और प्रयत्न राष्ट्र हित के विरुद्ध है।

इस प्रसंग में यह कहना धृष्टता न होगी कि इस देश की स्वतंत्रता और राष्ट्रीय भावना के लिये विदेशी सरकार के हाथों जितना हम लोगों ने (मैंने और मेरे साथियों ने) पाया है*, उतना शायद उन लोगों में नहीं पाया होगा जिन्हें ब्रिटिश सरकार अपने भरोसे का समझ इस देश के राष्ट्रीय हित का उत्तरदायित्व सौंप गई।

एक समय मुझे जेल से मुक्त करने के प्रश्न पर अंग्रेज़ गवर्नर के विरोध करने के कारण यू० पी० की कांग्रेसी सरकार को बहुत परेशानी उठानी पड़ी थी। मेरी रिहाई का प्रश्न सिद्धान्त की रक्षा का प्रश्न बन गया था क्योंकि उस समय कांग्रेसी सरकार को विश्वास था कि अंग्रेज़ सरकार का कोपभाजन मुझे राष्ट्रीय भावना के कारण ही बनना पड़ा है। आज मेरे विचार, प्रयत्न और सार्वजनिक कार्य 'राष्ट्रीय' सरकार की दृष्टि में राष्ट्र के लिये अहितकार हो गये है।

मै इस देश के हज़ारों लोगों में से एक उदाहरण हूँ। मेरी और मेरे समान हजारों की यह स्थिति, राष्ट्र के हित मे पैदा हो गये अन्तर्विरोधों का एक उदाहरण है। यदि भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद आज जिन्दा होते, विश्वास से कह सकता हूँ, यही बात उन के साथ भी होती, वे भी किसी जेल में होते।

इस बार 'राष्ट्रीय' सरकार द्वारा जेल में बन्द कर दिए जाने पर Decisive Step पढते समय राष्ट्रीय हित के सम्बन्ध में पुस्तक के पात्रों के दृष्टिकोण में अन्तर और विरोध देख इच्छा हुई कि इस का अनुवाद अपनी भाषा में कर डालूं।

× × ×

---

* चौदह वर्ष का कारावास

पक्का कदम की कहानी अपना परिचय स्वयं देगी। संक्षेप में कहानी का परिचय यह है :—

ज़ार के शासन में तुर्कमानिस्तान पूर्णत: रूसी साम्राज्य के आधीन था। समाजवादी क्रान्ति से जार का तख्ता पलट कर ज्यों ही समाजवादी सोवियत ने शासन की शक्ति अपने हाथ में ली, सोवियत ने राष्ट्रीय समता के सिद्धान्त के अनुसार रूसी साम्राज्य के आधीन सभी गुलाम देशों को रूसी राष्ट्र के समान और स्वतत्र घोषित कर दिया। इन देशों को आधीनता के बंधन से मुक्त कर आत्मनिर्णय से सहयोग का अधिकार दे दिया गया।

अक्टूबर—१९१७ में ज़ार के शासन का अंत हो जाने पर तुर्कमानिस्तान मे विचित्र स्थिति पैदा हो गई। ज़ार के शासन से दबी और कुचली मज़दूर और किसान जनता ने मुक्ति की आशा का साँस लिया। यह जनता रूस की समाजवादी सोवियत व्यवस्था के अनुसार खेती की भूमि का राष्ट्रीयकरण और उद्योग-धन्धों और व्यापार पर मज़दूरों और मेहनत करने वाली सर्वसाधारण जनता का अधिकार चाहती थी। दूसरी ओर ज़ारशाही का अंग बन कर तुर्कमानी जनता के खून से समृद्ध होते आये तुर्कमानी सरदारों जागीरदारों और व्यापारियों के लिये ज़ारशाही का तख्ता-पलट और समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का प्रयत्न उन के अन्त की सूचना के समान हो गया। इस शोषक वर्ग के साथ ही मध्यम श्रेणी का वह भाग था जो देश को जारशाही के शोषण के बन्धनो में बाँधने वाली नौकरशाही का अंग बन कर ज़ारशाही की तनखाहों पर पल रहा था और इस अधिकार की धांधली से जनता को लूटकर अपना स्वार्थ पूरा करता आया था।

जारशाही के पतन से पैदा हो गई अव्यवस्था मे तुर्कमानिस्तान के सरदारो और खानों ने स्वतंत्र राजा बन जाने के स्वप्न देखने आरम्भ किये। उन्होंने तुर्कमानिस्तान की मज़दूर-किसान जनता द्वारा कायम किये सोवियत शासन (पंचायती राज) के विरुद्ध हथियार उठा लिये। इस्लाम और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के नाम पर जनता को बहका कर सोवियत शासन के विरुद्ध मोर्चे कायम किये गए। इन सोवियत विरोधी तुर्कमानी सरदारों और खानों की सहायता के लिए सोवियत शासन के विरुद्ध लड़ने वाले ज़ारशाही के बड़े-बडे जनरल तुर्कमानिस्तान में आ पहुंचे। क्रान्तिकारी लाल सेना ने इन ज़ारशाही जनरलों को हराकर रूस से भगा दिया था। विदेशी पूँजीपति राष्ट्र इन जनरलों की सहायता के लिये प्रस्तुत थे सबसे बड़ी सोवियत विरोधी शक्ति थी ब्रिटिश साम्राज्यशाही

जो संसार में समाजवाद के फैलने की आशंका को निर्मूल कर देने के लिए स्वय रूस में ही उसे कुचल देना चाहती थी। ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने अरबों रुपया असंख्य शस्त्र और हिन्दुस्तान से काफ़ी सेना भी सोवियत विरोधी मोर्चे पर तुर्कमानी खानों, सरदारों और जारशाही के जनरलों की सहायता के लिये तुर्कमानिस्तान में पहुंचा दी थी। परस्पर एक दूसरे को छलकर भी अपने स्वार्थ साधने में यह तीनों शक्तियां समाजवादी सोवियत और लाल सेना के विरुद्ध सयुक्त मोर्चा बनाये थीं।

तुर्कमानिस्तान समाजवादी लाल सेनाओं और साम्राज्यवादी सफ़ेद सेनाओं के संघर्ष का अखाड़ा बन गया। इस अवस्था मे तुर्कमानिस्तान की दिहाती और नागरिक जनता के किसी भी व्यक्ति के लिये निष्पक्ष और निरपेक्ष बने रहना सम्भव न था।

केर्बाबायेव ने उपरोक्त संघर्ष मे भाग लिया था। उस ने इसी वातावरण को लेकर तुर्कमानी भाषा में एक युवक अरतैक के इस सघर्ष के दुविधा-पूर्ण वातावरण में एक पक्का कदम उठाने की कहानी लिखी है। अरतैक आरम्भ में जारशाही के शोषण और दमन के विरोध में राष्ट्रीय भावना से विद्रोही अज़ीज़खां के साथ जान की बाज़ी लगाने मैदान में उतरा था। कुछ समय वह राष्ट्रीयता का दम भरने वाली, सोवियत विरोधी सफ़ेद सेना का अफसर भी रहा और फिर सोवियत के पक्ष हो अज़ीज़खां और उस की सरक्षक ब्रिटिश सेनाओं से लोहा लेता हुआ जंग के मैदान में आहत हुआ।

पक्का कदम का नायक अरतैक तुर्कमानिस्तान के कृषि प्रधान समाज का प्रतिनिधि व्यक्ति है। अरतैक को किसी भी दृष्टि से विशेष परिस्थितियो या विशेष घटना की उपज नहीं कहा जा सकता। अपने समाज के किसी भी साधारण व्यक्ति की भांति वह जीवित रहना चाहता है और जीवित रहने का प्रयत्न करता है? उस से भूल भी होती है और वह भूल को पहचान कर सही राह को अपनाने का यत्न करता है। उस का लक्ष बहुत सीधा है:— जीवित रहने के अवसर की इच्छा और जीवित रह सकने के लिये सामूहिक रूप से प्रयत्न। अरतैक की कहानी ऐसे समाज के जीवन संघर्ष की कहानी है जिस समाज के सामने जीवन और मृत्यु का प्रश्न था। सामन्तवादी और पूंजीवादी बंधनों में बांध कर रखने वाली साम्प्रदायिकता से रंगी राष्ट्रीयता की भ्रांति में साम्राज्यशाही की गुलामी के जुये में गला फँसा देने का या समाजवाद द्वारा स्वतंत्र मनुष्य बनने का।

स्वाभावत: ही अरतैक के जीवन की कहानी जीवन–मरण के लोम हर्ष संघर्ष की कहानी है ।

× × ×

साहित्य का मार्ग अपनाने के समय से मैं मौलिक ही लिखता आया हूँ । मेरा विचार है कि अन्य समाजों की अनुभूतियों और परिस्थितियों को अपनी भाषा मे प्रतिबिम्बित करने की अपेक्षा स्वयं हमारे अपने समाज में ही देखने और कहने के लिये पर्याप्त सामग्री है परन्तु दूसरे समाज और देशों के अपने देश जैसी ही परिस्थितियाँ और समस्यायें दिखाई देने पर तुलनात्मक दृष्टि से उन की ओर देख लेना भी उपयोगी हो सकता है इसीलिये मैंने पक्का कदम के अनुवाद में श्रम किया ।

११ नम्बर बैरक,
जिला जेल, लखनऊ
६—मार्च १९४९

यशपाल

१

तुर्कमानिया का देश अब समाजवादी रूसी सोवियत संघ का भाग है। इस समय तुर्कमानिया नहरों की सिंचाई से खूब सर-सब्ज़ बन गया है। वहां बहुत बड़े पैमाने पर सांझी खेती होती है। बड़ी बड़ी मिलें मजदूरों की अपनी सम्पत्ति है इन में बहुत अधिक पैदावार हो रही है। तुर्कमानिया का प्रजातंत्र राज्य पूर्ण स्वतन्त्र है, चाहे रूसी समाजवादी सोवियत संघ में रहे या उस से अपना सम्बन्ध तोड़ ले।

चालीस-पचास वर्ष पूर्व तुर्कमानिया का देश प्रायः मरूभूमि था। लोग डेराबासी ढंग से रहते थे। भेड़, बकड़ियां और ऊँट उन की सम्पत्ति थे। खेती थोड़ी बहुत जहां तहां होती थी। रूस के जार न तुर्कमानिया को अपने साम्राज्य में जोड़ लिया था। स्थानीय पैदावार का कच्चा माल ले जाने के लिए एकाध रेल लाइन भी बना दी गई थी। नहरे बहुत कम थीं तुर्कमानी जनता जीवन का डेराबासी ढंग छोड़ खेती करने और स्थायी बस्तियां बना कर रहने लगी थी परन्तु पुराने रिवाज अभी छूटे न थे। लोग प्रायः ही छोलदारियों में रहते थे। छोलदारियों के ही गांव बस जाते थे! उस समय इस देश के रिवाज और पोशाक प्रायः ईरान और अफ़गानिस्तान से मिलते-जुलते थे।

ज़ार के शासन के समय तुर्कमानिया में उद्योग-धंधे और कला-कौशल की उन्नति नहीं की गई। रूस के साम्राज्यवादी शासक तुर्कमानिया को अपने लिये कच्चे माल की मंडी बनाये रखना चाहते थे। तुर्कमानी लोग दुःखी और असंतुष्ट थे। १९१६ में तुर्कमानिया की जनता का असंतोष देख एक तुर्कमानी सरदार अज़ीज़खां ने ज़ार के विरुद्ध बग़ावत कर अपना स्वतंत्र शासन जमाना चाहा था परन्तु उस की बग़ावत असफल रही।

सन् १६१७ के साल तुर्कमानिया में भयंकर सूखा पड़ गया। जाड़ों भर आकाश से जल की एक बूंद न गिरी। बसंत आया तो धरती से घास का एक कल्ला न फूट सका। नहरें, नाले, सोते सब सूख गए।

गरमी के दिन आए। झुलसी हुई धरती पर तपी धूल भरी आंधियाँ चलने लगीं। सूखे और जाड़े से पशुओं के शरीर ठठरी भर रह गए थे। सिर लटकाए, घास के लिए तरसी आंखे भूमि पर जमाए पशु भटकते फिरते परन्तु घास कहां थी ? बसन्त जाते-जाते पशुओं में बीमारी फैल गई।

किसानों ने समय पर वर्षा की आशा से खेत जोत कर बीज डाल दिए थे। जुते हुए खेत धूल से भर गए और बीज के लिए डाला गया अन्न धूल में मिल गया। किसान अपने रहे सहे पशुओं को अपनी आंखों के सामने सूख कर मरते देख रहे थे। उन के कलेजे मूंह को आकर रह जाते परन्तु बेबस थे। पशुओं को क्या देते ? बच्चो के लिए, अपने लिए ही कुछ न था।

'कोश' गांव के एक गलियारे में बहुत से दुर्बल, निढाल किसान दीवारों की छाया में धरती पर आ बैठे थे। चार आदमी धरती पर लकीरें बना 'बत्तीसी' खेल रहे थे। कुछ लोग नित्य नए आते दुखों की बातें कह सुन रहे थे। कुछ चुपचाप उदास बैठे थे। कई रूस के सम्राट ज़ार के हुक्म से रूसी सेना में मज़दूरी के लिए जबरन भरती कर लाम पर भेज दिए गए अपने सम्बन्धियों की चर्चा कर रहे थे। हवा के झोंके इन लोगों पर तपी धूल फेंक जाते। इन लोगों के सिर पर आकाश मे धूल का बादल घिरा हुआ था।

एक किसान अपनी धूल भरी सफेद दाढ़ी मुट्ठी में थाम, सूजी हुई नाक फुला, भूख से रूखे निर्बल स्वर में बोला—"ऐसे दिन तो भाई कभी देखे सुने न थे, अल्ला खैर करे" !

दूसरे बूढ़े किसान ने अपनी झुकी हुई पलकें जवार के खेतों की ओर उठाईं। खेतों में धूल का बवंडर उठ रहा था। किसान के कलेजे से एक आह उठ आई। उधर से आंखें फेर वह बोला—"भैया, अपनी उम्र में काल देखा है और जाड़ा भी देखा है, पर ऐसे दिन नहीं देखे थे ! पूरा बरस बीत गया और एक बूंद पानी नहीं। जाने क्या होने को है ? मौलवी लोग कहते हैं—कयामत से पहले ऐसा सूखा पड़ेगा कि धरती पर कहीं हरियाली नहीं रह जायगी। अल्ला खैर करे !" किसान ने अपनी बात से डर कर अपनी दाढ़ी थाम ली।

समीप बैठे लोगों का ध्यान इन दोनों की बातचीत की ओर न था परन्तु नहर का मुंशी अभी दूर ही था कि सब का ध्यान उस ओर खिंच गया।

मुंशी पोखीवाला अपनी बढ़ी हुई तोंद का बोझ सम्भाले धीमे-धीमे इन लोगों की ओर चला आ रहा था। समीप आ कर पोखीवाला ने भीड़ की ओर देख पुकारा —"अरे सुना है तुम ने ? लोग क्या कह रहे हैं ?·······रूस के ज़ार की गद्दी छिन गई !"

मुंशी की बात से लोग भौंचक रह गये। बत्तीसी खेलने वाले हाथ के गीटे लकीरों पर रखना भल गये। सूजी हुई नाक वाले किसान ने विस्मय से अपनी दाढी खींच ली और उस का मुह खुला रह गया। सब लोग पोखीवाला की ओर मौन देखते रह गये।

पोखीवाला अफसरी ढङ्ग में बोला—"लोग कह रहे हैं कि रूस में 'रेवलूशा' हो गया है।"

किसान लोग समझ नही पाये कि 'रेवलूशा' क्या होता है ? अभी कोई रेवलूशा का मतलब पूछ भी नही पाया था कि पोखीवाला स्वयं ही बोल उठा —"किसी को क्या कहे; सभी जानते है; दुनिया में कैसे-कैसे पापी पड़े है ? लोगों के दिमाग फिर गये हैं। चाहते है दुनिया भर हड़प जायं !·······ज़ार के राज जैसा न्याय पहले कभी देखा था ? तुर्कमान लोग कभी चैन से नही रहे। एक दूसरे का सिर काटते रहे परन्तु ज़ार के राज में यहा भी कैसा अमन रहा ? ज़ार का राज गया तो देखना क्या होता है ? पिछले साल ही ज़ार की सरकार के खिलाफ बगावत हुई थी तो क्या मिला ? अजीजखां और उस के दोस्त अरतैक के राज में क्या मिला ? मिट्टी ही खराब हुई ? राजा बिन प्रजा ऐसे है जैसे बिन गड़रिये भेड़ो का गोल ! बाघ, भेड़िये का दांव लगे तो मार खायं, चोर उचक्कों का मौका बने तो उठा ले जायं।"

दूसरा बूढ़ा किसान माथे पर हाथ रख कर बोला—"भैया, मैं तो कह ही रहा था कि बड़े बुरे दिन आ रहे है·······।"

सूजी हुई नाक वाले बूढ़े किसान ने उस की बात काट दी—"अरे तो हो क्या गया ? कहते है न कि घर की बुढ़िया मर गई; तो क्या बिगड़ गया ? दही की हांडी लुढ़क गई ; तो क्या हो गया ? अरे ज़ार मर गया, तो क्या हो गया ? गद्दी पलट ही गई तो अपने को क्या; क्या हो गया ? अपने देखते-देखते ही ज़ार का राज आया और इतने ही दिन में क्या नहीं देख लिया हमने ?" बूढ़ा किसान मुशी को कनखियों से देखता सुनता गया, "दो दो कौड़ी के आदमी तुर्रमखां बन बैठे !·······कैसे ? ज़ार के ज़ोर पर ही तो ? भले आदमियों को डंडे के जोर हांकते रहे इस बुढ़ापे में"—उस ने अपनी दाढ़ी

दिखा कर कहा—"घर में एक ऊंट रह गया था, सो भी छीन लिया"—दूसरे बूढे किसान का कंधा ठेल कर वह बोला—"और तुम्हारा एक ही तो जवान लड़का था, बुढ़ापे की लाठी। जबरन भर्ती मे पकड़ ले गये। ज़ार को गरीबों की आह कैसे न लगती ? जार का जुल्म दूर हो तो अल्ला चाहे तो मेंह भी बरस जाय ! पिछड़ तो बहुत गया है। पर क्या ? बाल-बच्चों के मुह के लिये चार दाने ही सही ! ढोर डंगर के लिये भूसा चार ही सही !"

मुंशी ने कई बार बात काटनी चाही परन्तु किसान ऊंचे स्वर में बोलता ही जा रहा था। उस की बात समाप्त होने पर मुशी धमका कर बोला... "क्यों बे, सिर पर मौत नाच रही है ? होश मे आओ क्या बक रहे हो ? अगर खबर गलत हुई तो ?"

बूढ़ा किसान और भी जोर से बोला—"तो हम देहाती, गरीब लोग क्या जाने ?...... तुम्हीं तो कह रहे थे ?"

मुशी समझाने लगा—"अरे भाई अगर ज़ार मर ही गया, रेवलूशा भी हो गया तो क्या ? ज़ार के लड़के पोते होंगे। उन में से कोई न कोई गद्दी पर बैठेगा ही। यह बाते उस के कान तक पहुचेगी तो क्या होगा ?.......सोच समझ कर बात करनी चाहिये ? अल्लाह जार का इकबाल कायम रहे !"

मुंशी अपनी बात पूरी नहीं कर पाया था कि बस्ती की 'रेडियो' उम्सागुल अपनी सिलवार घुटनों तक उठाये, अपने मालिक, अलनजर बे के घर की ओर भागती हुई बिना रुके समीप से पुकारती गई—"अरे भले लोगो, सुना है, बादशाह ज़ार मर गया !"

उम्सागुल की बात सुन सभी लोग बोलने लगे—

"वल्लाह......क्या सच बात है ?...... ज़ार मर गया ?"

"सच नहीं तो लोग कहते क्यों ? कोई बात होगी तभी तो कहते हैं।"

"अरे भाई, यों ही न उड़ गई हो ?"

"मुल्क में बादशाह नही रहेगा तो राज किस का होगा ?"

"राजा नहीं रहेगा तो फिर लड़ाई कैसे होगी ?"

"लड़ाई चलेगी कैसे ? जब राजा सिपाही को लड़ने के लिये हुक्म नही देगा तो कोई लड़ेगा क्यों ? सिपाही को क्या ज़रूरत है लड़ने मरने की ?"

"मुशी बीच में बोल उठा—"बस यही तो रेवलूशा है।"

ग़रीब किसान चरकेज़ चुप बैठा सब की बाते सुनता हुआ समझ पाने

का यत्न कर रहा था। मुंशी की बात सुन वह पूछ बैठा—"मुंशी यह रेवलूशा क्या होता है ?"

मुशी ने सिर खुजाते हुये उत्तर दिया—"भैया मैं क्या जानूं ? यह तो धरती फोड़कर नया कुक्करमुत्ता निकला है। सौदागर कोतुर का लड़का अतेज कहता है, रेवलूशा इन्कलाब को कहते हैं।"

चरकेज़ बौखला कर बोला—"वाह भाई वाह, रेवलूशा इन्कलाब को कहते हैं ! इन्कलाब क्या होता है ? यह तो अंधे की आंख से देखकर पह-चानने की सी बात है। और क्या जाने भाई, रेवलूशा और इन्कलाब दोनों ही ज़ार के लड़के और पोते का ही नाम हो !"

एक दूसरा किसान हाथ फैलाकर बोल उठा—"हाँ भाई, ठीक तो है। पहले भी एक बार सुना था कि फिरंगिस्तान में रेवलूशा और इन्कलाब हुआ है। सुनते है, रेवलूशा और इन्कलाब का चुनाव होता है जैसे अपने यहाँ मुशी और पंच का चुनाव होता है।"

एक और किसान ने बेपरवाही से कहा—"तो क्या है चुनाव होगा तो 'बे' और मालिक लोगों की ही बात चलेगी ? जैसे अब 'बे' और मालिक लोग अपने मन से मुंशी चुन लेते हैं।"

"तुम भी क्या कह रहे हो ?"—एक और किसान पुकार उठा, 'बे' और मालिक लोग न रहें तो दुनिया कैसे चलेगी ?"

"तो फिर क्या है ?"—ऊँचे स्वर मे कोई बोल उठा, "इन्कलाब हुआ तो अपने को क्या ? ग़रीब आदमी की तो जैसे पहले मौत थी वैसी अब !"

"तुम्हारा दिमाग फिर गया है क्या ?"—मुशी पोखीवाला ऊँचे स्वर में बोला "सियार की मौत आती है तो गांव के आस पास आ हूकने लगता है, ग़रीब के बुरे दिन आते हैं तो उस की ज़बान बहुत चलने लगती है।"

सिर हिलाकर चरकेज़ ने कहा—"ठीक है भाई मुशी तुम ठीक कहते हो ! तुम आलिम आदमी हो !"—दूसरे लोग चरकेज़ की बात पर हँस दिये। चरकेज़ अपनी तीखी जबान के लिये माना हुआ था।

क्रोध से मुशी के नथुने और होंठ थिरक उठे। चेहरे पर से पसीना पोंछ उस ने नसीहत की—"तुम लोगों में अब बुरे का कुछ ख्याल ही नहीं रह गया है। कूढ़ मगज़ आदमी से सिर मारने से भला है कि आदमी दीवार से सिर पटक ले !"

उत्तर की प्रतीक्षा न कर मुंशी लौट पड़ा और अलनजर बे के खेमे की ओर चल दिया। परन्तु चरकेज़ पुकार उठा—"ठीक है भैया मुशी, ठीक राह

पर जा रहे हो। वे लोग ही तुम्हारी बात ठीक से समझ पायेंगे।" दूसरे लोग कहकहा लगा उठे। मुशी तेजी से चलता हुआ घूम घूम कर ऐसे पीछे देखता जा रहा था कि पीछे से कुत्ते के आकर टांग पकड़ लेने की आशंका हो ?

मुशी के चले जाने पर किसान बहस करने लगे कि ज़ार सचमुच ही मर गया है या नहीं; उस की गद्दी छिन गई है या नहीं, और यदि ऐसा हो भी गया हो इस से देहात के लोगों का क्या बन बिगड़ सकता है ? चरकेज़ अपनी बात सुनने के लिए फिर हाथ उठा कर बोल उठा—"भाई हम पूछते हैं ज़ार के राज में भला किस का हुआ ?·······किसान का भला हुआ ?·········मजदूरों का भला हुआ ?·········सिपाहियों का भला हुआ ? तुम्हारा भला हुआ ? किस का भला हुआ ?"

"अरे हमारा क्या भला हुआ ?"- एक के बाद दूसरा सभी लोग बोलने लगे।

"तो फिर"—दोनों हाथ उठा चरकेज़ बोला —"ज़ार मर गया तो किस का नुकसान हुआ ? अपने को क्या ? जब सभी लोग ज़ार से दुखी हैं तो उस की गद्दी पलटेगी नही तो क्या ? नुकसान हुआ तो बाबाखां और होजा मुराद का हुआ ? अब उन की हुकूमत नहीं चलेगी कि मन चाहा जिसे चार जूते लगा दिये ! अपने लोग जबरदस्ती भर्ती में पकड़े गये हैं, शायद वे बेचारे लौट आएं !"

"अल्ला करे····तुम्हारे मुह में घी शक्कर पड़े।"

"अल्ला चाहे अरतैक भी लौट आये !"

"दूसरे लोग लौटेंगे तो अरतैक भी लौटेगा !"

"इशा अल्ला !"

आकाश में अब भी गर्द का बादल छाया हुआ था और हवा के झोंके किसानों के चेहरों पर धूल डाल रहे थे परन्तु अब उन की गर्दनें ऊंची हो गईं और आंखों में आशा की चमक झलक आई।

उन दिनों तुर्कमानिया के गवर्नर जनरल कुरोपात्किन थे। गवर्नर जनरल ने प्रान्तीय गवर्नर कोल्माकोव और कमिश्नर कर्नल बेलानोविच को आदेश दिया था कि ज़ार के गद्दी से उतार दिए जाने और रूस में क्रांति होने का समाचार आम जनता में फैलने न पाए। उन्हें आशा थी कि ज़ार के समर्थक और उस की सेनायें क्रान्तिकारियों को हरा कर फिर से ज़ार का राजतन्त्र स्थापित कर लेंगे। परन्तु तार घर में काम करने वाले लोगों से और शहरों से आने वाले पत्रों से देहात में समाचार फैल ही गए। बात जिलों से जिलों

मे, गावों से गावों में और छोटे छोटे खेमों तक पहुंच गई। ऐना के घर भी खबर पहुची।

उस समय ऐना अपने तम्बू में बैठी कसीदा काढ़ रही थी। तम्बू की छत में धुआं निकलने के लिये बनाए गये झरोखे से आती सूरज की किरणों में उस का रेशमी चोला और उस के हाथ में थमा कसीदा भी चमक रहा था। ऐना ने खबर सुनी और सोच रही थी, बादशाहों की गद्दियां कहीं ऐसे पलट सकती है और फिर रूस के बादशाह ज़ार की गद्दी ? सल्तनतें ऐसे पलटने लगें तो धरती ही पलट जाए। हो सकता है ज़ार लड़ाई मे दूसरे बादशाह से हार कर कैद हो गया हो ! पर मकान गिरता है तो ईंटे भी बिखर जाती हैं। ज़ार के साथ ही उस के हाकिम और पंच भी तो गिरेंगे और वह शैतान अलनज़र बे भी मरेगा। इन सब ज़ालिमों पर अल्लाह का कहर गिरे ! ज़ार नहीं रहेगा तो उस के हाकिम, अफसर उस की पल्टने भाग जायंगी। जेल खाने भी तो टूटेंगे ! इशाअल्ला अरतैक जान जेल से छूट जाये...... अरतैक मेरी आंखों का नूर ! एक आह खींच कर उस ने सोचा—"इन मीठे सुपनों में क्या रखा है ? छः महीने हो गये उस की कोई खबर भी तो नही मिली। ऐसी मेरी किस्मत कहां कि वह आ जाये। लोग मुझे तसल्ली देने के लिये, बहलाने के लिये बनाते रहते है, अरतैक अश्काबाद के जेलखाने में मज़े में है परन्तु कोई उस से मिल नही सकता। दूसरे लोग मुझे जलाने के लिये कहने लगते हैं—अरतैक को लड़ाई में आगे के मोर्चे पर भेज दिया गया है। कोई कहते है—कि जालिमों ने उसे गोली मार दो है। या अल्ला ? इस छः नहीने मे क्या नहीं सुना ? क्या नही देखा ? क्या नही सहा ? इतना दुख तो किसी पहाड़ पर गिरा होता तो पहाड़ चकनाचूर हो जाता। इतना गम किसी दरिया पर पड़ा होता तो दरिया सूख जाता।"

ऐना हजारों में एक थी। उस का रूप रंग ऐसा था कि सारे चमन का जोबन समेट कर एक गुलाब खिल उठा हो। परन्तु इस दुख में उस का चेहरा उतर गया और उस की मनियारी, काली आंखों की चमक मद्धिम पड़ गई थी। वह गर्दन झुकाये रहती। पुकारे जाने पर आंखें उठाती भी तो पलकें झुकी रह जाती। उस का सुडौल शरीर मुरझा गया था, कंधे झुक गये थे और चलती तो पांव लड़खड़ा जाते। अरतैक की कैद की छः मास में उस पर बीस बरस का बुढ़ापा आ गया। ऐना की सौतेली मां मामा बत्तख की चाल झूलती हुई तम्बू मे आई। वह सदा से बेपरवाह थी। उस पर न तो ऐना के दुख के

पहाड़ का ही कुछ बोझ पड़ा और न 'तेजेन' में सूखा पड़ने का ही कुछ प्रभाव पड़ सका था। उस के भरे हुये चेहरे पर चिकने पसीने की चमक जैसी की तैसी बनी थी। न ठोढ़ी के नीचे पड़ी लटों मे और न उस की आंखों की चमक में ही अन्तर आया था। मामा ने सिर पर बंधे बड़े रूमाल के छोर से पसीना पोंछा और अपनी भारी-भारी निरपेक्ष पलकें उठा सौतेली लड़की की ओर देख पुकारा—"बिटिया, क्या हुआ है तुझे ? क्या उमर भर यों ही बिसूरती रहेगी ? भला अब क्यों रो रही है ? अब क्या ज़ार को रो रही है ?" ऐना बचपन से बहुत लजीली और भले स्वभाव की थी। परन्तु दुख के इस असह्य बोझ का प्रभाव जैसे उस के शरीर और रूप पर पड़ा वैसे ही उस के स्वभाव पर भी हुआ। पल-पल दुखों और कष्टों से विरोध करती रहने के कारण वह चिड़-चिड़ी और जिद्दी हो गई थी। सौतेली मां के उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण ऐना मामा से प्रायः ही चिढ़ी रहती। उस ने गर्दन झुकाये ही उतर गया दिया — "ज़ार क्या, मेरी बला से सारी दुनियां मर जाय, मुझे क्या ?"

"लाहौल बिलाकुव्वत। देखो तो इस चुड़ैल को ?" मामा चीख उठी, "क्या जमाना आ गया है बाबा ? ऐसी डाइनें दुनियां में पैदा हो गई है तभी तो दुनिया यों तबाह हो रही है।"

ऐना की काली भवे सिकुड़ गईं। गर्दन नीचे डाले ही उस ने तिर्छी निगाह से मामा की ओर देखा और आंखें झुका उत्तर दिया—"बात-बात में मेरे कलेजे में कटारी मारती है ? आज बड़ी भली बन रही हो ! किस ने मेरी जिन्दगी मुसीबत में फंसाई है ? मुझे बरबाद किया ?"

मामा की समझ भी उस के शरीर के अनुकूल ही मोटी थी। ताने और बोली ठोली का असर उस पर कम ही होता था परन्तु इस समय ऐना की बात सुन उस ने दोनो हाथों से अपना चेहरा ढांप लिया और अल्लाह को याद करने लगी—

"अल्लाह पनाह दे !"

२

अलनजर बे अपनी सजी-धजी छोलदारी में चाय पीने बैठा था। उम्सागुल उतावली से तम्बू में आ घुसी। ज़ार के गद्दी से उतार दिये जाने की बात वह एक ही सास में ऊंचे स्वर में दोहराये जा रही थी! अलनज़र बे ने सुना। उसे काठ मार गया। न तो वह आंखे उठा बाहर ही देख सका और न होठ खोल पुकार ही सका। वह स्वप्न में डर गये आदमी की तरह निश्चेष्ट रह गया और फिर होश सम्भाल, बोझ से दम तोड़ते जानवर की तरह हांफता हुआ उम्सागुल की ओर घूर कर वह चिल्ला उठा—"बदजात बांदी, क्या बक रही है? होश में आ! समझती है तू क्या बक रही है? अभी फांसी पर लटकवा दूगा।"

बे की धमकी से उम्सागुल सुन्न रह गई। चेहरे का रंग उड़ गया। साहस कर वह थुथलाने लगी—"मा……मालिक, ……मैं कह रही थी कि बा… बादशाह की मौ……मौत से मुझे बहुत रोना आया…।"

"बदजात कहीं की, दिन भर अवारागर्दी करती है, दिन भर कुफ़ बकती है, दिन भर खुराफात का तूफान तोलती है। क्या कौए भरे हे तेरे सिर मे? तू ही गांव भर मे बकती फिरी थी कि अरतैक मेरे मुह पर थूक गया। हरामजादी, मेरा नमक खा कर मुझे ही गाली देती है। तुझे आज ही जिन्दा गड़वाता।"

उम्सागुल का चेहरा धूल की तरह बेरंग हो गया। कुछ कहने के लिये उस के होंठ हिले परन्तु अलनज़र ने उसे धमका दिया—"चुप रह बदज़ात!"

बे क्रोध से कांप रहा था। उस का मन चाय की ओर से फिर गया। चाय का प्याला उठा वह चायदानी में लौटने लगा।

हाथ कांप रहे थे इसलिये चाय फैल गई। खिन्न हो बे ने होंठ काट लिये और चाय के सुन्दर प्याले को दरवाजे से बाहर फेंक दिया। प्याला पक्की धरती पर गिर कर चूर-चूर हो गया। बे को और भी क्रोध आ गया। उस ने लात मार चाय दानी को भी परे फेंक दिया। चायदानी एक ओर और ढक्कन दूसरी ओर लुढक गये। कालीन भीग कर लम्बा दाग सा बन गया।

कोने में खडी उम्सागुल थर-थर कांप रही थी। लड़खड़ा जाने के कारण वह धरती पर बैठ गई।

अलनजार गम्भीर और कांइया आदमी था। अपनी स्थिति और सम्मान का ख्याल कर वह बातचीत धीरज और ठहराव से करता था परन्तु उस समय वह क्रोध मे बहक गया। वह कई दिन से मन ही मन उम्सा से कुढ रहा था और उस पर बरस पड़ने का अवसर ताक रहा था। इस समय यह भयंकर समाचार भी उसी के मुह से सुन बे आपे से बाहर हो गया। क्रोध का पहला उफान उतरते ही वह चिन्तित होने लगा......क्या यह खबर सच है? इतने में बे की चहेती बेगम शादाब आ कर प्याले के बिखरे हुये टुकडे चुन कर चायदानी को सम्भालने लगी। शादाब गर्दन झुकाये बोली—"सुनो न मालिक! सुन रहे हो?....तुम्ही मे कह रही हूं; हुआ .....! माफ कर डालो! मुआफी माग लेने से तो कत्ल का गुनाह भी बक्श दिया जाता है। यह तुम्हारी बांदी ही है। सुना होगा तो इस के अपने ही होश उड़ गये होंगे!"

बेगम की बात से बे के माथे के तेवर हल्के पड़ गये। उम्सा ने मालिक के चेहरे की ओर देखा और उस की आंखों से आंसू बह चले। जमीन पर माथा टिका वह गिड़गिड़ाने लगी—"या अल्लाह, अगर मैंने मालिक के लिए कभी सुपने में भी बुरा चेता हो तो मैं यहां ही गर्क हो जाऊ।"

"अच्छा बस, अब बहुत मत बनो!...... आंसू पोछो! नही तो अभी तेरी आंखों में मिर्चें झुकवाता हूं!" बे ने धमकाया, "यह खबर कहां सुनी तू ने?" उम्सा आंसू पोंछती हुई हिचकी ले कर गले में रूंधे आसू निगल रही थी कि तम्बू के दरवाजे में मुंशी पोखीवाला आ खड़ा हुआ और घबराहट में क्या कहर गिरा है, बादशाह ज़ार गद्दी से उतार दिया गया। मुल्क मे रेवलूशा हो गया! अरे.......उम्सा तू पहले ही आ पहुंची?.... "तूने तो बस्ती भर में ढिंडोरा पीट दिया होगा! कहर खुदा का......."

"हां मैंने जो सुना था, कह दिया"—हिचकी लेते हुए उम्सा बोली, "मालिक मुझ से नाराज हो गए......"

मुशी ने फिर बे को सम्बोधन किया—"मालिक, बात ठीक है। मै अभी शहर से ही आ रहा हू। घर जा कर चाय भी नही पी। तार घर में गवर्नर-जनरल का तार मिला है।

मुशी की बात से बे के मन मे सदेह के आधार पर रही सही आशा भी जाती रही परन्तु अब वह अपने आप को सम्भाल चुका था। मुशी को सम्बोधन कर वह बोला—"आओ बैठो। चाय पियो! इस के बारे में भी जरा सोच लें!"

मुशी की नजर भीगे हुए कालीन पर जा पड़ी। शादाब की ओर देख उस ने मुस्कराकर पूछा—"यह क्या? घर में इतना छोटा कौन बच्चा आ गया कि जगह बिगाड़ दी?"

"मुबारिक हो, बेगम।"

मुशी की बात से शादाब बेगम पल भर को झेंप गई परन्तु उस ने तुरंत बात सम्भाल ली - 'अरे मुशी, बच्चे तो बच्चे ही ठहरे आखिर! छोटी बिटिया जिद्द कर बाप के लिए चाय लायी थी। बेचारी ठोकर खा गई। चायदानी उस के हाथ से गिर गई।"

"या खुदा, बेचारी के हाथ-पांव पर छाला-वाला तो नहीं पड़ा बेगम?"

"शुक्र खुदा का, पोखीवाला! चायदानी दूर लुढक गई। बच्ची पर बूद भी न पड पाई।"

बेगम की चतुरता की प्रशंसा के लिए बे ने मुस्करा कर उस की ओर देख लिया।

पोर्खावाला अपने घुटने समेट कर कालीन पर बैठा ही था कि छोलदारी की दहलीज पर मुहम्मदवली खोजा दिखाई दिया। मुहम्मदवली खोजा धर्मात्मा और आलिम आदिम समझा जाता था। बस्ती में उस का बहुत आदर था। वह मौलवियो के ढंग का ऊचा पायजामा पहरे था। सफेद पायजामे के नीचे टखनों की लाल-लाल खाल चमक रही थी।

वली को देख बे ने आदर में दोनों हाथ फैला स्वागत किया—"आओ, आओ! मौलाना खोजा आओ! तशरीफ़ रखो"—बे ने आदर की जगह कालीन के सिरे पर खोजा को बैठने का संकेत किया।

उम्सा ने बे की खांसी सुन उस की ओर देखा और मालिक की आंख का इशारा पहचान तम्बू से बाहर हो गई।

मुशी पोर्खावाला ने तुरन्त ही खोजा को सम्बोधन किया—"मौलाना, ज़ार के तख्त से उतार दिए जाने की खबर सुनी है!"

मुहम्मदवली खोजा अपने घुटने समेट गम्भीरता से कालीन पर बैठ गया। अपनी दुशाखी दाढ़ी हाथ में ले कालीन पर नजर टिकाये उस ने उत्तर दिया "मुशी पोखी, खबर तो सुनी है लेकिन सोचा कि अलनज़र बे के यहां चलूं। सभी लोग राय लेने के लिये यहां आते हैं !....ताकि सही खबर मालूम हो सके।"

"मौलाना, तुम आलिम आदमी हो, शरियत जानते हो, तुम्हारी क्या राय है ?"—मुशी ने अपना प्रश्न दोहराया।

खोजा ने दाढ़ी हाथ में थामे, छोलदारी की छत की ओर आंखे उठा उत्तर दिया—"मुशी पोखी, इस के मुत्तलिक एक फ़ारसी शायर ने कहा है—"दक्खिन, पच्छिम से बादल चढ़ता दीखे तो समझो कि अब्र बरसेगा ! और अन्यायी राजा का जुल्म बढ़ता दीखे तो समझो कि अब गिरेगा।"

"अन्यायी राजा.......?"—अलनज़र ने कुछ कडे स्वर में पूछा।

मुहम्मदवली खोजा ने बे के स्वर की कड़ाई की ओर ध्यान न दिया और सहज स्वर में कहता गया—"हां, अलनज़र बे, जार अपने वायदे मे फिर गया। जब ज़ार ने हमारा मुल्क लिया तो वायदा किया था कि मुसलमानों को फौज में भरती नही किया जायगा, याद है ? अब क्या हो रहा है ?"

"तो तुम्हारा ख्याल है कि जार के तख्त से गिरने का कारण यही है कि उस ने मुसलमानो को फौजी मज़दूरी के लिये जबरदस्ती भरती किया ?"

बे का यह प्रश्न मौलाना को कुछ विचित्र सा जंचा और उस का ध्यान बे के स्वर की ओर भी गया। खोजा ने बे के चेहरे की ओर देखा। बे अप्रसन्न था और खोजा को तीखी निगाह से घूर रहा था; मानो पूछ रहा हो यह नमक हरामी ? बे की इस दृष्टि से मौलाना सिमिट गया; जैसे केंचुआ छू दिया जाने पर कुण्डली मार जाता है।

"नहीं मालिक, यह बात नहीं। यह बात गलत है ! मुसलमानों के लिये जार से बढकर रहीम बादशाह तो दुनिया में कोई हुआ नहीं। किताबों में नौशेखां न्यायी का नाम आता है परन्तु ज़ार का न्याय उस से कहीं ऊंचा रहा। तुम्ही बताओ, ज़ार के चालीस साल के राज मे किसी मुसलमान की उँगली में फांस तक नही लगी और क्या इन्साफ चाहते हो ? मालिक, पेड गिरता है जड़ में कीड़ा लगने से, ज़ार तख्त से गिरा है तो यह अपने खानदानी झगड़ों की वजह से !"

मुशी ने बे की ओर देख खोजा का समर्थन किया—"खूब कहा मौलाना आमीन, आमीन !"

खोजा की बात से बे को संतोष हुआ। उस ने भी समर्थन किया—"ठीक है मौलाना ठीक है। पेड की जड़ मे कीड़ा लगने से ही पेड़ गिरता है।"

मुहम्मदवली खोजा अवसर देख, अपने घुटने पर हाथ टिका झूलता हुआ बे के मन की-सी बात कहने लगा था कि मुंशी बोल उठा—"अरे भाई, इस डाह का, जलन का बुरा हो! बादशाहों और वजीरों की बात क्या? अपनी ही बात देख लो! किसी पर जरा अल्लाह का करम हो जाय तो दूसरे ऐसे जलने लगते है मानों उन्ही के पेट पर लात पड़ रही हो। अब मालिक को ही देखो! अल्लाह की बरकत है मालिक पर। चश्म बद्दूर, कितनों का भला होता है मालिक की बदौलत? पर ऐसे भी है जो मालिक से हिरख कर जले जाते हैं। जिस प्याले में खाना उसी को ठुकराना।"

"ऐसे ही आमाल से तो दुनियां में सूखा पड़ता है"—मौलाना ने मुंशी की बात पूरी की।

"लेकिन कमबख्त लोग समझते भी तो नहीं! मुसीबत आती है तो मरते भी तो ऐसे ही लोग है। अभी देख लो न? सूखा पडा है तो मालिक बे का क्या घट गया?······ क्यों मालिक?"

शादाब बेगम मेहमानों के लिये चाय ले आई थी। उसे सम्बोधन कर बे ने सलाह दी--"शादाब, मुशी पोखी थके है। इन के लिये कुछ पुलाव मंगवा लो?"

मुशी तम्बाकू की डिबिया खोल चुटकी भर तम्बाकू होंठ के नीचे दबाने को ही था कि पुलाव का प्रस्ताव सुन उस ने डिबिया बंद कर जेब मे लौटा दी और बोल उठा—"ओ मालिक, रूह खुश कर दी मालिक ने। मालिक का इकबाल बुलन्द हो। ज़ार के वजीरो का क्या है? वजीरों ने ही ज़ार के साथ दगा किया है! यह वज़ीर पहले ार के नाम से रियाया को नोचकर खाते रहे और मौका लगा तो ज़ार को ही खा गये। और रियाया को ही देखो! रियाया की परवरिश कौन करता है? हमारे मालिक बे! और यह भूखे, गरीब लोग बे को ही नोच कर खा लेना चाहते हैं। मौलाना, इस दुनियां मे दगा ही दगा और बेवफाई है?"

मौलाना दाढी पर हाथ फेर ोले—"इस दुनियां मे नेकी का बदला बदी से ही मिलता है मुशी?"

अलनज़र बे परेशानी अनुभव कर रह था। हृदय में उठता लंबा सांस दबा वह तम्बू की छत में बंधी डोरियों की ओर देखने लगा। एक लम्बी सांस छोड़ बे बोला—"देस राजा के बिना बरबाद हो जायगा, जैसे बिन

आदमी की औरत, जैसे बेलगाम घोड़ी ! मुल्क और सल्तनत की जड़ में दीमक लग गया है....।"

मुंशी बोल उठा --"मालिक इस रेवलूशा से मेरा दिल बहुत घबरा रहा है...।" बे ने अपनी भारी पलकें उठा कर पूछा, "यह रेवलूशा है क्या बला ?"

"सुना है, रेवलूशा में कुछ लोग है जो ज़ार की गद्दी पर बैठना चाहते हैं। सुना है यह लोग अपने मन से चुनकर किसी आदमी को गद्दी पर बैठायेंगे।"

"तो क्या सभी, जैसे तैसे लोग जो चाहेंगे, करेंगे ?"

मौलाना खोजा गम्भीर चिन्ता में अपनी दाढी सहलाते हुये बोला - "ऐसे बागी लोगों को किताब में नाजिस और नापाक कहा गया है लेकिन अल्लाह पाक की मर्जी के बिना कुछ नहीं हो सकता। अल्लाह बहुत रहम करते है। खुदा ऐसे लोगों को मौका देते है और अपने गुलामों के आमाल और करम देखते है। जो लोग खुदा को भूल जाते है, बग़ावत करते हैं, उन पर खुदा का कहर नाजिल होता है। यह सूखा पड़ना और ज़ार का तख्त पलटना सब बाग़ियों के गुनाहों का अंजाम है, यह सब कयामत के आसार है।"

मुंशी पोखी मौलाना की बात न समझ पाया, न उस ने उस ओर ध्यान ही दिया परन्तु बे यह बाते सुन चिन्ता में चुप बैठा रहा। वह सोचने लगा— "ज़ार की सल्तनत पलट गई तो रियाया उठ खड़ी होगी, शायद जंग खत्म हो जाय और जंगी मजदूरी के लिये पकड़े गये लोग लौट आवेंगे। कितने ही बदमाश दिल में बदले की आग और जलन दबाये हुये है, लौटेंगे तो जरूर शरारत करेंगे यहां भी बग़ावत होगी। क्या इन्तजाम हो सकेगा ? भूखे नंगे लोग यों ही बलवा किये हुये है जाने कब लूटपाट शुरू कर दे ? मावी जैसे लोग ही क्या कम है ? मौका पाकर जो न कर डाले ? जेल टूट गया तो ? अगर अरतैक भाग कर आ गया ...?" बे ने चिन्ता से एक गहरी सांस ली। उस के माथे पर पसीना छलक आया। शादाब की ओर देख उस ने कहा -- "बहुत गरम हो रहा है तम्बू के परदे उठवा दो !"

गरमी अभी कुछ अधिक नहीं थी। मार्च का महीना अभी लगा ही था। तम्बू के पर्दे प्राय: जून के महीने में उठाये जाते थे !

"क्या मालिक—"शादाब विस्मय से बोली, "गरमी तो अभी ऐसी नहीं है ?"

बे कुछ उत्तर न दे चुप रह गया। उस के मन में चिन्ता और आशंका का जो झाड़ सुलग रहा था बेगम उस की तपन क्या समझ पाती ?

वे अपने जीवन में इतना व्याकुल कभी न हुआ था उस समय भी नहीं जब कि उस ने बड़ी तैयारी से अपने बेटे का व्याह गाव की सुन्दरी ऐना से रचाया और बस्ती का बदमाश अरतैक ऐना को ले भागा। पाहुनों से मन की बेचैनी छिपाने के लिये वे कभी अपना बदन खुजाने लगता, कभी तम्बू की छत के झरोखों की ओर देखने लगता। गरम चाय की प्याली से उसे शरीर में कुछ ताजगी जान पड़ रही थी परन्तु मन अब भी वैसे ही उचाट था। बात करने को उस का मन न चाहता था। बहुत देर चुप रह वह बोला--"मौलाना खाजा, दिल घबरा रहा है। जान पड़ता है, दरअसल कयामत के आसार हैं...."

३

ज़ार की पुलिस अरतैक को तेजेन से अश्काबाद ले गई तो रेल के डिब्बे की खिड़कियों मे लोहे के सींखचे लगे हुये हुए थे। उस के हाथ-पांव रस्सियों से जकड़ कर बन्धे थे और उन में घाव बन गये थे। इन घावों की कुछ दवा-दारू न की गई। इन घावों पर कभी-कभी टिंचर लगा दिया जाता था। टिंचर घावों पर ऐसे लगता था जैसे पिसी मिर्चें छिड़क दी गई हों। अरतैक दाँत पीस कर इस पीड़ा को भी सह जाता। गाड़ी में उसे एक संकरी बेंच पर लिटा दिया गया। उस के चारों ओर हथियार बन्द सिपाही खड़े थे। किसी भी आदमी से कोई एक भी बात कर सकने का कोई अवसर उसे न मिला।

अश्काबाद की जेल में अरतैक को एक सूनी, अँधेरी कोठड़ी में धकेल कर भारी भारी किवाड़ बहुत जोर केधमाके से मूंद दिए गए। किवाड़ों पर भारी ताला पड़ा रहता। अंधेरी कोठड़ी में धकेल दिया जाने पर अरतैक लोहे की एक खाट से टकरा कर गिरता-गिरता बचा। कुछ देर तक अंधेरे में बैठे रहने के बाद वह लोहे की खाट की जगह पहचान सका और दीवार में ऊँचे पर एक सीखों से मढ़ा झरोखा भी उसे दिखाई दिया।

इस के बाद उस से भेद पूछे जाने लगे:—

"तुमने ज़ार की सरकार के खिलाफ़ बग़ावत की थी?"

"हां"

"तुम्हारे साथ दूसरे और कौन लोग थे?"

"सभी लोग थे!"

"तुमने ऐसा काम क्यों किया!"

"ज़ार का राज खत्म करने के लिए!"

"बागी अजीज़खां की फौज में तुम्हारा क्या ओहदा था !"

"सिपाही"

"तुम्हारी बस्ती से दूसरे कौन आदमी अजीज़ की फौज मे थे ?"

"मुझे नही मालूम।"

सग्नोनों से लैस सिपाही अरतैक को घेर कर खड़े थे। अरतैक के इस उत्तर से अफ़सर ने सिपाहियों को इशारा किया। दो सिपाहियों ने अपनी सगीनों की नोकें अरतैक के शरीर में धंसा दी।

अरतैक ने दांतों से होठ काट लिये और उत्तर दिया—"मेरे गांव का कोई आदमी मेरे साथ अजीज़ चपैक की फौज़ में नही था। तुम चाहो तो मेरे बदन के टुकड़े कर आग पर भून कर खा लो लेकिन मेरे साथ कोई दूसरा आदमी नही था।"

उस अंधेरी कोठड़ी में अरतैक को छः मास बीत गये। इन छः मास में अरतैक को जेल के सिपाहियो और जांच पड़ताल करने वाले अफसरों के सिवा और किसी को देखने का अवसर न मिला। अंधेरी कोठरी के किवाड़ में एक छोटा सा झरोखा था। इस झरोखे की राह दिन-रात मे एक बार रोटी का एक टुकड़ा और कुछ नमकीन गरम लप्सी अरतैक को पेट भर लेने के लिये दे दी जाती। नित्य की हाजतें भी उसे इसी कोठरी में ही पूरी करनी पड़ती। सगति के लिये केवल मक्खियां थी और समय काटने के लिये वह खटमल मार सकता था। उस के कानों को केवल कोठड़ी के बाहर घूमने वाले सिपाहियों के कदमों की आहट और तालों में चाबियां घूमने की आवाज ही सुनाई दे पाती थी या जेल की दीवारों के बाहर से रेल के इंजन की सीटी सुनाई दे जाती। अरतैक को इस जीवन का अभ्यास भी हो गया। वह चुप बैठा-बैठा अपने गांव की बातें सोचता रहता, अपनी प्यारी ऐना को याद करता रहता। वह सब बाते उसे एक बहुत दूर बीते जीवन की, स्वप्न की बातें जान पड़तीं।

उस अधेरी कोठड़ी में औरत का सहारा बीती हुई बातों की याद ही थी। वही याद उस का धन थी। अपने घर की याद, बूढ़ी माँ की ममता की याद, अपनी छोटी चुलबुली बहन की याद और प्यारी ऐना से विवाह की तैयारी की याद ! बीती हुई घटनाओं की स्मृति की राह पर वह बीते दिन की ओर चलता चला जाता। इस राह का पहला पड़ाव उस का बचपन था और अन्तिम पड़ाव जेल की अंधेरी कोठड़ी। उसे अलनजर बे के अत्याचार याद आते—बस्ती पर उस का कैसा आतक छाया हुआ था ? वह स्वयम भी उस आतंक

का शिकार था। अलनज़र उस के घर की सब सम्पत्ति समेट चुका था, उस का प्यारा घोड़ा भी उस ने कुर्क करवा लिया था और अन्त मे उस की मंगेत, प्यारी ऐना को भी अपने लडके बल्लेखा के लिये छीन लेना चाहता था। जार के राज के बढ़ते जाते अत्याचारों से तेजेन के किसानों के लिये जब चुपचाप मर जाने या बगावत करने के सिवा कोई और चारा रह ही नहीं गया तो वे बगावत कर उठे। उस समय अरतैक ने समझा सहे हुए अत्याचारों के बदले का समय आया है। तब अरतैक ने समझा कि जनता और रिआया उठ खड़ी हो तो क्या कर सकती है, लोग क्या कुछ, कितना कुछ कर सकते है! उन घटनाओं को वह अब दूसरे ढंग से सोचता। उन घटनाओं से उसे बहादुर अज़ीज चपेक की याद आती। और याद आता कि चपैक की बहादुरी लोगों को साथ ले चलने में थी।

अज़ीज ज़ार की सेना से हार कर भाग गया। उस समय अरतैक ने भी कोशिश की कि ऐना को ले कर भाग जाय। अलनजर बे ने अपने आदमियों को ले उसे घिरवा कर पकड़ लिया और जार की पुलिस के हाथो सौप दिया। अरतैक की मुश्कें बांध कर अश्काबाद लाया गया और उसे जेल की अंधेरी कोठडी मे मूद दिया गया। यह सब एक सुपना था—पहाड की चोटी पर चढ कर वह एक दम खाई मे गिर पडा। वह बीता हुआ जीवन एक लंबा सुपना था। यह सुपना कई भागो मे बंटा हुआ था। कभी सुपने का एक भाग और कभी दूसरा अरतैक की याद मे उभर उठना। उसे बचपन के और बगावत के साथी चरकेज़ और अशीर याद आने लगते और कभी अपने बैरी अलनजर बे, बाबा खा, लंगडा कुली खां—पटवारी और मौलाना मुहम्मदवली ख्वाजा याद आते और उस का मन क्रोध और असफलता की कडवाहट से भर जाता।

महीने पर महीने बीतते गये। एक दिन अरतैक की अंधेरी कोठडी के किवाड मे बना छोटा सा झरोखा खुला और एक मुस्कराता हुआ चेहरा उसे दिखाई दिया। अरतैक का मन इतना निराश हो चुका था कि उस ने उस ओर देख कर भी ध्यान न दिया। उसे अपने नाम की पुकार सुनाई दी— "अरतैक बबाली, अरतैक बबाली।"

अरतैक को जान पड़ा—आवाज परिचित थी। यह जेलखाने के एक सिपाही की आवाज़ थी जो कभी-कभी उसे मिश्री का टुकड़ा या मक्खन चुपड़ी रोटी झरोखे से थमा देता था। यह चीज़े लेने को अरतैक की इच्छा न होती तो भी वह सिपाही उसे दे ही जाता और दो चार बातें तसल्ली की कह जाता।

पुकार सुन अरतैक उठ कर झरोखे के पास आया। सिपाही बहुत प्रसन्न

दिखाई दिया। धीमे स्वर मे सिपाही ने टूटी-फूटी तुर्की भाषा में कहा—"बबाली, जार धूल चाट गया…… जार गया ! तुम जल्दी अपना घर !"

सिपाही ने इधर-उधर झांका और झरोखे को मूद एक ओर सरक गया।

अरतैक सिपाही की बात ठीक से समझ न सका परन्तु सोचने लगा—"क्या मतलब ?…जार धूल चाट गया ! क्या जार हार गया ? अगर ऐसा है तो शुक्र खुदा का…!"

अरतैक रात भर सोचता रहा । उसे नीद न आई । लगभग पौ फटने के समय उसे नीद आई और उस ने सुपना देखा कि वह एक सीधी खड़ी ऊंची चट्टान से चिपका हुआ है, उस के पाव धरती पर नही लग पा रहे । वह चट्टान धीमे-धीमे हिलने लगी, जान पड़ा कि चट्टान गिर पड़ेगी। अरतैक ने आंखे झुका नीचे देखा, वहा एक बड़ा अजगर बल खा रहा था । इस अजगर के नथुनों से धुआं निकल रहा था। अरतैक भय से काप उठा। अरतैक का साहस टूट गया। वह मौत का सामना करने की तैयारी करने लगा । सहसा उस ने देखा कि नीचे बल खाते अजगर के माथे से खून का फव्वारा छूट गया। लोहे का कवच पहने एक जवान अजगर के बड़े सिर पर सवार हो गया । इस जवान ने अपना हाथ अरतैक की ओर बढ़ा दिया अरतैक ने सहायता के लिये अपना हाथ उस बहादुर की ओर बढ़ाया । दोनों के हाथ छुये ही थ कि अरतैक की आख खुल गई ।

अरतैक का कलेजा जोरो से धड़क रहा था । धडकन कुछ कम होने पर अरतैक सोचने लगा—इस सुपने का क्या अर्थ हो सकता है ? इस अंधेरी कोठड़ी का चट्टान मान लिया जाय और अलनजर को अजगर तो मेरी ओर सहायता का हाथ बढाने वाला बहादुर कौन है ? इसी कल्पना मे डूबा अरतैक अपनी खाट पर लेटा रहा। दीवार मे ऊंचाई पर बने झरोखे से सूर्य की किरणे सुनहरी सलाखो की तरह कमरे मे खिंच गई थीं । अरतैक उन किरणों मे नाचते अणुओं की ओर आंख लगाए बीती रात के सुपने की ही बात सोच रहा था। उस की कोठड़ी के ताले मे चाबी घूमने की आहट सुनाई दी। इस शब्द से उस का ध्यान खुलते हुए किवाड़ों की ओर गया। मन में उस ने सोचा—इन कमबख्तो की पूछ-तांछ जाने कब खत्म होगी ? कब इस से छुटकारा मिलेगा ?

जेल का अफसर कोठड़ी में आया। अफसर की बांह पर एक लाल पट्टा बंधा हुआ था । यह नई बात थी । अफसर ने हाथ मे थमे कागजों मे कुछ ढूढ़ते हुए पूछा—"तुम्हारा नाम अरतैक बबाली है ?"

अरतैक ने हामी भरी ।

"अपना सामान उठाओ !"

"क्यों ?"

"तुम अपने घर जाओ, तुम्हें छोड़ दिया !"

अरतैक ने अविश्वास से अपने सीने पर हाथ रख पूछा--'मैं अपने घर जा सकता हूं ?"

"हां, हां घर जाओ, गांव जाओ, अपने बाल बच्चों के पास ।"

अरतैक अपनी खाट से उछल पड़ा और उस ने फिर पूछा—"जनाब, कोई भूल-चूक तो नही है ?"

"शुक्र खुदा का, कोई भूल नही है ।"

"मज़ाक कर रहे हो ?"

"नही, मज़ाक नही ! जार ने धूल चाट ली । मुल्क अब आज़ाद है ।" अफसर ने उस की रिहाई का परवाना अरतैक को थमा दिया । और विदाई मे हाथ मिलाने के लिए बांह आगे बढा दी ।

अरतैक कोठड़ी से बाहर निकला तो उस का मित्र सिपाही दिखाई दिया । सिपाही ने मुस्करा कर कहा—"कहो, मैने कहा था न जार धूल खा गया ?"

अरतैक ने सिपाही के गले में अपनी बाहें डाल दी और रूधे हुए गले से बोला—"तुम्हारी मित्रता कभी नही भूलूगा । तुम्हारा नाम !"

सिपाही ने अपना नाम बताया—"तिशेन्को"—"मैं अभी तक अकेला था"—अरतैक ने कहा, "आज से तुम मेरे भाई हुए ।"

तिशेन्को ने भी अरतैक के गले में बांह डाल कर उत्तर दिया —"मित्र मै भी तुम्हें कभी न भूलूगा । हम दोनो भाई भाई हुये !"

जेल मे आते समय अरतैक अपनी मां का एकलौता बेटा था । जेल से जाते समय उसे एक भाई मिल गया । दोनों ने सगे भाइयों की तरह बिदा ली ।

लोहे की मोटी सलाखें जड़े जेल के बड़े फाटक से बाहर निकलने पर अरतैक को जान पड़ा कि सुहावनी हवा उस के दाढी से ढके चेहरे को सहला रही है । उसे स्वतंत्र वायु मे श्वास लेने पर अनुभव हुआ कि महीनों बाद वह भरा-पूरा सांस ले पाया है जैसे उस का दूसरा जन्म हुआ हो ! सड़क के दोनों ओर बहती पतली नहरों के दोनों ओर हरी घास जमी हुई थी । पेड़ों पर नए फूटे कल्ले अभी पत्तियों का रूप न ले पाये थे । बसंत की वायु में नयी फूटती वनस्पति की महक समाई हुई थी । अरतैक और दूसरे कैदियों को यह

दृश्य एक सुहावना स्वप्न जान पड़ रहा था। उन लोगों को विश्वास न हो रहा था कि वे लोग सहसा स्वतन्त्र हो गए हैं। अपने पैरों में बेड़ियो का बोझ न पा और जंजीरों की खनखनाहट न सुन पाने से वे लोग तेज चाल से चल रहे थे मानो अब भी भय हो कि पीछे से आ कर उन्हें कोई पकड न ले। वे लोग शहर के बाजार मे पहुँच गए। लोगो ने उन की ओर ध्यान भी न दिया। उन लोगों को भी शहर मे कोई नई बात दिखाई न दी। कही-कही लोगो की बातचीत मे सरकार बदल जाने की बात सुनाई दे जाती। अरतैक पहले कभी अश्काबाद न आया था। शहर की चौड़ी-चौड़ी सुथरी सडके, ऊचे मकान और सजी हुई दुकानें उसे बहुत भली लगी। वह रेल मे बैठा और उत्सुकता से तेजेन की ओर चल दिया।

अरतैक तेजेन पहुँचा। वह अपना घर और देश पहचान न पा रहा था। सब ओर रूखे, खुश्क मैदानो मे रेत और धूल उड़ रही थी। न कही हरियावल न कही पानी का नाम। बसन्त का कोई भी चिन्ह कही दिखाई न देता था।

बसन्त के आरम्भ मे तेजेन की छटा निराली ही होती थी। घण्टे-घन्टे मे धरती रूप-रंग बदलती रहती। पल भर की सोधी सीलन लिये वायु चेहरो को सहला जाती और दूसरे पल घटाटोप बादल आकाश पर छा जाते। इस के बाद हवा के तेज झोके बादलों को उडा आखो से ओझल कर देते। और फिर आकाश से बूदे झरने लगती। मैदानो मे उडती धूल पीले मटियाले जल मे समा जाती। धरती पर जगह-जगह छोटी-छोटी नालिया बहने लगती फिर सब कुछ जलमय हो जाता। जैसे अकस्मात् वर्षा आ जाती वैसे ही पलक मारते बादल फट कर सूर्य की किरणे फैल जाती। धुली हुई घास के मैदान और वृक्ष किरणो मे सबज़े के खिलौनो की तरह चमकने लगते। पक्षियो के लाखों जोड़े अपनी-अपनी बोली मे चहक उठते। सब ओर जीवन के राग की गूज समा जाती।

हरी घास से ढके फूल से छिटके मैदानो मे, छाज जैसी बड़ी दुमें लटकाए दुम्बे, भेड़े बिखरी दिखाई देती रहती और उन के पीछे मेमनों के जोडे कुलांचे भरते रहते। कही जाडो मे बढ गए बालों से ढके ऊंटो के झुण्ड मनमाना चारा पाकर संतुष्ट कुहान फुलाए घूमते रहते। ऊंटनिया अपनी कुण्डलीदार गरदने फैला कर अपने दूध पीते बच्चों को पुचकारती दिखाई देती। घोड़ियां थनों मे दूध भरे, अपने चंचल बछड़ों के पीछे भागती हुई गावों की धरती को रौंद डालती। गौओं के टोल चरते-चरते थक जाते और घास समाप्त न होती। वे

उसी घास पर लेट पूंछ से मक्खियों को हांकती जुगाली करने लगती। बस्तियों मे दो चार ही आदमी दिखाई पड़ते। किसान खेतों मे ही बने रहते। समय रहते ही वे बैलों को ले सीली धरती को जोत डालते या बस्ती के जवार के खेतो मे क्यारियां बना सब्जी, तरकारी बोने लगते। खरबूजे, तरबूजे बो देने का भी यही समय था। नहरे वर्षा के जल से अघा जाती और पानी सडकों, पगडण्डियों पर फैल जाता। ऐसी बसन्त में तेजेन के किसान वर्ष भर के लिये अन्न और दूसरे आवश्यक सामान का आयोजन कर लेते थ।

परन्तु अरतैक ने देखा कि उस के गांव की रूखी खुश्क धरती धूल से भरी थी। अपना देश वह क्या पहचानता; उसे अपने काले तम्बू का नामोनिशान भी कहीं दिखाई न पड़ रहा था। उस का प्यारा काला तम्बू जिस में उस ने जन्म से धूप, आंधी और वर्षा से शरण पाई थी! उस की मां? उस की छोटी बहिन भाई को देख किलकती, फुदकती शाकिरा? सब कुछ कहा गया?

अरतैक विस्मय से बस्ती मे चारों ओर आँखे दौड़ा खोज रहा था और सब कुछ तो लगभग वैसा ही था परन्तु उस का तम्बू दिखाई न पड़ा। सब तम्बुओं की बस्ती से ऊपर सिर उठाये, अलनजर का फैला हुआ और ऊंचा तम्बू भी दिखाई दे रहा था। सब से अन्त मे ऐना के परिवार का तम्बू भी दिखाई दे रहा था। सब तम्बू अपनी जगह थे परन्तु अरतैक के तम्बू की जगह खाली पड़ी थी।

खोया हुआ सा खड़ा अरतैक परेशान था कि क्या करे? अलनजर के तम्बू पर आँख पढ़ने पर मन मे ख्याल आया—पहले जाकर इसी से समझ लूं! ऐना के तम्बू को देख सोचा—उस का क्या हुआ होगा?........पहले लोगों से माँ का पता ले। माँ जिन्दा तो होगी? बेचारी पर क्या बीती होगी, गरीब शाकिरा, उस का क्या हाल होगा?

दुविधा में अरतैक कितनी ही देर तक खड़ा ही रह गया, जैसे उस के पांव जुड़ गये हों! कितने ही आदमी आकर पास से निकल गए। वह किसी को पहचान न पाया...... ऐसे कब तक खड़ा रहेगा? वह एक ओर चल पड़ा। ऐना के तम्बू के सामने आ पहुंचा। उसे कोई झिझक न हुई, न ऐना की मा "मामा" और पिता मुराद की नाराजगी का ख्याल आया परन्तु इस तम्बू के द्वार पर पहुँचते-पहुँचते फिर उस के पाँव जड़ होने लगे। आशंका हुई......
वह जिन्दा तो होगी, उस के बाप ने उसे कहीं ब्याह दिया होगा?

अरतैक की दृष्टि सब से पहले ऐना के पिता मुराद पर ही पड़ी। वह

तम्बू के बांई ओर घोड़ी के थान के समीप एक गढा खोद रहा था । आहट पा मुराद ने आँखे उस की ओर उठाईं और पहचान न सकने के कारण पल भर चुप, ध्यान से देखता रहा । पहचाना तो आगे बढ उस ने अरतैक को सीने से लगा लिया । उमड़ आए आंसू बस मे करने के लिये बूढे ने मुह फेर लिया और बोला—"बेटा अरतैक, हम लोग तो तुम्हे देखने की आस ही छोड़ चुके थ । शुक्र अल्ला का ! तुम्हे देख आंखे शीतल हो गई । बेटा, वड़ा हौसला हुआ तुम्हे देख कर । तुम आ गये, अब कोई चिन्ता नही । बस अब इस तम्बू को ही अपना घर समझो !"

मुराद का यह व्यवहार देख अरतैक विस्मय मे अवाक् रह गया। उस का मन हाथ से जाता रहा । अश्काबाद की जेल मे सगीनो से कोचा जाने पर भी वह अडिग बना रहा था परन्तु मुराद की इस ममता ने उसे पिघला दिया । उस का चेहरा गुलाबी हो गया, पांव लड़खड़ाने लगे और माथे पर पसीना आ गया । बोलने का यत्न किया तो उस का गला रूध गया ।

मुराद ने कहा—"बेटा तुम चले गये तो ·····अच्छा, भीतर जाकर आराम तो करो !" मुराद ने उसे तम्बू के दरवाजे की ओर धकेल दिया ।

अरतैक दरवाजे पर आ कर फिर एक बार ठिठका और सोचा —ऐना जरूर यहां ही है तभी तो उस के पिता ने मेरा इतना ख्याल किया और सोचा—एकाएक सामने जाने से ऐना कहीं घबरा न जाय ? आहट करने के लिए उस ने दरवाजे पर से खांसा ।

ऐना भीतर ही थी । महीन कसीदा काढते समय, रोशनी के लिये वह तम्बू के झरोखे से आती किरणों के नीचे बैठी हुई थी । किरणों के प्रकाश मे तकिए पर काढे हुये कसीदे के अक्षर चमक रहे थे ।

"दुआओं की गोद मे········"

दरवाजे पर अरतैक के खांसने की आवाज ऐना के कान मे पडी और उस के खून में बिजली-सी कौंध गई परन्तु उस ने मन को बस कर समझाया क्यों पागल होती है; अन्धे को तो सदा ही आखो के सपने आते है परन्तु उस की आंखें तम्बू के दरवाजे की ओर उठे बिना न मानी । एक कद्दावर मर्द भीतर आता दिखाई दिया । ऐना की आखें विस्मय से फैल गई । वह अपनी जगह से उछल पड़ी—"अरतैक जान !" उस के होंठ पुकार उठे । उस की बाहें अरतैक के गले से लिपट गईं और सिर अरतैक के सीने पर जा टिका ।

ऐना को सुध आई तो वह लजा गई । पीछे हट उस ने अपने हाथों बीना

कालीन बिछा कर अरतैक को बैठाया और उस के पास बैठ गई। उस के जीवन के स्वप्न साकार हो गये, हृदय की बगिया फूल उठी, हृदय का उत्साह और आनन्द उस के चेहरे पर छलक आया। उस की बड़ी-बड़ी आंखों की चमक और होठों के रंग मे उस का खोया हुआ जोबन पल भर मे लौट कर उमड़ उठा। जैसे दुख के दुर्दिन कभी आए ही न थे।

अरतैक की ऊँगलियां ऐना के रेशमी बालों में उलझ कर फंस गई। दूसरी बांह से उसे अपनी ओर समेट पिघले हुए गले से उस ने पुकारा— 'मेरी ऐना, मेरी रूह, मेरी आंखों की पुतली·······"

ऐना अरतैक की गोद मे सिमिट आई और उस के गाल पर अपना कोमल गाल रख, उस ने धीमे से अरतैक के कान मे कहा—"मेरी जान, अगर तुम अब भी न लौटते तो मैं जान दे देती। अब मैं तुम्हें पल भर के लिये भी कही न जाने दूगी।"

कुछ पल अरतैक ऐना की बाहों मे अपने आप को और दुनिया को भूले रहा परन्तु मन में चिन्ता उठने लगी। उस ने पुकारा—"ऐना······" परन्तु चुप रह गया। ऐना अरतैक के मन की बात भाप गई—"अभी क्या अपने यहां नहीं गये ?" उस ने पूछा और अरतैक की आंखो मे झांका। ऐना की बड़ी-बड़ी रसीली स्वच्छ आंखे सान्त्वना दे रही थी चिन्ता न करो डर की कोई बात नही

"हमारे यहां खैरियत तो है ऐना ?" अरतैक ने पूछा। चिन्ता की कोई बात नहीं अरतैक ! तुम्हारे जाते ही तुम्हारे चाचा आये थे और मां और शाकिरा को साथ ले गये। उन्हे किसी तरह की कमी नही। अभी तीन दिन पहले भी उन की खैर खबर मिली थी। शाकिरा के लिये एक टोपी काढ कर मैंने भेजी थी और अब्बा ने मां की पोशाक के लिये रेशम का थान और दूसरी ज़रूरी चीजें भी भेज दी है।"

ऐना शुक्रिया तुम को !"—अरतैक ने संतोष से सांस ली। ऐना ने मुस्करा कर विरोध किया, "वाह क्या कह रहे हो ! वे क्या मेरी मां-बहनें नही ? मेरे ज़िन्दा रहते उन लोगों को तकलीफ़ कैसे हो सकती थी ?" अरतैक का मन गदगद हो गया। वह कुछ कह न सका। पल भर बाद उस ने पूछा, "ऐना उस बदमाश अलनज़र ने तो ज़रूर तुम लोगों को परेशान किया होगा ?"

"अब जाने दो उस नीच की बात ! क्या होगा वह सब याद करके !"
"नहीं कहो, मुझे तो दिन-रात उस नीच से डर लगा रहता था कि जा ने तुम्हे

कैसे कैसे परेशान कर रहा होगा। क्या किया उस ने ? सुने बिना मुझे चैन न आयगा।"

"अच्छा सुनो"—ऐना बोली, "तुम्हें पकड़ कर ले गये तो मैं मुरदा सी पड़ी रहती। तम्बू से कभी ही बाहर निकलती। एक रोज़ मैं दरवाजे पर थी। अलनजर के आदमी मुझे पकड़ ले जाना चाहते थे। मै धक्का देकर अलग हो गई। झगडे में मैं नीचे गिर पडी। मां चिल्लाने लगी, "अरे जालिमो, लडकी को मारे क्यों डाल रहे हो ! इस से इसे अपने लडके की बहू बना लो !" मुझे भी समझाने लगी, "ऐसे अपनी मिट्टी क्यों खराब करती है ! बे बड़ा आदमी है, उस के यहाँ आराम भी होगा और इज्जत भी !"

मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने फटकार दिया—"अगर तुझे बे का इतना ख्याल है तो तू ही उस छोकरे के साथ जा बस !" एक रोज मा मुँह पर छलनी जैसे दाग भरे बल्ले को अपने साथ ले आई। बल्ले आकर मेरे कंधे पर हाथ रखने लगा। मैंने कालीन छांटने की कैंची खोल कर कहा, "हिम्मत है तो छू मुझे !" फिर मैंने मां को भी कहा -"अगर तू अब फिर इसे यहां लाई तो पहले मैं यह कैंची तेरे गले से पार उतारूंगी और फिर खुद भी मर जाऊंगी। इसी बीच अब्बा आ गये। मामला देख गुस्से मे उन्होंने बेलचा उठा कर मा की कमर पर दे मारा। मां जमीन पर गिर पड़ी और चिल्लाने लगी। बल्ले उठ कर भागा। अब्बा बेलचा ले कर बल्ले के पीछे भागे। बल्ले डर के मारे सिर पर पांव रख कर सर हो गया। उस की टोपी यही दरवाजे पर ही गिर गई।

दूसरे दिन खोजा मौलाना बहकाने आया। मै आगे बढ़ी कि उस बुड्ढे की खबर लू। अब्बा ने मुझे रोक उस की बात सुनने से इनकार कर कहा—"मौलाना और सब ठीक है लेकिन बे के यहां लड़की के रिश्ते की बात ले मेरे यहां मत आना।" मौलाना ने भी फिर सूरत न दिखाई। इस के बाद बे ने धमकी दी कि हम लोगों को बस्ती से निकाल देगा। पिता जी ने कहा बस्ती से तो मैं मर कर ही निकलूगा और देखा जायगा कि पहले मै मरता हूं कि बे मरता है। पिता जी ने मेरा बहुत साथ दिया। मां तो सौतेली ठहरी, वह सदा मिनमिनाती रही। मैंने भी कहा - "तू बकती रहा कर तेरी कौन परवाह करता है।"

भाग्य की बात ! उसी समय तम्बू का दरवाजा खुला और मामा गाय दोह कर दूध का बर्तन हाथ से लटकाये भीतर आई। धूप से चौधियाई आँखों

से वह अरतैक को तो पहचान न सकी परन्तु देखा कि लड़की किसी जवान मर्द के साथ अकेली हिलमिल कर बैठी हुई है ।

मामा माथा पीट कर चीख उठी—"लोगो, दुनियां गारत हो गई ? हाय इतनी बेहयाई ! जवान लड़कियों के ऐसे चरित्तर । जमीन फट जाये और यह लोग फ़ना हो जांय......"

अरतैक कालीन से उठा और मामा के पास जाकर बोला—"अरे क्या कर रही हो मौसी ! पहचाना नही मुझे ? मैं अरतैक हूं, सलाम मौसी !"

मामा की आंखें और हाथ दोनों ही हैरानी से फैल गये । दूध का बर्तन मामा के हाथ से गिर गया—"ओह बेटा अरतैक"—मामा चिल्ला उठी और अरतैक को अपने हृदय से लगा लिया ।

४

संध्या हो चुकी थी। बस्ती के चायखाने (होटल) के मालिक जमरूदी के मकान मे रोशनी जल चुकी थी। मकान के भीतर के कमरे में बस्ती के माल अफसर उमेद खां और खोजा मुराद, बड़ा मुशी कुलीखां लंगड़ा और दारोगा बाबा खां और दो तीन दूसरे भले लोग चाय पी रहे थे। बातचीत धीमे-धीमे चल रही थी। चायखाने के मालिक जमरूदी को ऐसे मुर्दा दिल लोग पसन्द न थे। वह अपने चायखाने में हंसी, मजाक और शोर-शराबा पसन्द करता था।

जमरूदी कमरे की चौखट के साथ सटा खड़ा, अपनी फैली हुई दाढी खुजाता हुआ अपने मेहमानो की ओर देख रहा था। मेहमानों के चेहरे पर उसे मुर्दनी ही दिखाई दे रही थी। कोई उस की ओर ध्यान ही नहीं दे रहा था न कोई पुलाव जल्दी लाने या शराब लाने के लिये पुकारता था। जमरूदी यह भी न भांप पाया कि इन लोगों को किस ने दावत पर बुलाया है? वह खड़ा-खड़ा थक गया तो बैठ गया। बैठा-बैठा उकता गया तो खड़ा हो गया और आखिर बोला—

"भलो लोगो, आज यह कैसी सुस्ती छाई हुई है? आप का खादिम जमरूदी हाजिर है, कोई हुक्म कीजिये!"—परन्तु जमरूदी की इस बात का भी कुछ असर न हुआ।

बस्ती के इन बड़े लोगों के उदास होने का कारण भी ठीक ही था। खबर मिली थी कि इलाके के गवर्नर कर्नल बेलानोविच हालत हाथ से निकलती देख, आग लगी झोपड़ी मे बसने वाले चूहों की तरह, झोपड़ी छोड़ भागे। बेलानोविच ने इलाके का इन्तजाम लेफ्टीनेंट कर्नल आंतोनोव के हाथ में सौप, स्वयं

फैरूशा में, जनरल काल्माकोव के पड़ोस में जा बसे, ताकि हालत और बिगडने पर तुरन्त भाग सकें।

बस्ती के अफसर लोग बेलानोविच को बिदाई देकर चायखाने मे आ बैठे थे। वे लोग अपनी स्थिति के बारे में चिन्तित थे। इन लोगों की सहायता से कर्नल बेलानोविच ने काफी सम्पत्ति बटोरी थी। कर्नल का सामान कई माल गाड़ियों मे भर कर उन के साथ भेजा गया था। यह भले आदमी परेशान थे कि अब वे किस के सामने सलाम करेगे? और कौन इन के सिर पर अपने हाथ का साया करेगा। लेफ्टीनेन्ट कर्नल आन्तोनोव तो स्वयं ही घबरा रहा था।

माल अफ़सर उमेद खाँ अपने फूले हुये गालों पर से पसीना पोंछ कर गम्भीर स्वर में बोला—"कहते है न कि जाने-पहचाने दुश्मन से लड़ लेना आसान होता है। इस हाकिम को हम समझ गये थे, वह हमे समझ गया था। उस का साया अपने सिर पर था। वह कभी हम लोगो पर बिगडता था, धमकाता भी था पर उस ने कभी किसी का कुछ बुरा नही किया। यह तो एक नसीहत थी कि हम ग़लती न करे। उस का साया बाप का साया था। दारोगा ठीक कहते हैं—हम लोग अनाथ हो गये है। आन्तोनोव भी कोई आदमी है?··· बिलकुल बेदम!"

कुली खाँ लंगड़े ने मुह मे दबा तम्बाकू का बीड़ा निकाल दरवाजे से बाहर फेक दिया और होठों से टपकती लार हाथ से पोछ कर बोला—"बेदम का क्या मतलब?··· ··बेलानोविच सिर पर बैठा था तो वह कर ही क्या सकता था? कुत्ते को शह मिले तो भेड़िये पर चढ बैठता है। हम लोग साथ देगे तो उसे हिम्मत बधेगी। अमले के बिना कोई गवर्नर क्या कर लेगा? उसे सल्तनत सम्भालने दो! फिर देखना, सल्तनत खुद सब कुछ सिखा देती है।"

दारोगा बाबा खां ने गम्भीरता से भौ चढ़ाकर समर्थन किया—"ठीक है, कुली खाँ सही कह रहा है। हाकिम कोई भी हो, हुकूमत हमी लोगो को चलानी है! कुलीखाँ के पाँव मे खम है तो क्या, दिमाग़ उस का दुरुस्त है भाई!"

मौलाना खोजा ने कुलीखाँ के लंगड़ेपन पर मजाक कर दिया। इस बात पर झगड़ा उठ खड़ा हुआ। दारोगा ने दोनो को समझा कर चुप कराया और दूसरी बात आरम्भ कर दी—"मौलाना! सुना नही, अरतैक लौट आया है।"

"कौन अरतैक?" मौलाना ने पूछा।

"अरतैक को नही जानते? हमारी बस्ती का लड़का! याद नही उस का घोड़ा छिनवाया था! अरे जिस ने अज़ीज़ की बग़ावत में साथ दिया था? उसे पकड़वा कर अश्काबाद भिजवाया था! याद नही?"

"सीधे, सीधे कहो न" कुलीखां बोल उठा—"जिस ने अलनज़र बे के लड़के की बहू छीन ली और माल अफ़सर के मुह पर थूक दिया था और पंचों को भी धमकाया गया ?"

खोजा मुराद को इस बात पर क्रोध आ गया। कमर में बंधे मियान से चांदी की मूंठ की खंजर खीच उस ने कुलीखां को ललकारा—"मुंह पर थूक दिखाऊ मैं ? कहो तो तुम्हारे मुह पर थूकूं ?"

कुलीखां ने अपनी कमर से रिवाल्वर निकाल कर जवाब दिया—"मैं तुम्हारे बाप के मुह पर थूकता हू।"

माल अफसर उम्मेद खाँ ने दोनों के बीच-बचाव किया और समझाया—"क्या बचपन कर रहे हो तुम लोग ? अपनी उम्र और ओहदे का तो ख़्याल करो।"

जमरूदी की एक बीबी एक बढिया पोशाक पहने, एक कढा हुआ दस्तरख़ान लेकर आई और मेहमानो के बीच बिछा गई। दूसरी बीबी आकर पुलाव का थाल रख गई और तीसरी शराब लेकर आई। जमरूदी टोटीदार लोटा और चिलमची ले मेहमानो के सामने आ पूछने लगा—"कोई साहब हाथ धोना चाहते है ?"

उमेद खां आस्तीने समेट पुलाव पर झुक गया और बोला—"दारोगा साहब, आपने ठीक वक्त पर शराब मंगाई। शराब हमेशा हर मौके-मौजूं है। शराब मे यही तो बात है कि गुस्सा आ रहा हो, पी लीजिये, गुस्सा जाता रहेगा। आप खुश हों, पी लीजिये, मन उदास हो जायगा। तबीयत ठीक न हो, पी लीजिये, तबीयत सुधर जायगी और सेहत में पी लीजिये, तबीयत गिर जायगी।"

"यो कहो, शराब सब को बराबर कर देती है। समझदार और बेसमझ सब एक बराबर हो जाते है" दारोगा बोला। दारोगा की बात ठीक ही थी। कुछ ही मिनिट बीते थे कि कुलीखां और खोजा मुराद आपसी झगड़ा भूल एक दूसरे से प्याले छुला-छुला कर पीने लगे और मनमुटाव दूर हो गया।

खाना अभी चल ही रहा था कि एक हरकारे ने आकर खबर दी कि रेलवाई लोगों की क्लब मे अभी हाल में पंचों का चुनाव होगा। वहाँ सब लोगों को बुलाया गया है।

कुलीखां ने मुह का गुस्सा चबाते हुये हरकारे को हुक्म दिया—"अभी हम लोग खा-पी रहे है। जब तक हमारा खाना खत्म नहीं होगा, चुनाव-उनाव कुछ नही होगा। कह दो जाकर अभी हम लोग नहीं आ सकते !"

हरकारे को तो इन लोगो ने धमका कर लौटा दिया परन्तु मन में दुविधा

होने लगी पंचों का चुनाव ! यह एक नई बात थी । परन्तु इस में अचम्भा क्या था ? सभी बाते नई थीं । अब ज़ार तो रहा नही । सभी लोग ज़ार बन गये थे । सभी लोग तुर्रमखां बन बैठे । सभी जगह सभा चुनाव और ऐसे ही झगड़े चल रहे थे । बेइन्तज़ामी फैल रही थी । कुत्ते अपने मालिकों को और बिल्लियों अपनी मालिकाओं को भूल गई थीं लेकिन दुश्मन क्या कर रहा है, वह जानना भी तो ज़रूरी है । मौके की बात है, खुद को ही पच चुनवाया जा सकता है ! न हो, अपने आदमियों को ही चुनवाया जाये ! यह सब सोच कर इन लोगों ने जल्दी ही चुनाव की सभा मे पहुंचने का निश्चय किया और सभी लोग तुरन्त क्लब की ओर चल पड़े ।

चुनाव की सभा अभी शुरू न हुई थी । इस भीड़ मे सभी लोग रूसी जवान ईवान चर्नीशोव की ओर देख रहे थे । चर्नीशोव रेलवाई की वर्दी पहने था । तेजेन शहर के तुर्कमानी और रुसी मजदूरो मे सब से अधिक आदर चर्नीशोव का ही था । सभी लोग जानते थे कि चर्नीशोव ज़ार और ज़ार के अमलों का कट्टर दुश्मन था । लोग यह भी जानते थे कि बागी अजीज के साथियों और चर्नीशोव में गहरी मित्रता रही थी ।

अरतैक के मन मे सब से पहले चर्नीशोव ने ही अन्याय के विरोध का बीज बोया था परन्तु अश्काबाद जेल से छूट कर लौटने के बांद अरतैक चर्नीशोव से मिल न पाया था । चर्नीशोव सभा के लिये बढ़ती हुई भीड़ में खड़ा सरसरी निगाह से आने वाले लोगों को देख रहा था । उसने देखा बांह पर लाल पट्टा बांधे एक फौजी सिपाही इधर-उधर कुछ पूछता फिर रहा है । कुलीखां लंगड़े को देख सिपाही ने उस से भी अपना सवाल पूछा—"मैं अरतैक बबाली से मिलना चाहता हूँ, वह कहां होगा ?" कुलोखा ने सिपाही की बात की ओर कुछ ध्यान दिया और एक ओर निकल गया ।

चर्नीशोव बढ़कर सिपाही के पास पहुंचा और बोला- "अरतैक बबाली से मिलना चाहते हो ? क्यों; क्या काम है उस से ?" मन ही मन चर्नीशोव घबराया, "अरतैक अभी हाल ही में तो अश्काबाद से छूट कर आया है, क्या कोई और मुसीबत उस के सिर आ पड़ी ?"

सिपाही ने हामी भरी —"हाँ मैं अरतैक से मिलना चाहता हूँ" । "इस से पहले तो तुम्हें तेजेन में कभी नहीं देखा !"— चर्नीशोव ने फिर पूछा, "कहां से आ रहे हो ?"

"अश्काबाद से ।"

चर्नीशोव का संदेह और बढ़ा—"क्या काम है अरतैक से ?" उस ने पूछा, "क्या सरकारी मामला है ?"

"नहीं"

"तो फिर क्या काम है ?"

"अरतैक मेरा गहरा मित्र है सिपाही ने मुस्कराकर उत्तर दिया"—मै आज ड्यूटी पर यहां आया था। आशा थी मित्र से मिलूगा परन्तु निराश ही हो रहा हूँ। मुझे आज ही रात अश्काबाद लौट जाना है।"

इस सिपाही ने अपना नाम तिशेन्को बताया। तिशेन्को ने चर्नीशोव को अश्काबाद जेल में अरतैक से परिचय और मित्रता होने और जेल मे अरतैक पर बीती बातों की कहानी सुनाई। चर्नीशोव ने भी बताया कि अरतैक उस का भी पुराना मित्र है। जेल से आकर अरतैक उस के मकान पर आया था। चर्नीशोव मकान पर न था इसलिये अरतैक उस की पत्नी से ही बात कर लौट गया। वह स्वयम् अरतैक को खोज रहा था। अरतैक शहर से चालीस मील दूर अपने गांव में है।

चर्नीशोव और तिशेन्को आपस में बातचीत करने लगे। तिशेन्को को जब विश्वास हो गया कि चर्नीशोव कम्यूनिस्ट है तो उस ने अश्काबाद की हालत उसे कह सुनाई कि मजदूरों की जो पंचायत चुनी गई है उस में सब पुराने सरकारी अफसर, पादरी, सोशलिस्ट रेवोल्यूशनरी लोग भर गये है। तुर्कमान मजदूरों और किसानो में से कोई भी आदमी तुर्कमानी सोवियत में नहीं लिया गया। एक काउण्ट (बड़े जागीरदार) साहब जो इलाके के गर्वनर कोल्माकोव के दोस्त है, सोवियत के प्रधान बन बैठे हैं।

चर्नीशोव यह बाते पहले ही सुन चुका था और एक साथी को अपने विचारों से सहमत पा उसे सतोष भी हुआ परन्तु उस ने खुल कर बात न की। ज़ार के राज में उसे बरसों पुलिस से सावधान रहना पड़ा था। अब ज़ार का राज समाप्त हो चुका था परन्तु बेमतलब बात न कहना उस की आदत हो गई थी। और उस ने सोचा—कौन जाने तिशेन्को अश्काबाद के ज़ार-पक्षी लोगों का ही आदमी हो और उस का भेद लेना चाहता हो।

चर्नीशोव की इस सावधानी से तिशेन्को उस के मन का सन्देह भांप गया परन्तु चर्नीशोव की रेलवे मज़दूर की वर्दी देख तिशेन्को के मन में सन्देह होने का कोई कारण न था। वह चर्नीशोव को बांह से थाम एक ओर ले गया और उसे अपना पार्टी का टिकट दिखा दिया। तिशेन्को का टिकट देख चर्नीशोव

ने दिल खोल दिया और तेजेन की हालत बताई कि शहर मे कम्यूनिस्ट पार्टी का कोई संगठन नही । उसे छोड़ केवल दो और पार्टी-मेम्बर शहर में थे और शहर के मज़दूरों का भी कोई अच्छा संगठन न था । सभा शुरू होने का समय हो जाने के कारण उन की बातचीत आगे न बढ़ पायी ।

सभा मे सब से पहले अश्काबाद की सोवियत से आये प्रतिनिधि ने लेक्चर दिया । उस ने ज़ार का अत्याचार समाप्त होने के लिये जनता को बधाई दी और कहा कि आज़ादी का यह युद्ध पूरी आजादी पाये बिना रोका नही जा सकता । उस ने जनता को समझाया कि फिलहाल जो चालू सरकार कायम की गई है उस के फैसलों को सख्ती से पूरा करना होगा ।

उस के बाद चर्नीशोव बोलने के लिये खड़ा हुआ उस ने कहा कि जार के राज में तुर्कमानिया की हालत खराब होना ज़रूरी था क्योंकि जार और उस के गुट्ट ने रूस के बाहर के देशों की जनता को चूस लेने के लिये ही इन देशो और इलाकों को अपने राज के जाल मे समेटा था । उस ने कहा कि ज़ार की सरकार अपने सहायक जागीरदारों और बड़े-बड़े धनी व्योपारियों को ही फायदा पहुँचाने की रीति पर चलती थी और जनता को असली हालत नही जानने देती थी । इस राज में देश और जनता बरबाद हो रहे थे । जार ने इतना बड़ा जंग छेड़ रखा था परन्तु इस जंग से जनता को मौत और कंगाली के सिवा और कुछ नहीं मिला । उस ने ज़ार की सरकार के अत्याचारों की कई मिसालें सुनाईं । उस ने कहा कि यह ज़ार की अत्याचारी नीति का ही परिणाम था कि १८१६ में तुर्कमानिया में बगावत कर अज़ीज ने अपने देश को ज़ार के राज और रूस से अलग कर लेने की कोशिश की और जनता ने भी अज़ीज़ को सहायता दी क्योंकि ज़ार के ज़ुल्मों से जनता की ज़िन्दगी दूभर हो चुकी थी । उस ने कहा—"पहले हम अपनी (अस्थायी) चालू सरकार से यह मांग करते है कि सब से पहिले इस जंग को खत्म किया जाय । जग से केवल धनी लोग फायदा उठा रहे हैं जनता इस मे पिसी जा रही है । जनता की सब से पहली माँग है कि किसानों को खेती के लिये जमीन और सिंचाई के लिये पानी मिले । ज़मीन, कारखानों और बाजार के प्रबन्ध पर जनता का कब्जा हो । अगर अस्थायी (चालू) सरकार इस मार्ग पर नही चलेगी तो यह सरकार भी ज़ार की सरकार जैसी ही बन जायगी ।"

चर्नीशोव की बातें सुन कर सभा में बैठे कुछ लोगों के चेहरों पर घबराहट झलकने लगी, खास तौर पर दारोग़ा, पंच और दूसरे पुराने सरकारी

अफ़सर आपस में ताक-झांक करने लगे। उन्हें ऐसे जान पड़ा कि पिछले गदर के मामले में उन की गिरफ्तारी की जाने वाली है। मुशी ने माल अफ़सर के कान के पास मुह कर कहा—"भैया अपने को क्या ? ज़ार हो, दारोगा हो सोवियत की पंचायत हो, अपनी बात चलनी चाहिये; फिर हम भी ज़ार हैं।"

एक पंच ने कहा—"यह लोग तो ऐसी बातें करते हैं कि अजीज़ की बगावत खुद गवर्नर ने, दारोगा ने, हम ने कराई हो। शहर पर हमला करने वाले डाकुओं का कोई कसूर नहीं था।" यह तो अजीब तमाशा है ?··· दूसरा बोला—"चुप ही रहो, भैया ! कोई सुन लेगा तो और मुसीबत होगी।"

चुनाव हो गया। चर्नीशोव और उस के साथियों के सिर तोड़ कोशिश करने पर भी चर्नीशोव को छोड़ दूसरा कोई मजदूर या किसान सोवियत मे न चुना जा सका।

दारोगा बाबा खाँ को चुनाव का यह खेल कुछ समझ न आया। इस चुनाव से फायदा क्या ? वह सोचने लगा—क्या चुने हुये लोग गवर्नर बनायेंगे ?··· तो फिर कर्नल आन्तोनोव क्या करेगा ? गवर्नर और दूसरे बड़े हाकिमो के रहते तो अफ़सर मनचाहा करते रहे अब जब यह ढेरों आदमी हुकूमत चलायेंगे तो कैसे निभेगी ? हुकूमत तो एक की चल सकती है पचासों की नही। गड़बड़ी मचेगी, शहर और गाँव सब बरबाद हो जायेंगे और क्या ? साथ चलते माल अफ़सर को पुकार वह बोला—"खोजा, मुराद खां, यह पंचों का चुनाव तो अपनी समझ में आया नहीं।"

"दरोगा हमे खुद इस का कुछ मतलब नहीं समझ आया"—माल अफसर ने उत्तर दिया।

"तो अब गवर्नर क्या करेगा ?"

कुली खां आगे-आगे लंगड़ाता जा रहा था। यह बातचीत सुन उस ने चाल धीमी कर दी और दारोगा के साथ-साथ चलता हुआ बोला—"समझ क्या नहीं आया ?·········गवर्नर को कौन कुछ कह रहा है ? वह गवर्नर तो गवर्नर ही रहेगा।

'तो यह सोवियत के पंच क्या करेंगे ? खाद ढोयेंगे ?"

"यह गवर्नर के मातहत मददगार हो जायंगे।"

उमेद खां ने एक लम्बी सांस ली—"सभी कुछ सामने आया जाता है भाई ! जिन्दा रहे तो अपनी आंखों देख ही लेंगे।"

५

खोये हुये बेटे को पाकर मां की छाती ठण्डी हो गई। अरतैक की मां नूर-जहां ने बेटे का सिर सीने पर रख उसे चूमा। कांपते हुये हाथों से उस के शरीर और कपड़ों को सहलाती रही।

"मेरे बेटे, मेरे लाल! तू कहां चला गया था?" उस की आंखों से झड़ते संतोष के आंसू थम न पाते थे।

मां के स्नेह की इस बाढ से स्वयम् अरतैक की आंखों मे भी आंसू छलक आये। उसे जान पड़ा कि मां के स्नेह की इस बहिया से १९१७ के सूखे से तपा तेजेन का पूरा देश सिंच गया।

शाकिरा भाई के गले में बाहे डाल मचल गई कि हम अब भैया को नहीं छोडेंगे।

अरतैक का चचा अधेड़ उम्र का आदमी था। उस की दाढी खिचडी हो गई था परन्तु शरीर की काठी मजबूत बनी थी। उस ने अरतैक को सुनाया कि वह दो बार तेजेन से अश्काबाद पहुंचा। दोनों बार वह तीन दिन और तीन रात जेल के फाटक के बाहर बैठा रहा। जिस किसी भी आदमी को फाटक के भीतर बाहर आते-जाते देखता उसी से अपने भतीजे की बाबत पूछतांछ करता और भतीजे से मिला देने के लिये गिड़गिड़ाता परन्तु कुछ न बना। अब अपने भतीजे को सही सलामत वह आ गया देख चाचा का चेहरा खुशी से चमक उठा।

महीनों से सूना, उदास और बेरौनक दिखाई देने वाला काला तम्बू प्रसन्नता और उल्लास से चहक उठा। अरतैक के मित्र और परिचित और बहुत से लोग केवल उस का नाम सुन कर ही उस से मिलने और बधाई देने आ

जुटे। जीत के जलसे का सा रंग बंध गया। एक ओर बड़ी सी देग में पकता भेड़ का मांस अपना सुरीला राग अलग से गुनगुना रहा था।

अरतैक का पड़ोसी बूढ़ा गरीब किसान खादिम भी अरतैक से मिलने आया। खादिम को भी अलनज़र बे ने बरबाद कर दिया था। उस ने अपनी दुख की कहानी अरतैक को सुनाई, "बे ने मेरी खत्ती खुदवा कर सब गेहू निकलवा लिया और ीट-पीट कर मुझे अधमरा कर दिया ......।"

"खादिम बाबा, दिल छोटा न करो"—अरतैक ने तसल्ली दी, "ज़िदगी रही तो एक दिन अलनज़र को भी समझ लेंगे। तुम्हारा सब गेहूं लौट आएगा।"

"तुम ज़िंदगी की शर्तों की बातें करते हो अरतैक बेटा!"—खादिम ने आस्तीन से आंसू पोंछते हुए कहा, "यहां मेरे बाल बच्चे सोते-जागते भूख से तड़पते रहते हैं और बे के अघाए हुए कुत्ते गेहूं की रोटियों पर नाक सिकोड़ रहे है।"

"बाबा घबराओ नही। तुम भूखे रहोगे तो हम लोग भी भूखे रहेंगे, हम खायेंगे तो तुम भी खाओगे। जब तक अपना वक्त नही आता मिलजुल कर जेसे तैसे निबाहना होगा।"

"बेटा, ज़िदगी में तुम्हें देख लिया बस सब पा लिया। अब मुझे कोई दुख नहीं। तुम से अपने दुख की बात कह ली। नही तो मैं अपनी बात किस से कहता।" खादिम ने आंसू पोछ लिए और उस का चेहरा उत्साह से चमकने लगा, वह अरतैक को सुनाने लगा, "ऐना बहुत बहादुर लड़की है। उस ने तुम्हारे पीछे कमबख्त बे का मुह काला कर, उस की नाक काट ली! बे ने लोगों के सामने अपनी इज्जत रखने के लिए अपने लड़के बल्ले के लिये ऐना की जगह उस भोंडी बेहूदा छोकरी, अतैरी को ब्याह लिया। बे की बेइज्जती और परेशानी की बात सुनते समय खादिम हंस-हस कर जमीन पर लोट-लोट गया! और फिर गम्भीरता से सीधे बैठ अपनी दाढ़ी सहलाते हुए उस ने पूछा —"बेटा अरतैक, अब ऐना को कब घर ला रहे हो?"

"उस की सौतेली मां 'मामा' भला मानेगी?"—अरतैक ने उत्तर दिया।

"अरे मामा? वो तो ऐसे मानेगी कि....? अभी उसे मुराद के बेलचे का डडा भूला नही होगा। भूल गया होगा तो बेलचा तो अभी मुराद के पास है ही! ऐना को अब अपने घर आना ही चाहिये। वह अपने घर की मालिक क्यों न बने?"

"खादिम बाबा, तो फिर जैसे तुम कहोगे, होगा।"

"नहीं भैया, अब देर ठीक नही। बेचारी ने बहुत सह लिया। ऐना को जल्दी से जल्दी घर ले आने के लिये अरतैक स्वयं ही उतावला था पर वह चाहता था, अलनज़र से बदला लेने और ब्याह का जलसा एक साथ ही हो। एना को यह देर पसन्द न थी। उस ने अरतैक को समझाया—"तुम बे की बात से मन क्यों खट्टा किया करते हो? बेइज्जती तुम्हारी हुई है कि बे की? बताओ? तुम ने उस के लड़के को पीटा, उस का घोड़ा भी छीन लिया और तुम्हारी ऐना तो तुम्हारे पास है। अब अगर वह बात बढ़ाये तो तुम जबाब दो! यो ही क्यो झगड़ा बढ़ाना चाहते हो? मै ही जानती हूं तुम्हे एक बार खो कर मैंने कैसे पाया है··· अब यह झगड़े मै तुम्हे नही करने दूगी।"

एक तरह ऐना की बात ठीक ही थी परन्तु अरतैक का मन न माना। बे से उस के अपने ही झगड़े की बात तो न थी। सूखे के उस बरस मे बे ने अरतैक के घर का और दूसरे सभी किसानों के घर का सब अनाज समेट लिया था। बस्ती के बहुत से लोग अपना अनाज खो सोते-जागते भूख से तड़प रहे थे। उस बरस तो फसल की कोई आस थी नही और कौन जानता था कि अगली फसल तक कितने मरेंगे और कितने जियेंगे। बस्ती के लोग यों मर रहे थ और बे मुट्ठी-मुट्ठी भर अनाज के दामो ऊंट और घोड़े खरीद कर समेटता जा रहा था। अरतैक यह सब कैसे सह जाता?

ऐना और अरतैक की मां दोनों ही उसे शान्त रहने के लिये समझाती रहती परन्तु उस के सीने की आग बार-बार भड़क उठती थी। वह यह कैसे भूल जाता कि बे ने उस की खान्दानी बस्ती से उस का तम्बू उखाड़ कर बाहर निकाल, उस का अपमान किया है। जब तक वह अपनी पुरानी जगह अपना तम्बू न जमा ले अपमान को कैसे भूल जाय? वह अपनी पुरानी जगह जमना चाहता था।

मां आशंका से विरोध करती थी इस बात के लिये झगड़ा और मुसीबत सिर लेने की क्या जरूरत? सभी जगहें एक सी ही है। धरती-धरती में क्या फरक, फिर देखा जायगा, अभी रहने दो! हमें यहां क्या तकलीफ है। उस के चाचा ने भी समझाया—नहीं यह नहीं हो सकता। अभी तुम कहीं नहीं जा सकते बरस भर से पहले मै तुम्हें कहीं नही जाने दूंगा।

खादिम ने कहा, माँ और चाचा ने जोर दिया, मुराद भी राजी था और ऐना को भी व्यर्थ देर भली न लग रही थी इसलिये अरतैक ने ब्याह का दिन पक्का कर लिया। मुराद ने लड़की के लिये 'कल्याम' (लड़की का मूल्य)

की कोई बात न की। उल्टे उस ने कहा—"तुम लोग ब्याह के लिये जितने चाहे मेहमानों को न्योता दे लो। दावत का इन्तज़ाम मैं खुद करूंगा।"

अरतैक के मित्र, उस के चाचा के सगे सम्बन्धी और मित्र और अलनजर बे से नाराज सभी लोग इस ब्याह के अवसर पर इकट्ठे हुये। उस साल सूखे के कारण लोगों के घोडे अच्छी हालत मे न थे इसलिये बरात में सवारों का वह रंग न हो सका जो बे के लड़के के ब्याह में जमा था। फिर भी पन्द्रह घुड़ सवार और पन्द्रह स्त्रियां ऊँटों की सवारी पर बरात की यात्रा में चलीं।

बरात जान बूझ कर अलनजर बे के तम्बुओ के सामने से निकली और जान बूझकर खूब हो हल्ला किया, धूल उड़ाई और आकाश में गोलियां भी चलाईं। खादिम एक दुबले से टट्टू पर सवार, हाथ में मोटा डंडा लिये बरात के आगे-आगे था। उस की लम्बी-लम्बी टांगें टट्टू के पेट के नीचे लटक रही थीं और उस के नंगे पांव रकाबों से बाहर फैले हुये थे। बे के खेमों के सामने आकर खादिम ने ललकारा—"अबे ओ बे के गलीज कुत्ते, हिम्मत है तो निकल बाहर"!

बे की बहू अतैरी जलीं, शोर सुन भागी हुई खेमे के दरवाज़े पर आई। खादिम को देख, कहकहा लगाकर हंस उठी। बे का सब से प्यारा घोड़ा "मालकौश" इस गर्द गुबार, चीखो-पुकार, गोलियों की गड़गड़ाहट और रंग-बिरंगे कपड़ों को देख भड़क उठा और अगाड़ी पिछाडी तुड़ा बस्ती में भाग निकला।

अलनजर बे का तम्बू बरात के पाँव से उड़ी धूल से भर गया और बरातियों की दागी हुई बन्दूकों से उस के कान बहरे हो गये। क्रोध में पागल हो उस ने अपनी छोलदारी के कोने से दुनाली बन्दूक उठा ली और दरवाज़े की ओर लपका फिर ठिठक गया। बन्दूक उस ने एक ओर पटक सिर को दोनों हाथों में थाम एक ओर तहा कर रखे हुये कालीनों पर जा बैठा। वह सोचने लगा—यह लोग किस तरह मेरा अपमान कर रहे हैं? मैंने नकद सोने का कल्याम (बहू का मूल्य) देकर लड़के के लिये मुराद की लड़की ली थी। उसे यह लोग छीन ले गये। अब यहाँ आकर मेरे सामने मुंह चिड़ा रहे हैं और मेरे सिर पर धूल डाल रहे हैं। क्या कयामत आ गई है! लोगों को अदब आबरू का कोई ख्याल नहीं रहा। ज़ार मर गया तो क्या, मैं तो अभी जिन्दा हूँ! मैं यह अपमान नहीं सह सकता।

अलनज़र ने फिर बन्दूक उठा ली परन्तु इसी समय उसे पुकार सुनाई दी—"हाय मालिक, मालकौश भाग गया........" बे तम्बू के दरवाज़े की ओर

लपका परन्तु दरवाज़े पर आकर फिर ठिठक गया। बन्दूक उस के हाथ से सरक गई। उसे सूझ न रहा था कि क्या करे ? उस का मन चाहता था स्वयं अपना मुंह नोच ले।

"मालकौश भाग गया......" चिल्लाती हुई शादाब तम्बू में घुस आई परन्तु बे का चेहरा देख उस का अपना चेहरा फीका हो गया। वह और भी तीखे स्वर में चिल्ला उठी —"हाय मालिक तुम्हे क्या हो गया ?.. गोली तो नहीं लग गई ?"

बे ने सुध सम्भाली और शादाब को उल्टे हाथ से पीछे की ओर धकेल चुप रह कर लौट जाने के लिये कहा। शादाब डर कर तम्बू के पिछवाड़े निकल गई।

रूमाल से मुंह पोंछ वह अपने आप को समझाने लगा—"जो हुआ होने दो ! जुओं से तंग आकर कोई अपना कपड़ा थोडे ही जला देता है ! इन कमीनों के मुंह लगने से क्या फायदा ? यह कमबख्त सोते-जागते भूख से बिलख रहे हैं इसीलिये तो मरने-मारने का बहाना खोज रहे हैं ! रसूल पाक का हुक्म है— "गुस्से को मारो ! मै भी ताव में आ गया था.. ...अल्लाह ने बांह से थाम कर रोक लिया।"

× × ×

बरात के लोग मुराद के घर चाय पीने बैठे। बावर्ची ने बहुत शौक और कारीगरी से तैयार किये पुलाव के देग का ढकना खोल लकड़ी की कड़छी से पुलाव को हिलाया। दूर-दूर तक महक फैल गई। मामा दुविधा मे थी कि वह सब के साथ हंसी-खुशी मे साथ दे या रूठ कर एक ओर हो जाये ? इस आमले में उस की जो कुछ भी उपेक्षा और अपमान हुआ था इसे तो वह सह जाती कि लड़की का कल्याम नही लिया गया। कल्याम ही न लिया जाता तो भी एक बात थी। यहां उल्टे दहेज़ दिया जा रहा था और दहेज़ के साथ बरात की खातिरदारी का खर्च भी लड़की के घर पर आ पड़ा था। मामा मन ही मन सोच रही थी— ऐसा तो कभी किसी ने सुना न था ! ब्याह से पहिली सांझ पति से उस की काफी कहा सुनी हो चुकी थी। मन में तो वह चाह रही थी कि फिर बात बढ़ाये परन्तु मुराद के बेल्चे के डंडे की याद न भूलती थी। यह याद आ जाने पर वह कमर की, डंडे से परिचित जगह को दबा कर, चुप रह जाने के सिवा क्या करती ?

अवसर के विचार से मामा ने भी अपना लाल रेशम का सब से बढ़िया जोड़ा निकाल कर पहना था। मेल जोड़ मे आई स्त्रियो के सामने उस ने भरसक

अपने मन का दुख प्रकट न होने दिया। परन्तु जब बहू को लेने आई स्त्रियां बिदाई के लिये तैयार होने लगी, वह बरात की स्त्रियों से बिदाई का सगुन मांगे बिना न रह सकी। बरात के साथ आई स्त्रियों ने नेग के पन्द्रह रूबल (रूसी रुपये) दे दिये परन्तु मामा अड गई कि और चाहिये। इस समय उसे मुराद के डंडे का भी डर न था, क्योंकि मेहमानों के सामने मुराद मार-पीट न कर सकता था। बरात की स्त्रियों के लिये कठिनाई यह थी कि उन के पास उस समय और रुपया था ही नही।

अरतैक यह उलझन देख परेशान था। कुछ सोच कर वह झगड़े की जगह पहुंचा और ऊंचे स्वर में बोल उठा—"क्यों तुम सब लोग मामा के पीछे पड़ी हो जी ? झूठ-मूठ बाते बना रही हो ?" वह बनावटी गुस्से में बरात की औरतों पर और ऊचे चिल्ला उठा, "तुम्हारा ही नाम ले कर कोई ऐसी बातें कहे तो तुम्हे बुरा नही लगेगा ? यो ही कहे जा रही हो। तुम उस की बात तो सुनो ! ढंग से बोलो ! तुम से वह पैसा क्या मांगेगी, अरे चाहे तुम ढंग से मांग लो तो और अपने पास से दे दे !"

मामा का सीना अभिमान से फूल उठा। गर्दन ऊंची कर वह बोली— "देख लो दूल्हा, कोई सुनता तो है नहीं, यों ही पीछे पड़ गई। मुझे क्या ऐसा कमीनी समझ लिया है ? मैने कल्याम भी नही लिया। मैने कहा, बरात का पुलाव हम करेगे ! तुम लोग कहो तो ऊंटों का भाड़ा भी मै चुका दूं ? घुड़-सवारों का नेग मै दे दूं ? पर बात तो सुनो ! दूल्हा बेटा, तुम्हीं समझाओ इन लोगों को। मेरा तो जो कुछ है, अब तुम्ही लोगों के लिये है।"

तेजेन में रिवाज़ चला आया है कि बिदाई के समय दुल्हन को कालीन पर बैठाल कर, घसीटसे हुये घर से बाहर ले जाते है। ऐना ने इस से इनकार कर दिया और एक चादर ओढ़ बाहर निकल आई। उसे ऊंट पर सवार कराने के लिये स्त्रिया आगे बढ़ी तो उस ने इस मे भी सहायता लेने से इनकार कर दिया और लपक कर ऊंट पर सवार हो गई।

६

खादिम, जब देखो अलनज़र बे के लड़के बल्ले की शादी का क़िस्सा सुनाने लगता:—"जब बे ने ऐना को हथियाने में मुह की खाई और आस-पास की बस्तियों में उस के नाम पर थू-थू होने लगी तो उस ने दूर की बस्तियों मे बहू के लिये खोज करनी शुरू की। तेजेन के पच्छिम मे दूर बसने वाले अगेत खानदान की उस ने बहुत प्रशंसा सुनी थी। बे ने उन लोगो के यहां सम्बन्ध मिलाने वाले भेजे।

बे ने अंगेत लोगों की लडकियों की बहुत बड़ाई सुनी थी—अगेतों की बेटियां घर का दिया होती हैं। कहावत थी--अल्ला ने रूप बाटा था तो अंगेतों की बेटियां दो हिस्से ले आई थीं और वैसी ही वे सुघड़ और सुलच्छनी भी थी। अंगेतों की बेटी घर लाकर कभी कोई पछताया नहीं।

अगेत लोग पहले तो इस सम्बन्ध के लिये तैयार न हुये। उन्हें एतराज़ था कि जिस दूल्हे की दुलहन छोड़ गई उस घर मे वे लोग अपनी लड़की कैसे दे दें? परन्तु फिर अलनज़रों के खान्दान के नाम की बात से वे तैयार हुये तो कल्याम भी उन्होंने खूब बढ़ाकर मांगा—चालीस ऊंट, चालीस रेशमी चोगे, चालीस भेड़ें, चालीस बोरे चावल, पांच घड़े मीठा तेल, पाच पीपे चीनी और एक पीपा हरी चाय की पत्ती।

आखिर अंगेतों की बेटी बुरके में मुंह छिपाये अलनज़र बे के खेमों मे आई और बल्ले के तम्बू में उस का प्रवेश कराया गया। बे ने इस अवसर पर बस्ती के लोगों को दिल खोल कर दावतें दीं!

दूल्हे के घर की रसमें होने लगीं। बे के घर के लोग और मेहमान 'मुह दिखाई' के लिये बहू को घेर कर बैठे थे। बहू ने मुह उघाड़ने से इनकार कर

दिया। इस के बाद दूल्हे के जूते उतारने की रसम की गई। बहू ने जूते उठा तो लिये परन्तु सम्भाल कर कोने मे रखने के बजाय, क्रोध में जूतों को बाहर फेंक दिया। जब बहू को दूल्हे की खूटी पर लटकी टोपी लाकर देने को कहा गया तो उस ने बैठे-बैठे सिर हिला दिया और उठी ही नही।

मेहमानों में से किसी ने चुटकी ली—"भैया बहू का मिज़ाज है। यह बल्ले खाँ को नचा देगी!"

परन्तु बल्लेखाँ बहुत प्रसन्न था। वह भौहें चढ़ा कर बोला—"बल्लेखां को क्या अपने जैसा समझ लिया है? यहां बीवी को इशारे पर न नचाया तो नाम बदल देना।"

बहू न दूल्हे की बात सुनी तो आचल की आड़ से उस की ओर घूर कर देखा जैसे गली के कुत्ते अपने वहाँ घुस आये गैर कुत्ते को देखते है और दांत पीस लिये।

पहले चुटकी लेने वाला फिर बोल उठा—"हम शर्त बदते है बहू ने अगर बल्ले खा को हथेली पर सरसों जमा कर न दिखा दी!"

पहले दिन बहू अपना चेहरा दोनो हाथो से आचल मे लपेटे रही परन्तु दूसरे ही दिन उस ने न केवल घूँघट उलट दिया बल्कि अपने तौर भी दिखने लगी। बे के घर के लोगों ने प्यार से अतैरी का नाम 'जली' (चमन की हिरनी) रखा था लेकिन महीना बीतते-बीतते लोग उसे अतैरी-बहरी * पुकारने लगे। उस के गठीले हठीले बदन की ऐंठन दोहरी तेहरी पोशाक मे भी छिप न पाती।

शादाब दूसरी बहुओं को अपने हुक्म और दबदबे मे रखती आई थी और उन्हें अपने घर के कायदे से चलाती थी। अतैरी से सामना होने पर पहले ही अवसर पर शादाब ने कान छू कर तोबा कर लो।

अतैरी ने पहले ही दिन सास को सुना कर कह दिया—"मै कोई तुतलाती बच्ची तो हूँ नही कि किसी से बोलना सीखूगी ······किसी को हुक्म चलाने का शौक है तो अपनी लड़कियों पर पूरा किया करे।"

महीने भर में अतैरी की आवाज और कदमों की धमक खेमे के कोने-कोने मे गूज उठी। लोगो की बात पूरी हुई—अतैरी सचमुच बल्लेखा के सिर पर चढ़ बैठी। शादाब दबे-दबे कहती—"बाबा, यह तो ससुर की दाढ़ी थाम कर नचाती है।"

---

*एक खूखार शिकारी चिड़िया जो छोटे-छोटे पक्षियों का शिकार करती है।

एक दिन तन्दूर पर रोटी सेकने की बारी के लिये अतैरी का बड़ी बहू से झगड़ा हो गया। बड़ी बहू ने कहा--"पहले आटा ले कर मैं आई हूं! पहले मेरी बारी है।"

"बारी-वारी मैं नहीं जानती"—अतैरी ने जबाब दिया, "पहले मैं रोटी सेकूंगी। हट परे!"

अतैरी बड़ी बहू की परात परे हटाने लगी तो बड़ी बहू ने उस का हाथ थाम लिया। अतैरी ने अपना हाथ छुडा एक हाथ बड़ी बहू की गर्दन मे डाला और दूसरे से उस का कमर बन्द पकड़ पहलवानो की तरह उठा राख के ढेर पर पटक दिया। ऊपर से उस के आटे की परात भी उस के सिर पर औंधा दी और गाली दे कर बोली—"यह ले खाज की मारी कुतिया! ले अपनी बारी ले!"

अलनज़र बे के खेमों में दो पाए तो क्या चौपाए भी अतैरी से कांपने लगे। यहां तक कि बड़े-बड़े बदमिजाज ऊंट भी उसे देख ऐसे सन्नाटा मार जाते कि भेड़िए का सामना हो गया हो परन्तु एक बात किसी को समझ न आई कि अतैरी जाने क्यों, बे की भुलाई हुई, सताई हुई बेज़बान पहली बेगम मेहली' पर क्यों रीझ गई।

अतैरी को ससुराल आए अभी बहुत समय नही बीता था कि एक दिन बे ने मेहली को इतना पीटा कि बेचारी मे रोने-चिल्लाने का भी दम न रहा। यह देख अतैरी गुस्से मे दांत पीसती अपने रूमाल का छोर चबाती रही। उस का जी चाह रहा था कि मेहली की तरफ से बे की खबर ले परन्तु जैसे-तैसे मन मार कर रह गई क्योंकि अभी वह नवेली दुल्हिन थी और ससुर के सामने बोली नही थी। कुछ ही दिन बाद फिर अलनज़र लाठी ले मेहली को पीटने लगा। अब की अतैरी ने आ बे के हाथ से लाठी छीन ली और लाठी ले एक ओर खड़ी हो गई।

बे की आंखों से चिनगारियां बरसने लग गईं। उस ने एक ओर पड़ा बेलचा उठा कर अतैरी को ललकारा- "बदतमीज छोकरी, तेरी यह मजाल?"

अतैरी लाठी उठा और सीना निकाल बे के सामने आ गई—"हिम्मत है तो मार मुझे, देखू तेरी मर्दानगी?"

शादाब बेगम भागी हुई आई और बे की बांह पकड़ बोली—"क्या जुल्म कर रहे हो? शर्म नहीं आती?"

अतैरी के सिर पर वार करने के लिए बे के हाथ में उठा बेलचा जहां

का तहां रुक गया और धीमे-धीमे धरती पर आ टिका। बे अपना क्रोध वश में करने के लिए लम्बी लम्बी फुफकारें छोड़ता खड़ा था। अतैरी-बहरी और आगे बढ़ आई। बे की ठोड़ी अपनी उंगली से उचका कर बोली—"ज़रा अपनी इस दाढ़ी का तो ख्याल कर ! लानत है तुम पर ! इस गरीब मेहली ने तेर क्या बिगाड़ा है ? ग़रीब एक टुकड़ा खा कर चीथड़े लपेटे दिन काट रही है सब जालिम इस ग़रीब को नोच-नोच खा रहे हो !"

पिटते-पिटते मेहली में इतना भी दम न रहा था कि पिटने का विरोध करती या रो भी सकती परन्तु अतैरी को अपनी ओर से बोलते देख मेहल का जी भर आया और वह चीख कर रो पडी। इस के बाद से मेहली पर मा न पड़ती। कम से कम अतैरी के आस-पास रहने पर कोई मेहली से कुछ न बोलता।

बहू के हाथों बेइज्जती सह कर अलनजर बे जल भुन गया। उस न अपने लड़के बल्ले खां को बुलाया और गाली दे कर फटकारा "तेरे जैः लड़के से तो मै बे औलाद मर जाता तो अच्छा था। तू एक औरत को का नहीं कर सकता ? तू दुनिया मे क्या करेगा ? औरत को भी बस नहीं क सकता तो सिर से टोपी उतार कर औरतों की तरह रूमाल बांध ले। औरत तेरी बांदी है या तू औरत का गुलाम है। तूने उसे सिर पर चढा कर मेर इज्जत धूल में मिला दी।"

बल्लेखां सिर लटका, आंखें चुरा कर बोला - "मै क्या करूं ? तुम्हीं न उसे लाकर मेरे गले चक्की का पाट बाध दिया है।"

"मै क्या करूं ?"—क्रोध मे विवश हो बे भड़क उठा, "जा डूब मर किसी अंधेरे कुए में ! अबे तू अलनज़र की औलाद है ?...... पूत पालने मं ही सिखाए जाते हैं और बीबी को पहले दिन बस किया जाता है। मार-मा कर सुजा दे कमबख्त को ! मर जायगी तो लड़कियों की कमी नहीं है दुनिय मे ! बच रहेगी तो इशारे पर चलेगी ! मर्द की आवाज़ पर औरत कांप न उठे तो वह मर्द क्या ? वह बवीत क्या ?"

बल्लेखां ने सिर झुकाए ही उत्तर दिया—"उसे मारना-पीटना मेरे ब का नहीं। कहो मै घर छोड़ जाऊ ?"

बे और भी नाराज़ हो गया। "मुह काला करके दूर हो जा मेरे सामने से ?

बे, शादाब और बल्लेखां कोई भी अतैरी-बहरी को बस न कर सका बे ने अपने विश्वासपात्र मित्रों से राय ली कि कुछ जादू-टोना किया जाय, ब

को कैसे बस में किया जाय ? कोई भी उपाय न बता सका । मौलाना खोजा ने उसे समझाया—"मालिक बे, बिगड़ैल औरत से तो अजदहे भी कांपने हैं"—अपनी बात के समर्थन मे मौलाना ने किताब में पढी एक कहानी सुना दी और फिर समझाया, "बिगड़ैल औरत का इलाज ? कमबख्त को बेच नही सकते, घर से निकाल नहीं सकते, कत्ल नहीं कर सकते । बस खुदा हाफिज है । गले ढोल बंध गया है तो गम खाओ, चुप बैठो । जितनी कूद-फांद करोगे उतना ही ढोल और बजेगा । निभाने के सिवा उपाय क्या है । पड़ी रहने दो कमबख्त को !"

निराश हो बे खुदा से पनाह मांगने लगा—"या अल्ला, इस मुसीबत से तेरे सिवा मुझे कौन बचा सकता है ?"

अतैरी-बहरी अपने जोर पर अलनजर बे के खेमों की मलका बन बैठी । मेहली बरसों तक मारपीट और उपेक्षा सह कर सूख कर कांटा हो गई थी । उस की सूरत भी घिनौनी और बेरौनक हो गई । अतैरी का राज मेहली के लिये फला । उस के दिन फिर गये । मारपीट न हो पाती और खाना कपडा भी मिलने लगा । शरीर पर मांस चढने लगा । गालों पर सुरखी और आँखों में चमक आ गई । वह रेशमी पोशाक पहन सिर पर मशद्दी शाल ओढने लगी । उस की चाल मे चुस्ती और मटक भी आ गई । अब वह कुयें से पानी लेने जाती तो लोग घूरने भी लगते । और तो और अब वह अलनज़र को भी भली लगने लगी……।"

× × ×

जंग खत्म हो गई थी । मई के महीने में बे का वल्लेखां के जन्म से पहले पला-पलाया गोद लिया लड़का मावेद भी लाम पर से लौट आया । बे ने महेली के रोने-पीटने की परवाह न कर ज़ार के अफसरों को प्रसन्न करने के लिये लिये मावेद को लाम पर भेज दिया था । मावेद को जीता-जागता लौट आया देख मेहली खिल उठी । अब मेहली के ओठों पर हंसी नाचती रहती, उस के गाल थिरकते रहते और निगाहें भी चंचल हो उठी ।

मावेद के कुछ बदले हुये रंग देख अलनज़र बे सनका । मावेद की चाल-ढाल, उठना-बैठना, बोलना, सभी बातें बदल गई थीं । अब वह रुसियों की तरह हाथ मिलाता था । बे अपने मन की शंका दबाये रहा और गोद लिये बेटे को प्यार से पुकार कर बोला—"आओ बेटा, तुम्हें देख जान में जान आई । दिन रात मन कांपता रहता था । लाम पर जाने कब क्या हो जाय ? हज़ार

शुक्र अल्ला का तुम आ गये। बेटा, तुम ने लोगों के सामने मेरा सिर ऊँचा कर दिया ......" बे शादाब बेगम को पुकार कर बोला, "बेगम, खुदा का शुक्र करो, घर का लड़का खान्दान का नाम उजला कर लाम पर से लौटा है। खुशी का मौका है। कुछ खाने-पीने का इन्तज़ाम किया है तुम ने ! आने जाने वाले सभी लोगों के लिये भी चाय-पुलाव का खयाल रखना।" और फिर मावेद को सम्बोधन किया—"बेटा, मैं ही जानता हूँ कैसे सीने पर पत्थर रख जार का ज़ुल्म बर्दाश्त कर तुम्हे लाम पर भेज दिया। क्या कहूँ, एक तरफ़ तुम्हारे लिये सीना कट-कट कर रह जाता था, दूसरी तरफ़ और मुसीबतें सिर पर टूट पड़ी। मालकौश को डाकू उड़ा ले गये और फिर अज़ीज ने बगावत की तो लोगो ने गवर्नर के यहां जा कर चुगली कर दी कि मै भी बागियों के साथ हूँ। अब तुम्हें क्या बताऊँ ? तुम्हारे जाने के बाद मैंने गवर्नर के यहां दरखास्त दी कि कर्नल हमारे खान्दान से किनारा खाता है इसलिये मेरे बेटे को जबरन भरती करा लिया गया है। सुल्तान जार के वफादार खान्दानों के लड़को का लाम पर भेजा जाना बहुत बेइनसाफी है। तुम्हे वापिस बुलाने के लिये दरखास्त दी। मै तो हर दम तुम्हारी राह तकता रहता था। हज़ार शुक्र है खुदा का कि मेरी मेहनत बर आई और ज़िन्दगी मे तुम्हारा मुह देख लिया।"

मावेद जानता था उसे ब ने स्वयम ही लाम पर भिजवाया था और उस का दिल अपने जबरन बने बाप से जला हुआ था। लौट कर उस ने बे का दूसरा ही व्यवहार पाया। कुछ मेहली की ममताभरी पैनी-पैनी आँखों का भी असर था। उस के मन का क्रोध बुझने लगा। मावेद पर अपनी चिकनी चुपड़ी बातों का प्रभाव होता देख बे और भी बातें बनाने लगे—"बेटा, क्या कहूँ इतना समय तुम ने लाम पर कैसे बिताया होगा ? सोचते ही कलेजा मुह को आने लगता है। पर बेटा तुम ने मेरा नाम रौशन कर दिया। तुम्हीं घर के चिराग हो। बल्ले ने तो कुल का नाम डुबो दिया। लाम पर तुम्हें खाने-पीने को भी तो ठीक से नहीं मिला होगा। कैसे दुबला गये हो। तुम्हें किसी बात की फिक्र की ज़रूरत नहीं। ज़रा खुराक बढाओ और आराम करो ! और अब तुम्हारे ब्याह में भी देर नहीं होनी चाहिये। जो लड़की तुम्हें जंच जाय, बस तुम नाम भर बता दो ? तुम्हारा ब्याह हो जाय और फिर तुम्हारे लिये अलग से एक सफेद तम्बू लगवा दूं तो मुझे संतोष हो।" शादाब को बुला कर बे ने हुक्म दिया, "लड़के के लिये रेशमी जोड़े बनवा दो और मेहली से कहो, क्या

करती है दिन भर ? इस की जरूरत-खिदमत का ख्याल रखे ! चाय और खाना हरवक्त उस के सामने रहना चाहिये ।"

बे के मन मे मावेद से डर तो था । जब उस ने नौजवान को फुसला कर अपने प्रति संतुष्ट कर लिया तो यह भी ख्याल आया कि बदमाश अरतैक जो न कर गुजरे गनीमत । ऐसे समय बल्ले अरतैक का सामना क्या करेगा ? मावेद पर ही भरोसा किया था । इसलिये मावेद का और भी अधिक लाड़-चाव होने लगा ।

मावेद के साथ जबरन भरती किये गये बहुत से जवान मजदूरी के लिये बहुत दूर-दूर के इलाको मे भेज दिये गये थे परन्तु मावेद को भाग्य से तुर्कमानिया की रेलवे लाइन पर ही काम दिया गया था । वह दिन मावेद ने बड़ी कठिनाई से बिताए थे । उस ने बे को सहायता के लिए कई पत्र लिखे परन्तु उसे कभी कोई उत्तर न मिला । उन पत्रों की बात याद आने पर बे कहने लगा—"बेटा, मुझे सदा चिंता बनी रहती थी जाने तुम पर क्या बीत रही होगी, विदेश मे गाठ का पैसा ही काम आता है । तुम्हारे लिये मैन चार बार सौ-सौ रुबल भेजे । दो बार तो डाकखाने से और दो बार उधर जाते जान पहचान के आदमियों के हाथ ।"

"तुम तो जानते ही हो, इन डाकखानो का जैसा हाल है । पहुंचने की रसीद ही कभी नहीं मिली और न ही उन भले आदमियों ने लौट कर खबर दी । रुपया तुम्हे मिल तो गया था ।"

भरती के समय मावेद धेला-कौड़ी कुछ साथ न ले पाया था । पैसा जेब में न होने से मावेद आवश्यक चीजो के लिए तड़प-तड़प कर रह जाता । दूसरे साथियों और मजदूरों को गरीबी मे तड़पते देख और उन की बातें सुन-सुन कर मावेद के मन में ज़ार की सरकार और इस सरकार की छत्र-छाया में ढेरों दौलत बटोर कर, दूसरों के कंधों पर सवारी करने वालों के प्रति घृणा और गुस्सा भरता रहा । वह मन में सोचता रहता—बे स्वयं आराम और मज़े कर रहा है । मुझे मरने के लिये उस ने यहाँ भेज दिया है अगर कभी घर लौटूंगा तो उस मक्कार जालिम से अच्छी तरह समझूंगा । इन विचारों के कारण लाम से घर लौटने पर मावेद गुमसुम बना रहता परन्तु बे के खुशामद के व्यवहार और मेहली के लाड़ प्यार से उस के विचार बदलने लगे । बे आंखों में आंसू भर-भर मावेद को अरतैक के दुरव्यवहार और दूसरी ज्यादतियों की कहानी सुनाता रहता ।

"बेटा, मुझे तुम्ही से उम्मीदे है"—अलनज़र मावेद को समझाता, "बल्ले तो जैसा हुआ वैसा न हुआ। ये लड़का तो अपनी औरत से ही डर गया। तुम्हीं अरतैक से बदला ले कर मेरी रूह को शांति दे सकते हो। नही तो कब्र में भी मेरे दिल में बेइज्जती की आग दहकती रहेगी।"

मेहली के लिये तो मावेद का लौट आना मुर्दा शरीर में जान पड़ जाने जैसा हुआ। वह मावेद के गले मे बाँहे डाल, उसे चूम-चूम कर परेशान कर देती। मेहली की बाहें गले पर छूने और अपने सीने पर उस का सीना बार-बार दबने से मावेद का शरीर चंचल होने लगा। अतैरी की रक्षा में मेहली को किसी की मार और धमकी का डर न रहा था तिस पर उसे बहाना मिल गया कि बे ने उसे मावेद की खिदमत का खास ख्याल रखने का हुक्म दिया है – वह बेझिझक मावेद से चिपटी रहने लगी, जब देखो किसी न किसी बहाने उसी के पास बनी रहती। जब देखो मावेद के लिये चाय लिये खड़ी है। जब देखो साफ-सुथरी चायदानी और प्याले को आंचल से रगड़ चमकाती रहती। सुबह के नाश्ते मे वह उसे ऊटनी के दूध मे शहद और मक्खन मिला कर देती। खिलाते-पिलाते समय मावेद के शरीर से ऐसे सट कर बैठती कि उस की छातियां मावेद के शरीर से दबती रहती और उस की साँस मावेद की मूछों मे उलझी रहती।

खाने, पीने, पहिरने की यह पौबारह देख मावेद सोचता—बचपन में सही गरीबी और लाम पर भुगती मुसीबतों का बदला क्या अब ब्याज समेत मिल रहा है? परन्तु मेहली की बाबत सोच उसे घबड़ाहट होने लगती। वह सोचता—यह क्या तमाशा है? मै अलनज़र बे का लड़का हूं या मेहली का दोस्त? दोनों बाते साथ-साथ कैसे चल सकती है? कई दिन तक वह इस दुविधा में रहा आखिर एक दिन मेहली से उस ने साफ-साफ बात की—"देखा, मौसी, बे मेरा बाप है और तुम बे की बेगम हो!"

"पत्थर है वह तुम्हारा बाप?... जैसे तुम जानते नही?"

"यह तो तुम ठीक कहती हो, लेकिन बे मेरे लिये बहू ढूंढ़ रहा है और मेरा दिल तुम से लग गया है... ...अब बताओ क्या होगा?"

मेहली मावेद के गले में बाहें डाल उस से चिपट गई और उस के गाल से अपना गाल सटा कर आँखे मूंद पिघले गले से बोली—"नहीं यह नहीं हो सकता...... मै तो जान रहते तुम्हें नहीं छोड़ूंगी।"

"लेकिन बे क्या करेगा?"— मावेद का दिल धड़क रहा था।

"मैं कुछ नहीं जानती"—मेहली ने उत्तर दिया, "मेरे लिये जैसा खेमे के दरवाज़े पर बधा हुआ "अल्बा" (कुत्ता) वैसा बे ।"

"लोग क्या कहेंगे ?"

"लोगों से मुझे क्या लेना है ? बकने दो लोगों को ? क्या जान दे दूं लोगों के लिये ?"

"अगर बे जान गया तो ?"

"जब नहाने चली तो भीगने का डर ?" ज़िन्दगी भर मार ही तो खाई है । मेरा भी तो दिल है ?"

"तो फिर यहाँ गुजारा नही होगा !"

"मेरी जान, यहाँ कौन हमारे नाड़ गड़े है ? दुनियां में जगह की कमी नही है । यहाँ हमारे लिये कौन नेमते रखी है । अल्ला ने हाथ-पाँव दिये है । जहाँ हाथ-पांव हिलायेंगे चार रोटी कमा लेगे दिल को चैन तो मिलेगा ।"

मावेद ने मेहली को सीने से लगा लिया । मेहली की गाले अनार के फूल की तरह गुलनारी हो गई ।

"मेरी जान, मावेद ने मेहली के कान मे कहा—"सच कहू, मैं यहाँ बे के टुकड़ा की खातिर नही तेरे ही लिये पड़ा हू । नही तो इस बेईमान को कभी का लात मार जाता । तू मेरी, मै तेरा ! जो होता है, हो ! लेकिन जब तक अपना इंतजाम न हो जाय, बात दबाये रहो ।"

मेहली ने सिर झुका कर अनुमति दी और सोचती रही—मैं किसी की क्या परवाह करती हूँ । दुनियां जाय ठेंगे से । लेकिन अतैरी-बहरी भांप गई तो बुरा होगा ।

कुछ ही दिन बाद बे ने फिर मावेद से बात की—"बेटा, तुम ने अपने ब्याह की बाबत कुछ कहा नहीं, कौन लड़की पसन्द आती है । न हो, मै ही कोई लड़की देखू ?"

मावेद ने सिर झुका कर उत्तर दिया -"अब्बाजान, यह साल जैसा बीत रहा है, सब तरफ़ परेशानी और तगी है । सभी तरह के झगड़-बखेड़े, चल रहे हैं । मेरा ख्याल था······ इस काम में अभी जल्दी की ज़रूरत क्या ? ज़रा अमन और शान्ति हो जाने पर ही यह काम किया जाय तो ठीक हो ।"

मावेद के उत्तर से बे का मन हरा हो गया—"बेटा, तुम्हारे जैसे समझदार जवान से मुझे ऐसी ही आशा थी । जो तुम कहते हो वही ठीक है ।"

७

अश्काबाद के जेल से छूट कर आने के बाद अरतैक ने १९१७ के दुष्काल का साल अपने परिवार में रह कर ही बिताया। वह जेल में कमज़ोर हो गया था। अच्छा खाना और आराम मिलने से उस का शरीर पनपने लगा। वह चाचा के साथ खेतों में काम करता। उस का जीवन गांव के किसानों में घुल-मिल गया। वह उन के सुख-दुख का भागी हो गया। पुराने परिचित चेहरों पर आंखें गड़ाए, उन की बातें सुनता। वह सोचता रहता—लोग ज़ार की सरकार पलटने और आज़ादी की बाते करते हैं परन्तु कहां आज़ादी ? कैसी आज़ादी ? आखिर बदला क्या ? तब और अब में अन्तर क्या हुआ ?

ज़ार फरवरी में तख्त से उतार दिया गया था परन्तु सरकार का काम अब भी पुराने अफसरों के ही हाथ में था। अफसर लोग जागीरदारों और दूसरे बड़े आदमियों की राय और मदद से काम चला रहे थे। दो-चार चेहरे और नाम बदल गए थे। गवर्नर को अब कमिस्सार पुकारा जाने लगा। दरोगा, माल अफ़सर जैसे के तैसे रहे। तेजेन में रेल के क्लब में हुई सभा में जो पंच चुने गए थे वे भी चालू इन्तज़ाम का साथ देने लगे।

शहरों में गरीब लोगों और देहात के किसानों को ज़ार की पुरानी सरकार और केरेन्सकी की नयी अस्थायी सरकार में कोई भेद न जान पड़ा। दारोगा और दूसरे सरकारी अफसर पहले तो नयी पंचायती सरकार से बहुत डरे लेकिन कुछ ही दिन में उन्होंने देख लिया कि घबराहट व्यर्थ थी। ज़ार के राज में कुछ तो डर ज़ार के अफ़सरों का था, अब तो वे ही मालिक बन गए। गांवों की जनता का हाल अकाल के कारण बहुत बुरा था—न अनाज, न मांस, न दूध-घी ! किसानों के शरीर सूखे चमड़े से ढके ठठरी भर रह गए थे।

इस सूखे में किसान बरबाद हुए तो इस का कुछ असर दारोगा बाबाखां, माल अफ़सर खोजा मुराद और कुलीखां पर भी पड़ा। मरे-पिसे किसानों से इस हालत मे क्या वसूली हो सकती थी ? किसान लोग पेट की आग से व्याकुल हो, जमीने छोड़ शहरों की ओर चले गए। जहां कहीं मौका पा कुछ मज़दूरी-दिहाड़ी कर लेते और राशन की दुकानों के सामने घन्टो लाइन बांधे खड़े रहते। जो लोग गांवो मे रह गए वे रात के अंधेरे मे तीन-तीन चार-चार आदमी मिल, लाठी, बेलचा और टूटी-फूटी तलवारे ले, अलनजर बे जैसे अमीर लोगों की खत्तियां खोद अनाज चुरा लाने के लिए घूमते फिरते। कुछ हाथ लग जाता तो दस-पाच दिन पेट भर अनाज पा जाते और कभी अनाज के बदले मार खा कर घर मे सिर छिपा लेते। सरकारी अफसर इन लोगों का सामना न कर कतरा जाते। कभी-कभी यह लोग इतना साहस कर जाते कि सरकारी डाक ही लूट लेते। ईरान से माल आने-जाने पर रोक थी परन्तु अब चोरी-चोरी सब कुछ आ-जा रहा था।

सरकारी अफ़सरों की आमदनी का बड़ा सहारा थी— किसानों से मिलने वाली रिश्वते, नजराने और वसूलियां। किसानों की ऐसी हालत में उन से कुछ पा लेने का अवसर न रहा। अफसरों ने अपने गुजारे के दूसरे तरीके निकाल लिए। अस्थायी सरकार ने गांवों में सूखे और अकाल के कारण सहयोग सभाओं की मार्फत कुछ सामान सस्ते दामो देने का प्रबन्ध किया था। इस के लिए राशन कार्ड बांटे गए थे। अफ़सरों ने इन राशन कार्डों से ही अपना काम बताना शुरू किया।

फरवरी की क्रांति के बाद, दूसरे सूबों की तरह तेजेन में भी देहातों और शहरो में जनता की सहयोग सभायें बना दी गई थी। जनता को कुछ बताए बिना सभी लोगो के नाम इन सहयोग सभाओं मे लिख लिए गए। गांव के सभी किसानों के नाम कार्ड बना दिए गए। इन कार्डों के हिसाब से शहर के राशन दफ्तरों में चीनी, चाय, मक्खन, रोटी वगैरा सरकार के यहां से मंगा लिया जाता। अफसर लोग मन चाहे दामों इस माल की चोर बाज़ारी करते। किसानों को इस खेल का कुछ पता भी न था। उन के बाल-बच्चे भूखे तड़प रहे थे।

अरतैक का पुराना मित्र चरखेज़ अलनज़र बे के ही गांव में रहता था। एक दिन चरखेज़ तेजेन में सहयोग सभा के दफ्तर में गया। अवसर की बात, जिस समय चरखेज सहयोग सभा के दफ्तर में पहुंचा—कुली खां और

मुरतज्जिम (अनुवादक) ताशे खां में झगड़ा चल रहा था। झगड़ा राशन कार्डों पर हो गया था और बात-बात में बहुत बढ़ गया।

"ज़ुल्म की हद्द हो गई! अपनी पूरी बस्ती के किसानों के कार्ड तुम ने ले लिए! तुम्हारा पेट नहीं भरा? अब मेरे यहां के किसानों के नाम भी भरे ले रहे हो! उन के नाम तुम्हें काटने पड़ेंगे।"—ताशेखां चिल्ला कर बोला।

कुलीखां ने विरोध किया—"कौन कहता है वह नाम तुम्हारे किसानो के हैं? यह किसान तुम्हारे खरीदे हुए हैं? तुम्हारे गुलाम है? कौन हो तुम मुझ-से नाम कटवाने वाले?"

"तुम्हे काटने पड़ेंगे!"

"ज़बान सम्भाल कर बोल!" कुलीखां और बिगड़ उठा।

"क्यों, यह तेरे बाप की विरासत है?"

कुलीखां ने ताशेखां को बहन की गाली दे दी और ताशेखां ने उस के मुह पर घूसा दे मारा। दोनो गुत्थम-गुत्था हो गए। दफ्तर की मेजें, कुर्सियां उलटने लगी और आलमारी मे रखी हुई बोतले गिर-गिर कर टूटने लगी। पहरे पर खड़े सिपाही ने यह झगड़ा देख सीटी बजा दी। ताशेखां ने कुलीखां की गर्दन दोनो हाथो में ले ली और दबा कर उस का दम घोट देने को ही था कि दारोगा बाबा खां दफ्तर में आ गया। बाबा खां ने ताशेखा के हाथों से कुलीखां की गर्दन छुड़वाई। गर्दन छूटते ही कुलीखां ने एक बार ताशे खा के सिर पर वार कर दिया परन्तु बाबा खा ने उन्हें फिर भिड़ जाने से रोक लिया और झगड़े का कारण पूछने लगा।

"देखो इन बेवकूफों को?" कारण सुन उस ने दोनों को फटकार कर कहा, "यह पढ़े-लिखे आदमियों की हालत है कि नामों के लिए झगड़ रहे है! मै तो काला अक्षर भैंस बराबर जानता हूं लेकिन जितने चाहो नाम लिख सकता हू। नाम मै बोलता हूं। नामो की कमी है? तुम कार्ड लिख-लिख कर ऊट लाद लो!"

"अरे बस्ती के किसानों के नाम खत्म हो गये हैं तो ढोर-गोरू के नाम, जंगल के जानवरों के नाम लिख सकते हो। लानत है तुम्हारी अक्ल पर! यह पढ़े लिखो का हाल है?"

चरकेज़ ने शहर से लौट राशन कार्डों का यह किस्सा अपने गांव में और अरतैक के गांव में सुनाया।

किसान हैरान थे—सरकार किसानों के नाम पर राशन और सामान

रही है। और खा जाते हैं शहर के अफसर मुहर्रिर ! हमारे हाथ कुछ नहीं लगता ! ……

"ऊंह, तुम किसान ही तो हो ? किसान का क्या है ? किसान ने अपनी कमाई, अपना हिस्सा कभी खुद खाया है ?"

"अरे भाई उस रेवलूशा, इन्कलाब से क्या मिला ?"

"इन लोगों ने तो कहा था कि ज़ार मर गया। अब ज़ार के दारोगा, माल अफसर, काज़ी, मुहर्रिर सब जांयगे। किसान भर पेट खायेंगे-पियेंगे ! गरीब-अमीर सब एक से रहेंगे और जाने क्या, क्या ?"

"बातें तो ऐसे करते थे कि धरती पर ही बहिश्त बन जायगा।"

"हुआ क्या ? जागीरदारों के हाथ लम्बे हो गए ! पहले यह लोग ज़ार के नाम पर खाते थे, अब खुद जार बन गये।"

"अरे, जार मरा-वरा कुछ नहीं ?"

"अपने बड़े-बूढों का ढंग था कि जिस तम्बू मे घर के लोग मरने लगें, उस तम्बू को फूक कर झोपड़ी मे जा बसते थे।" चरखेज़ ने समझाया, "उन लोगों का कहना था कि तम्बू घर के लोगों को खाने लगते है। वैसी ही अपनी यह जिन्दगी है। भैया, या तो जिन्दा रहें, या मर ही जाय ! रेंगते रहने में जिन्दगी क्या ? किसान को या तो लोग दोहते जाते है या उसे कोल्हू में डाल कर पेर लेते है। जागीरदार और ज़ार के लोग हमें मिटाये दे रहे है। यह लोग ही मिट जायं तो किसान जिन्दा रहे।

"चरखेज़ने ठीक कहा भैया"—अरतैक बोल उठा, "एक बार फिर अज़ीज़ की तरह उठना होगा। उन लोगों को गिराना होगा।"

पिछले बरस की बगावत की सज़ा किसान अभी भूले न थे। किसी ने सिर झुकाये ही कहा—"तब भी क्या हुआ ? दो उठे और मर गये। बाकी वैसे ही पड़े रहे।"

लोग उठ कर चले गए तो भी अरतैक सिर झुकाये बैठा धरती पर लकीरें खीचता कुछ सोचता रहा।

दूसरे दिन वह तड़के ही दारोगा बाबा खां के यहां पहुंचा। बाबा खां अरतैक की रुखाई और आंखों मे बेचैनी देख भांप गया कि अरतैक झगड़े के लिए आया है। शायद जेल भेजे जाने का बदला लेने आया हो ! बाबा खां ने समझदारी से काम लेना उचित समझा। अरतैक के लिये तुरंत चाय और मिश्री मंगाई और मुस्करा कर अगवानी के लिये बोला—"आओ भैया आओ,

मुबारक हो घर लौटे हो ! तुम्हें आये तो कई दिन हुये ? तुम्हारे यहां जाने की बात सोच ही रहा था। अब-तब मे ही वक्त निकल गया। जब चलने को हुआ, कोई न कोई आ बैठा, कहीं न कही जाना पड़ गया। अरे सरकारी काम का कोई ठिकाना है। एक झझट हो तो बताऊँ। जब तुम्हे वे लोग पकड कर ले गये, क्या बताऊं बेबसी मे चुप रह जाना पड़ा। भाई पड़ोस का नाता कोई मामूली चीज़ है ? सोचा, मुझे अब कितने दिन ज़िन्दा रहना है ? अब तुम्हारा मुह क्या देख पाऊंगा ? हजार शुक्र है अल्ला का ! हां तुम्हारा ब्याह हो गया मुबारक, मुबारक ! तुम्हारे दो हाथ की जगह चार हाथ हो गये। भाई तुम ने अलनज़र बे को खूब सीधा किया ······ वाह !"

अरतैक बाबा खां को खूब समझता था। मन मे उस ने सोचा यह मुझे कैसे बना रहा है ? बेवकूफ समझता है। वह चुप रह गया।

अरतैक की चुप्पी से बाबा खाँ भांप गया कि अरतैक उस की बातों में नही आया। उस ने पैतरा बदला—"भैया अरतैक तुम ने बहुत जुल्म सहा है। खैर इस का बदला तुम्हें अल्लाह के यहाँ तो मिलेगा ही लेकिन अब तुम्हारा ब्याह हुआ है। घर मे खर्च भी होता है। खर्च की जरूरत होगी। पड़ोसी से क्या पर्दा ? जिस चीज की, जिस मदद की जरूरत हो, अपना ही घर समझ कर कहना। अल्लाह के करम से इस घर में दो-एक आदमी के लिये कुछ हो ही सकता है। और फिर तुम्हारा तो यह अपना ही घर है, तुम्हारे ब्याह के लिये एक बोरी गेहूँ और दो भेड़ें रखवाली थी। क्या बताऊं, उलझनों मे टलता ही गया, अब तक न भेज सका। मंगवा लेना और अपना घर समझ कर जो ज़रूरत हो कह देना, तकल्लुफ करो तो मेरी कसम है ?"

"एक बोरी गेहूँ, दो भेड़े और जिस चीज की जरूरत हो !" कोई और सोचता—कितनी मेहरबानी है ? अकाल के दिनों में यह कम नही है ? सम्भाल कर खर्चे तो तीन-चार महीने का गुजारा है। और बेच लें तो पूरा तम्बू कालीनों से जगमगा उठे। आदमी छः महीने की मेहनत में भी इतना नहीं कमा सकता ! इतने माल को कौन ठोकर मार सकता है। आज तो बाबा खाँ का मुंह देखना मुबारक हो गया। माँ और ऐना सुनेंगी तो प्रसन्न हो जायंगी। इतने में से पड़ोसी खादिम की भी थोड़ी बहुत सहायता हो सकती है। आज तो खुदा छप्पर फाड़ कर दे रहा है।—परन्तु अरतैक ने यह नहीं सोचा। उस ने सोचा—

आज तो यह खूब माल खिलाने को तैयार है। लेकिन इस बदमाश का

माल जहर है। जब लोग भूख से बिलबिला रहे हैं, यह रिश्वत खाना हराम नहीं तो क्या है ! जो भेड़ गल्ले से बिछड़ी, भेड़िये के मुंह गई ! जहां साथ के लोग भूखे मरेंगे वहाँ मैं भी मरूंगा। अगर साथ के लोग खा पायेंगे तो मैं भी खा लूंगा। साथियों का साथ छोड़ना सब से बड़ा गुनाह है।

"बाबा खां'—अरतैक ने उत्तर दिया, "आप की मेहरबानी के लिये बहुत शुक्रिया। जैसे-तैसे गुज़ारा चल रहा है। हाल तो सभी किसानों का बहुत बुरा है। सभी को मदद की ज़रूरत है !"

अपनी चाल खाली जाने से बाबा खां को निराशा के साथ ही क्रोध भी आ गया। मन ही मन कहा—"भूखे ही मारना चाहता है तो तुझे रोक कौन रहा है !"- अरतैक को जब उस ने गिरफ्तार करवा पुलिस के हाथ जेल भेजा था, उस समय वह और भी बुरी तरह डाट सकता था परन्तु अब समय बदल गया था। भूख से तड़पते किसान मरने-मारने पर तुले थे। ऐसी हालत में किसी एक से भी झगड़ा हो जाय तो बहाना पाकर गांव का गांव सिर पर आ पड़े और घर-बार लूट ले ! तब बचाने कौन आयगा ? गवर्नर आन्तोनोव तो खुद ही पर कटे बाज़ की तरह दुबका बैठा है।

पंचायत ?........उस की परवाह कौन करता है। माल अफ़सर मुराद ? वह पहले अपनी जान ही बचा ले। क्या दिन थे कि कुली खां से लिखवा कर एक दरखास्त खूफिया पुलिस को भिजवादी ! एक अरतैक क्या, सौ अरतैक पल भर में मिट्टी मे मिल जाते परन्तु वे दिन तो अब थे नहीं। अपमान और क्रोध निगल कर बाबा खां दुखी स्वर में बोला—"भैया, कुछ मत कहो ! लोगों की हालत तो देखी नहीं जाती। सच कहता हूं, यह हालत देख कर तो मुह में दिया अनाज बाहर को आता है। लेकिन कोई करे तो क्या ? मै अपना घर भर उठा कर बांट दूं तब भी क्या बनेगा ? समुदर में बूंद भर का भी तो फरक नही पड़ेगा ! दिल पर जो बीत रही है, मैं ही जानता हूं। कहने से क्या होता है ! कुछ इंतजाम होना चाहिये भैया ! अपने बूते भर कर ही रहा हूं। सभी अफ़सरों और पंचों के दस्तखत से एक दरखास्त सरकार के यहां मैंने लोगों की मदद के लिये भिजवाई है। हम ने लिखा है—"देहात के किसान बरसों शहरों का पेट भरते रहे है। ज़ार के अमले को, उस की फौजों को खिलाते रहे है। मुल्क भर का पेट हम ने बरसों भरा है, अब किसानों पर मुसीबत पड़ी है तो क्या उन की मदद नहीं करोगे ? उन्हें भूखा मर जाने दोगे ? मुसीबत में घर के जानवर को भी अपनी रोटी का

हिस्सा बांट कर जिलाया जाता है । आज देहात का किसान दम तोड़ रहा है । आज उस के मुह में रोटी का टुकड़ा दो ! कल तुम हम से दस गुना ले लेना । अर्ज़ी अश्काबाद जा चुकी है । सूबे का कमिस्सार कोल्माकोव अपनी जान पहचान का है । देखो, कुछ तो किया ही जायगा ......।"

अरतैक इस बहानेबाज़ी से थक कर बीच ही मे बोल उठा—"बाबा खां, लोग कहते है कि सरकार देहात के किसानों के लिए अनाज और दूसरा सामान भेज रही है ।"

"क्या कहते हो; यही होता तो और चाहिए क्या था ? अरे मैं ही न आकर यह बात तुम से कहता ?"

"लोग कह रहे हैं कि सहयोग सभाओ के दफ्तरो से सामान बंट रहा है ।"

"ऊह, वह तो शहरों के लिए है भाई, देहात के लिए कहां ?"

"सुना है, सब सरकारी अफसर और मुहर्रिर हजारो राशन कार्ड दबाये बैठे है ।"

"यह झूठ अफवाहें है । कह दे रात खेतो मे खूब बारिश हुई तो क्या जबान थोड़े ही पकड़ सकते है ।"

"सुना है अफसर लोग फर्जी नामों से कार्ड बना रहे हैं । सुना है बाबा खां ऊंटों के बोझा भर राशन कार्ड बनवा रहे हैं ।"

बाबाखां का चेहरा सुर्ख हो गया और गर्दन पर नीली नसे उभर आई, माथे पर त्योरियां गहरी हो कर आंखों में लाली आ गई । अंगीठी की ओर थूक कर आंखे झुकाये ही बाबा खां बोला--"अरतैक यह क्या दिल्लगी कर रहे हो तुम ?"

"बाबा खां, लोगों का पेट काटना दिल्लगी है ?"

"लोगों का पेट कौन काट रहा है ?"

"जब कुली खां और ताशे खां मे राशन कार्डों के लिए झगडा चल रहा था, किस ने कहा था—कलम सम्भालो, जितने नाम चाहते हो, मैं लिखाता हूं ?"

"देखो अरतैक !"—बाबा खां अरतैक की आंखो में घूर कर बोला—"झगड़े के लिए बहाने क्यों ढूंढ़ते हो ? जो कहना है साफ़-साफ़ कहो ! अगर तुम्हारा ख्याल है कि मैंने तुम्हें जेल भिजवाया था, तो साफ़ कहो ! दिल्लगी मैं पसन्द नहीं करता । तुम जानते हो, मेरा नाम बाबाखां है, मैं दारोगा हूं ।"

अरतैक के माथे पर भी बल पड़ गये परन्तु अपने को बस कर बोला—

"दारोगा साहब, तुम्हीं क्यों नहीं सीधी साफ बात कहते ? तुम्हीं बताम्रो, फर्जी राशन कार्ड बनवाये हैं या नही ? मैं सवाल कर रहा हूं, तुम गुस्सा दिखा रहे हो !"

"मै तुम से बात नहीं करना चाहता !"

"तुम बात नहीं करना चाहते ? लेकिन मैं राशन कार्डों का ग्रौर सरकार के यहां से ग्राए माल का हिसाब चाहता हूं ।"

"तुम क्या मेरे इन्सपेक्टर हो ?"

"उस बात की तुम परवाह मत करो !"

"ग्ररतैक, मजबूर हूं कि तुम इस समय मेरे तम्बू में मेहमान हो, नहीं तो तुम्हें जवाब देता······"

"तो बाहर ग्रा जाग्रो, दे लो जवाब !"

बाबा खां गुस्से मे कांपता हुग्रा उठ खड़ा हुग्रा । उसी समय बाबा खां की बीबी नादाब पर्दे के पीछे से सामने ग्रा गई ग्रौर पति का हाथ थाम चिल्ला उठी –"हाय मै मर गई ! ग्ररे ग्ररतैक भैया, क्या कर रहे हो तुम ?······ होश करो ! ग्ररे भागो लोगो ! खून ! खून !"

नादाब की पुकार सुन शूरे तम्बू में ग्रा गया । देहात ग्रौर शहर दोनों ही जगह शूरे की बात की इज्जत थी । दोनों ग्रादमियों की ग्रांखों में सुर्खी ग्रौर उन के लम्बे-लम्बे सांस सुन शूरे समझ गया कि वे एक दूसरे पर टूट पड़ने के लिए तैयार है । "ग्ररे भाई बैठो-बैठो"—दोनों को ग्रपनी-ग्रपनी जगह बैठाने के लिए कंधों से दबाते हुए शूरे ने हंसते हुए ऐसे बात कही कि झगड़े की बात वह जान नहीं पाया ।

ग्ररतैक क्रोध से कांप रहा था, कुछ उत्तर न दे सका ।

"क्यों, बात क्या है ?"--शूरे ने कहा, "कांप क्यों रहे हो ऐसा जाड़ा तो नही है ?"

"शूरे ग्रागा, ग्राप को जाड़ा क्यों लगने लगा ?" ग्ररतैक बोला ।

"बाबा खां, तुम्हें ख्याल करना चाहिए था । मेहमान के लिये जाड़े का भी इन्तज़ाम नहीं कर सकते थे ?"

"जाड़ा नही"—बाबा खां बोला, "उस के सिर में दरद है ।"

"मेरे सिर दरद का इलाज तुम्हारा सिर तोड़ कर होगा"—ग्ररतैक ने उत्तर दिया ग्रौर बाबा खां की तरफ दो कदम बढ़ गया ।

यह देख नादाब दोनों हाथ उठा फिर चिल्ला उठी—"शूरे ग्रागा ! मेरे

बच्चों के बाप के दिमाग़ को जाने आज क्या हो गया है। तुम अरतैक को समझाओ, क्या कर रहा है ?"

शूरे ने झगड़े का कारण पूछा और बोला—"भैया, मैं भी राशन कार्डों के ही बारे में पता लेने आया था।" बाबाखाँ ने फिर बात टालना चाही तो शूरे भी बिगड़ उठा—"बाबाखाँ, सभी बातों की हद होती है। तुम हद का खयाल ही न करो तो दूसरे कहाँ तक गूंगे-बहरे बने रहें ? पेट तो सभी के हैं। सिर्फ अरतैक और मेरी ही बात नहीं, सभी लोग तुम से हिसाब लेंगे।"

बाबाखाँ कुछ उत्तर न दे ठोड़ी हाथ में थामे बैठा रहा। वहाँ और प्रतीक्षा करने से कुछ फायदा न देख अरतैक तम्बू से निकल आया और शहर की ओर चल दिया। वह सोचता जा रहा था। तेजेन जाकर चर्नीशोव के सामने सब बात रखे और फिर उस की राय से चले........।

८

उन दिनों चर्नीशोव को सैकड़ों ही उलझनें थी। मिलने जाने वालों को कभी ही वह घर पर मिलता। अरतैक को भाग्य से वह घर पर ही मिल गया। सलाम दुआ होने पर पहले चर्नीशोव ने ही शिकायत की—"अश्काबाद से लौट कर तुम यहाँ आए और मिले बिना ही चले गये। इन्तजार भी न की। बड़े वैसे आदमी हो।"

अरतैक ने मुस्कराकर उत्तर दिया—"खूब, उल्टा चोर कोतवाल को डांटे! मैं तुम्हारे यहाँ कितने चक्कर काट गया। तुम एक बार भी मेरे यहाँ न आए, अच्छे मित्र हो! मेरा ब्याह हुआ तुम ने उस की भी कोई परवाह न की। अच्छा, अगर तुम हमारे यहाँ आकर दस दिन के लिए न रहो तो फिर मैं भी कभी तुम्हारे यहाँ नहीं आने का।"

चर्नीशोव ने हस कर अरतैक के गले में बाँह डाल दी और बोला—"अरे आयेंगे क्यों नही तुम्हारे यहाँ, अपना ही घर है। ज़रा वक्त ठीक हो लेने दो। आजकल तो देहात में तुम्हें अनाज-दाने की भी तकलीफ़ होगी?"

"नहीं मित्र, ऐसी बात तो नही है। कम से कम मैं खुशकिस्मत हूं। मेरा चाचा और ससुर दोनों मदद कर रहे है। तुम आओ, तुम्हारे लिये दूध, मक्खन माँस सब हो जायगा।"

"चलता तो तुम्हारे साथ ही लेकिन क्या कहूं, फंसा हुआ हूँ बुरी तरह! लोग छुट्टी नहीं देंगे।"

"हफ्ते दो हफ्ते के लिये भी छुट्टी नहीं मिलेगी?"

"हफ्ते दो हफ्ते? यहाँ घण्टे भर की भी छुट्टी नहीं है। आज-कल तो रात में सोने के लिये भी समय नहीं।"

"ठीक कहते हो भैया"—अरतैक गम्भीर स्वर में बोला, "मैं भी सोच रहा हू कुछ करना होगा, ज़ार तो मरा परन्तु उस के बेईमान अफसरों के पंजे अभी तक जमे हुए है। इन लोगों से अपनी गर्दन छुड़ाने के लिए जनता को एक बार फिर उठना होगा।"

चर्नीशोव ने चेतावनी से उस की ओर देख कर उत्तर दिया—"पिछले वर्ष अजीज़ के साथ बगावत में शामिल होते समय तुम ने हम से राय भी नही ली। मैंने तुम्हें तब भी कहा था कि ज़रा सोच-विचार कर चलो परन्तु तुम ने कुछ परवाह नहीं की। तुम्हें अज़ीज़ पर बहुत भरोसा था; अब कहां है अज़ीज़! तुम लोगों ने शहर पर हमला बोल दिया, हुआ क्या ? हम लोग जानते थे तुम्हारी बग़ावत का कुछ नहीं बनेगा। हम लोग तुम्हारी सहायता भी नहीं कर सके! अलबत्ता, तुम लोगों पर हमला करने के लिए जो फौजी मोटरे आई थी उन्हें हम लोगो ने तोड़ गिराया। तुम्हे शायद यह पता भी नही लगा और न इस से तुम लोगो को कुछ फायदा ही हुआ। हम लोगों के कई काम के साथी उस समय मारे गए। यदि वे लोग रहते तो इस क्रांति के समय बहुत सहायक होते।" चर्नीशोव चुप हो गया और कुछ सोचने लगा। अरतैक भी कुछ देर चुपचाप सोच कर सहसा बोला, "चर्नीशोव तुम्हारा खयाल है मैंने गलती की ......"

अरतैक को सुन लेने का सकेत कर चर्नीशोब बोला—"जो हुआ सो हुआ। तुम्हारी बगावत मे एक तो कोई राजनीति समझने वाला नेता नही था और न तुम्हारी तैयारी ही ठीक ढग से हुई थी लेकिन फिर भी उस बगावत का भी अपनी जगह लाभ हुआ ही। यह अच्छा हुआ कि अब की तुम ने मुझ से बात कर ली। दो महीने पहले तुम मुझे बग़ावत के लिए कहते तो मै भी तैयार हो जाता परन्तु इधर रूस से आये कुछ पर्चे और किताबे मैंने पढी है और बात मेरी समझ मे आई है। रूस से पार्टी के साथियों और लीडरो ने जो तरीका बताया है वह मुझे समझ आता है। रूस में दूसरी क्राति हो सकती है परन्तु यह क्रांति केवल सरकार का काम हाथ में ले लेने के लिए ही नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिए, सामाजिक क्रांति करनी होगी।"

अरतैक चर्नीशोव की बात के अन्तिम शब्दों का कुछ अर्थ न समझ पाया परन्तु इतना ज़रूर समझा कि कोई बड़ा परिवर्तन होने वाला है।

चर्नीशोव बोला—"केरेंस्की की सरकार पूरी ज़मीन किसानों को बांटने के लिए तैयार नहीं। यह सरकार मिलें मज़दूरों के हाथ में देने के लिए तैयार

नहीं। इस सरकार के अमल और ज़ार के अमल में भेद ही क्या है ? यह सरकार जंग ख़त्म करने के लिए भी तैयार नहीं। बड़े व्यापारियों और पूंजी-वालों के फायदे के लिए यह सरकार लड़ाई चला रही है और ग़रीब जनता लड़ाई में गाजर-मूली की तरह कट रही है। लोगों को मिला क्या ? आज़ादी क्या हुई ?"—इस के बाद चर्नीशोव अरतैक को ताशक़न्द, बाकू और पेट्रोग्राड में मज़दूरो की हालत के बारे में और मजदूरों पर नयी सरकार के दमन की बाते सुनाता रहा। और फिर बोला, "अरतैक, तुम ईमानदार आदमी हो। तुम इस सरकार के तरीके और चालों को समझो और देहात के किसानों के सामने यह सब बात रखो। एक बात मत भूलना, किसानों को जो कुछ करना हो, मज़दूरों को साथ ले कर ही कर सकेंगे। यदि किसान अकेले बग़ावत कर बैठेंगे तो पिट कर रह जायंगे। किसानों की बगावत मे जो लोग नेता बनेंगे, वे खुद जागीरदार बन कर किसानों के सिर पर बैठ जायंगे। किसानों को आजादी केवल मज़दूरों की नेता बोलशेविक पार्टी ही दिला सकती है। इस पार्टी के बताये रास्ते पर चलने से ही सवाल हल होगा। वक्त से पहले कुछ कर बैठोगे तो अपने पांव कुल्हाड़ी मारोगे। अभी तुम किसानों को समझा कर अवसर के लिए तैयार करो……"

अरतैक ने दारोगा बाबाखां की राशन कार्डों की चोरी की बात चर्नीशोव को सुनाई और ऐसे बदमाशों को ओहदों से हटाने का अनुरोध किया।

चर्नीशोव ने उत्तर दिया—"मैं जानता हूं खूब अंधेरगर्दी हो रही है परन्तु अंधेरगर्दी करने वाले दो चार आदमियों को ठोक-पीट कर निकाल देने से कुछ नही बनेगा। इस से किसानों की भूख नही मिट सकेगी। पहले ज़रूरी है किसान जनता को इन बातों का पता लगे और किसान की ओट में इस इतजाम के खिलाफ़ पंचायत में आवाज उठे। तुम्हें इस काम में मैं पूरी सहायता देने के लिए तैयार हूं।"

चर्नीशोव अरतैक को किसानों में आन्दोलन चलाने का ढंग बता रहा था कि इतने में चरखेज़ तेज़ कदमों से भीतर आया। चर्नीशोव की बात काट कर गुस्से भरे स्वर में उस ने बताया कि बाबाखां आज शहर में आया है और अपने मालिकों—खोजा मुरादखां और कुलीखां से अरतैक की शिकायत उस ने की है। उन लोगों ने अरतैक का इंतजाम करने का फैसला किया है। जान पड़ता है अरतैक पर फिर कोई मुसीबत आने वाली है। उस ने अरतैक को इस के लिए सावधान रहने के लिए कहा।

अरतैक पहले ही भरा बैठा था। चरखेज़ की बात सुन वह उफ़न उठा —"यह लोग मेरा इंतजाम करेंगे ? मैं ही पहले इन लोगों का इंतजाम किए देता हूं। एक दफा मै इन लोगों के हाथ पड़ गया यही क्या कम है। देखूंगा मुझे कौन हाथ लगाता है ? जो पहले करे सो जीते—मै ही क्यों न उन के यहां चलूं ?"— उस ने चरखेज़ से पूछा, "सहयोग सभा का दफ्तर है कहां ?"

पल भर के लिए चरखेज़ ठिठका—अरतैक कोई जल्दबाजी न कर जाय ? और फिर सोचा—पहले करना ही ठीक है और बोला, "दफ्तर दूर नहीं है। चलो मैं तुम्हारे साथ चलूं ! ...... लेकिन वहां क्या होगा ?"

"यह वही जा कर देखेंगे कि क्या होगा ? यहां बैठे बात बनाने से क्या लाभ !"

चर्नीशोव ने अरतैक का चेहरा देख कर भांप लिया कि इस समय यह मानेगा नहीं परन्तु फिर भी समझाया—"अरतैक, सुनो, इस तरह जल्दबाज़ी मत करो। मै यह नही कहता कि तुम इन लोगो से मार खा जाओ परन्तु यह भी सोचो कि हम लोग अभी जिस तरीके से काम करने की बात कर रहे थे ....ज़रा सम्भल कर चलो !"

"मै तुम्हे बड़े भाई की जगह मानता हू" अरतैक ने चर्नीशोव को उतर दिया, "परन्तु यह बात दूसरी है कि मै एक बार मार खा चुका हूं........अब की नही खाना चाहता !" वह चरखेज़ को साथ ले चल दिया।

इन दोनों के चले जाने के बाद चर्नीशोव इन लोगों के बारे में ही सोचता रहा और अपनी पत्नी 'अन्ना' से बोला—"तुम इस लड़के को पहचानती हो ? —इन लोगो ने समझा होगा कि छ: महीने जेल मे सड़ा कर इसे दबा लिया। वह और भी आग बगोला बन कर निकला है। उसे धुन सवार हुई है तो उसे कोई रोक नही सकता। आदमी को होना भी ऐसा ही चाहिए; बस यह है कि राह से फिसल न जाय ! पर अकेला है ! अकेले आदमी को राह भटकते देर नही लगती ! ....मुझे डर है वह मुसीबत में न फंस जाय ! मे जा कर देखता हूं........" चर्नीशोव ने टोपी सिर पर रखी और चल दिया।

अरतैक और चरखेज़ सहयोग सभा के दफ्तर में पहुचे और सभा के प्रधान से मिले। प्रधान साहब ने उन की ओर देखा और बेपरवाही से आंखे फेर लीं।

चरखेज़ बोला —"हम लोग 'कोश' के किसानों की ओर से आये हैं। हमारे यहां किसानों को खबर मिली है कि हम लोगों के नाम से राशन कार्ड बना-बना कर आप के दफ्तर के मुशी और हाकिम सभा का राशन खा रहे हैं। यही बात हम जांचने आए है। हम नामों की फहरिस्तें देखना चाहते हैं।"

प्रधान के माथे पर त्योरियां गहरी हो गईं। वे गुस्से में बोले—"हम तुम्हारे किसानों और मुशियों को नहीं जानते। जिन लोगों के पास कार्ड हैं, उन्हें राशन दिया जाता है। हमारे यहां कोई फहरिस्तें नहीं हैं।"

अरतैक समझ गया कि यह साहब भी खाऊ है, लूट मे अपना हिस्सा पाते हैं। सीधे-सीधे बात नहीं सुनेंगे परन्तु चर्नीशोव की बात याद कर वह नम्रता से बोला—"जनाब, हम लोग कागजात उठा कर ले नहीं जायंगे। देख भर लेना चाहते हैं। हो सकता है, हमारा भी नाम आप के यहां हो!"

"मै और कुछ नही सुनना चाहता!"

"यह तो न्याय नही है?"

"मैंने कह दिया कि कोई काग़ज नही दिखाया जायेगा!"

"हम देख कर जांयगे!"—अरतैक मेज़ पर हाथ पटक ऊचे स्वर में बोला।

प्रधान साहब सहम गये। मेज़ पर हुए धमाके से उन को मोटी नाक पर टिका चश्मा फिसल गया। संभल कर वे बोले—"आप लोग चिल्लाते क्यों है? यह हाट-बाजार की जगह नही, दफ्तर है।" वे फिर तेज हो उठे, "आप लोग बाहर जाइये।"

अरतैक ने हाथ बढ़ा उन की ठोड़ी पकड़ ली, और बोला—"आंखें मत दिखाओ! अभी उठा कर नीचे पटक दूगा। दफ्तर का सब रोब धरा रह जायगा। कागज़ निकालो!"—अरतैक ने दूसरे हाथ का घूसा उन के सिर पर उठा कर उत्तर दिया।

प्रधान साहब के कंधे सिकुड़ गए और एक लम्बा सांस ले उन्हों ने कुर्सी की पीठ का सहारा ले लिया और फिर मुस्करा कर बोले—"अरे भाई, बिगड़ते क्यों हो? ·· ··· नाराज़ होने की बात क्या है? बैठिये तो! मैं तो यह पूछ रहा था कि आप लोग कौन है? आप गांव वालों की ओर से आये हैं, गांव के प्रतिनिधि हैं? सौ दफे देखिये कागजात! जो समझ न आये, मुझ से पूछ लीजिये! और वैसे आप को जो कुछ चाहिये, कहिये? इस समय तो चाय भी नयी आ गई है!"

अरतैक और चरखेज़ काग़ज़ों में नाम देखने लगे। कोश के आस-पास के सैकड़ों किसानों के नाम चढ़े हुये थे। अरतैक का भी नाम मौजूद था।

अरतैक ने पूछा—"इन लोगों के कार्ड कहां है?" "मेरा खयाल है", प्रधान ने उत्तर दिया, "कुली खां के यहां होगे या खोजा मुराद के पास!"

"यह हमारे कार्ड हमें मिलने चाहियें।"

"मेरे हाथ में तो है नहीं। वह कार्ड जांच कमेटी से मिल सकेंगे। हां इन की लिस्ट चाहिये तो तुम मुझ से ले सकते हो।"

अरतैक ने उठ कर कहा—"चरखेज़, जांच कमेटी को कहां खोजते फिरेंगे; आओ कुली खां के यहां चलो!"

चरखेज़ को दूसरी जगह ज़रूरी काम था परन्तु अरतैक इंतज़ार के लिए तैयार नहीं था। वह अकेला ही कुली खां के दफ्तर में पहुंचा।

कुली खां और बाबा खां एक साथ बैठे अरतैक की शिकायत में दरखास्त लिख रहे थे। अरतैक को देख बाबा खाँ विस्मय से घबरा गया। कुली खां भी घबराया परन्तु अपने को सम्भाले रहा और अरतैक को सम्बोधन कर बोला—"आओ, आओ, बैठो, क्या खबर है?"

अरतैक ने बिना लाग लपेट के सीधे ही उत्तर दिया—"खबर यह है कि सहयोग सभा के दफ्तर से मालूम हुआ है कि हमारे गांव के किसानों के सब राशन कार्ड तुम लोगों ने हथिया लिए हैं। अब अगर पेट भर गया हो तो हमारे कार्ड लौटा दो!"

"कैसे कार्ड?"

"बनो मत कुलीखां। भोले मत बनो?"

कुली खां ने क्रोध मे होठ काट कर बाबा खां की ओर देख कर पूछा—"यह कौन आदमी है?...... बड़ा बदतमीज़ है!"

बावा खाँ ने धीमे भारी स्वर मे उत्तर दिया "इसे जानते होगे, यह हमारी बस्ती का आदमी है—अरतैक बबाली!"

"ओ हो, अरतैक? अश्काबाद की जेल मे रह कर इस का मिज़ाज ठीक नही हुआ। फिर लोगों को भड़का रहा है।"—कुली खाँ ने अरतैक की ओर देखा, "अच्छा किया तुम खुद आ गये, नहीं तो बुलाना पड़ता।"

"जब कहो मै हाज़िर हो सकता हूं।"

"अच्छा, इस बात को रहने दो, तुम्हें और क्या काम है?"

अरतैक ने एक कुर्सी खींच ली और कुली खाँ के साथ बैठ गया और मुस्कराकर बोला—"कुली खाँ, दूसरे काम बाद में होंगे पहले कार्ड निकालो!"

लंगड़े मीर मुंशी ने मूछों पर हाथ फ़ेर क्रोध में पूछा—"हूं तुम मुझ से हिसाब तलब करने वाले कौन हो?"

"मैं अपने कार्ड तलब कर रहा हूं!"

"तलब कर रहा हूं..........मेरे पास तुम्हारे पचानवे कार्ड हैं लेकिन

इस वक्त नहीं मिल सकते । कार्ड लेने हैं तो फरवरी की तीस तारीख को आना।"

इस मज़ाक से अरतैक के होंठ क्रोध से फड़क उठे । वह कुलीखाँ के और नज़दीक सरक कर बोला—"कुलीखाँ, तुम हद से बढ़ रहे हो !"

"यह तो मेरी आदत ही है ।"—कुलीखाँ मस्करा दिया ।

"कार्ड नहीं दोगे ?"

"मैंने तुम्हे तारीख बता दी है ।"

अरतैक का सिर घूम गया । उसे समझ न आया कब और कैसे उस के हाथ का मुक्का कुलीखाँ की नाक पर पड़ा । कुलीखाँ अपनी लंगड़ी टाँग पर गिर पड़ा । वह उठने का यत्न कर ही रहा था कि अरतैक ने धम्म-धम्म चार लातें उस की पीठ पर जमा दी । कुलीखाँ फिर गिर पड़ा । उठने का यत्न न कर कुलीखां ने जेब से पिस्तौल निकाल कर सम्भाली । अरतैक ने तुरंत एक ठुड्डा उस के हाथ पर दिया । पिस्तौल कुलीखाँ के हाथ से छिटक कर दूर जा पड़ी । अरतैक ने पिस्तौल उठा कर अपनी जेब मे रख ली । अरतैक ने कुलीखाँ को कोट के कालर से पकड़ ऊपर उठाया और तख्त पर पटक उस के नाक, मुंह और जबड़ों पर कई मुक्के जमाये । कुली खाँ बेदम हो जाने से चिल्ला भी न सका । बाबा खाँ दफ़्तर से निकल जोर से चिल्लाने लगा —"दौड़ो-दौड़ो ख़ून हो गया— । पुलिस ……!"

इसी समय खोजा मुराद बौखलाहट में चिल्लाता हुआ भीतर आया—"इंकलाब, इंकलाब, बोल्शेविक, लेनिन !" परन्तु सामने का दृश्य देख विस्मय से उस की बोलती बन्द हो गई । बड़ी कठिनाई से उस के मुह से निकला "ई-इंकलाब !"

उस के पीछे-पीछे आया चर्नीशोव । उस ने गम्भीर स्वर में खोजा की बात का समर्थन किया—"ठीक है, इंकलाब की बात ठीक है । तार घर से खबर मिली है कि इंकलाब हो गया है । उस ने कमरे के चारों ओर आंख दौड़ाई । स्थिति समझ उस ने आवेश से हाँफते हुये अरतैक को बाँह से थाम लिया और खींचता हुआ बाहर ले गया !"

"मैं तुम्हें जाने कहाँ-कहाँ खोजता फिरा । छोड़ो इस झंझट को । कित जरूरी काम है जल्दी आओ !"

६

पहली बार फरवरी १९१७ में क्रान्ति हुई थी। उसी वर्ष अक्टूबर मे फिर क्रान्ति हो गई। रूस में केरेस्की की सरकार टूट गई और उस के साथ ही प्रान्तों और प्रदेशों की सरकारें भी टूट गई। गवर्नरों के अधिकार पंचायतों के हाथ में चले गये परन्तु इन पंचायतों मे केवल कम्युनिस्ट और बोल्शेविक लोग ही नहीं दूसरे लोग, सोशलिस्ट, मेनशेविक और मध्यम श्रेणी के बड़े लोग भी थे।

जल्दी में प्राय: यह भी हुआ कि महकमों—विभागों के नाम और दफ्तरों पर लगे साइनबोर्ड तो बदल गए लेकिन काम पुराने ढर्रे पर ही चलता रहा। अश्काबाद में तुर्कमानी और अज़रबैज़ानी मध्यम श्रेणी के लोगों ने एक प्रादेशिक कमेटी बना ली और इस का प्रधान ज़ार के ज़माने के बड़े अफ़सर कर्नल उरेज़ सरदार को बना लिया।

तेजेन मे मजदूर और फ़ौजी सिपाहियों के प्रतिनिधियो की एक नयी पंचायत बन गई। इन प्रतिनिधियों मे चर्नीशोव और कुलीखाँ चुन लिए गए। कुली खाँ ने एक दम एलान कर दिया कि वह सोवियत सरकार का कट्टर पक्षपाती है।

ठीक इसी समय तेजेन मे १९१६ की स्थानीय बगावत का नेता अज़ीज़ खां चापेक भी फिर से आ पहुँचा। तुर्कमानिया के बहुत से लोगों को अब भी अज़ीज़ खां पर बहुत विश्वास था और वे उसे अपना नेता समझते थे।

अज़ीज़ खां १९१६ की बग़ावत में हार कर अफ़गानिस्तान भाग गया था और अब तक वही छिपा था। तेजेन में आते ही अज़ीज़ ने अपना संगठन शुरू कर दिया। अपना कार्यक्रम उस ने किसी को न बताया परन्तु फिर भी भूख से तड़पते और सरकार के प्रबन्ध से असन्तुष्ट लोग उस के संगठन में आने

लगे। जागीरदार बे और अमीर लोग भी समाजवादी क्रान्ति में अपनी जागीरें और खजाने छिन जाने की आशंका से उस का साथ देने के लिये तैयार हो गए और तेजेन के बड़े-बड़े व्यापारी भी सब ओर संकट और भय देख उस की रक्षा में जुटने लगे। अज़ीज के पास जो भी आता वह सभी को आश्वासन और रक्षा का भरोसा दे देता। अज़ीज ने तुरन्त अपनी इन्तजामी कमेटी भी बना ली ! इस कमेटी में वेमील नहर के इलाके से करीममुल्ला को, बेक नहर के प्रदेश से अल्ती सोपी को, ओतमेश नहर के इलाके से यारमुश काज़ी को और कयाल के इलाके से अलनज़र बे को ले लिया। तेजेन और आस-पास के देहात में दो सरकारें, दो फौजे बन गईं:—एक अजीजखाँ की और दूसरी पचायत के प्रतिनिधियो की।

अरतैक दुविधा मे था कि वह किस सरकार साथ का दे ? उस की इच्छा अपने मित्र चर्नीशोव के साथ पंचायती सरकार की ओर रहने की थी परन्तु इस पंचायत में चर्नीशोव के साथ जार के ज़माने के दूसरे अफसर खास कर कुलीखां का जोर इस पंचायत मे उस की जार के जमाने की शक्ति से भी अधिक था। अरतैक को यह सहन न हो सका। अरतैक ने अपने मन को बहुत समझाया परन्तु वह कुलीखाँ का साथ देने के लिये तैयार न हो सका। वह किसी तरह भी कुलीखाँ का भरोसा न कर सकता था। उस ने कुलीखाँ की नाक तोड़ी थी और वह जानता था कि कुलीखाँ बदला लिये बिना न मानेगा।

चर्नीशोव से मिलने पर अरतैक को उस ने समझाया—"तुम किस दुविधा में फंसे हो ? इतना सह कर भी क्या तुम्हारी आँखें नहीं खुलीं ? मैंने हमेशा तुम्हारा साथ दिया है। अब हम लोगों का समय आया है और अब चूकना नहीं चाहिए। मैं मजदूर हूँ और तुम गरीब किसान हो ! हम गरीब लोगों के लिये पंचायत छोड़ और ठौर कहाँ ?"

"कुलीखां जैसे गरीबों के साथ ?"

"बेवकूफ़ी मत करो अरतैक ! तुम जानते हो हम लोगों का उद्देश्य सोवियत से ही पूरा हो सकता है !"

"भैया, ऐसे साँपों के साथ बसने से तो बेवकूफ़ बनना भला।"

"इस का मतबब है······ ?"

"नहीं हमारी मित्रता बनी रहेगी। हो सकता है फिर कभी हम लोगों का साथ हो जाय।"

चर्नीशोव अरतैक की इस जिद्द से खिसिया गया। उसे अरतैक पर बहुत विश्वास था और उस की ईमानदारी और बहादुरी पर भरोसा था। परन्तु जाने क्यों उस का दिमाग फिर गया था। चर्नीशोव को अपने प्रति भी असन्तोष था कि वह अपने उद्देश्य के प्रति एक मित्र की सहानुभूति क्यों न ला सका। यदि अरतैक जैसे मित्र और किसान उस का साथ न देंगे तो वह क्या कर सकेगा ?

"तुम्हें अपना विरोधी बन जाने देने से तो अच्छा है तुम्हे गिरफ्तार करा दूं"—चर्नीशोव ने मुस्कराकर कहा, "अरतैक हो सकता है कुछ समय बाद तुम्हें होश आ जाय !"

अरतैक भी हस दिया—"देख लो चर्नीशोव, यह है तुम पर कुलीखां की संगति का असर। तुम अपने मित्रों पर वार करने की बात सोचने लगे हो ! अच्छा है भाई चल दूँ ! न जाने तुम कब सचमुच ही हमला कर बैठो !"

"चुप रहो अरतैक, क्या बकते हो !"

"अच्छा तुम जैसे कहो ! नही बोलूंगा भाई !"

"तुम हमारी सेना में पल्टन कमाण्डर क्यो नही बन जाते ?"

"तुम्हारे साथ मे मामूली सिपाही बन कर भी रहने को तैयार हूं। परन्तु उस लगड़े बदमाश के साथ मुझे जनरल बन कर रहना भी मंजूर नही।"

"जिद्द मत करो !"

"यह मुझ से न हो सकेगा।"

चर्नीशोव आह भर धीमे-धीमे समझाने लगा—"अरतैक तुम समझदार आदमी हो। जानते हो मै तुम्हारा बुरा नही चेतूगा। मेरी बात मानो। पचायते तुम्हारी अपनी—किसानो और मजदूरो की है। किसान लोग इन पचायतो से ही जमीन और पानी पर अपना कब्जा कर सकते है। तुम छोटी-छोटी बातों में उलझ रहे हो। कुलीखां आदमी बुरा है सही ? वैसे वह काम का आदमी है। इतनी सी बात के लिए तुम अगर पंचायती सरकार के विरुद्ध हो जाओ तो यह तुम्हारी अपनी सरकार और किसानों के साथ धोका नही होगा ? तुम पंचायत की तरफ़ नही होगे तो जा कर घर मे बैठे नही रहोगे ! चुप बैठे रहना तुम्हारे बस का नही। तुम पचायत का साथ नही दोगे तो अजीज का साथ दोगे ! तुम जानते हो, अजीज तो डाकू है। वह जागीरदारों, मुखियों, अमीर किसानों और मौलवियो का गिरोह बना कर खुद सुल्तान बन जाना चाहता है।"

"चर्नीशोव तुम अजीज की बात रहने दो !"

"ठीक है, तुम उस की निन्दा नहीं सुनना चाहते परन्तु मुझे सच्ची बात कहनी चाहिए। हो सकता है, कुछ दिन तक अजीज़ तुम्हारे जैसे आदमियों को बहका ले और उसे कुछ सफलता मिल जाय परन्तु उस की चाल बहुत दिन तक नहीं चलेगी। आखिर तो जनता उस का भेद जानेगी ही। समझेगी कि वह जनता का शत्रु है या मित्र ! एक हल्ले में चाहे वह कामयाब हो जाय परन्तु उस के कदम टिक नहीं सकेंगे।"

चर्नीशोव की बात सुन अरतैक सिर झुकाए सोचता रह गया। चर्नीशोव को आशा हुई कि वह मान गया है। परन्तु अरतैक सहसा उठ खड़ा हुआ और अपना गुस्सा दबा कर बोला—"मै पंचायत सरकार का शत्रु नही हूं। सोवियत सरकार के विरुद्ध मैं हाथ नहीं उठाऊंगा परन्तु कुलीखां और उस के मित्रों का मैं कट्टर शत्रु हूं। जब तुम ऐसे लोगों को निकाल दोगे, तब तक मै ज़िन्दा रहा तो स्वयं ही तुम्हारे पास आ जाऊंगा।" अपनी बात समाप्त कर अरतैक बाहर जाने के लिए दरवाज़े की ओर चला—

"जरा ठहरो"—चर्नीशोव उसे अधिकार से पुकार बोला, "मेरी बात पूरी सुन लो। मैंने केवल अनुभव से कहा था कि यदि तुम हमारा साथ नहीं दोगे तो अज़ीज़ से जा मिलोगे। लेकिन तुम्हारी बात से साफ है कि तुम ने अज़ीज़ का साथ देने की बात पक्की कर ली है। तुम एक बार अच्छी तरह सोच लो ! तुम कहते हो तुम सोवियत सरकार के खिलाफ हाथ नहीं उठाओगे। अगर तुम अज़ीज़ के साथ मिलते हो तो यह कैसे सम्भव होगा ? यह कैसे हो सकता है तुम पूरब भी चलो और पश्चिम भी चलो ! जब तुम सोवियत के शत्रुओं का साथ दोगे, उन की सहायता करोगे तो यह सोवियत पर चोट करना नहीं तो क्या होगा ? उस समय पछताने से भी क्या लाभ होगा ? हमें कौन झगड़ा ले कर चलना है, यह मामूली सवाल नहीं है। अपने झण्डे के लिए सिपाही को जान देनी पड़ती है। तुम झण्डे की बात नहीं सोचते, सोचते हो कि फलां आदमी तुम्हें पसन्द नहीं। आदमी बड़ा है या झण्डा ? और अगर कुलीखां जैसे आदमी से भी जनता का कुछ काम बन सकता है तो उस से काम क्यों न लिया जाय ?"

अरतैक सिर झुकाये दरवाज़े में खड़ा रह गया। उस के चेहरे पर परेशानी और जिद्द अब भी मौजूद थी। चर्नीशोव की ओर देखे बिना ही वह बोला—"यदि कुलीखां जनता के काम आ सकता है तो अज़ीज़ ने भी जनता की बगावत का झण्डा ऊंचा किया। जिस समय कुलीखां ज़ार के जनरलों की जूतियां

चाट रहा था, अज़ीज़ तलवार सूत कर इन जनरलों के सिर तराश रहा था। यह तो तुम्हें भी याद होगा ?"

"यही तुम्हारी भूल है !"—चर्नीशोव ने कड़े स्वर मे चेतावनी दी, "अरतैक, याद रखो जनता भूल-चूक तो माफ़ कर देती है परन्तु गद्दारी माफ़ नहीं करती।"

अपनी बात कह चर्नीशोव खिड़की से बाहर देखने लगा और अपना क्रोध रोके रखने के लिए अरतैक की ओर देखे बिना वह मेज पर उंगलियों से तबला सा बजाने लगा।

अरतैक उत्तर देने को हुआ परन्तु फिर कुछ भी न कह सिर लटकाए चुपचाप दरवाज़े से निकल चला गया। वह सिर लटकाए हो गली से बाज़ार मे पहुंच गया। आस-पास से आने-जाने वाले लोगों की ओर उस का ध्यान नही गया। बिना सोचे समझे, बिना किसी ख्याल के वह चलता जा रहा था! बाजार मे खूब जोर से खड़खड़ाहट कर चलती हुई एक बैलगाड़ी की लपेट में आते-आते बचा। पुल पर से पार होते समय वह पुल के खम्बे से ही टकरा गया। वह अचेत-सी अवस्था में चल रहा था। जान पड़ता था वह अपना हृदय और सोचने, समझने की सब शक्ति अपने मित्र के यहां ही छोड़ आया है। उदासी से वह निर्जीव सा हो रहा था।

अरतैक पुल की दीवार पर झुक कर पानी की ओर देखता हुआ सोचने लगा—"दुख-सुख के साथी चर्नीशोव से आज मेरा बिछोह हो गया! उस दिन जब मै अश्काबाद जा रहा था, जब उम्मीद थी कि शायद मौत के घाट उतर रहा हू तब केवल चर्नीशोव ही ढाढस बंधाने स्टेशन पर आया था। चर्नीशोव ने सदा मेरे दुख मे साथ दिया। जब मै कुछ सोच भी न सकता था, तब भी चर्नीशोव ने ही मेरी आंखें खोली थी। आज भी वह सगे भाई की तरह मुझे साथ न छोड़ने के लिये बार-बार समझा रहा है........" अरतैक के मन में उबाल सा उठा कि चर्नीशोव के पास लौट जाय और अपने हाथों में उस का हाथ थाम कह दे—मै तुम्हारे साथ हूं। परन्तु उसी समय कुली खां का चेहरा उस की आँखों के सामने आ खड़ा हुआ!

चर्नीशोव के घर की ओर मुड़ते उस के पांव ठिठक गए और एक गहरी आह भर उस ने कहा—"चर्नीशोव से मेरा कोई झगड़ा नहीं लेकिन मै कुली खां के साथ कभी नहीं चल सकता। या तो मै ही रहूँगा या वह। कुलीखाँ का साथ करने से तो मै अजीज का ही साथ करूंगा।"

अरतैक दृढ़ निश्चय से बाज़ार की ओर चल पड़ा। वह अज़ीज़ के मकान की ओर बढ़ा चला जा रहा था। चर्नीशोव ठीक ही कहता है—उस ने सोचा—इस ज़माने मे किसी भी आदमी के लिए चुप और अलग बैठना सम्भव नहीं। आदमी को इधर या उधर, किसी न किसी का साथ करना ही पड़ेगा। अज़ीज़ से एक बार बात कर के देखना चाहिए। यदि उस से बात न बनेगी तो गाँव लौट जाऊगा।

अज़ीज़ का खेमा, या दरबार अन्नाकोचक सराय में था। जिस समय अरतैक अज़ीज़ खाँ के यहा पहुंचा, वह एक गद्दे पर करवट से लेटा हुआ कुछ सोच रहा था। अरतैक का उदास चेहरा देख कर ही अज़ीज उस की मानसिक अवस्था भाप गया। अज़ीज़ उठ कर पाल्थी मार कर बैठ गया और अरतैक को सम्बोधन किया—"कहो भाई अरतैक, क्या हो रहा है ?"

"आजकल जैसे दिन बीत रहे है, कोई क्या कह सकता है"—अरतैक न उदास स्वर मे उत्तर दिया।

पिछले वर्ष की बगावत मे अज़ीज़ को अरतैक पर बहुत भरोसा था। वह उसे भूला न था, दूर अफगानिस्तान मे भी उसे अरतैक की याद आती रहती थी। अरतैक की उदासी का कारण पूछ कर उस ने कहा—"मेरा जो कुछ बल है, वह तुम्हारे जैसे साथियों के भरोसे ही है। अरतैक, तुम मेरे दाहिने हाथ हो। किसने परेशान किया है बताओ मुझे कम्बख्त का नाम ! मै अभी उस का घर फूक कर उसे नेस्तनाबूद कर दूंगा। मेरे जिन्दा रहते तुम्हे परेशान होने की ज़रूरत नही है।"

"अज़ीज़खा, मेरी अपनी परेशानी की मुझे कोई चिन्ता नही है। तुम हमारे ग़रीब किसानो की हालत देखो"—अरतैक ने उत्तर दिया।

"ओह, तुम तो दूर की बातें कर रहे हो।"

"लेकिन मेरा ख्याल था कि तुम भी इन बातों का ख्याल करते हो ! पिछले बरस तो तुम्हें ऐसा ख्याल था !"

'ख्याल मुझे अब भी है। तुम यह मत समझो कि मेरा दिल बदल गया है। यह भी न सोचना कि तुम्हारी आओ भगत नही की ? मेरा दिमाग़ इस समय फ़िक्र में चकरा रहा है। सैकड़ो ही सवाल सामने है।"

"अजीजखां या मैं अपना सवाल लेकर नही आया हूँ।"

"जो भी सवाल हो, कहो।"

"सवाल किसानों का ही है। मैं तुम्हें किसानों का रक्षक समझता रहा

हूं। पिछले बरस तुमने किसानों में एलान किया था, अगर वे लोग और जागीरदार तुम्हे दबाना चाहते हैं तो उन्हें उखाड़ फेंको लेकिन आज जैसे लोग तुम्हे घेरे बैठे है, मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं।"

"तुम किन लोगों की बात कह रहे हो ?"

"मै तुम्हारे सब साथियों को तो जानता नहीं। हां अलनज़र बे को जरूर जानता हूँ। वह सदा ज़ार के पक्ष मे रहा है, जनता के पक्ष मे कभी न था। इस एक आदमी को देखकर मुझे दूसरे लोगों के बारे में भी सन्देह होता है। अलनज़र बे वह आदमी है जो मेरे जैसे गरीबों का खून पीकर फूल रहा है। अगर तुम ऐसे आदमियों की सलाह पर चलना चाहते हो तो फिर ज़ार के कारिन्दों और तुम्हारे काम में भेद ही क्या रहेगा ?"

"अरतैक ज़रा सोच समझ कर बात करो।"

"मै खूब सोच समझ कर ही कह रहा हूँ।"

अरतैक की इस दो टूक बात से अज़ीज सहम गया। शीतला के दागों से भरे उस के चेहरे पर परेशानी झलक आई और उस की बड़ी-बड़ी आखों में लाल डोरे फिर गये। अपने मन का भाव प्रकट न होने देने के लिये करवट बदल वह और आराम से बैठ, गम्भीर स्वर मे बोला—"अरतैक तुम जानते हो मैंने ज़ार के खिलाफ बगावत क्यों की थी ? क्यों मुझे अपना वतन छोड़ कर भागना पड़ा ? सिर्फ इस लिये कि मैं ज़ार के बदमाश कारिन्दों को खत्म कर देना चाहता था, यह जान बूझ कर तुम मुझे जार के बराबर कैसे कह रहे हो ?"

अरतैक पर अजीज़ की बात का गहरा प्रभाव पडा परन्तु फिर भी उस ने गम्भीर स्वर मे उत्तर दिया—"अज़ीज़ खाँ मै अब भी तुम्हारी बात ठीक से समझ नहीं सकता। जो होगा सामने आ जायगा। दूध होगा तो दूध, और पानी होगा तो पानी। मै तुम्हारी बराबरी किसी से नही कर रहा हूँ। परन्तु मै तुम्हारा मित्र हूँ इसलिये साफ बात कह रहा हूँ।"

अज़ीज़ इस कड़ी बात से भी बिगड़ा नहीं। वह और भी नरमी से बोला—"भाई, तुम मुझे जान नहीं पाये। मैं ज़ार के कारिन्दों की नस्ल मे से नहीं हूँ जो अपने मालिक के बूते पर कूदते थे। मै खुद घर-बार और सगे सम्बन्धियों के सुख-दुख को समझता हूं। चपैक सर्दार का खून है। कोई नहीं कह सकता कि मैंने कभी रियाया पर जुल्म किया है ! मैं तुम्हारे मन की बात भी समझता हूँ लेकिन अल्ती सोपी और अलनज़र बे मेरे भाई बन्द नहीं ! और न उन की

बात मेरे लिये कुरान की आयत है। भाई यह तो राजनीति है। देहात में इन बड़े आदमियों की ताक़त है। लोग अब भी इन की बात मानते हैं। अगर दुश्मन से भी अपना काम निकल सके तो हर्ज क्या है ? जब तक अपने कदम नहीं जमते, इन लोगों से मदद लेनी ही होगी। मैं उन की बात सुनता हूँ, राय भी लेता हूँ, लेकिन फैसला तो मुझे ही करना है। तुम फिजूल बातों मे मत उलझो। तलवार सम्भालो।"

"नहीं भाई अज़ीज़ यह मेरे बस का नही। अलनजर बे के साथ मेरा निबाह नही ! एक सराय में तो क्या, जिस गाँव या देश में बे रहेगा मै नहीं रह सकता। तुम नाराज भले ही हो जाओ परन्तु ब तुम्हारे साथ है तो मेरे लिये तुम्हारे यहाँ जगह नही।"

"क्या बचपन कर रहे हो अरतैक ? मै तुम्हारे लिये सर्दार अज़ीज़ खाँ नहीं एक तुर्कमानी साथी हूँ। तुम बताओ तुर्कमान का यह कायदा है कि कोई भी इन्सान मेरे यहाँ आता है तो मुझे उस की इज्जत रखनी है, अलनजर हो या कोई और हो। तुम से मै कोई सौदा नही कर रहा हूँ लेकिन याद रखो मेरे साथ रहोगे तो तुम्हारे लिये तरक्की की राह खुल जायगी। मैं तुम से जल्दबाज़ी के लिये नही कह रहा हू। तुम मन को खूब तौल लो। अलनजर है क्या ? अगर वह तुम्हारे खिलाफ़ जबान भी हिलाये तो उस का घर तुम्हारे सामने फुकवा दूँ।"

"क्या कहूँ मै ?....मैं तुम्हारा नौकर हूँ और बे तुम्हारा दोस्त है। तुम्ही बताओ किस का हक ज्यादा है ?"

"अज़ीज़ देखो, मुझ से कसम मत दिलवाओ। मेरी बात ही काफी है। तुम मेरे कदम जम लेने दो। अलनजर को मै कान से पकड़ कर तुम्हारे हवाले कर दूंगा।"

यदि इतनी बात चर्नीशोव ने कुलीखां की भी बाबत कह दी होती तो अरतैक आँख मूंद उस के साथ हो गया होता परन्तु चर्नीशोव तो लंगड़े का पक्ष ले रहा था इसलिये अरतैक अज़ीज़ के पास मे चला गया। लेकिन उसे क्या मालूम था कि जिस राह पर पाँव रखा है वह उसे कहाँ से कहाँ ले जायगी। पिछले दिनों में उस ने जो कुछ सहा था उस के आधार पर वह अपने आप को खूब अनुभवी और पक्की समझ का आदमी समझने लगा था और उस का विचार था कि हालत के मुताबिक उस ने बिल्कुल ठीक मार्ग अपनाया है। क्रान्ति के बाद तेजेन में हथियारों की कमी न थी। अज़ीज़ ने अरतैक और

काज़िल खां को अपनी फौज का कमाण्डर बना दिया। अरतैक के कंधों पर हरे रंग के हिलाल और तारे के निशान लग गये। उस की पीठ पर राइफल और कमर में तलवार लटकने लगी।

उसी समय तेजेन में पंचायत की ओर से एक लाल फौज भी बन गई। इन लोगों के कंधों पर लाल निशान थे। इस फौज के अफसरों में चर्नीशोव और कुलीखाँ थे। इस फौज का कमाण्डर कुलीखाँ का मित्र कलूई खाँ था। कलूई खाँ देव का देव, भयानक रूप रंग का आदमी था। उस की आंखें भी बड़ी-बड़ी थीं। एक ही शहर में दो फौजें, एक ही बाजार के एक सिरे पर लाल दाढ़ी-मूंछ से घिरे लाल चेहरे वाला काज़िल खाँ कमर में टेढ़ी तलवार लटकाये ऐंठता फिरता और दूसरी ओर कलूई खाँ कमर में माउज़र पिस्तौल और छोटी किर्च अड़ाये घूमता दिखाई देता।

भोले किसान इन लोगों की ओर सहमी हुई आँखो से देखते और सोचते रह जाते—"जाने दुनियाँ में क्या होने जा रहा है?"

१०

एक खूब बड़े कमरे मे लम्बे चौड़े कालीन पर अज़ीज खाँ अपने सलाहकार साथियो के साथ बैठा दिल बहला रहा था ।

रोएदार खाल की बनी अपनी लम्बी-लम्बी टोपियाँ उतार कर उन लोगों ने एक ओर रख दी थी । खिड़की से आती दोपहर की धूप उन लोगों के उस्तरे से मुंडी खोपड़ियों पर पड़ रही थी । बीच मे एक दस्तरखान पर चाय के प्याले चायदानियाँ और मिस्त्री रखी हुई थी । आते जाड़े की सुहाती-सुहाती घाम मे इन बर्तनों पर मक्खियाँ अपने राग गुन-गुना रही थी । प्यालों मे भरी गहरी चाय से महक लिये भाप उठ रही थी । कमरा बड़ा और ऊंचा होने पर भी हुक्के से निकला हुआ धुआँ छत के नीचे मंडरा रहा था ।

अज़ीज़ के साथ ही अन्ना कुर्बान यारमुश काजी बैठा हुआ था । काज़ी की काली दाढी बड़े थैले की तरह उस की ठोड़ी से लटकी हुई थी । जांघों पर टिके उस के हाथ भी काले रोमों से ढँके रीछ के पंजों जैसे जान पड़ रहे थे । उस की बड़ी-बड़ी साफ आँखों से मूर्खता झलक रही थी । वह एक दरबारी राजनीतिज्ञ नही बल्कि बेपरवाह देहाती रंग का ही मालूम देता था ।

अन्ना कुर्बान के साथ ही भारी भरकम कारीमुल्ला बैठा था । कारीमुल्ला का माथा और दाढ़ी शेष चेहरे से बहुत आगे बढ़े हुये थे । ऐसा जान पड़ता था कि सिर पर चक्की का पाट रख देने से चेहरा पिचक कर ऊपर नीचे के भाग आगे बढ़कर बीच का भाग भीतर धंस गया हो । उस की धंसी हुई आँखों में छोटी-छोटी पुतलियाँ चमक कर आतुरता कर प्रकट रही थीं । मुल्ला अनपढ़ था परन्तु उस के बाप दादा मुल्ला थे इसलिये मुल्ला का नाम खान्दानी तौर पर चला आ रहा था । उस के आगे आल्ती सोपी एक मामूली सा कुरता

पहने बैठा था। कुरता गले पर मैला था। उस के ऊंचे पायजामे के पहुंचे से उस की बिवाई से फटी एड़ियां दिखाई दे रही थीं और सूखी-सूखी पिंडलियां भी झलक रही थीं। उस का भूरे रंग का लबादा कंधे से अटका हुआ था। अपनी आदत के अनुसार वह इस समय भी दाहिने हाथ से माला जपता जा रहा था और मन में शायद कोई तिकड़म सोच रहा था। उस की आँखों और चेहरे से निर्दयता टपक रही थी। जैसे उस का चेहरा निर्दय था वैसे ही उस की जुबान भी कड़वी थी। ईमानदारी और इन्साफ़ के झगड़ों में वह कभी न पड़ता था। पिछली बगावत में भाग लेने के कारण वह भी अरतैक के साथ अश्काबाद के जेलखाने में रह आया था। उस बगावत मे सोपी ने जनता पर अन्याय के विरोध के लिये नहीं बल्कि खानों और मुल्लाओं का राज कायम करने की आशा से भाग लिया था।

इस चक्कर के अन्त में अलनज़र बे के साथ धूसरे से चेहरे का आदमी मदीर ईशान बैठा हुआ था। इशान की आँखे फ़ौलादी रंग की थी और चौड़े जबड़े फैले हुये थे। उस की आयु होगी, लगभग पैंतीस बरस की। पिछले पन्द्रह बरस से वह रूसी अफ़सरो के साथ रह कर तुर्कमान लोगों की बात रूस में समझाने का काम करता रहता था। इसलिये लोग-बाग मे उस का काफ़ी रोब था। उस की ज़बान कैंची की तरह चलती थी इसलिये लोग उसे मदीर (जल्दी बोलने वाला) पुकारने लगे थे। बजुर्गों और मुल्लाओं से बातचीत करते समय वह शरियत (धार्मिक पुस्तको) की ही ज़बान मे बात करता था इसलिये लोग उसे ईशान (आलिम) भी पुकारने लगे।

यह था अज़ीज़ खां का दरबार जहाँ उस की नीति तय होती थी। अरतैक भी कमरे मे एक ओर बैठा था। इन लोगों की बातचीत सुनने के लिये वह किसी न किसी बहाने वहीं बना रहा।

बातचीत राजकाज के प्रबंध के बारे में हो रही थी। अज़ीज़ ने अपना तरीका बहुत दिन पहले, अफगानिस्तान मे रहते समय ही मन मे निश्चय फर लिया था परन्तु इन लोगों का मन रखने के लिये वह इन लोगों की सलाहें बहुत महत्व देकर सुन रहा था।

आल्ती सोपी सभी लोगों की ओर निगाह दौड़ा कर सब से पहले बोला—"अज़ीज़ खां, खुद नये कानून बनाने का ख़याल करना ही ग़लत है। सही कानून हज़रत पैग़म्बर ने एक हजार बरस पहले ही क़ायम कर दिए थे। हम उन क़ानूनों से बाहर नहीं जा सकते। असली कानून शरियत का क़ानून है।

मगर शरियत को समझने में कहीं शक होता है तो श्रालिमों की राय ली जानी चाहिए। एक श्रालिम को काज़ी बनाया जाना चाहिये। शरियत के क़ानून में कोई चूंचे-चुनांचे नहीं होना चाहिए। शरियत के हुक्म पर पूरा श्रमल होना चाहिये। श्रगर शरियत का हुक्म है कि गुनाहगार का हाथ काटो, हाथ काट दो। श्रगर शरियत का हुक्म है कि गुनाहगार का सिर काटो, तो सिर काटो। श्रगर शरियत का हुक्म है कि गुनाहगार को फांसी पर लटका दो, तो फांसी पर लटकाश्रो।"

श्रलनजर बे ने सिर हिला कर मुल्ला सोपी का समर्थन किया—"ठीक है ठीक है"—मन ही मन वह सोच रहा था, यह है तरीका श्ररतैक का इन्त-जाम करने का।

दूर से बाद में बोला यारमुश काज़ी, भर्राई हुई श्रावाज में जैसे कि गले में फांस श्रटकी हुई हो—"वैसे तो मुल्ला की बात सोलह श्राना सही है लेकिन शरियत के क़ानून के साथ ही श्रपना रीति-रिवाज भी तो है। कहावत है, श्राद-मियों की परवाह चाहे न करो पर रिवाज़ पर कायम रहो! शरियत तो शरि-यत है पर श्रगर हम रिवाज़ पर कायम है तो भी ठीक है।"

कारीमुल्ला न तो शरियत की श्रोर न रिवाज की ही बात कर सकता था। बहुत देर तक कोशिश में नाक श्रौर दाढ़ी हिला-हिला कर वह श्राखिर बोला—"हां भाई, हम तो यह कहते हैं कि····मिसाल कहते है न कि चाहे ऐसे ठीक समझ लो, चाहे वैसे कर लो। मतलब यह कि बात ठीक होनी चाहिए। श्रौर श्रपना इस्लामी रिवाज़ ठीक होना चाहिये, बस यही ठीक है।" यह बात कहने के यत्न में कारीमुल्ला का पूरा शरीर थर्रा उठा, उस की मुन्डी हुई खोपड़ी की खाल तक सिकुड़ गई श्रौर शरीर पसीना-पसीना हो गया। वह ऐसे हांफ रहा था जैसे मंजिल पूरी करने के बाद घोड़ा हांफता है। कांपते हुए हाथों से श्रपना चाय का प्याला उठा वह प्यास बुझाने के लिए घूंट भरनें लगा।

श्रलनज़र गम्भीर स्वर में शान्ति से बोला—"यह ठीक है कि शरियत श्रौर रिवाज़ दोनों ही मानने से हम लोग गलती से बच सकते हैं। श्रब ज़माना वदला है तो ज़माने के साथ नए कानून की भी ज़रूरत होगी। जहां तक मैं समझता हूं कुरान में हज़रत मुहम्मद की रवायत में रिवाज़ की बात नहीं है। रिवाज़ तो ज़माने की हालत से लोगों की ज़रूरत के मुताबिक बन जाता है। मुल्ला लोग खुद मानते हैं कि कुरान में पिछली श्रायतें पहली श्रायतों के खिलाफ पड़ती हैं। श्राजकल का ज़माना हज़रत पैगम्बर के ज़माने से बदल गया है।

आज अगर लोगों की तरफ से इकट्ठे हुये लोग मिल कर हालत के मुताबिक कानून बनाते हैं तो यह शरियत और रिवाज के खिलाफ नहीं है।"

बातचीत का कोई भी शब्द लिखा नहीं गया। फौज के लिए कितना खर्च किया जायगा, कैसे किया जायगा और वह रकम कहां से आयेगी, इस विषय में अजीज़ ने अपने दरबारियों से कोई राय नहीं ली। उस ने सब नहरों के इलाकों पर अपनी इच्छा से कर लगा दिया। जब लोगों ने पूछा—यह रकम कहां से आयेगी ? तो अजीज़ ने उत्तर दिया—"जिन लोगों के पास रकम है उन्हीं के यहां से रकम आयेगी।" अज़ीज़ की इस मनमानी घरजानी से और बे लोगों की दौलत पर उस के हाथ फैलाने से अलनज़र घबराया। अलनज़र ने इस विषय में बात उठाने के लिए अजीज़ की ओर प्रश्नात्मक ढंग से कुछ कहने के लिए मुह खोला परन्तु अजीज खाँ ने उस ओर से आंखे फिरा कर दूसरी बातें आरम्भ कर दी, "बुजुर्गो, इस साल रियाया की हालत बहुत खराब है। यह बात आप मुझ से ज्यादा जानते है। लोग भूख से तड़ातड़ मर रहे हैं। इस अकाल मौत से लोगों को बचाने के लिए क्या इन्तजाम किया जा सकता है ?"

अलनज़र और अधिक कर बढाये जाने की आशंका से तुरन्त बोला—"सरकार से मदद लेनी चाहिए !"

"सरकार कौन है, हम सरकार है।"—अज़ीज़ बोला।

चाय का प्याला पीने से यारमुश काजी को और अधिक पसीना आ गया। वह अपने छीट के कुरते का दामन हिला कर हवा करता हुआ बोला—"सुना है, सहयोग सभा बनी है। सुना है, शहर के तंग सुथन्ने वाले (पतलून पहनने वाले) अफसर सब सरकारी राशन आपस में बांट लेते है। हम लोग भी सरकारी राशन क्यो न लें। ज़ार तो मर गया फिर भी इन तग सुथन्ने वालों का ही राज चलता रहेगा। अजीज खाँ, इन लोगों के सुथन्नों में छेद करना होगा !"

अज़ीज़ की जगह उस के अफसर माल मदीर ईशान ने उत्तर दिया—"कुर्बान आगा, सहयोग सभायें क्या देती है ? जैसे बीमार आदमी के मुह में पानी की बूंद टपका दी जाये। इतना राशन ले कर बांटने लगो तो किसी के हाथ कुछ न आये, जैसे मुट्ठी भर अनाज ले कर दस बीघा जमीन पर बो दिया। वहां से अगर कुछ मिलेगा तो ले लेंगे लेकिन रियाया की मदद के लिये इस से कुछ नहीं बनेगा। उस के लिये तो कुछ और ही करना होगा।"

"जो कूकर मारेगा वही कूकर करेढ़ेगा", आल्ती सोपी बोला, "किसानों

को जिस ने लूट कर भूखा मारा है वही आ कर उन्हें मरने से बचायें, खाने को दें।"

"तुम सीधी बोली मे बात करो तो समझ में आये।"—अज़ीज़ खां ने कहा!

"अज़ीज़ खां, अनाज धरती की ओर ही जाता है। फसल काटो तो अनाज की बाल धरती पर झुकती है। मंडाई करो तो अनाज धरती पर गिरता है। खेत में बोओ तो अनाज धरती में घुस जाता है। बोरी में भरो तो अनाज का मुह धरती की ओर रहता है। कटाई में जितना अनाज खेतों में बिखर जाता है, वही गरीबों और पछियों के भाग आता है। जो अनाज व्यापारी की खत्ती मे चला गया वह किसी का नहीं ? न तुम्हारा न हमारा।"

"सोपी की बात सोपी ही समझे!"

"किसान की कमाई का क्या है ? रुपये मे से चार आना जागीरदार के कारिन्दे के हिस्से गया, चार आने साहूकार के हाथ, चार आने जागीरदार सरकार के हाथ, चार आना उस के पेट के लिए रहा।"

"तो फिर ?"

"साहूकारो, जागीरदारों की खत्तियों में गया किसानों का अनाज कहां गया ? वह खत्तियों में धरा है। इस अनाज को धरती से निकालो। इतना अनाज अगर धरती से निकल कर किसान को मिल जाय तो अगली फसल तक क़िसान बच जायगा!"

"मतलब है जागीरदारों और बे लोगों से अनाज मांगा जाय ?"

"मांगें से दे दे तो भला, नहीं तो लेना तो होगा ही! अभी कहा न अल-नज़र बे ने! बदले ज़माने में हालात के मुताबिक कानून बनाना होगा!"

"आखिर काम की बात कही—"सोपी ने करवट ले अज़ीज़ का समर्थन किया।

सोपी के अपने यहां अनाज था नहीं इसलिए दूसरे साहूकारों और जागीरदारों का अनाज छीना जाने में उसे कोई आपत्ति न थी। एक से छीन कर दूसरे को दे देने में उसे एतराज़ न था। इस समय सोपी के मन में असली बात यह थी कि बैंक नहर के इलाके का प्रतिनिधि होने के नाते जागीरदारों से अनाज ले कर अपने इलाके मे वही खुद अनाज बांटेगा। किसानों में उस की मानता बढ़ेगी सो बढ़ेगी, इस के अलावा उस के अपने घर अनाज की कमी न रहेगी। सोपी या कोई दूसरा आदमी थोड़ा बहुत माल समेट ले इस में अज़ीज़

को कुछ एतराज न था। वह चाहता था लोग बाग और किसानों को उस पर विश्वास हो जाय।

यारमुश काज़ी को सोपी की बात पसन्द न थी परन्तु वह बहुत यत्न करने पर भी इतना ही कह सका—"मतलब....इस का मतलब तो है ...।"

कारीमुल्ला को भी यह प्रस्ताव नापसन्द था। मन ही मन उसे इस बात पर भी क्रोध आ रहा था परन्तु अज़ीज़ के भय से वह चुप रह गया। अज़ीज़ से अलनजर बे को भी भय था परन्तु उसे अपने नुकसान का भी भय सब से अधिक था। वह साहस कर बोला—"बात सोपी की ठीक है लेकिन हमारे यहां ईरान और रूस जैसे साहूकार हैं कहां जिन के यहां बड़ी-बडी खत्तियां भरी हो? यह तो गरीब लोगो की बस्ती है। फसल कटी और बनियों के हाथ से निकल दूर रूस की मण्डियों में जा पहुंची। यहां किसी के यहां आठ-दस बोरी अनाज होगा भी तो क्या? कुनबे के लोग हैं, रिश्ते और जान पहचान के लोग हैं। तुम कहते हो, बे लोगों के यहां अनाज है भैया, मैं भी बे ही हू परन्तु मैं ही जानता हूं कि इस बरस खुदा ही हाफिज है?......कैसे निबाह होगा? अगर इसी तरीके पर चले तो गरीबों का पेट तो क्या भरेगा उन की हालत और बुरी हो जायगी और बे लोग भी बिगड़ उठेंगे। दुश्मन का मुकाबिला करना है तो आपस मे बदगुमानी और झगड़े न उठे तभी अच्छा।"

अब तक अरतैक एक ओर चुपचाप बैठा था परन्तु अब रह न सका—"मालूम होता है जैसे दुनिया मे सतह पर बगावत हो रही है वैसे ज़मीन के भीतर भी हलचल है। तो अलनज़र की खत्तियों में भरी सैकड़ों बोरियों की जगह आठ-दस ही रह गईं। मालूम होता है, बेचारे का अनाज धरती निगल गई!"

यह बात सुन अलनजर बे ने अजीज़ खां की ओर देख कर पूछा—"क्या यह आदमी भी तुम्हारा सलाहकार है?"

अज़ीज़ खां ने बे की नाराज़गी की परवाह न कर उत्तर दिया—"यह आदमी हमारी फौज का एक कमाण्डर है।" बे को चुप रह जाना पड़ा। इसी समय एक अफ़सर ने आकर अज़ीज को सम्बोधन किया—"एक परदेसी मेहमान आप से अकेले में मिलना चाहता है।"

यह सुन अज़ीज ने अपना दरबार स्थगित कर दिया। दरबारी लोग उठ कर चले गये। परदेसी भीतर आया और आकर उस ने कमरे का दरवाजा सावधानी से बन्द कर लिया। मेहमान की आयु तीस बरस के लगभग होगी।

कद मंझोला, घनी भवें, रंग कुछ ढंका हुआ, मूंछे और दाढ़ी खूब काली, दांत कुछ बड़े-बड़े लेकिन खूब साफ़ चमक रहे थे। वह रेशमी कमीज़, खाकी पतलून और घुटनों तक ऊंचे बादामी बूट पहने था। उस के कंधों पर चोग़ा था पोशाक उस की तुर्कमानी थी परन्तु वह तुर्कमान जान न पड़ता था।

उस ने अपना परिचय दिया—"मैं अफ़ग़ान हूँ।"

अफ़गानिस्तान मे अज़ीज़ खाँ ने अपनी मुसीबत के दिन बिताये थे। अफगानिस्तान का नाम सुनते ही अज़ीज़ ने विश्वास से मेहमान की ओर देखा परन्तु मेहमान के व्यवहार और तौर तरीके में कुछ ऐसी नफ़ासत थी कि अज़ीज़ के मन में सन्देह हो गया। कुछ सोच कर उस ने मेहमान से प्रश्न किया—"तुम अफ़गान हो या बलूची हो?"

मेहमान ने इस्लामी ढंग से सीने पर हाथ रख कर उत्तर दिया—"शुक्र खुदा का उस ने मुझे अफगान पैदा किया है।"

"नाम पूछ सकता हूं।"

"अब्दुलकरीम खाँ"

"कारोबार, शगल?"

"जो काम सौप दिया जाय उसे पूरा करना।"

"कहां से तशरीफ़ आ रही है, किस तरफ़ का इरादा है?"

दरवाज़े और खिड़की की तरफ़ देख अब्दुल करीम धीमे स्वर में बोला—"मै कुछ खास बात करना चाहता हूँ।"

"यहाँ कोई खतरा नही है, महफ़ूज जगह है। जो चाहो कह सकते हो।"

अब्दुलकरीम खां ने एक बार चारों ओर देखा। उस के इस ढंग से अज़ीज़ का सन्देह और बढ़ा—यह आदमी कोई चोर है वा भगोड़ा; या कोई जासूस है? उस ने एक बार फिर मेहमान को विश्वास दिलाया कि यहाँ से कोई गैर आदमी बात नहीं सुन सकता। बेखतरे कहो! अफ़गानिस्तान के लोग मेरे लिये तुर्कमानिया के लोगों की तरह ही अपने सगे हैं। तुम अगर अफ़गान हो तो बेखौफ़ जो चाहे कहो! अगर खून कर के भी आये हो तो वहाँ तक मेरी पहुंच है, तुम्हें कोई छू नहीं सकता।

अब्दुलकरीम खाँ ने भरोसे से कहा—मै एक राजदूत हूं।"

"राजदूत?"

"मैं अफ़गानिस्तान के अमीर हबीबुल्ला खाँ का राजदूत हू।"—अब्दुल करीम खां गर्दन उठा कर बोला।

अज़ीज़ की नजरें बदल गईं। उत्सुकता से उस ने पूछा—"तुम्हें मेरे पास अमीर ने भेजा है ?"

"खुदा मुझसे ग़लत बात न कहलाये" —अब्दुलकरीम ने कुछ ठिठक कर उत्तर दिया, "जिस समय मैं अफ़गानिस्तान से चला था आप के खान बन जाने की खबर वहाँ नहीं पहुंच पाई थी। अमीर ने मुझे खुरासान के कुर्बान मुहम्मद खाँ जुनेद के यहाँ भेजा था। लेकिन मुझे हुक्म है कि अगर हो सके तो मैं आप से भी मिलूं।"

"तो तुम खुरासान ताशौज़ जा रहे हो ?"

"मैं ताशौज से लौट रहा हूं। कुर्बान मुहम्मद खाँ ने आप को सलाम कहा है।"

"शुक्रिया, तुम पर अल्लाह की इनायत इस सन्देश के लिये! खान आग़ा मज़े में हैं ?"

"शुक्र अल्लाह का। खान आग़ा खुशहाल है। खान आगा आप को अपना भाई खयाल करते हैं। उन का संदेश है कि आप को किसी किस्म की मदद की जरूरत हो तो खत या आदमी भेज कर खबर दें।"

"हम लोग अफगानिस्तान में ही एक दूसरे के भाई बने थे।"

"ठीक है। मुझे मालूम है।"

"अब्दुल करीम खां, यहां से कहां जाने का इरादा है ?"

"यहां मै आप के पास आया हूं। जा कर मुझे अमीर हबीबुल्ला खां को आप से मुलाकात की खबर देनी होगी।"

अज़ीज़ ने अब्दुल करीम खां से अफगानिस्तान के बारे में बहुत सी बाते पूछीं, पश्तो मे बातचीत कर अपना संतोष कर लिया कि वह अफ़गानिस्तान से ही आया है। अफ़गानिस्तान के कई खानों का जिक्र उस ने अब्दुलकरीम से किया। अब्दुलकरीम ने इन लोगों का ठीक-ठीक परिचय दिया इस पर भी अज़ीज़ खाँ ने उस से पूछा—"तुम्हारे पास अमीर का कोई पत्र है ?"

"देख ही रहे हो कि मै भेस बदल कर आया हू"—अब्दुलकरीम ने उत्तर दिया, "इसीलिये मै तुर्कमानी पोशाक भी पहने हू। ऐसी हालत मे अपनी सरकार का पासपोर्ट (राहदारी) या कोई पत्र मैं साथ कैसे रख सकता हूं? किसी दूसरे आदमी को तो मैं यह भी नही बता सकता कि मैं अफ़गान हूं।"

अज़ीज़ का सन्देह दूर हो गया तो उस ने अब्दुलकरीम से उस की यात्रा का प्रयोजन पूछा।

"खान आग़ा"—अब्दुलकरीम ने उत्तर दिया, "मुसीबत के दिनों में आप ने और जुनेद आग़ा ने अफ़गानिस्तान में ही जगह पाई थी। मेरा ख़याल है हम लोगों का सलूक बुरा नहीं रहा होगा ?"

"नही शुक्रिया, मैं बहुत आराम में रहा और मशकूर हूं।"

"जुनेद आगा अब खुरासान के पूरे इलाके का मालिक है। और अब आप की हैसियत भी, अलअहम्दलिल्ला, बहुत ऊंची है। इस वक्त दुनिया में कैसी गड़बड़ी मच रही है और राजनीतिज्ञ लोग कैसी चालें चल रहे हैं, यह मुझ से ज्यादा आप ही खुद जानते है। ज़ार ने आप के साथ जो जुल्म किया सभी जानते है और यह जो नई सरकार बन रही है; तरबूज को तराशे बिना कौन जानता है कैसा निकलेगा ? कौन जाने यह ज़ार से भी ज्यादा जालिम निकले ! आप का क्या ख़याल है, आप रूस पर ही भरोसा करेंगे या किसी दूसरी सल्तनत के साये में आना बेहतर समझेंगे ?"

"किस सल्तनत के साये में ?"

"हूं......समझ लीजिये, बर्तानिया !"

"बोझा ही ढोना है तो ईंट ढोई कि पत्थर ! क्या फ़रक पड़ता है। रूस के ज़ार ने जो किया बर्तानिया का बादशाह उस से कम क्या होगा ? मैं तो किसी के भी जुये में गर्दन फंसाना नहीं चाहता।"

करीम खां के माथे पर बल पड़ गये परन्तु अज़ीज़ का ध्यान उस ओर न था। करीम सम्भल कर बोला—"मेरा मतलब तो है कि आप किस से संधि करना चाहते है !"

"मै इस झंझट में नहीं फंसना चाहता !"

"अपने पड़ोसी अफ़गानिस्तान के बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

"पूरी की आस से हाथ की आधी भली........दूर के बड़े-बड़ों से अपना पड़ोसी अफगानिस्तान बहुत अच्छा !"

अज़ीज़ के समीप सरक कर अब्दुलकरीम बोला—"बस इसी मतलब से मुझे अमीर हबीबुल्ला खाँ ने जुनेद आग़ा और आप की खिदमत में भेजा है। अब तक यह रहा कि मुसलमानों को एक तरफ रूस, दूसरी तरफ बर्तानियां और तीसरी तरफ़ फ्रांस बांटे रहे लेकिन अब इस जंग के बाद मौका है कि दुनिया के मुसलमान मुल्कों में एका हो जाय ! इस के लिए सभी को कोशिश करनी होगी। एक जान एक दिल हो कर ! लेकिन हम लोगों को एक बड़ी ताकत के सहारे की भी जरूरत है, मिसाल के तौर पर बर्तानिया ही हो !

अमीर की राय है कि इस वक्त रूस में फैली गड़बड़ का फायदा उठा कर मुस्लिम मुल्कों तुर्की, तुर्कमानिया और अफगानिस्तान का एका बन सकता है। इस बारे में आप की राय क्या है ?"

अज़ीज़ खाँ सिर झुकाये सोचता रह गया। अब्दुलकरीम खां की बात बहुत सीधी-सादी न थी कि जैसे चाहा देहात पर कर लगा दिया। सवाल का जवाब देने से पहले खूब सोच लेना जरूरी था। अज़ीज़ खाँ अफगानिस्तान से जा मिले तो रूस क्या यों ही देखता रह जायगा ? और फिर अफगानिस्तान का अमीर क्या ज़ार से भला होगा ? अफगानिस्तान उसे पड़ोसी सुल्तान मानेगा या उसे अपनी सल्तनत का एक जागीरदार भर ही बना देगा ?"

करीम भी जानता था कि सवाल अज़ीज़ के लिये आसान नहीं है। खूब सोच लेने का अवसर देने के लिये करीम चुप बैठा उस की झुकी हुई पलकों की ओर देखता रहा।

अज़ीज़ काफ़ी देर तक सोचता रहा और फिर अपने हुक्के के तम्बाकू में एक दियासलाई दिखाकर हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। सूने कमरे मे हुक्के की गड़-गड़ाहट बहुत ज़ोर से सुनाई दे रही थी और तम्बाकू का नीला-नीला बोझल धुआँ कमरे भर मे फैल गया। हुक्के की सटक मुंह मे लगाये अज़ीज़ ने पूछा—"जुनेद आग़ा की क्या राय है ?"

"जुनेद आग़ा सब मुसलमानों का एका चाहता है। वह अमीर से सहमत है।"

"आग़ा ने अमीर के लिये कोई ख़त दिया है ?"

"खतों के बारे में तो मै अरज़ कर चुका हूँ कि अगर मै पकड़ा जाऊं और ऐसा कोई खत-पत्र मेरे पास निकल आये तो मेरी तो जान जायगी ही लेकिन मेरी जान की इतनी फिक्र नहीं। ऐसी हालत में जिस काम के लिये मै जोखिम झेल कर आया हू उस की भी राह रुक जायगी। खत-पत्र मैं अपने साथ कैसे रख सकता हूँ ?"

"ठीक कहते हो।"

"फिर क्या राय है आपकी ?"-- कुछ प्रतीक्षा के बाद करीम ने पूछा।

"मैं जुनेद आग़ा के साथ हूँ। आगा जो कहते हैं, ठीक है।"

दो दिन तक अज़ीज़ खां और अब्दुल करीम खां तुर्कमानिया और अफ़गा-निस्तान की संधि के बारे में बातचीत करते रहे। इस बीच करीम ने तेजेन में अज़ीज़ की स्थिति का पूरा पता लगा लिया। अज़ीज़ के सलाहकारों, उस के फौजी अफ़सरों और सोवियत सरकार की स्थिति भी वह जान गया। अवसर

निकाल कर उस ने काज़िल खां और कलूई खां और उन की फौजों को भी देख लिया। करीम हर बात के ब्योरे में गहराई तक जाता था। उस की चतुरता और सावधानी से अज़ीज़ को विस्मय होता था। अज़ीज़ ने ऐसे चतुर और समझदार आदमी अफ़गानिस्तान में कभी न देखे थे। अपने दरबारियों को उस ने अब्दुल करीम खां का भेद न बताया।

दो दिन बाद अब्दुल करीम खां सेराख की ओर चला गया।

११

अरतैक के गाँव का और उस का लंगोटिया अशीर भी दूसरे साथियों के साथ जबरन भरती में पकड़ा गया था। वह दूसरे तुर्कमानी साथियों से अधिक दूर, मजदूरी पर रूस के भीतरी भाग में भेज दिया गया था। ज़ार की सरकार टूटने पर जब दूसरे लोग लौटे, अशीर उन के साथ ही न लौट सका। वह कई महीने बाद, कई रेलों का चक्कर लगाता हुआ तेजेन स्टेशन पर पहुंचा।

अशीर स्टेशन से शहर की ओर आ रहा था और आते-जाते लोगों के चेहरे पहचानने का यत्न कर रहा था। पहला परिचित आदमी उसे अरतैक ही मिला। दोनों मित्र यों अचानक एक दूसरे को पा गदगद हो गले मिले।

अरतैक अशीर की ओर विस्मय से देखता रह गया। अशीर रूसी मजदूरों के ढंग का गहरे भूरे रंग का सूट पहने था। कपड़े उस के मशीनो के तेल से चीकट हो रहे थे और पांव में भारी भारी फौजी बूट थे। अरतैक को अशीर का पहरावा देखकर नहीं, चेहरा देखकर विस्मय हो रहा था। उस का चेहरा बिलकुल बदल गया था। उस के चेहरे पर पक्कापन झलक रहा था और माथे पर अनुभव की रेखाये पड़ गई थी। उस की भोली चंचल आंखें भी गहरी और गम्भीर हो गई थी। तेजी से बहती, किलकिलाती जल की धारा बदल कर गहरा गम्भीर ताल बन गई थी। अरतैक देखता रह गया कि अशीर को हो क्या गया ?

अशीर को भी अरतैक का चेहरा बदला हुआ जान पड़ा। अरतैक के चेहरे पर पहले की सी उलझन न थी। उस के चेहरे पर भी निर्भयता और आत्म-विश्वास झलक रहा था, आंखें अधिक चमकीली और सजीव हो गई थीं। अरतैक एक रेशमी चोग़ा पहने था। कमर में एक ढीली पेटी से तलवार लटक

रही थी और हाथ में एक मैगजीन-राईफल थमी थी। सब से अधिक विस्मय हो रहा था अशीर को अरतैक के कंधों पर हरे रंग के हिलाल और तारे के निशान देख कर। उसी ओर देखते हुये अशीर ने पूछा—"तुम किस फौज में भरती हुये हो ?"

अशीर की बात से अरतैक को अचम्भा हुआ। अशीर ने पहले न मित्र का बाबत, न अपने और उस के घर-बार की बाबत, न गांव की बाबत और न ढोर-डंगर का ही कुछ पूछा। अरतैक के जेल से लौटने और ऐना के बारे में भी कोई बात नही ? सीधे यही प्रश्न, किस फौज में भरती हुये हो ? उस ने उत्तर दिया—"अज़ीज़ की फौज में हूं ?"

"अज़ीज खां की फौज ?"—लम्बी यात्रा से थकी आंखें झपक कर अशीर बोला, "अज़ीज खां किस फौज में है ?"

"अज़ीज खां की अपनी फौज है ?"

"किन लोगों के साथ है वह, किस वर्ग (जमात) के साथ ?"

इस प्रश्न से अरतैक को और भी हैरानी हुई। अशीर का ढंग भी मित्रों जैसा नहीं, कुछ संदेह भरा और अफसराना था। उस बात की उपेक्षा कर अरतैक ने साफ़-साफ़ जवाब दिया—"वर्ग से तुम्हारा क्या मतलब ? वर्ग मै नहीं जानता। अज़ीज़ तुर्कमानी जनता के साथ है।"

"तुर्कमानी जनता के साथ या तुर्कमानी जागीरदारों के साथ ?'

"मेरा तो खयाल है कि जनता के साथ !"

"तो तुम ने यह कंधे पर निशान कैसे लगा रखे हैं ?"

"क्यों क्या निशान लगाना मना है ?"

"नहीं, यहां दूसरे निशान होने चाहिये थे।"

"लाल-फौज के ?"

"हां"

"जब तक लाल फौज का कमाण्डर कुलीखां रहेगा, लाल-फौज का निशान मैं नहीं लगा सकता।"

"अफ़सोस है मुझे।"

"क्यों ?"

"हम तुम एक मां-बाप के बेटे न सही पर एक ही जमात की औलाद थे।"

"तुम क्या समझते हो, तुम ने अपनी पोशाक बदल दी है तो जनता भी बदल गई है ?"

"सवाल पोशाक का नहीं दिल का है।"

"तो क्या यह निशान ही मेरा दिल है।"

"अरतैक, १६१६ में हम लोगों ने ज़ार की सरकार के खिलाफ बगावत क्यों की थी ? तुम ने जेल किस लिए काटी ?"

"जुल्म का विरोध करने के लिये !"

"तो फिर लाल निशान छोड़ कर हरे निशान क्यों लगाये हो ?"

"मैं तो कह चुका, कुली खां के निशान मैं नहीं लगाऊंगा।"

"लाल निशान कुली खां के नहीं हैं वह जनता के निशान है।"

"तेजेन में तो ये कुली खां के हीनिशान है।"

"खैर मै नही जानता अज़ीज़ खां अब क्या कर रहा है ! पहले तो वह जनता के ही साथ था। लेकिन मुझे तो लाल निशान छोड़ दूसरा कोई निशान सुहाता नहीं ?"

"अशीर, लाल-हरे रंग के निशानों का झगड़ा बाद में होता रहेगा। चर्नीशोव से इस बारे मे मेरी बात हो चुकी है। आओ तुम चाय तो पीओ। ज़रा सुस्ता लो पहले।"

दोनों मित्र अजीज खां के डेरे पर अन्ना की 'काफिला सराय' में पहुंचे। यहां तोंद बढ़ाये, चिकने-चिकने चेहरे के लोगों को धीमी और भद्दी चाल से सहन में आते-जाते देख अशीर को भला न मालूम हुआ। अज़ीज़ खां भी दिखाई दिया। अशीर की पोशाक देख अज़ीज़ के माथे पर त्योरी पड़ गई। अशीर के बैठते ही वह अरतैक की ओर देख बोला—"यह कौन आदमी है ?"

"मेरा एक दोस्त, अशीर-साहत ?"

"क्या करता है ?"

"जबरन-मजदूरी से छूट कर अभी लौटा है।"

"हूं"

"तुम भूल गये, पिछले साल की बगावत में यह मेरे साथ ही तुम्हारे यहां आया था।"

"अब तुम ने याद दिलाया, पहचान लिया।"—अज़ीज़ ने उत्तर दिया, "कमबख्त जार की नौकरी ने हज़ारों नौजवानों को बरबाद कर दिया। कपड़े तो देखो इस के, क्या पहने है ? चेहरा कैसा पीला हो रहा है ? मालूम होता है जैसे परेशानी काट कर लौटा है। तसल्ली रखो भैया, यही ग़नीमत है कि जिन्दगी बच गई, हाथ पांव सलामत है। सब ठीक हो जायगा।"

"अरतैंक अशीर को अपने ब्याह और ऐना की बातें सुनाता रहा। अतैरी-बहरी की बाते सुन-सुन वह खूब कहकहा लगा कर हंसा। बहुत देर तक तो अरतैंक अशीर के घर-बार की खबर टालता रहा लेकिन बाद में उसे बताना ही पड़ा कि उस की पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी। इस खबर से अशीर को बहुत दुख हुआ। वह साल भर से अपनी पत्नी से मिलने की आस लगाये बैठा था। जबरन भरती के समय अपने घर के लोगों से मिलने का भी समय उसे न मिला था। अशीर बहुत देर तक सिर झुकाये उदास बैठा रहा। अरतैंक उसे सान्त्वना देने का यत्न करता रहा।

अशीर अरतैंक को सुनाने लगा कि उसे इवानोव भेजा गया था। उसे एक मामूली मजदूर की तरह कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। वहाँ कुछ साथी मिले जिनसे बातचीत होने पर उसे देश और दुनिया की हालत का पता लगा—"अरतैंक इस से पहले मैं कुछ समझता न था। हम लोगों ने यहाँ बे लोगों के खिलाफ़ बग़ावत की। हुआ क्या ? सौ-पचास लड़ मरे, पचासों चुपचाप बैठे रहे; कुछ बे लोगों का पैसा खाकर उन की ओर हो गये, कुछ हमी लोगों से लड़ मरे। रूस मे ऐसी बात नहीं है। वहाँ किसान मजदूर खूब संगठित है।"

"कैसे ? क्या मतलब तुम्हारा ?"

"उन लोगों में संगठन और दृढ़ता है।"

"साल भर में तुम नई बाते और नई जुबान सीख आये हो। मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पाया !"

"मैं साल भर और रहता तो रूसी बोलना भी सीख जाता। अब मेरे दिल में जबरन भरती में भेजे जाने का कोई कलख नही और न वहां कड़ी मेहनत करने का। घरबार का खयाल न होता तो अभी साल दो साल और वहीं रह जाता। हम लोग अनपढ हैं, बोली भी नही जानते इसीलिये तो मुतरज्जिम (अनुवादक) हमारा खून पीते रहे।"

"तुम मुझे कुलीखां से मित्रता न करने के लिये कोस रहे थे; क्या कुलीखां मुतरज्जिमों से भला आदमी है ?"

"वह बात ही दूसरी है।"

"अशीर अभी यहाँ सैकड़ों ऐसे आदमी हैं जिन्हें ठिकाने लगाना होगा। कुलीखां है, अलनजर बे है। मैं अज़ीज़खां से कुछ दिन की छुट्टी लिये लेता हूँ। एक साथ गांव चलेंगे। वहां अपने पुराने मित्रों से मिलेंगे और अलनज़र बे को भी अपना सलाम कह लेंगे।"

"बहुत ठीक रहेगा अरतैक, मै उसे जरूर सलाम कर लेना चाहता हूं।"

अरतैक अज़ीजखाँ से छुट्टी माँगने गया तो खान ने उसे चेतावनी देकर कहा---"देखो, देहात मे कुछ गड़बड़ी न हो! अभी सब्र करो!" अरतैक बात टाल गया। अपने मन की बात उस ने न कही।

दोनों मित्र एक काफ़िले के साथ गाँव की ओर चल दिये। राह उजाड़ सपाट मैदानो मे से होकर जाती थी। ऊंटो के चौड़े चौड़े पाँव के दुग्मट पड़-पड़ कर सड़क समतल हो गई थी और हवा उसे बुहार कर साफ किये दे रही थी।

अशीर इस सड़क पर चलता दूर-दूर तक नज़र दौड़ाता हुआ सोचता जा रहा था, ऐसी सड़क पर बाइसिकल कितने मजे में चल सकती है और सफ़र कितनी आसानी से और जल्दी तै हो जाता। एक बात की ओर उस का ध्यान बार-बार जा रहा था कि रेल के स्टेशन से सड़क के किनारे-किनारे तुर्कमान लोगों की छोलदारियाँ लगातार फैली हुई थी। इन मे कज्ज़ाक लोगो की छोलदारियाँ भी काफी थी। यह लोग नये नये आकर बसे जान पड़ते थे। जैसे रात भर ज़ोर की बादल-बरसात के बाद अचानक मैदान मे झुण्ड के झुण्ड धरती के फूल (कुक्करमुत्ते) उग आये हो। राह मे भूख से सूखे शरीर, थके-मांदे किसानो के झुण्ड के झुण्ड शहर की ओर आते मिलते थे। आंखो की दौड़ मे, दूर तक कही भी घास या हरी झाड़ी दिखाई न देती थी। रेतीले मैदानो मे पनपने वाली कांटेदार झाड़ियाँ भी कुम्हला कर धरती पर बिछकर सूख गई थी। जुते हुये खेतो मे धूल की आंधिया चल रही थी और मोटे-मोटे पहाड़ी कौए इन खेतो मे से अनाज के बीज अपनी फौलादी चोंच और पजो से खोद-खोद कर चुग रहे थे। मनुष्य और पशु भूख से सूख रहे थे परन्तु कौवे मुटा रहे थे। जगह-जगह लाशे रहने के कारण उन्हें खुराक की कमी न थी। काफिला मीलो सफर कर चुका था परन्तु एक भी घुड़सवार राह में न मिला। आखिर अशीर को सड़क पर खूब दूर धूल का बादल-सा दिखाई दिया। फिर सुमों की आहट सुनाई दी और दो घुड़सवार सरपट घोड़े दौड़ते हुए काफिले के पास से निकल गये। एक सवार दोहरा लाल चोगा पहने ऊंचे घोड़े पर सवार था। दूसरा सवार भी भारी शरीर का मोटा सा आदमी था और एक चितकबरी घोड़ी पर सवार था।

घुड़सवारो के बगल से निकल जाने पर अरतैक ने उन्हें पहचान लिया। वह तुरन्त घूम गया और अपनी राइफल उठा उस ने घुड़सवारों पर निशाना

साधा । वह राइफल का घोड़ा दबाने को ही था कि अशीर ने हाथ बढ़ा राइ-फल खींच ली और पूछा—"यह कौन लोग है इतनी शान में ?"

"तुम क्या समझते हो ?" बडे यत्न से अपना गुस्सा रोक अरतैक ने उत्तर दिया, "इस बरस देहात के कौए ही नहीं मुटा रहे शहरों में जिन्दा गरीबों को नोच कर खाने वाले गिद्ध भी मुटा रहे है । यह थे तुम्हारे लाल निशान के सरदार !"

"लाल फौज के सरदार ?"

"हां कुलीखां और केलुइ खां !"

इस के बाद दोनों मित्रो मे कोई बात न हुई । दोनों सिर झुकाये थके-मांदे कदम-कदम चलते गए । गांव पहुंच कर अरतैक मीराद की छोलदारी मे और अशीर अपने परिवार की छोलदारी में चला गया ।

अशीर की मां दूर से बेटे को पहचान न सकी—"हैं, यह कौन रूसी हमारे यहाँ घुसा चला आ रहा है ?" अशीर की मां सोच रही थी । उसी समय अशीर पुकार उठा, "मां !"

बुढिया का शिथिर शरीर कांप उठा और उस की धुंधली हो गई आंखों मे आँसू छलक आये ।

"मेरा बच्चा ! अशीरजान"—वह बार-बार चिल्लाने लगी और बेटे को बाँहों मे ले सीने से चिपटा लिया । मन का पहला आवेग वस मे आ जाने पर मां आँखों से आँसू बहाती अपनी दुख की कहानी, अपनी बहू की मौत की बात सुनाती रही । मां ने रो-रो कर सुनाया, "जब तुम्हें पकड़े लिये जा रहे थे मै दौड़ कर अलनजर बे के यहां गई और उस के पाँव छू-छू कर मैंने दुहाई दी, मेरा एक ही बेटा है, मालिक रहम कर । मेरा बेटा मुझे बख्श दे !" बे ने एक न सुनी । आज माँ की आंखों में दुख के आँसुओं की जगह आनन्द के आँसू बह रहे थे ।

"बेटा, अल्ला ने तुझे मेरी गोद में लौटा दिया । अब दुनिया में मेरी कोई साध बाकी नही....... ।"

१२

अरतैक तड़के ही कुछ खाकर घर से निकल पड़ा। आकाश में कराकोरम के रेगिस्तान से उठने वाली रेत की घटाओं जैसे उजले-उजले बादल रुई के बड़े-बड़े लोदों की तरह सूर्य की किरणों में चमकते हुये उड़ रहे थे। हवा के झोंके मुख पर लगते तो कुछ ठडी-ठडी सीलन सी अनुभव होती। हवा सड़ती हुई लाशों की दुर्गंध से बोझल हो रही थी। अरतैक खादिम बाबा की छोलदारी की ओर चल पड़ा।

खादिम ऊखली में बिनौलों को खली कूट रहा था और सिर झुकाये सोचता भी जा रहा था। खली मे से उड़ती पीली-पीली भूसी खादिम की पलकों और दाढी पर जम गई थी। उस का चेहरा भी बिनौले की खली जैसा ही जान पड़ रहा था। जान पड़ता था जैसे कबर से उखाड़ कर निकाला हुआ चेहरा हो। जब वह पलके उठा सामने देखना तो उस की आंखे पीड़ा और घृणा से पथराई हुई सी जान पडती। अरतैक को देखकर भी वह उत्साहित और प्रसन्न न जान पड़ा। उस की घरवाली 'बीबी' की आयु रही होगी तीस बरस परन्तु वह भी बुढ़िया जान पड़ती थी। बीबी के चेहरे पर भी घोर निराशा और उपेक्षा जमी हुई थी। उन की सात-आठ बरस की लड़की केवल बांस की कमचियों का ढांचा भर दिखाई देती थी। उस का भी रंग सूखे कुम्हड़े की तरह पीला हो रहा था। इस परिवार की अवस्था देख अरतैक का कलेजा मुह को आने लगा।

अरतैक मन ही मन सोच रहा था—"इन लोगों के लिये क्या किया जाय? क्या मदद इनकी की जा सकती है?"

उसी समय पड़ोस से अलनज़र बे की अकड़ भरी आवाज़ और उस के

घोड़े मालकौश की हिनहिनाहट सुनाई दे गई। अरतैक के कलेजे में घृणा और हिंसा की आग भड़क उठी—अभी जाकर इस कमबख्त से कहूँ, अगर तुझे जान प्यारी है तो एक ऊंट बोझ गेहूं फौरन खादिम बाबा के घर पहुंचा ! उसी समय ख्याल आया—अगर मैं न जाकर कहूं और वे खादिम बाबा के यहाँ एक ऊंट गेहु पहुंचा ही दे तो क्या होगा ? दूसरों का क्या होगा ? एक खादिम बाबा का ही तो सवाल नही है !

"खादिम बाबा"—उदास स्वर मे अरतैक बोला, "कहो क्या हाल है ?"

शायद खादिम अरतैक की सहानुभूति का भाव समझ न पाया। दुखी आदमी चिड़चिड़ा हो ही जाता है—"हमारा क्या हाल है ?" खादिम ने चिढ कर उत्तर दिया, "हाल है उन का जो समूर की टोपियाँ, लाल चोगे और काले चमकदार बूट पहन कर अकड़ते फिरते हैं। यो तो दुनिया के फिक्र हमे छोड़ जायंगे या हम दुनिया को छोड जायंगे।"—पल भर अरतैक की ओर देख वह फिर बोल उठा, "ऐसे भी आदमी है जो कन्धों पर निशान लगाये, कमर में तलवार लटकाये अकड़ते फिरते हैं"—और वह कहकहा लगा कर बदहवास की तरह हस उठा !

खादिम की पागलपन की बातें और हंसी अरतैक के दिल मे बर्छी की तरह धंस गईं। पीड़ा से उस का कलेजा ज़ोर से धड़कने लगा। अपना लाल चोग़ा उसे ऐसा जान पड़ा जैसे उस के शरीर की लपटे उठ रही हों। उस का शरीर झुलसा जा रहा हो। वह खादिम की छोलदारी से झपट कर निकल गया परन्तु खादिम का पागलपन का कहकहा उस का पीछा करता रहा। वह कहकहा हिचकियों और रोने की चिल्लाहट मे बदल गया। अरतैक का हृदय असह्य पीड़ा से उस के हाथो से निकला जा रहा था।

अरतैक छोलदारियो की कतार के सामने से चला जा रहा था। छोलदारियों के सामने के चूल्हे और अंगीठियां सूनी पड़ी थीं। इस बरस इन चूल्हों और अंगीठियों में आंच नहीं जलाई जा रही थी। चूल्हे और अगीठियाँ उखड़ी और चिटकी हुई थी। कही-कही इन चूल्हों मे चीटियों और दीमकों ने भिटे बना लिये थे। अरतैक इस उजड़ी, शोक मनाती बस्ती को देखता जा रहा था ! उस के कानों में खादिम के कहकहे और आँसू भरी हिचकियाँ गूंज रही थी। वह समझ नही पा रहा था—कहां जाये, क्या करे ? सामने कच्ची दीवारों पर बनी एक झोपड़ी पर उस की आँख पड़ी। कुछ लोग इस दीवार की टेक लिये घाम ले रहे थे।

दीवार के सहारे घाम मे बैठे लोगो ने अरतैक को पहचान कर सलाम किया। इन लोगों के स्वर में कोई शिकायत या शत्रुता का भाव न था परन्तु अरतैक को उन की उदास और निराश आंखे कहती हुई जान पड़ीं - दोस्त पिछले साल तुम भी हमारे साथ इस झोपड़ी मे पडे थे। तुम्हीं ने तो आजादी, इन्साफ और जुल्म का मुकाबिला करने की बाते कर के हमारे दिलों को बेचैन कर दिया था। अब तुम भी अफसर बन बैठे, कन्धो पर निशान लगा कर! शायद तुम हम पर रोब जमाने आये हो।

"क्यो मैंने यह चीथड़े लाद लिए हैं। यह पोशाक पहन कर यहाँ गाँव में क्यों आया। अशीर ने ठीक ही किया, उसे मैंने कपडे बदलने के लिए दिये तो उस ने नही बदले। मैंने क्या मूर्खता की ?" वह अपने कीमती कपड़ों की परवाह न कर उन लोगों के बीच धरती पर जा बैठा।

चरखेज़ ने अपना लबादा उतार अरतैक के लिये बिछाते हुए कहा—"यह लो, तुम इस पर बैठो। धूल मे तुम्हारे कपड़े खराब हो जायगे।"

अरतैक को चरखेज की बात मे घृणा और अपमान मालूम हुआ। खिन्न हो कर वह बोला—"चरखेज़ आगा, मेरे कपड़ो पर मत जाओ! मै वही पुराना अरतैक हूं। मेरा दिल तो नही बदल गया।"

उसी समय अशीर भी आ पहुंचा। लोग उसे देख खुश हो कर उठ खडे हुये। अशीर के कपड़े उन लोगो को और भी विचित्र जान पडे। वे उस से मजाक करने लगे—"अशीर तुम तो पूरे-पूरे रूसी बन गये।"

"हम ने समझा था कि चर्नीशोव ही आ रहा है।"

"हम ने तो समझा कि रेल का गार्ड आ रहा है।"

"कारखाने का मज़दूर लगता है।"

"मै रूसी बन गया तो कौन बड़ी बात है ?"—हंस कर अशीर बोला, "तुम अरतैक को देखो, वह तो खान बन गया है।"

अरतैक पहले ही चिढ़ा बैठा था। बिगड़ कर बोला—"अब यह बकवास बन्द करो।"

"देख लो, अभी से रोब जमा रहा है।"—अशीर और भी हंस दिया।

अरतैक गम्भीर हो गया—"तुम्हारा मतलब क्या है ? साफ-साफ़ क्यों नहीं कहते ? तुम लोगों की मुसीबत की बात कह रहे हो ? सगठित होने को कहते हो ? तो आओ, चलो हम तुम्हारे पीछे हैं। तुम से नहीं हो सकता तो मेरे पीछे आओ !"

"तुम्हारी बात मैं समझा नहीं"—अशीर उस की ओर देख कर बोला, "मैं सदा तुम्हारे पीछे साया की तरह चला हूं, अब भी तैयार हूं। यह सब लोग भी तैयार हैं। और अब तो तुम अफसर हो ही! हुक्म करो! सब लोग तैयार हैं!"

अरतैक क्रोध मे कांप उठा। वह चाहता था अशीर को और कड़ी बात कहे। उस के होंठ और हाथ फड़क उठे। आस-पास बैठे लोग पहले मज़ाक से खुश हो रहे थे परन्तु बात बिगड़ती देख गम्भीर हो गये। बीच मे बोल कर चरखेज़ ने बात बदली—"अशीर, तुम रहे कहां बरस भर? क्या-क्या देखा सुना?" फिर अकाल की बात चलने लगी कि इस मुसीबत के समय किसानों कि सहायता कैसे हो सकती है?"

"अगर तुम लोग तैयार हो तो राह मैं बताता हू"—अरतैक बोला।

"हम लोग सदा तुम्हारे पीछे रहे है और अब तो तुम ज़ो कहो ......" कई आदमी एक साथ बोल उठे।

"गल्ले के लिए दूर जाने की जरूरत क्या है। गल्ला तो साल भर के लिए यही मिल सकता है।"

लम्बी-लम्बी भौ वाला बूढा तैयारी से उठ कर बोला—"यही हो जाय तो हम लोगों की जान बच जाय! बताओ कहां है गल्ला?"

"गल्ला और कहां होगा? अलनज़र की खत्तियों मे खूब भरा है।"

"अलनज़र ने क्या गल्ला हम से उधार लिया था कि अब लौटा देगा?" — चरखेज़ ने पूछा।

"अलनजर ने हमारे गल्ले की डकैती की थी, हम उस से मांगने नहीं जा रहे हैं!"

"अलनज़र अज़ीज़ खां के वज़ीरों मे है!"

"वज़ीर नही वह जार हो जाय! हम चोरी से छिपाया गल्ला निकाल कर भूखों को देगे।"

"अज़ीज़ खां की सोच लो!"

"अज़ीज़ अपनी खुद सोचता रहेगा।"

अशीर उठ कर खड़ा हो गया—"ठीक है दोस्तो, अरतैक हमारा पुराना मुखिया है।"— उस ने अरतैक की पीठ थपथपा दी।

पहले कभी कोई बे लूटा न गया हो ऐसी बात तो न थी फिर भी बात मामूली भी न थी। यह बात मजहब, और शरियत के खिलाफ थी। इस्लामी

रिवाज के भी खिलाफ थी। अलनज़र क्या चुपचाप लूटा जाने के लिये तैयार हो जायगा ? दो चार दस की जान ज़रूर जायगी ! पर किसानों की जाने तो यों भी जा रही थीं। अलनजर को शायद भूखे मरते गरीबों पर तरस हो आ जाय, या वह भीड़ देख कर ही डर जाय……। आदमी अपने घर वालों को भूखा मरने दे तो भी गुनाह है। भूखा मरे, दोजख भी जाय। इस से तो आदमी लूटने का ही गुनाह सिर ले ले। भूखे किसान यही सब बातें सोच रहे थे। कुछ बड़े बूढ़े घबराये भी परन्तु बाकी सब लोग बे के यहां चल कर गल्ला निकलवाने के लिये तैयार हो गये। बात तुरन्त ही गांव भर मे फैल गई और भीड़ की भीड़ लोग बे के खेमों की ओर चल दिये।

भीड़ के चढे आने की खबर बे के यहां पहुंच गई थी। उस ने अरतैक के कन्धों पर लगे हरे निशानों की ओर देखा और अशीर के रूसी मजदूर के कपडों की ओर भी नज़र दौडाई। भय और घबराहट से उस की भौ और होंठ थिरक रहे थे। यह क्या होने जा रहा है ? वह बार-बार मन मे सोच रहा था।

अरतैक आगे बढ़ कर बोला-- "बे आगा, हालत तुम जानते ही हो। किसान एक-एक कर के भूख से मरते जा रहे है रोज़ रोज़ इतने आदमी मर रहे है कि कब्रे खोदना भी मुश्किल हो गया है। जो आज चलते-फिरते दिखाई भी दे रहे है, समझ लो कल यह भी कब्र मे लेट जायंगे। सभी लोग जानते है तुम बड़े दयालू हो इसीलिए सब लोग तुम से मदद मांगने आये है। अगले साल फसल पर हम तुम्हारा गल्ला दाना-दाना चुका देगे। देखो तो इन लोगों की तरफ ! क्या हालत हो रही है सब की ?"

जमाना बदल चुका था। एक साल पहले लोग ऐसा साहस करते तो बे भीड़ को गाली दे दुत्कार देता, भाग जाओ यहां मे यह गल्ला तुम्हारे बाप का है ? और गोली चला कर इन्हे भून डालता परन्तु इस समय उसे दूसरे ही ढंग से बात करनी पड़ी—"भैया, मै क्या नही देख रहा हूं। पर कही धरती में से गल्ला निकल सकता है ? इतना ही मेरे बस में होता तो मै भला लोगो को दुखी होने देता ? बांटता और असीसें लेता। मेरे पास है ही क्या ? मेरे पास तो जो कुछ था, कभी का बांट चुका अब तो सब मिला कर एक बोरी गेहूं भी न निकलेगा। इतना अगर बांटने भी लगूं तो चार-चार दाने भी हिस्से न पड़ेंगे। अब सब भाई आये हैं तो क्या करूं ? जो है पाव-आध सेर सभी को बराबर बांट देता हूं। न होगा थोड़ा खली में ही मिला कर काम आ जायेगा।

अरतैक अभी तक मुस्कराहट बनाए था परन्तु बे की बात सुन कर उस

के माथे पर बल पड़ गये । बे की ओर घूर कर उस ने कड़ी आवाज में कहा —"यह लोग भिखमगे नहीं है । पाव-आध सेर की भीख मांगने नही आये है। यह लोग अपना गल्ला वापिस लेने आये है जो तुम ने पिछले साल झपट लिया था ? तुम सीधे-सीधे देते हो तो ठीक ही है । अगर अड़ियल टट्टू की तरह अड़ोगे तो हम उसी तरह इन्तजाम करेग ।"

"भैया मैं तो कह चुका कि मेरे पास होता तो मांगने की जरूरत ही न पड़ती । कसम न खिलाओ, मेरी बात मानो ! मेरे यहां गल्ला है ही नही ।"

"बे आग़ा, बात बहुत होली, चलो खत्ती का दरवाजा दिखाओ ! हम लोग खुद ही देख लेगे ।"

बातो से काम न देख अलनज़र ने तौर बदले । धमका कर बोला—"ज़बान सम्भाल कर बोलो ! कौन हो तुम हो मेरा गल्ला लेने वाले ? मेरे भी दो हाथ है, मैं भी अलनज़र हू कुछ और न समझ लेना । कन्धो पर दो फीते क्या लगा लिए है तुर्रमखां बन बैठे हो । बहुत ज़बान चलाओगे तो यह निशान विशान झड़वा कर रख दूंगा ।"

अशीर भीड़ मे से आग बढ़ आया और अलनज़र की ओर घूर कर बोला — "ओहो बहुत झाड़ना जानते हो ? पहले मेरे ही कपड़े झाड़ लो ।"

अशीर ने अपना तेल से चीकट कोट उतार कर बे के मुह पर दे मारा । कोट में भरे गर्द और तेल की बू से बे को ज़ोर की छीक और खांसी आ गई । इस अपमान से क्रुद्ध हो वह अशीर पर झपटा परन्तु अशीर ने उस से पहले ही एक घूसा उस के मुह पर ज़ोर से दिया । अलनज़र ने खेमे के कोने से लाठी उठाई परन्तु अरतैक ने लाठी उस के हाथ से छीन ली । अशीर फिर उस की ओर झपटा परन्तु इस बार चरखेज ने उसे थाम लिया । बे सहायता के लिए जोर से पुकार उठा —"मावेद हो ! बल्ले हो, दौड़ो !"

बे की चीख पुकार मुहम्मदवली खोजा ने अपने खेमे मे सुनी । वह कपड़े उतार कर लेटा हुआ आराम कर रहा था । पुकार सुन एक तहमत लपेटे ही दौड़ा आया । आ कर उस ने देखा भीड़ बे को घेरे खड़ी है और उस के हाथ पांव बांधे जा रहे है । यह देख खोजा चुपचाप उल्टे पांव जगल की ओर भाग गया ।

हल्ला सुन बे के घर की स्त्रियां दौड़ी आईं । मेहली ने यह सब दृश्य देखा तो घबरा कर चीखने को ही थी । उसी समय समझ आया कि लोग स्त्रियों को कुछ नहीं कह रहे है तो यह तमाशा देख उस के ओठो पर मुस्कराहट आ

गई। अतैरी-बहरी को लोगों की इस हरकत पर गुस्सा आ गया। वह झपट कर अरतैक का मुंह नोच लेने को ही थी कि उस का भी विचार बदल गया। "अच्छा है, जरा इस का मिजाज़ दुरुस्त हो जाय, बहुत चीखा करता है।" उस ने सोचा।

बेगम शादाब रोती हुई अरतैक से बोली—"क्या कर रहे हो बेटा, शरम नहीं आती तुम्हें! तुम्हारे बाप की उम्र का है! तुम उस की दाढ़ी नोच रहे हो? बेचारे पर रहम करो! तुम्हारा अपना घ रहै भीतर आ कर बैठो, तुम्हारे खाने-पीने के लिये लाती हूं।"

मावेद भी शोर सुन खेमे की आखिरी छोलदारी से भागा हुआ आया और बोला—"हटो पीछे, खबरदार कौन है? खबरदार अगर मेरे बाप को हाथ लगाया!"

मावेद अरतैक की ओर दौड़ा परन्तु अशीर ने उसे बीच ही में रोक उस की गर्दन दोनों हाथों मे ले ली। चरखेज़ ने भी उसे थाम लिया। दोनों मावेद को खींचते हुये एक ओर ले गये। अशीर ने मावेद की आँखों मे आँखे डाल धमका कर पूछा—"अबे बेवकूफ़, यह लोग तेरे फ़ायदे के लिये लड़ रहे हैं और तू इन्हीं पर चोट कर रहा है। सिर घूम गया है तेरा!"

चार बरस गुलामी करके भी तुझे होश नहीं आई?"

"तुम समझते हो मै यहाँ शौक से पड़ा हूँ?"

"तो यहाँ पड़ा क्यों है?"

"मावेद चुप रह गया। अशीर भी उस का भेद समझ न पाया और मावेद की ओर देखता रहा और बोला—"अगर तुम हम लोगों के साथ हो तो बताओ अनाज की खत्ती कहाँ है?"

मावेद ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। उस के मन से बे का आतंक अब भी दूर न हुआ था और मन मे बे से बदला लेने की इच्छा भी जाग उठी।

अशीर ने उस का अभिप्राय समझ कर कहा—"कोई नहीं देख रहा है। भरोसा रखो मुझ पर!"

"मेरा हिस्सा मिलेगा?"

"जरूर!"

"मै खत्ती बताये देता हूँ परन्तु तुम खत्ती खोलोगे तो मैं हो-हल्ला और मार-पीट करूंगा। ताके बे को शक न हो!" मावेद ने आँख से मालकौश के बंधने की जगह की ओर इशारा कर दिया।

अशीर समझ गया। उस ने पुछा—"और कहाँ है ?"

"मैं यही एक जगह जानता हूँ। यहाँ भी कम नहीं निकलेगा।"

अलनज़र के हाथ-पाँव बांध कर ईंधन के ढेर पर बैठा दिया गया था। वह किसी भी सवाल का जवाब न दे रहा था। वह सोच रहा था किसी तरह भाग कर अजीज़ के यहाँ पहुंच जाय लेकिन गल्ले का तो दाना भी नहीं बचेगा। अज़ीज़ अगर इन सब को कत्ल भी कर दे तो भी क्या मैं भिखमंगा हो गया। और अजीज़ का भी क्या पता ? एक ज़माना था जब ज़ार के कर्नल और दारोगा मेरी बात पर दौड़े आते थे। यह गाँव मेरे इशारे पर नाचता था ! आज सब बरबाद हो गया ''' '''।

अरतैक ने किसानों को लेकर सारे खेमे की छोलदारियां छान डालीं परन्तु अलनज़र की ही बात ठीक हो रही थी। तीन बोरी से अधिक गेहूँ न मिला। अतैरी ने अपने खेमे में किसी को घुसने न दिया। वह दरवाज़े पर पाँव जमाकर खड़ी हो गई और बोली—"यहां जो आयगा सिर काट लूंगी।"

अरतैक अतैरी को पहचानता न था—"यह औरत कौन है ? यह तो बे के घर की औरत नहीं जान पड़ती। इसे पहले कभी देखा नहीं" - उस ने पूछा।

"यह बल्ले की बहू है, अतैरी ! अंगेतों की लड़की !"

अरतैक एक औरत से क्या लड़ता, क्या बहस करता ? उसे अतैरी पर गुस्सा भी आया था।

"वाह यह तब मेरी मौसी होती है"—अतैरी को सुनाकर अरतैक बोला, "ब्याह हुआ तो मैं था नहीं। नहीं तो यह सम्बन्ध कभी न होने देता। वह निकम्मा आदमी ऐसी औरत के लायक है ?"

"अतैरी का चेहरा बदल गया। दरवाजा छोड़ एक ओर हो वह बोली—"अरे भाई भांजे के तो सात गुलामों को भी जगह देनी होती है। आओ, आओ बैठो।" स्वयं ही उस ने छोलदारी के दरवाजे का परदा उठा दिया।

अरतैक भीतर गया और एक नज़र में चारों तरफ देख बोला—"अच्छा मौसी, जरा बाहर के लोगों से निबट लूं फिर बैठ कर बातचीत होगी !"

किसान छोलदारियों के आसपास, गढों में और ऊंटों के बंधने की जगह लाठियों से ठोक-ठोक कर छिपी हुई खत्ती खोज रहे थे। अशीर घूमता हुआ मालकौश के थान पर पहुंचा और जगह-जगह ज़मीन ठोक कर टोहने लगा। एक जगह पोल सुनाई दी। खोदने पर यहाँ खूब बड़ी खत्ती निकल आई।

किसानों ने जगह घेरली और फावड़े-बेलचे लेकर खत्ती खोदी जाने लगी।

यह देख बे आपे से बाहिर हो गया। एक झटके से उस ने अपने हाथों की रस्सी तुड़ाली और एक तलवार उठा भीड़ पर झपट पड़ा। गल्ले का नुकसान उसे अपने खून का नुकसान जान पड़ रहा था। बे की तलवार अरतैक के सिर पर पड़ती परन्तु अशीर ने पहले ही एक हाथ बे की कमर में डाल कर उसे उठा धरती पर पटक दिया।

मावेद बे की मदद के लिये दौड़ा परन्तु लोगों ने उसे भी पकड़ कर बांध कर एक ओर रख दिया। घर की औरतें रोती हुई आई और बे को लाश की तरह उठा कर भीतर ले गईं। अतैरी अशीर पर झपटी और उस का मुह नोचने लगी। अशीर ने उसे कमरबंद से उठा नीचे पटक दिया। चोट खा वह ऐसे चिल्लाने लगी जैसे उस के गले पर छुरी रखी जा रही हो!

चरखेज ने बीच-बचाव किया—"अरे क्या कर रहा है ? उस का पेट गिर जायगा। क्यों गुनाह सिर लेता है। छोड़ दे इसे!"

पूरी भरी गल्ले की खत्ती देख किसानों की आँखे ऐसे चमक उठी जैसे बच्चे मिठाई को देख कर किलक उठते है। उन की महीनो की दबी भूख भड़क उठी और आंते कुलबुलाने लगी। स्त्रियां और बच्चे बोरियाँ ले ले कर दौड़ पड़े। खादिम बाबा की घरवाली और लड़की दो बोरियाँ और दो चदरे लेकर आईं।

खादिम अरतैक की ओर उंगली उठा कर बोला—"भैया अरतैक, भूलना नही। सांझे हिस्से के साथ बे के यहाँ से मेरा और भी निकलता है।"

"खूब याद है, बाबा"—अरतैक ने उसे विश्वास दिलाया, "तुम्हारा दोहरा हिस्सा रहा।"

खत्ती के चारों ओर मेला सा लग गया। अरतैक ने भीड़ को चुप रहने और बारी-बारी से आकर अपना हिस्सा लेने के लिये कहा। वह स्वयं खड़ा हो हिस्सा बाँट कराने लगा।

अलनज़र अपनी छोलदारी में लेटा अनाज पाने वालों की प्रसन्नता भरी किलकारियाँ सुन रहा था। उस के कलेजे पर छुरियां चल रही थी। इसी खत्ती पर उस ने बड़ी आस बांधी थी। सोचा था एक-एक बोरी गेहूं की कीमत एक-एक ऊंट लेगा। और दो पसेरी पर एक कालीन! किसी को सेर भर भी देगा तो चाँदी का गहना रखवा लेगा। उस का इरादा था कि शहर में एक बड़ी दूकान खोल कर एक आटे की चक्की लगायेगा। रुई बेलने का एक कार-कारखाना वह खोलना चाहता था लेकिन खत्ती लुटी जा रही.......।

उस से रहा न गया तो फिर उठा। एक पेंसिल और काग़ज का टुकड़ा ले वह खत्ती के पास जा खड़ा हुआ। गल्ला पाने वाले सभी लोगों को वह चेहरे से पहचानता था। वह काग़ज पर सब का हिसाब लिखता जा रहा था—मौका आयगा तो पूरा-पूरा वसूल करूंगा।

गल्ला घर-घर के आदमियों के हिसाब से बंट रहा था। अरतैक ने अपना हिस्सा नहीं लिया। उस ने कहा—मैं अपने चाचा के यहाँ खाता-पीता हूं मुझे अलग हिस्से की क्या जरूरत ?" अशीर को उस ने जबरन मजदूरी की भरती के इनाम में और नये जोड़े कपड़े खरीदने के लिये दूना हिस्सा दिया। इस पर किसी को आपत्ति थी तो केवल अलनज़र को !

खत्ती में से साठ ऊंट के बोझ का गल्ला निकाला। गाँव के किसानों की आफत टल गई। सब को हिस्सा मिल जाने पर अरतैक ने मावेद के लिये भी एक हिस्सा बचा लिया था। इस पर भी अलनज़र बे ने आपत्ति की—"यह किस का हिस्सा है ?"

अरतैक ने मुस्करा कर उत्तर दिया—"बे आग़ा यह खुदा के नाम का है।"

१३

अरतैक की उजड़ी सी छोलदारी ऐना के आ जाने से आबाद, गुलजार हो गई। लम्बी काली छोलदारी बाहर से देखने मे बहुत बडे लम्बे से काले तरबूज की तरह दिखाई देती थी पर भीतर से तरबूज के गूदे की तरह रंगीन थी। छोलदारी का फर्श, दीवारे और छत सब बढिया कालीनों से मढ़े थे। बीचो-बीच एक बहुत कीमती कालीन था और अंगीठी के समीप बैठने की जगह पर भी रेशमी गद्दियां सजी हुई थी। जहाँ-तहाँ रखी हुई बोरियों और थैलों पर भी कढ़ाई का बढिया काम था। ऐसा जान पड़ता था बाग़ और चमन अपने फूल ले कर यहाँ होली खेल गये हों। छोलदारी की इस शोभा की जान थी, रेशमी पोशाक पहने ऐना। उस के सिर पर भी रेशमी रुमाल बंधा रहता। माथे पर सुनहरी पटिया थी। पटिया से छोटे-छोटे लटके लटकन उस के माथे पर झूमते रहते। अरतैक के लिए सब से बड़ा संतोष यह था कि छोलदारी की सब सजावट, कालीन और कसीदा ऐना के ही हाथों का बना हुआ था।

ऐना सुन्दर तो यों भी थी परन्तु नवेली बहू की पोशाक ने उसे और दमका दिया। अरतैक उस की अदाओं को देखता रह जाता। उस की चाल-ढाल में एक अदभुत कोमलता और लोच थी। चाय के लिये उस का समावार सजाना, चायदानी से प्यालों में चाय उड़ेलना ऐसे हल्केपन और सफाई से होता कि देखते ही बनता। उस के चलने की आहट भी सुनाई न देती और कभी कोई चीज़ उस के हाथ से गिर कर या धक्के से भी अपने स्थान से हिल न पाती। उस की सफाई भी प्रशंसा के लायक़ थी। छोलदारी में कभी गंदगी या गड़बड़ न दिखाई देती।

ऐना का प्रभाव अरतैक की मां नूरजहाँ पर भी पड़ा। आराम, सफाई और सुघड़पन से वह भी पहले से जवान जान पड़ने लगी। बेटे और बहू के सुख और संतोष से उस के भी ओठों पर मुस्कराहट बनी रहती। उस के निराश और अधेरे जीवन में फिर से सुख-संतोष की किरणें चमचमा उठी। शाकिरा पर भी ऐना का असर कम न था। अपनी नई रेशमी पोशाक मे वह भी खूब फबती थी। वह अब पहले से कुछ गम्भीर हो गई थी। जवानी का आभास उस पर झलकने लगा था। ऐना उसे कसीदा सिखा रही थी। शाकिरा छोलदारी के एक कोने में बैठी घंटों कसीदा काढ़ने मे मन लगाये रहती। पडोसियों पर ऐना के प्रभाव का नूरजहाँ को अभिमान था। पड़ोस की स्त्रियाँ और लड़कियाँ उस से बात-बात मे सलाह लेती और ऐना के बनाये कालीन और कसीदे नमूने के तौर पर गाँव भर मे फिरते रहते। स्त्रियाँ आ-आ कर उस से कालीनों के रंगो के मेल और फूल डालने के बारे मे राय ले जाती।

ऐना अरतैक के लिये चाय बना कर लाती तो उस के पास ही बैठ जाती। अरतैक उस के गालो मे पड़ते खायों को देखता रह जाता।

"तुम तो बाहर ही बाहर रहते हो"—लजाते हुए ऐना बोली।

चाय समाप्त कर प्याला एक ओर रखते हुए अरतैक ने उत्तर दिया—"जानता हू तुम्हे बुरा लगता है। मुझे भी यह अच्छा नही लगता पर क्या करूं?"

"बात क्या है।"

"क्या बताऊं? आजकल बड़े विकट समय है, रोज उलझने पैदा हो रही है। सब बाते इस समय शहर मे हो रही है। वही उलझा हुआ हूं।"

"अरतैक जान, क्या शहर मे घर से अच्छा लगता है?"—ऐना ने पूछा।

ऐना का कोमल हाथ अपने हाथों मे ले अरतैक ने उत्तर दिया—"अच्छा तो क्या लगता है। मै चाहे जो करूं, जहां रहू दिल मेरा यहां तुम्हारे पास ही रहता है।"

"यह तो है, परन्तु तुम यहां ही रहते तो अधिक अच्छा होता!"

"ऐना, अगर मैं जनता के काम छोड़ कर यहां आ बैठू तो बिलकुल बे मतलब, घर-घुस्सू आदमी बन जाऊगा।"

"हाय, यह तो मै नहीं चाहती। मैं तो चाहती हूं तुम्हारा नाम हो, तुम बड़े-बड़े काम करो! यह देख कर मेरा सिर ऊंचा हो जाता है। गाव भर के लोग तुम्हारी इज्जत करते है। पर दिल तो चाहता ही है तुम मेरे पास रहो।"

ऐना के विचार अपने ही जैसे देख अरतैक को और भी संतोष होता। वह हर एक बात में ऐना से राय ले सकता था। घर पर रहने की बड़ी इच्छा थी परन्तु घर पर बैठा रहता तो जिन्दगी क्या होती और ऐना की ही इच्छा कैसे पूरी होती।

चाय पीते-पीते अरतैक ने मां और ऐना को अलनजर बे का गल्ला छीन कर किसानों में बांट देने की बात सुनाई। नूरजहां घबरा गई—"हाय बेटा, यह तूने क्या किया। शरियत में तो बे लोगों और मालिकों के माल को हाथ लगाना हराम कहा है।"

"अम्मा, अगर किसी की जान बचाने के लिये चोरी भी की जाय तो शरियत में ऐसी चोरी भी हलाल हो जाती है। और फिर हम लोगों ने चोरी कब की? यह तो किसानों का ही गल्ला था सो हम ने वापिस ले लिया।"

"वाह, गल्ला अगर किसानों का ही था तो उस पर इतना झगड़ा, मार-पीट, रोना-धोना क्यों हुआ?"

"अलनज़र ने हम लोगों से गल्ला छीन लिया था तो हम लोगों ने क्या गाना-बजाना किया था?"

"बे ने रुपया तो उधार दिया था लोगों को!"

"तुम्हें कितना मिला था?"

"मैंने, मैंने तो एक पाई भी नही ली!"

"तो फिर तुम्हारे खेतों का गल्ला कहां गया? मै तो बरस भर मेहनत कर के गया था? क्या कुछ भी पैदा नही हुआ?"

नूरजहां क्या उत्तर देती? अरतैक को बरस भर खेतों में मेहनत करते उस ने देखा ही था। यह भी वह जानती थी कि उस साल उस ने भूखे पेट ही रह कर बिताया था परन्तु यह वह न समझ सकती थी कि किसानों की कमाई बे ने क्यों कर हथियाली? वह सीधी बात समझती थी, पराई चीज चाहे किसी की भी हो, छीन कर लेना हराम है। नूरजहां को इस बात से सतोष था कि खादिम जैसे गरीब आदमी अब अगली फसल तक किसी तरह मौत से बच जायंगे। यह भी उसे याद आने लगा कि बोरियों पर बोरियां बे की खत्तियों में भरी गई थीं। बीच ही में उस का बुढापे का लोभ जाग उठा—

"अरतैक, हमें कितना गल्ला मिला?"

अरतैक मुस्करा दिया—"अभी तो मां हलाल-हराम की बात कर रही थी और अब इसे अपने हिस्से की चिन्ता हो रही है।"

"मां, तुम और ऐना ज़िन्दा रहो, मेरे हाथ-पांव सलामत रहें, हिस्से की फिक्र न करो। तुम लोग भूखी नहीं रहोगी।"

"हमें इतना मिल गया बेटा ?"

"तुम्हें ज़रूरत थी ?"

"ज़रूरत ? ज़रूरी चीज़ों की ज़रूरत का क्या कहना ? जितनी मिल जांय ?"

"शरियत का खयाल नही मां ?"

शरियत की बात याद आ जाने से नूरजहां ने दोनों हाथ ऊपर कर तौबा की और बोली—"नहीं भाई हम किसी दूसरे की चीज़ नही लेगे। सोचा था, सब को मिला है तो तुम्हें भी हिस्सा मिला होगा इसीलिए पूछ रही थी।"

"क्यों अपना हिस्सा लेने में बुरा क्या था ? मैंने इसीलिए नहीं लिया कि जो लोग ज्यादा मुसीबत मे है उन्हें कुछ और मिल जाय। हमारा तो काम चल रहा है।"

"नही बेटा, नही लिया तो भला ही किया। तुम्हारे पीछे मुझे फिक्र ही लगी रहती कि जाने इस बात का क्या अन्जाम हो ? तुम यह बन्दूक तलवार और कंधों के निशान-विशान भी हटा दो बेटा, वापिस कर दो वह सब अपने मालिक को और भले किसानों की तरह चुपचाप घर में रहो। अरे हल्ला मचाने से ही अगर कुछ होता हो तो दुनिया में तुम्हारे बिना भी हल्ला मचाने वालों की कमी नही है बेटा।"

"मै ऐसा निकम्मा आदमी थोड़े ही हूं कि चदरा तान कर पड़ा रहूं और ज़िन्दगी बिता दू। मां, ज़िन्दगी तो कुछ करने-धरने में ही है।"

"बेटा अपने घर का सा सुख-सबर मारे-मारे फिरने में कहां ?"

"मां बैठे बैल को कौन खिलाता है। बैठे रहने से सुख-सबर कहां से आ जायगा ? मै घर ही बैठा रहता तो यह बहू तुम्हें कैसे मिलती ? क्यों ऐना ?"

ऐना आंख झपक कर मुस्करा दी। मुँह से कुछ बोली नहीं। मां ने उसे पुकार कर कहा—"तू ही क्यों नहीं समझाती इसे ? मारा-मारा फिरेगा तो तेरी क्य. जिन्दगी होगी ?"

"ऐना तो कहती है, यहां बैठे रहोगे तो तुम्हें कोई पूछेगा ही नहीं। पूछ लो न इस से क्या कहती है !"

"ऐना जान, सच तुम ऐसी बातें कहती हो ?"

"अम्मां, बन्दूक की गोली भी बहादुर को पहचानती है, उस से बच कर निकल जाती है।"

"ओह बेटी, तो तू ही उसे बिगाड़ रही है। भाई, तुम लोग अब सियाने हो, भला बुरा समझते हो पर बुढ़ापे में मेरा दिल बहुत घबराता है। कहीं मुसीबत में न फंस जाना ! मेरा तो दम निकल जायगा......

१४

तेजेन लौट कर अरतैक ने देहात में अलनजर बे के यहाँ से गल्ला लेकर भूखे किसानों को बांट देने की बात अजीज को साफ-साफ कह सुनाई ।

अज़ीज की आँखें क्रोध में लाल हो गईं और माथे पर बल पड़ गये "मैंने तो तुम्हें खबरदार रहने को कहा था"—वह कड़े स्वर में बोला ।

शान्त स्वर मे, बेपरवाही से अरतैक ने उत्तर दिया- "मैंने तुम्हें कोई बचन नही दिया था ।"

अज़ीज़ का गुस्सा भड़क उठा—"मैंने तुम्हें किस बात से खबरदारी के लिये कहा था बोलो ?"

अरतैक के चेहरे पर भी सुर्खी आ गई । उस का भी मन चाह रहा था कि डट कर जवाब दे— "मैंने जो चाहा किया, तुम से जो बन पड़ता है, तुम करलो ! परन्तु उस ने क्रोध दबा कर, कुछ कांपते हुये स्वर में उत्तर दिया— "अज़ीज़ खाँ, मै तुम्हारा साथ दे रहा हू । इस का यह मतलब नहीं कि मै कुछ देख-सुन नही सकता । मेरे भी दिमाग़ है । मैं मुर्दा नहीं हूँ । मेरे अपने भी ख्याल हैं ! अच्छा बुरा भी समझता हूँ ।"

"मैं मानता हूँ तुम्हारी बात........लेकिन तुम तो मेरे ही पाँव पर कुल्हाड़ी चला रहे हो !"—अज़ीज़ ने कुछ ठंडे होकर कहा ।

'अज़ीज़खां यह बात नहीं है ।"

"कैसे नहीं है यह बात ?"

"अगर मैं तुम्हें नुकसान पहुंचाना चाहता तो मैं कुलीखां के यहाँ नौकरी कर सकता था । पिछले साल बग़ावत में मैंने तुम्हारा साथ दिया और अब मैं तुम्हारी ही फ़ौज में आया हूँ । तुम्हारे लिये मैं जान की जोखिम उठा रहा

हूँ। लेकिन एक बात साफ है कि मैं तुम्हारा गुलाम नहीं हूँ ! यह बात साफ रहे कि मैं ग़रीब जनता के खिलाफ नहीं जाऊंगा। अगर तुम्हें इस बात में एतराज़ है तो यह है तुम्हारी नौकरी !"—अरतैक ने अपनी बन्दूक और अफ़सरी की पेटी अज़ीज़खाँ के सामने पटक दी।

अजीज़ ने सुर्ख आँखों से एक बार अरतैक की तरफ ताका और फिर सिर झुका लिया और सोचने लगा। उस के भरोसे के आदमी ने ही उस का हुक्म नही माना। इस मामले का तुरन्त ही पूरा-पूरा फैसला होना चाहिए वर्ना यह आदमी जाने क्या कर बैठे ? इस आदमी का क्या भरोसा ? इस से क्या फायदा ? क्रोध के कारण अज़ीज़ के मुख से बात न निकल पा रही थी। उसी समय यह भी ख्याल आया—अगर इसे मै आज निकाल दूं और कल काजिलखाँ भी मुझे छोड़ कर चलता बने तो क्या होगा ? और यदि यह लोग मुझे छोड़ दुश्मन के साथ जा मिले ? यह ख्याल आते ही उस का गुस्सा दबने लगा। उस ने यह भी सोचा—अरतैक को आस-पास देहात के लोग चाहते है, उस की इज्जत करते है। ऐसा आदमी मेरा साथ छोड़ जायगा तो इस से मेरी बदनामी ही होगी। इस समय मुझे जनता की सहानुभूति की ज़रूरत है। इस विचार में डूबा वह बहुत देर तक चुप बैठा रहा।

अज़ीज़खाँ सोच रहा था—अरतैक और अलनज़र दोनों में से वह किसी को भी छोड़ नही सकता और दोनों को सम्भाले रहना सम्भव नही। वह किस को सम्भाले और किसे जाने दे ? उसे जान पड़ा अरतैक ही अधिक काम आ सकता है। अपना गुस्सा छिपा कर वह बोला—"अरतैक, जब हमारे असल ख्याल एक है तो झगड़े की बात नही होनी चाहिये। तुम्हे यह करना था तो मुझे कह जाते एक अलनज़र क्या मै सौ अलनज़र तुम पर निछावर करदूं। अब तुम्हे कोई ऐसा कदम उठाना हो तो पहले मुझ से जरूर बात कर लेना ताकि मै सब इन्तज़ाम रख सकूं और मुझे तुम्हे टोकना न पड़े। अब लोग क्या कहेगे ? कि अज़ीज़खाँ तो ज़ार से भी बढ़ कर जुल्म कर रहा है। अपने साथियों को लूट ले रहा है।"

"चार-पाँच लोग ऐसा कहें, जनता तो तुम्हारा एहसान मानेगी।"

"शायद तुम्हारा ही खयाल ठीक हो ! तुम लोग-बाग की बात अधिक समझते हो। फिर भी होशियार तो रहना ही चाहिए।"

उसी समय अज़ीज़ को खयाल आया—"अगर अरतैक को ही अपनाना तो यही हो। इस जिद्दी की बात ठीक भी है ! एक अकेले जागीरदार को

नाराज़ होने दे कर हजारों किसानों को अपनी ओर खीच लेना कहीं बेहतर ! बे मुझे छोड़कर जा भी कहां सकता है ? बोलशेविकों के यहां उस का गुजारा कहां ? बे का तो गुजारा भी हो ही जायगा। जरूरत तो है प्रजा को अपनी ओर समेटने की। इस मामले में मुझे दुश्मनों से पहले कदम उठाना होगा।"

अज़ीज़ गर्दन ऊची कर गम्भीरता से बोला—"कुछ सिपाही साथ ले लो और मेरे साथ शहर चलो। हम लोग ग़रीब रियाया की हालत अपनी आंखों देखेंगे। आज शहर में ऐलान करवा दो कि जो लोग मुनाफाखोरी कर के ग़रीब रियाया को भूखा मार रहे हैं, उन्हें अज़ीज़ खां सख्त सजा देगा।"

अरतैक को विस्मय भी हुआ और संतोष भी। वह हुक्म पूरा करने के लिये तुरन्त उठ खड़ा हुआ।

सिपाहियों की टुकड़ी से घिरे हुए अज़ीज़ खां और अरतैक तेजेन के बाजारों में घूम रहे थे। एक बाजार के सिरे पर भीड़ का जमाव हो रहा था। भीड़ की ओर इशारा कर के अरतैक बोला—"यह देखो, भिखमंगों का मेला !"

आकाश में बादल छाये हुए थे। कभी-कभी बादलों की सांध से सूर्य की किरणे चीथड़ों में लिपटे, भूख से सूखे लोगो के चेहरों पर पड़ जातीं और उन की भयानकता को और बढा देतीं। भीड़ टुकड़ों की तलाश मे देहातों से घिर आये भूखे किसानों की थी। कुछ लोग चिल्ला-चिल्ला कर अल्लाह की दुहाई दे कर भूखे पेट केलिए कुछ मांग रहे थे। स्त्रियाँ और बच्चे निराश और व्याकुल हो कर चिल्ला-चिल्ला कर रो रहे थे। घुड़सवारों को देख कर भीड़ हाथ फैला चिल्लाती हुई इन लोगों की ओर दौड़ी—"हम भूख से मर रहे हैं, हमारे बच्चे मर रहे हैं। अज़ीज़ खां, हम मर गये। हमारे पेट का ख्याल करो !"

अज़ीज़ यह दृश्य देख चुप रह गया। कुछ देर सोच कर अरतैक को समीप आने का इशारा कर वह बोला—"मैंने खुद आँखों देख लिया तुम ठीक कहते थे। इन कमबख्त जागीरदारों, रईसों और मुनाफ़ाखोरों का सब कुछ लूट कर गरीबों को बाँट देना काफ़ी नही। इन बदमाशों को गोली मार कर सज़ा देना भी ज़रूरी है।"

अज़ीज़ ने अरतैक को हुक्म दिया—"अभी हाल में सब गल्ले के व्यापारियों और खत्ती वालों का गल्ला, दुकानों का सब माल जब्त कर लो।"

उसी समय कई दुकानों का गल्ला उस ने अपने सामने भूखी भीड़ में बंटवा दिया। कुछ गोदामों के ताले तुड़वा कर उस ने अपने मोहरबन्द ताले लगवा दिये। यही इंतजाम उस ने बड़ी-बड़ी दुकानों का भी किया।

गोतूर तेजेन का बड़ा भारी सौदागर था। जब उस का गोदाम जब्त किया गया, वह हाथ फैलाकर दुहाई देता हुआ अजीज के सामने आया—"मालिक मैंने तो तुम्हारी बहुत मदद की है। मेरा लाखों रुपया 'जीज़ाक' और 'फ़र्गना' में फंसा हुआ है। मेरा दिवाला निकल जायगा तो तुम्हारा ही नुकसान होगा। मेरा तो जो कुछ है, तुम्हारा ही है। विलायत मे मेरा लाखों रुपया मारा जा रहा है!"

अज़ीज़ ने चारों ओर खड़े लोगों को सुना कर उसे धमका दिया—"चुप रहो! तुम ने गरीब रियाया का बहुत खून पिया है। लाखों की जान जा रही है, तुम्हें हुंडियों और दिवाले की फ़िक्र हो रही है।"

"मालिक तो मेरे माल की कीमत बाजार भाव से ही मिल जाय!"

"तुम्हारे माल की लागत की कीमत दे दी जायगी, लेकिन जब हमारे पास फालतू रकम होगी!"

गोतूर दुहाई देता हुआ अज़ीज़ का चोगा पकड़े खड़ा रहा। अज़ीज़ ने अपना घोडा बढ़ाया तो वह साथ साथ दौड़ने लगा। अज़ीज़ ने पीछे घूमकर एक सिपाही को हुक्म दिया—"अगर यह बदमाश अपनी दुकान की तरफ़ जाय तो इसे गोली मार दो"—और घोडे को एड़ी लगा वह चल दिया।

गोतूर चिल्लाता रह गया—"अजीज़ खाँ, अपने गुलाम पर रहम कर!"

तेजेन के सब से बड़े आटा गोदाम और रोटी के कारखाने पर भी अज़ीज़ ने कब्जा करके इस कारखाने का नाम 'अजीज का तन्दूर' रख दिया। शहर भर में उस ने डोंडी पिटवा दी—"देहात के भूखे किसान, और शहर के बेकार लोग जिन्हें रोटी की तंगी हो, 'अज़ीज़ के तन्दूर' से आध सेर रोटी बिना दाम ले सकते हैं।"

अज़ीज़ 'काफिला सराय' में लौटा तो बहुत उत्साहित था। मूंछों पर बल देकर वह अरतैक से बोला—"एक अलनजर की खत्ती ले लेने से क्या हो सकता था? गरीब भूखी जनता का पेट भरने का तरीका यह है?"

"मेरी सामर्थ और तुम्हारी सामर्थ में बहुत अन्तर है अजीज़ खाँ! मैं इस पेड़ की जड़ खोद रहा था तुम ने उसे उखाड़ फेंका।" अरतैक ने उत्तर दिया। अज़ीज़ की मुस्कराहट और झूठा अभिमान उसे भला न मालूम हुआ। वह दूसरे कमरे में जाकर सोचने लगा—अगर कुलीखाँ चर्नीशोव को न रोके होता तो जो कुछ अज़ीज़ ने आज भूखों की भीड़ देखकर किया, चर्नीशोव ने

कभी का कर दिया होता। अज़ीज़ तो जो चाहे कर सकता है परन्तु चर्नीशोव हर बात के लिये कमेटी और पंचायत का मोहताज है।

अरतैक खिड़की से सराय के फाटक की ओर देख रहा था। सामने अलनज़र क्रोध से काले चेहरे से, पाँव पटकता आता दिखाई दिया। अरतैक ने देखा बे सीधा अज़ीज़ के दीवान खास की ओर जा रहा है। वह जरूर उस से मेरी शिकायत करेगा। मन में उस ने सोचा - कह लेने दो इसे जो कहना है। देखे इस की बात सुनने के बाद अज़ीज़ क्या कहता है। अरतैक उठकर अपने सिपाहियों की तरफ़ चला गया।

अलनज़र ने रो-रो कर अपने ऊपर बीती कहानी अज़ीज़ को सुनाई और अंत मे आंसू पोंछता हुआ बोला--"अज़ीज़ खाँ, अरतैक ने मुझे लूट लिया, बात यहीं तक नही है। तुम यह सोचो, तुम्हारे नौकर ऐसे काम करेंगे तो तुम्हारी कितनी बदनामी होगी ?"

मुस्कराहट छिपाकर अज़ीज़ बोला—"लेकिन बे आग़ा, तुम तो कहते थे कि तुम्हारे यहाँ इतना गल्ला था ही नही।"

"अरे कितना गल्ला था ? कुछ भी नहीं ! यह तो घर के लोगों का पेट काट कर मैंने जमा किया था कि कौन जाने आगे कैसे दिन आते है।"

"लेकिन हम लोगों ने तो यहाँ तय किया था कि जितना भी फालतू गल्ला मिले इकट्ठा कर भूखे ग़रीबों में बाँट दिया जाय !"

"तुम्हारा जो भी हुक्म हो, हम मानेंगे लेकिन यह तो नही कि जो आवारा लौंडा चाहे आकर हम लोगो की बेइज्जती कर जाय। उतना गल्ला मै खुद ही ग़रीबों को बांट देता।"

"खुद तुमने कितना गल्ला गरीबों में बाँटा था ?"

"मैं तो देख रहा था कि जब तुम्हारा हुक्म हो ...... !"

"अरतैक को यह मेरा ही हुक्म था कि रियाया के बिगड़ उठने से पहले ही बे का गल्ला ले लो।"

"मुझे ही हुक्म किया होता।"

"अब यह बात खत्म करो।"

अलनज़र क्रोध में भरा बेबस दांतों से होंठ काटता रह गया। बह फिर बोला—"खान, तुम कुत्ते को पुचकार पास भी बुलाते हो और फिर लाठी भी मारते हो।"

अज़ीज़ ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—"देखो बे आगा, अब इस बात

को खत्म करो । हम लोग बहुत लम्बे सफर पर चल रहे है । छोटी-मोटी चीजो के हाथ से गिरने और खो जाने के लिए क्या रोना-धोना ? कोशिश करो कि मजिल पर सलामती से पहुच जायें । आज आटे का बडा गोदाम और रोटी का कारखाना मैंने ले लिया है । कल हम अर्ज़ीमान की गल्ले की खत्तिया और आटे का कारखाना भी ले लेंगे । यह सब मिला कर बहुत बडा कारोबार बन जायगा । यह काम मैं तुम्हारे ही हाथ मे दे दूगा । रुपये मे से दस आना तुम्हे गरीबो मे बाटना होगा बाकी से तुम्हारा नुकसान पूरा हो जायगा । रईसो का जो माल हम ले रहे है, सब पाई-पाई चुका दिया जायगा । लेकिन अभी भूखे मरते गरीबो की तसल्ली के लिए रईसो को अपना माल देना ही होगा । तुम ने दीवान में कहा था कि रियाया और रईसो में झगडा न होने देना चाहिए। यह झगडा बचाने के लिये तुम्हे गरीबो का ख़याल करना होगा । मुझे खबर मिली है कि सोवियत पचायत में चर्नीशोव ने बे लोगो की दौलत जब्त कर के गरीबो मे बाट देने की बात रखी थी परन्तु कुलीखा ने यह बात होने नही दी । उन लोगो को झगडो मे पडा रहने दो । उन के दाव हमे खेल लेने चाहिए। तुम समझते हो न ? फिर इस जरा सो बात के लिए रोना-धोना क्या ?....।"

जब अलनज़र बे 'काफिला सराय' से लौटा तो वह बहुत प्रसन्न था । इस के बाद अरतैक से मुलाकात होने पर भी उस ने बीती बातो और बुरे व्यवहार की कोई शिकायत न की । वह अरतैक से ऐसे मिला कि शिकायत की कोई बात हुई ही न हो ।

१५

अक्टूबर, १९१७ की क्रांति से रूस में किसानों-मजदूरों की सोवियत (पंचायती) सरकार तो कायम हो गई परन्तु उस के शत्रुओं की कमी न थी। सोवियत के यह शत्रु समाज के सभी भागों से इकट्ठे हो कर नयी सरकार के कदम न जम सकने देने की कोशिश कर रहे थे। विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियां इन्हें धन और हथियारों से मदद देने के लिए आ पहुंची थीं, जनता को सरकार के विरुद्ध भड़काने के लिए सभी सम्भव प्रयत्न किये गये। धर्मान्ध लोगों को धर्म की दुहाई दे कर भड़काया गया। अनाज और ज़िन्दगी के लिए बहुत ज़रूरी चीज़ों को जला कर बरबाद कर के, जनता को भूखा मार कर यह समझाने की कोशिश की गई कि सोवियत सरकार उन्हें ज़रूरी चीज़ें पहुंचाने के अयोग्य है। सोवियत का समर्थन करने पर गांवों और बस्तियों को जला कर लोगों को धमकाया गया और समझाया गया कि यह सरकार तुम्हारी रक्षा करने में असमर्थ है। इन सोवियत विरोधी शक्तियों के मुख्य गढ़ रूस की सीमाओ पर फैले हुए थे।

दिसम्बर के महीने में मध्य एशिया के मुस्लिम देशों में खास बेचैनी फैल रही थी। इन देशों की मुस्लिम जनता के प्रतिनिधियों की एक कान्फ्रेंस कोकन्द में की गई। कहने को तो यह कान्फ्रेंस मुस्लिम जनता के प्रतिनिधियों की थी। शिक्षित मुसलमान, उन के मौलवी और उलमा उस में भाग ले रहे थे परन्तु वास्तव में इस कान्फ्रेंस का आयोजन विदेशी राजनीतिज्ञों की सलाह से मध्य एशिया के बे लोगों (जागीरदारों), कारखानादारों, बड़े-बड़े व्यापारियों और विदेश में काराकुल खालों का व्यापार करने वाले लखपतियों ने ही किया था। ज़ार के पुराने रूसी अफसरों ने भी आ कर इस कान्फ्रेंस में भाग लिया लेकिन

यह सब रहस्य जनता से छिपा कर रखे गये। इस धार्मिक कान्फ्रेंस में इस प्रश्न पर विचार किया गया कि नयी स्थापित सोवियत सरकार को असफल करने के कौन उपाय सम्भव हो सकते हैं ?

इस कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिये तुर्कमानिया के रईस लोग अश्काबाद में जमा हुये और एक स्पेशल ट्रेन से कोकन्द पहुचे। यह स्पेशल ट्रेन तुर्की कालीनों से मढ़ कर सजाई गई थी। इन प्रतिनिधियों का प्रधान, ज़ार के समय का एक बड़ा फौजी, तुर्कमान अफ़सर निमाज बेग था। निमाज़ बेग ज़रा छोटे कद का दुबला पतला आदमी था। वह लाल मखमली चोग़ा और सफ़ेद भेड़ी की कीमती टोपी पहने था। उस की कमर में रेशमी पट्टे पर चमड़े की पेटी से चांदी की म्यान मे टेढ़ी तलवार लटक रही थी। खूब ऊंचे-ऊंचे कद्दावर सिपाहियों का दल उस का शरीर रक्षक था। लोग उसे 'बयार' (सर्दार) कह कर पुकारते थे और झुक-झुक कर सलामें करते थे।

यह स्पेशल ट्रेन तेजेन स्टेशन पर भी खड़ी हुई। अजीज़ खां गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। निमाज़ बेग अपनी गाड़ी से उतर कर प्लेटफार्म पर आया और अज़ीज़ को अपने साथ गाड़ी में ले गया। वे दोनों मित्र थे परन्तु मुलाकात पहली बार ही हुई।

दोनो की खूब घुटने लगी। निमाज़ बेग अजीज़ के आदर सत्कार मे शराब पेश करना चाहता था परन्तु झिझक गया—इस्लाम में शराब हराम ठहरी—उस ने उस की खातिर शिकंजवीन और सोडे से ही की। अज़ीज़ ने इस से पहले कभी शाही गाड़ी देखी नही थी। वह घूर-घूर कर गाड़ी के सामान को देख रहा था और मन मे सोचता जा रहा था— यह है ज़िन्दगी ! ज़िन्दगी के मजे लेना तो यह सरदार लोग ही जानते है।

बातचीत में अज़ीज़ ने कहा—"सोच रहा हू कि कुली खाँ की कमान में सोवियत की जो फौज तेजेन में है, उसे जल्दी ही खत्म कर दू ! निमाज़ बेग ने कुछ दिन सबर करने की सलाह दी और बोला—"अज़ीज़ खां, हम तुर्कमान लोगों की डेराबासी कौम दो दिन में बनने-बिगड़ने की चीज़ नहीं है अभी सबर करो। कोकन्द से लौट कर मै तुम्हारे साथ तेजेन में ठहरूंगा। तभी इन बातों को तय करेंगे।"

दोनों ही एक दूसरे का मन लेने के लिये चतुरता से बात कर रहे थे और अपनी-अपनी राय बनाते जा रहे थे। निमाज़ बेग ने सोचा—अगर अज़ीज़ खाँ को हाथ में किये रहे तो तुर्कमानिया ही नहीं बल्कि तुर्किस्तान में भी अपनी सल्तनत बना सकेंगे।

और अज़ीज़ ने सोचा—यह निमाज बेग, पतलून पहरने वाला नये ढंग का आदमी है। यह फिर से ज़ार के ढंग की सल्तनत कायम करने की कोशिश करने वालों में से है लेकिन यह आदमी काम का है। इस पर भरोसा किया जा सकता है। एक बार मेरे पांव जम जाँय तो यह मेरी खुशामद करता फिरेगा।

दोनों अपनी-अपनी चतुरता में अपने स्वार्थ पूरे करने की कल्पना कर रहे थे—निमाज़ बेग ज़ारशाही को फिर से जमाने की और अज़ीज़ अपनी स्वतंत्र सल्तनत बना लेने की।

धार्मिक प्रतिनिधियों के दल मे अज़ीज़ ने अपनी ओर से मदीर ईशान का नाम लिखवा दिया। तुर्कमान राष्ट्रीयता के दो महान नेताओं की मुलाकात समाप्त हो गई।

कोकन्द की कान्फ्रेस में वही हुआ जो कि उस का प्रयोजन था—सोवियत सरकार को समाप्त करने के लिये, सोवियत से सभी सम्भव उपायों से लोहा लेने का निश्चय किया गया। तुर्कमानिस्तान मे स्वतंत्र राष्ट्रीय पूंजीवादी सरकार की घोषणा कर दी गई। एक गुप्त कान्फ्रेस में तुर्कमानिया की नयी स्थापित सरकार के प्रधान ने यह भी सूचना दी कि एक बहुत बडी साम्राज्यवादी शक्ति हमारी नयी स्वतंत्र सरकार को आवश्यक आर्थिक सहायता, और जरूरत पड़ने पर सैनिक सहायता भी देने के लिये तैयार है। तुर्कमानिया के जागीरदारों कारखानादारो, व्यापारियों और ज़ार के समय के अफ़सरो ने तुरंत इस सरकार के प्रति राजभक्ति की शपथें भी ले ली। एक सशस्त्र सेना बनाने का फैसला किया गया। इग्राश बेग के नेतृत्व में स्थानीय डाकुओं और लुटेरों की एक सेना तुरंत तैयार भी हो गई।

घोषणा कर दी गई कि १६ दिसम्बर को पैगम्बर का जन्म दिन मनाया जायगा। देश भर में छुट्टी रहेगी और उस दिन सब जगह सोवियत विरोधी सेना का प्रदर्शन किया जायगा।

तेजेन में भी प्रदर्शन करना तय हुआ। शहर सोवियत को अज़ीज़ के षडयंत्र का भेद मिल गया। सोवियत ने भी तुरंत पंचायत की बैठक की और अज़ीज़ के व्यवहार तथा प्रदर्शन के सम्बन्ध में विचार किया गया।

चर्नीशोव ने कहा – "मुझे विश्वास है इस मौके पर अज़ीज़ सोवियत से कोई झगड़ा नहीं करेगा। वह अपना धार्मिक दिन मनाना चाहता है। इस-लिए सोवियत सेनाओं को शहर में सामने ला कर उसे भड़काना ठीक नहीं

एक दूसरे मेम्बर ने कहा—"धार्मिक दिन का जलसा केवल बहाना है। अज़ीज़ इस मौके पर सोवियत पर अवश्य हमला करेगा। वह अपना आतंक बैठाना चाहता है। हमें उस का जवाब हथियारों से ही देना होगा।

कुली खां ने ज़ोर दिया—"नहीं, हमें उस से पहली रात ही अज़ीज़ के डेरे पर हमला कर के झगड़े की जड़ काट देनी चाहिए।"

चर्नीशोव ने फिर भी ज़ोर दिया कि—"अपने पर आक्रमण हो तो हमे उस का पूरा जवाब देना चाहिये परन्तु स्वयं लड़ाई नहीं छेड़नी चाहिए क्यों-कि उस के विचार में उस समय तेजेन में लाल फौज की स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह अजीज की सेना को समाप्त कर सकती।

कुली खां अपनी बात पर अड़ा रहा—"लाल फौज का कमिस्सार मैं हूं" वह बोला, "सोवियत माने या न माने। मैं दिन चढने से पहले अज़ीज़ के डेरे पर हमला करूगा और उन के पैगम्बर के जलसे को गमी बना कर रख दूगा।"

केलुई खां ने अपनी मोंछ ऐंठ कर कहा—"कुली खां तुम लाल फौज के कमिस्सार हो और मै कमाण्डर हूं। मुझे तुम्हारी राय जंच रही है लेकिन सुबह तक प्रतीक्षा करना फिजूल है। हमे फौरन ही, अभी रात मे ही अज़ीज खां का कूड़ा समेट लेना चाहिये।"

चर्नीशोव ने उठ कर उन दोनों का विरोध किया—"कुली खां, तुम्हारा इस तरह जिद्द करना बहुत बुरी बात है।" चर्नीशोव ने डांटा, "पिछली बार जब सोवियत जागीरदारों का अनाज जब्त कर के गरीब किसानो में बांटने की तजवीज़ कर रही थी, तुम ने उस का विरोध किया। परिणाम यह हुआ कि अज़ीज़ खां ने हमारे दांव का फायदा उठा लिया और उस ने थोड़ा बहुत अनाज ज़ब्त कर के, किसानों मे बांट कर भोले किसानों की सहानुभूति अपनी ओर कर ली। यह हमारी भारी भूल थी कि सोवियत ने तुम्हारी बात को महत्व दिया। अब तुम फिर वही मूर्खता कर रहे हो। तुम चाहते हो, सोवियत सेना आत्महत्या कर ले? चाहे तुम सेना के कमिस्सार हो और केलुई खां कमाण्डर है परन्तु जब तक सोवियत फैसला नही करेगी और प्रादे-शिक सोवियत का समर्थन नही होगा, हमारी सेना एक कदम नही हिला सकती।

"तुम चाहे जो कहो,"—कुली खां ने मुट्ठी बंधा हाथ उठा कर कहा, "सेना और हथियार तो मेरे हाथ में हैं।"

"बको मत"—चर्नीशोव आपे से बाहर हो गया, "अगर जुबान चलाओगे तो अभी गिरफ्तार कर लिए जाओगे।"

अता दयाली केलुई खां के नीचे, लाल फौज का छोटा कमाण्डर था। उस ने विस्मय से कुली खां और केलूई खां की ओर देखा और खिन्न स्वर में बोला —"क्या हो रहा है यह ? क्या तुम लोग पागल हो गये हो ? कुली खां, क्या लड़ने का बहुत चाव बढ़ रहा है ? आओ देख लूं तुम कितने बहादुर हो ? चर्नीशोव ज़रा इस का मिज़ाज ठण्डा होना चाहिये !, "आखिर हो क्या गया इन लोगों.......?"

अता दयाली बहुत चतुर आदमी नहीं समझा जाता था परन्तु अवसर पर सीधे आदमी भी बहुत ढग की बात कह जाते है। अता दयाली की बात से कुली खां वास्तव मे ठण्डा पड़ गया और गर्दन झुका चुप रह गया। वह मन मे सोचने लगा—चर्नीशोव और सोवियत से बिगाड कर उस के लिये पनाह कहां है ? अज़ीज़ तो उसे ज़िन्दा जमीन मे गाड़ देगा। मन ही मन वह अपनी भूल पर पछता ज़रूर रहा था परन्तु सब के सामने अपनी गलती मान लेने के लिये भी वह तैयार न था। वह चुप बैठा रहा।

अब चर्नीशोव धीमे स्वर मे अपनी बात समझाने लगा—"अव्वल तो हमारी सेना इतनी नही कि हम अजीज़ की सेना को सम्भाल सके। दूसरे इस समय शहर मे किसान भरे हुये है। होगा क्या ? बैल-बैल लड़ेगे और घास का सत्यानास होगा। दोनों तरफ से गोली चलेगी और किसान मरेंगे। इस समय तो अज़ीज छेड़े तो भी हमे तरह दे जानी होगी। हां, अगर वह हम पर हमला ही कर बैठे तो सामना करना ही होगा !"

मौका देख कुली खां ने चुटकी ली—"तो हम लोग जा कर अज़ीज़ के सामने घुटने टेक कर उसी का हुक्म क्यो न मानने लगे।"

"नही इस का यह मतलब हरगिज नही"—चर्नीशोव बोला, "हमें समय देख कर चलना होगा। अज़ीज को जनता की शक्ति के सामने झुकना पड़ेगा परन्तु ढंग से। और अगर आप लोग इस के लिये जल्दी चाहते है तो मैं अश्काबाद जा कर इस का प्रबन्ध करता हू।" सोवियत ने चर्नीशोव की ही बात मानी। कुली खां की बात नही मानी गई।

आकाश से बूंद गिरे बरस भर से अधिक हो गया था परन्तु उस रात खूब खुल कर बरसा। संध्या से ही आकाश पर बादल घिर आये थे और हवा में भी नमी थी। आधी रात से खूब बरफ गिरने लगी। घाम से झुलसी धरती पर बरफ़ की मोटी रजाई बिछ गई। सुबह जब मुर्गी ने तीसरी बार बांग दी, पौ-फटने के समय सहसा बादल छंट कर नीला आकाश उघड़ आया। सुबह

आते-जाते लोगों के पांव नीचे बरफ खसखसा रही थी और आदमियों के मुंह से भाफ के बादल उड़ रहे थे ।

एक पहर दिन चढते-चढ़ते शहर के मुस्लिम जगत मे हल चल मच गई। अजीज़ के समर्थक बुजुर्ग और मौलवी गलियों-बाजारों मे दिखाई देने लगे । अजीज़ भी दल-बल सहित बाजार मे आ गया । उस के दल के आगे-आगे मदीर-ईशान हाथ मे हरा झण्डा लिए चल रहा था ।

छोटे से तेजेन शहर का चौक बाजार भीड़ से खचा-खच भर गया । जुलूस गिरजा के चौक से कराबाली मसजिद की ओर बढ़ रहा था । मदीर ईशान की आंखो से आंसू बह रहे थे और वह ऊंचे स्वर मे चिल्ला रहा था—"ओ वल्लाह ....! ओ अल्लाह........ओ मुहम्मद !"

अज़ीज़ के दूसरे बड़े दरबारी आल्ती सोपी ने नारे लगाये—"इस्लाम जिन्दाबाद ! अजीज खां जिन्दाबाद !"

बरफ़ को कुचल कर चलती भीड़ सर्दी से कांप रही थी और लोग मदीर ईशान और आल्ती सोपी के पीछे कुरान पाक की आयते दोहराते हुए कारा-बाली मसजिद की ओर बढ़े जा रहे थे । मसजिद के पास पहुच कर मदीर-ईशान ऊचे चबूतरे पर चढ़ गया । अपने हाथ का झण्डा उस ने यारमुश काज़ी और अलनजर बे को थमा दिया । आल्ती सोपी मीनार पर चढ कर तीखी और ऊंची आवाज़ मे अजां की बांग देने लगा—"अल्ला हो अकबर........!"

अचम्भे में खड़ी भीड़ समझ नहीं पा रही थी कि हो क्या रहा है ? अज़ीज को नमाज और अज़ां से क्या मतलब ?... ... क्या इस्लामी सल्तनत कायम हो रही है ?........जरूर यही बात है । नही तो इस ज़माने मे दुनिया भर को आध-आध सेर रोटी की खैरात कौन बांट सकता था ? अल्ला का रहम हो ! दरया तेजेन पूरा रहे ! अल्ला अज़ीज़ को सलामत रखे !

अज़ीज़ की आज्ञा से आल्ती सोपी ने कोकन्द के फैसले के मुताबिक तेजेन में स्वतंत्र इस्लामी राज कायम होने की घोषणा की और इस्लामी राज का मतलब समझाया । सोपी बहुत जोश में नाक-भौ चढा कर बोल रहा था । कभी वह खूब गला फाड़ कर चिल्लाता और कभी बिलकुल खामोश हो जाता । रूमाल ले कर वह बार-बार आंसू पोंछता जा रहा था ।

यारमुश काज़ी और अलनज़र बे झण्डे के बोझ से परेशान हो रहे थे । अगर कभी पहले ऐसा धार्मिक दृश्य दिखाई देता तो बे का हृदय भक्ति से गद-गद हो गया होता परन्तु इस समय उस के मन मे अपना अनाज लूटा जाने का

गुस्सा भरा हुआ था । उसे अज़ीज़ पर कोई भरोसा न था । उस की शक्ति बढ़ती देख वह मन ही मन घबरा रहा था । तिस पर बाहें झण्डे के बोझ से टूट रही थीं वह सोच रहा था कब यह बवाल खत्म होगा ।

अज़ीज़ भीड़ के बीचोबीच बढ़ आया । उस ने गुरूर भरी निगाह चारों ओर डाल कर देखा और फिर अधिकारपूर्ण गम्भीर स्वर में बोला—"उलेमा, बुज़ुर्गो और लोगो ! आज का दिन मुतबर्रिक (पवित्र) है क्योंकि आज हज़रत पैगम्बर का जन्म दिन है लेकिन यह और भी बड़ी बात है कि आज हम लोगों ने अपनी खोई हुई आज़ादी हासिल की है । आज से इस मुल्क में शरियत का कानून कायम होगा । उलेमा, बुज़ुर्गो और सब लोगो, इस काम में मुझे आप सब लोगों की मदद की जरूरत है । आज तक इस मुल्क में दो तरह की हुकूमत चल रही थी और दो तरह के उसूल कायम थे । आप लोग यकीन रखिए कि चन्द ही दिन मे ज़ार की हुकूमत और उस के गिरोह का जो कुछ असर बाकी है, मैं खत्म कर दूंगा । मुझे आप लोगो से कहना है कि आप सच्चे और सही रास्तों पर चलें ! सही और सच्चा रास्ता सिर्फ इस्लाम का है । इस्लाम जिन्दाबाद !"

इस का समर्थन सब से पहले किया मदीर ईशान ने । वह जोर से चिल्ला उठा—"हुर्रा हुर्रा—वल्लाह"

और फिर सब भीड़ चिल्ला उठी और यह शोर आकाश तक जा पहुंचा ।

१६

एक दिन पौ फटते-फटते, कोश गांव के लोग शोर सुनकर अपनी छोल-दारियों से बाहर निकल आये। बात भी मामूली नहीं थी! खबर थी कि अलनजार बे की घरवाली रात में घर छोड़ भाग गई है। बिजली की लपट की तरह खबर गांव मे फैल गई। सब के होठों पर एक ही बात थी :—"बे की औरत भाग गई!"

"मेहली भाग गई!"

"मेहली मावेद के साथ भाग गई!"

जवान लड़कियां पहले भी कई बार जवान लड़कों के साथ गांव से भाग चुकी थीं। उस पर भी बात चलती ही थी लेकिन वैसा हो जाना कोई अनहोनी बात न थी। लेकिन ब्याहता औरत के भाग जाने से सभी लोग अचम्भे में आ गये। और तो और, ऐना की सौतेली मां 'मामा'—जिसे निजी बातों को छोड़ किसी से कुछ मतलब न था भी बोली—"अच्छा ही हुआ इस कमबख्त के साथ! मेरी लड़की चली गई थी तो इस आदमी ने मेरे नाक मे दम कर दिया था। अब कोई इस से पूछे अब क्या कहते हो? अरे वह तो अनब्याही लड़की थी! तेरी तो औरत भाग गई, नाक के नीचे से! अब बोलो! जिस की औरत ही भाग गई उसे तो दोज़ख में भी जगह नहीं मिल सकेगी! खूब हुआ! इस के साथ यही होना चाहिये था!"

गांव की गलियों में बड़े बूढे कहने लगते—"अरे, ब्याहता औरत भाग गई? जाने अब इस धरती और आसमान का क्या होने को है? अब क़यामत का वक्त आ गया है।"

औरतें यह खबर सुनतीं तो ऐसे लम्बी सांस खींचती कि नीचे की सांस

नीचे और ऊपर की ऊपर रह गई हो और फिर पड़ोसिन को खबर देने के लिये लपक जातीं। आपस में उन की बात ही समाप्त होने में न आती।

"अच्छा ही हुआ"—एक बोली, "ग़रीब की जान तो बची।"

"तो और करती क्या?"—दूसरी ने कहा।

कईयों ने मेहली को बेहया बेसवा कह कर गाली दी।

उम्सागुल के लिये यह मौका दिल की जलन बुझाने का आया। लहंगा कमर में खोस वह गाँव मे घर-घर खबर सुनाती फिरी और फिर पड़ोस के गांव की ओर दौड़ी गई। बात शुरू करती तो मुह पर हाथ रख मेहली की करतूत पर विस्मय प्रकट करती हुई धीमे स्वर में। फिर उस का स्वर ऊंचा हो जाता—"लौडियो, भाग नहीं जाती तो करती क्या? अलनज़र उस के लिये क्या मर्द था? खाने के लिये ही उसे क्या देते थे? ऐसा कोई कुत्ते को भी नही देगा। अच्छा बदला लिया उस ने! लौडियो, सुना है कि वह शहर मे बोलशेविक के यहाँ शिकायत करने गई है। सुना है, बोलशेविक बे को जेल मे क़ैद कर देंगे। बहनो, इस बे के तो करम ऐसे है कि इस के साथ जो कुछ हो, वही थोड़ा!"

वह बरस ही अलनज़र बे के लिये बदकिस्मती का था। बहू अतैंरी की वजह से यों ही उस की जान सूली पर लटकी रहती। एक तो ज़ार का तख्त पलटने से उस का दबदबा और इज्जत यों खत्म हो गई थी तिस पर अतैंरी बात-बात में बेइज्जती करती रहती। अरतैक ने जो उसे पीट-पाट कर अनाज लूट लिया तो लोगों की नज़र मे वह बिलकुल मिट्टी हो गया। तिस पर साठ ऊंट बोझ अनाज क़ा नुकसान कम नही होता! अन्त मे उस की घर की औरत ही भाग गई। कोई भी इसान और क्या सह सकता था।.......... मुसीबते इंसानों पर पड़ती है। दुनिया बुरा सलूक भी करती है। इंसान उसे सह जाता है कि किस्मत और दूसरे लोगो पर किसी का क्या बस? लेकिन खुद अपने घर मे....? अपनी घर की औरत लानत दे जाय? और फिर औरत भी क्या? और मेहली....? जिस का न कोई सगा सम्बन्धी था न घर बारी, एक बोरी जौ दे कर तो बे ने उसे खरीदा था। और यह लड़का मावेद? बे दोष दे तो किस को? दिल का दुख कहे तो किस से? वह उन दोनों की बोटी-बोटी दांत से काट डालता पर उन का सुराग़ कौन लगाये? बरस नही बीता दुनिया उस की ताबेदार थी, उस के इशारे पर नाचती थी। कहां गये अब खोजा मुराद, दारोगा बाबा खां और कुली खां? जा कर अज़ीज़ के सामने अपना

दुख रोये ? जा कर कहे मेरी औरत भाग गई ? एक बे जा कर कहे कि उस के घर की औरत भाग गई ? क्या मुंह वह दुनिया को दिखायेगा ? क्या उस का नाम रह गया, क्या उस की इज्ज़त रह गई ? लोग उसे हिजड़ा कहेंगे और मुह पर थूकेंगे। अगर यह दिन देखने से पहले ही उस की मौत हो गई होती तो लोग उसे बुजदिल हिजड़ा तो न कहते ! अब किस तरह उस के मुंह पर लगा यह कलंक धुले !

वह दोपहर तक बैठा सोचता रहा। उस ने अपना नया लिया हुआ रिवाल्वर निकाला। हथियार को गौर से देखा गोली है या नही। गोली थी। उस ने रिवाल्वर का घोड़ा चढ़ा लिया। उस के हाथ कांप उठे, आँखे भय से फैल गई और होंठ लटक गये। एक मिनिट में सम्भल कर उस ने रिवाल्वर की नाली अपने सीने पर टिका ली। संसार का सब मोह छोड़, संसार से नाता तोड़ लेने के लिए उस ने आंखे मूद ली।

परन्तु उस का दिल जोर से धड़कने लगा। उस ने आंखे खोल जगमगाती दुनिया को फिर एक आंख देखा। छोलदारी की छत से धुंआ निकलने के लिए बने सूराख से धूप की किरणे आ कर कीमती रंग-बिरगे कालीनो पर फैल रही थीं। कालीनों पर बने भड़कीले फल मानो बे को पुकार कर कह रहे थे —"तुम भी क्या पागल हो। अरे इस दुनिया के, कुदरत के, असलियत के मज़े छोड़ कर तुम कहां जाना चाहते हो ? अंधेरी कबर मे जा लेटोगे तो तुम्हारा क्या भला हो जायगा ? जिन्दा रहोगे तो दुनिया मे मौके और जगह की इन्तहा नही ! सोचो हजार मौके आ सकते है।"

अलनज़र अपने साँस के आने-जाने का शब्द सुनने लगा और सोचा— सांस का आता रहना कितना बड़ा सुख है ? यह सांस ही बन्द हो गया तो क्या रह जायगा ? ओफ़ कितनी तकलीफ होगी सांस न आने से ? सौ मन मिट्टी के नीचे कबर मे दब जाना ? जा कर खुद ही मौत के फरिश्ते इज़राइल के हाथों पड़ जाऊ ? धीमे-धीमे रिवाल्वर उस के हाथ से समीप पड़ी गद्दी पर जा टिका। छोलदारी के बाहर मालकोश के हिनहिनाने की आवाज आ रही थी और उस की लड़की की खिलखिलाहट भी सुनाई दी। उसे जान पड़ा वह कबर से लौट आया और ज़िन्दगी कितनी मज़ेदार चीज़ थी ?

बे ने अपनी प्रतारणा की— मैं दर असल ही बेवकूफ हूं। निराश हो कर जान दे देने से फ़ायदा ? किस के लिये जान दे दू ? मेहली के लिए ? न मैंने उसे कभी अपनी बीबी—बेगम समझा, न मुझे उस से कोई मुहब्बत थी ? एक

बांदी थी, बस ! समझ लो, मावेद अपनी पांच बरस की नौकरी की मजूरी ले गया।...... पर लोग-बाग क्या कहेंगे ? अरे कुछ दिन बकेंगे और फिर भूल जायंगे ! दस-पांच दिन बात रहेगी, दब जायगी। इतने दिन गम खा जाओ!

बे अपनी छोलदारी से निकला। किस्मत की बात, पहले उसे अतैरी ही दिखाई दी। उसे देखते ही बे झुझला उठा—जिस दिन से यह कलमुही इस घर मे आई है, एक के बाद दूसरी मुसीबत सदा ही सिर पर पडती रही। यह जरूर किसी डायन की औलाद है। यह आई और किस्मत ने मुह फेर लिया। किसी तरह इस से पीछा छूटे तो मै आधी जायदात खैरात कर दू। उस ने अतैरी की ओर से मुह फेर लिया।

अतैरी बे की आंखों में घृणा भांप गई। उसे भी याद आ गया कि एक दिन यह बल्ले खां को फटकार रहा था—"तू कैसा मर्द है रे, जो एक औरत को में बस नहीं कर सकता ?"

अतैरी ने उसे वैसी ही निगाह से जवाब दिया और बोली—"कहो, क्या तुम्हारी मर्दानगी मैने छीन ली ? औरत को तो तू क्या बस करेगा तू तो बाँदी को ही नही निबाह पाया ? अब अपनी मर्दानगी में दाढ़ी समेट ले। हिम्मत है तो जा, पकड़ कर ला उन लोगों को ?"—अतैरी ने शहर की ओर हाथ बढ़ा संकेत किया।

बे दांत पीस कर चुप रह गया।

जब बे के यहाँ यह बीत रही थी मावेद और मेहली शहर की ओर भागे चले जा रहे थे।

अशीर कई दिन पहले ही लाल फौज मे भरती हो चुका था। उसे फौज के निशान, नम्बर और बंदूक मिल गई थी। मावेद के आ जाने पर अशीर ने उसे भी अपनी ही कम्पनी में भरती करवा लिया। चर्नीशोव की सिफ़ारिश से मावेद को शहर मे एक कोठड़ी मिल गई। बे के यहाँ से मिला उस के हिस्से का अनाज सम्भाल कर रखा हुआ था। कुछ दूसरे सामान के साथ वह सब उसे दे दिया गया। वह अपने नये घर में आ बसा और मेहली अपने घर की रानी बन गई। अब उस पर हाथ उठाने वाला और उसे आंख दिखा कर गाली देने वाला कोई न था। न उसे अब बाँदियों की तरह नाम ले कर पुकारा जा सकता था। अब वह मावेद की घरवाली कही जाती थी। आराम और अधिकार का नशा उस की आँखों में चमकने लगा। कभी-कभी वह सोचती इस सब के लिए किस का शुक्रिया करूं ?

वह सोचती यह अर्तैरी की मेहरबानी है ? नहीं ! सोचती ज़ार का तख्त पलटने से मेरे दिन फिरे ? नहीं ! अशीर की मेहरबानी है—नहीं ! मावेद की मुहब्बत ?—नहीं ! यह मेरे अपने हौसले की बात है ! नहीं तो कोई क्या कर सकता था।

मेहली मावेद से भी यह सवाल पूछ कर जवाब माँगती। मावेद कहता—मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता था ? मुझे तो तुम ने खुद अपने आप को दिया और मेरी जिन्दगी बना दी ?"

मावेद के शहर में आकर बस जाने की खबर अरतैक को मिली तो वह भी उन्हें मुसीबतो और गुलामी से छूट कर सुखी जीवन पाने के लिये बधाई देने गया। रास्ते मे उसे चरखेज़ मिल गया। चरखेज़ बहुत उदास जान पड़ता था। अरतैक ने उस की उदासी का कारण पूछा—

"क्या बताऊं ? दुनिया के तौर मेरी समझ मे नहीं आ रहे हैं। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ लोग कर क्या रहे है ?"

"क्या मतलब ?"—अरतैक ने पूछा, "लोग सदा ही अपनी-अपनी समझ से चलते हैं। शहर में दो तीन राजनैतिक दल है। तुम्हें क्या कोई भी पसन्द नही ?"

"नही"

"आखिर तो तुम मुसलमान हो ?"

"अज़ीज़ के इस्लाम को मै नही मानता।"

"तो तुम पतलून वालों की पार्टी (बोलशेविकों) के साथ हो जाओ।"

"कुली खाँ की पार्टी मे ? कुली खाँ सदा दग़ाबाज़ी करता रहा है। मुझे उस पर अब भी एतबार नहीं।"

"तुम चाहते क्या हो ?"

"मै चाहता हूँ इन्साफ़ हो ! लोग कहते थे इन्कलाब के बाद इन्साफ होगा।"

"इन्साफ़ क्या कोई गठड़ी मे बांध कर तुम्हारी बग़ल मे दे जायगा ?.... क्या पागलपन की बाते करते हो ? तुम मेरे साथ आ जाओ !"

"तुम्हारे साथ ?"

"क्यों; क्या मुझ पर विश्वास नहीं ?"

"तुम पर तो विश्वास है, अज़ीज़ पर बिलकुल नहीं।"

"क्यों; अभी तक वह बुरा क्या कर रहा है ?"

"यह उस की चालबाज़ी है। आगे देखना क्या करता है। मुझे उस पर भरोसा नहीं होता।"

अरतैक के बहुत कुछ समझाने पर भी चरखेज़ को संतोष न हुआ—"देखा जायगा !"—उस ने अरतैक की बात टाल दी। अरतैक भी निराश हो मावेद के घर पहुँचा। उस ने मावेद और मेहली को उन के नए जीवन पर बधाई दी। मन में उस के यह ख़याल अवश्य था कि इन का ब्याह असल ठीक ढंग का ब्याह तो नही है फिर भी उन लोगों के पिछले जीवन का ख़याल कर वह बोला—"जो हो भाई तुम दोनों ने हिम्मत की, ठीक ही किया !"

अरतैक ने मावेद को समझाया—"यह तुम्हारी ग़लती है कि तुम मुझे छोड़ कुली खां और अशीर की फौज मे जा मिले। अपने आखिर अपने हैं। ग़ैर, ग़ैर !" मौके से उसी समय अशीर भी नये जोड़े को बधाई देने आ पहुंचा। उस की और अरतैक की बातचीत तानेबाजी से शुरू हुई और फिर गरमा-गरमी हो गई।

अशीर ने अरतैक का अज़ीज़ खां की फौज मे जाना और अरतैक ने अशीर का कुली खां की फौज मे जाना मूर्खता बताया। दोनों अपनी-अपनी सफाई देकर दूसरे की बेवकूफी सुझा रहे। उन का झगड़ा ऐसे चल रहा था जैसे दो अंधे एक दूसरे पर पत्थर चला रहे हों।

अरतैक गुस्से मे उठ कर जाने लगा परन्तु अशीर उस की राह रोक कर खड़ा हो गया। दोनो ही क्रोध मे हाँफ रहे थे। अरतैक झुझला कर बोला—"तुम मुझे जाने क्यों नही देते ?"

"जब बात का फैसला हो जायगा तभी तुम जाओगे।"—अशीर ने उस की आंखों में घूर कर जवाब दिया।

"तो क्या फैसला तब होगा कि तुम मुझे गोली मार दो या मै ......?" अरतैक बोला।

"यहाँ यह बात कमीनापन होगी। यह देखा जायगा लडाई के मैदान में ...."—अशीर ने जवाब दिया।

"हमारी दोस्ती खत्म है।"

"हाँ, अब हम लोग दुश्मन है।"

पुराने गहरे मित्र एक दूसरे की ओर ऐसे घूर-घूर कर देख रहे थे कि एक दूसरे को फाड़ खायँगे। अरतैक बिना कोई जवाब दिए कमरे से निकल चला गया।

१७

अज़ीज़ खाँ ने तेजेन में पैगम्बर मुहम्मद के जन्म दिन का जो जलसा करवाया उस मे उस का प्रयोजन अपनी सेना और शक्ति का प्रदर्शन कर देना भी था। इस से जनता पर प्रभाव बढने की आशा थी। तुर्कमानी प्रतिनिधि मंडल के नेता नियाज़बेग से जो उस की बातचीत कार्यक्रम के सम्बन्ध में हुई थी, उस का भी उसे ध्यान था। कोकन्द से लौट कर उस के दूत मदीर ईशान ने स्वतंत्र इस्लामी राज कायम होने के जो समाचार उसे दिये थे, वह बात भी उस के ध्यान में थी।

अजीज को यह विश्वास हो गया कि देहात के किसानों और शहर की जनता की सहानुभूति उस के साथ है और वे लोग उस का आदर करते है। यह भी उस ने देखा कि कुछ तुर्कमानी लोगों ने उस के जलसे में भाग नहीं लिया, वे लोग अभी स्थिति को परख लेना चाहते है यह भी वह जानता था कि कुली खां जैसे आदमियों के प्रति लोगों मे घृणा होने पर भी जनता में सोवियत का प्रभाव भी बढ़ता ही जा रहा था। वह अनुभव कर रहा था कि चर्नीशोव के प्रयत्नों से लोग किसान-मजदूर राज की आशा मे दृढ़ विश्वास से मरने-मारने के लिए सोवियत की ओर खिचते चले जा रहे हैं। अशीर जैसे बे घर-बार के लोग, जिन्होंने जार के राज में जुल्म सहे थे; मावेद और मेहली जैसे लोग, जो अब तक गुलामी में जकड़े हुए थे अब शहरों मे जमा हो रहे है। ऐसे लोग सोवियत के कट्टर सहायक बनते जा रहे है। इन लोगों को समझाने बुझाने का भी कुछ असर न था। यह लोग समझते थे इन का जीवन केवल सोवियत के राज में ही सम्भव है। इन्हें चर्नीशोव के सिवा किसी दूसरे पर विश्वास ही न था। तेजेन की लाल फौज की संख्या अधिक नहीं परन्तु इस की

उपेक्षा न की जा सकती थी। लाल फौज से सामना होने पर वह किस से सहायता की आशा कर सकता था ? किसानों का भरोसा करना व्यर्थ था इसलिए वह अवसर की प्रतीक्षा मे था।

चर्नीशोव भी आशंकित था। समाजवादी क्रांति-विरोधी शक्तियों को इकठ्ठा होते देख उसे आशंका हो रही थी। रूस की क्रांतिकारी शक्ति मध्य एशिया से बहुत दूर थी और फिर दुतोव की ज़ार की समर्थक और क्रांति विरोधी सेनायें मध्य एशिया को शेष क्रान्तिवादी रूस से अलग किये हुये थीं। क्रान्ति विरोधी शक्तियां इस अवसर से लाभ उठा कर मध्य एशिया में अपने कदम जमा लेना चाहती थीं। कोकन्द में आज़ाद इस्लामी सल्तनत कायम करने वाले तुर्कमानिया के जागीरदार और पूजीपति, कास्पियन समुद्र के पड़ोस के क्रान्तिकारी सोशलिस्ट नाम से सोवियत विरोधी पार्टी बनाने वाले, ईरान से लौटी हुई कज्ज़ाक फौजें, जुनेद खां जैसे छोटे-छोटे खान जिन का काम लूट-पाट से ही चलता आया था और डाकुओं के टोलियो का सब से बड़ा मुजिया हग्राश बे, अलीयार खां, अजीज़ खां और उस जैसे कई दूसरे ; यह सब लोग अपनी-अपनी जगह सोवियत का विरोध कर अपने स्वतंत्र राज कायम कर लेने की तिकड़में जमा रहे थे। इन सब को लिखा पढ़ा कर सहायता देने वाले थे ब्रिटिश साम्राज्यशाही शक्ति के एजेट जो लोग कई जगह भेष बदल कर और कई जगह स्थानीय खानों के विश्वासपात्र बन कर बैठे हुए थे। यह लोग बरसों से इस विद्या को सीख कर एशिया के छोटे-छोटे राष्ट्रों को आपस में लड़ा कर, उन्हें फोड़ कर अपनी साम्राज्यशाही सत्ता की नीवे डालते आये थे। चर्नीशोव को अभी इन गुप्त जालसाजों का कोई भेद मालूम न था। परन्तु इन लोगो की करतूतों के परिणाम वह अवश्य देख रहा था। तेजेन की स्थिति बहुत डांवाडोल थी। बाहर की सोवियतों से उस का सम्बन्ध टूट चुका था। सोवियत के मुट्ठी भर विश्वासपात्र आदमी थे। वे जो कुछ करते अपने साहस और जिम्मेवारी पर ही कर सकते थे। ताशकंद की क्रातिकारी कमेटी अपने इलाके में चल रही सोवियत विरोधी बग़ावत का सामना करने में उलझी हुई थी। चर्नीशोव अश्काबाद की सोवियत से कुछ आशा कर सकता था क्योंकि वहां के चुनाव में ज़ार के सब पुराने अफ़सर और क्रांतिकारी सोशलिस्ट लोग सोवियत में आ घुसे थे। सोवियत पर उन्हीं लोगों का कब्ज़ा था।

तेजेन की अवस्था दिन-दिन संकटमय हो रही थी। सोवियत के सामने प्रश्न था कि अजीज़ खां की बढ़ती फौज को जल्दी से जल्दी समाप्त किया

जाय । लेकिन शहर में दंगा फिसाद की नौबत भी न आने पाये । इस के लिए आवश्यक सिपाहियों की संख्या तेजेन की सोवियत के पास थी नहीं । कुली खां पर भी चर्नीशोव का सन्देह बढ़ता ही जा रहा था । विशेष आशा न होते हुए भी अश्काबाद जा कर यत्न करने के सिवा और कोई उपाय न था ।

अज़ीज़ भी ऐसी ही डांवाडोल स्थिति मे था । वह भी अश्काबाद से सहायता पाये बिना कुछ न कर सकता था परन्तु नियाज बेग से सहायता मांगना भी अज़ीज़ के आत्म सम्मान के विरुद्ध था । उस ने मदीर ईशान से एक पत्र नियाज बेग के नाम लिखवाया और अरतैक को पत्र दे कर अश्काबाद भेजा।

अरतैक और चर्नीशोव एक ही गाड़ी से अश्काबाद जा रहे थे । चर्नीशोव को गाड़ी मे देख अरतैक की बड़ी इच्छा हुई कि पुराने मित्र से मिल-जुल कर बातचीत करे परन्तु उचित न जान पड़ा । अश्काबाद वह जा रहा था चर्नीशोव के विरुद्ध अज़ीज़ के लिए सहायता का प्रबन्ध करने ! फिर मित्रता का झूठा आडम्बर क्या करता । उस समय उसे ध्यान भी आया कि वह सोवियत-विरोधी मार्ग पर कहां से कहां आ पहुचा है । चर्नीशोव की निगाह अरतैक पर न पड़ पाई थी । बाकी सफर मे अरतैक जान-बूझ कर चर्नीशोव की निगाह से बचा रहा ।

अरतैक जिस समय अज़ीज का पत्र ले कर अश्काबाद की इस्लामी कमेटी मे पहुंचा कमेटी की कान्फ्रेस हो रही थी । कमरा खूब बड़ा था । इंतजाम और सजावट योरूपियन ढग की थी । भीड़ भी काफी थी । अरतैक कमरे भर मे आंखे दौड़ा कर देख रहा था कि कोई जान-पहचान का चेहरा दिखाई दे। परन्तु नियाज़ बेग को छोड़ उसे कोई परिचित नहीं दिखाई दिया । नियाज़ बेग को भी उस ने तेजेन के स्टेशन पर, गाड़ी में कोकन्द जाते हुए ही देखा था । अरतैक को यह कमेटी का जमाव कुछ विचित्र-सा ही लगा । एक ओर एक गंजा, दाढी मुंडा सरदार बैठा था उस के साथ ही एक तोंदियल बड़ा व्यापारी था जिस के चेहरे पर फैली चर्बी भरी गालों में आंखे भी दबी जा रही थीं । उस के आगे एक बे बैठा था जिस का सिर मुडा हुआ था परन्तु ठोड़ी से लम्बी दाढ़ी लटक रही थी । एक ओर एक आदमी खड़ा था बिर्चिस पहने । उस के रिवाल्वर की चमड़े की डोरी नीचे दूर तक लटक रही थी । यह आदमी चुप खड़ा अपनी मूंछें ऐंठ रहा था । कमेटी की कारवाई इस आदमी को पसन्द नहीं आ रही थी । कभी वह एक किनारे चहलकदमी करने लगता और कभी खीझ से दूसरे लोगों की ओर देखने लगता ।

कमेटी का प्रधान था आरोज़ सरदार। आरोज़ का चेहरा निस्तेज भुस-भुसा सा था। चेहरा मोटी-मोटी भौं और दाढ़ी-मूंछ से ढंका हुआ और तोंद भी खूब बढ़ी हुई थी। आरोज़ सरदार के कंधों पर ज़ार के ज़माने की कर्नेली के निशान लगे हुये थे। इन लोगों को देख कर अरतैक ने निराशा से मन मे कहा—यदि इन्हीं लोगों के हाथ हमारी नैया की पतवार है तो डूबेगे नही तो क्या ?

इस इस्लामी कमेटी ने प्रादेशिक सोवियत से मांग की थी कि सोवियत इस इस्लामी कमेटी को तुर्कमानिया की पूरी जनता की प्रतिनिधि स्वीकार कर ले, इस कमेटी के प्रतिनिधियों को सोवियत का मेम्बर बना ले और इलाके में लड़ाई के जितने हथियार और गोली गट्टा है, वह सब, सोवियत और इस कमेटी में बराबर बाँट दिया जाय। कान्फ्रेस मे विचार यह हो रहा था कि सोवियत इन मांगों को दो दिन के भीतर स्वीकार कर लेगी या नही।

"यह लोग तो अभी स्वयं ही बेपेंदी के लोटे की तरह लुढ़क रहे हैं"—मन में अरतैक ने सोचा—और हम इन की सहायता का भरोसा कर रहे हैं ?

कान्फ्रेंस में सब अपनी कहे जा रहे थे। परेशान हो कर गंजे सिर वाला मोटा सरदार बोला—"हमे तो आप लोगों की बातें कुछ समझ नहीं आ रही। जब हमने सोवियत के सामने अपनी मागें रख दी है तो यह मांगे पूरी होनी चाहिये। सोवियत को हमें जवाब देना होगा। अगर सोवियत तसल्लीबक्श ज़वाब नही देती है, तो शहर को जला डालो ! सोवियत है क्या चीज़ ? यह मुल्क हमारा है, यहाँ ताकत हम लोगों को है। अगर कमेटी को यो बेसिर-पैर की बातों में ही उलझे रहना है तो हम लोग यहाँ बैठकर क्या कर रहे है ? इस तमाशे का फायदा ही क्या है ? हमें यह तमाशा बिलकुल नापसन्द है। है। हम यहाँ से चले जांयगे !" सरदार क्रोध में कह रहा था और उस के मुह से थूक के फुहारे उड़ रहे थे। उस का चेहरा बिलकुल सुर्ख हो गया। उस ने कमेटी के लोगों की ओर इस आशा से देखा कि वे उस की बात से डर गये होंगे।

अरतैक ने देखा कि नियाज़ बेग सरदार की बात पर मुस्करा रहा था और उस से नियाज़ बेग को कहते सुना—"भाड़ में जाव, यह कमबख्त चला ही जाय तो जान छुटे। यह तो यहाँ लूट के मौके की तलाश में आया है।"

अज़ीज़ का खत कान्फ्रेंस में पढ़ा गया। उस पर भी बहस छिड़ गई। किसी ने कहा—"सौ सिपाही भेज दो। दो दिन में कुली खाँ को खत्म कर लौट

आयेंग।" दूसरा बोला, "अजीज से तो कुली खाँ ही भला। कल अज़ीज के पाँव जम जायंगे तो वह हमी को आँखें दिखायेगा।" कुछ लोगों की राय थी कि आरोज़ सरदार और नियाज़ बेग तेजेन जाकर सोवियत और अज़ीज़ खाँ में समझौता करवादें। कुछ की राय थी—इस झगड़े से हमें क्या मतलब? कुछ ऊघ रहे थे।

अज़ीज के पत्र के बारे में कुछ फैसला हो नहीं पाया और दूसरी ही बहस छिड़ गई। कोई बोल उठा—"जर्मनी को अगर टर्की में जगह मिल जाय तो वह बर्तानिया के परखचे उड़ा देगा।" मोटे तोदियल बे फिर बोल उठे, "यह बात सही है। अग्रेज तुर्की की फौज का भला क्या मुकाबिला करेगे? इस बारे में एक तुर्की अफसर ने मुझे सब कुछ बता दिया है।"

आरोज़ सरदार बोल उठा—"ईरान मे रुकी हुई ज़ार की कज्जाक फौज बर्तानिया की कमान मे चली गई है। बर्तानिया ही उस का पूरा खर्चा दे रहा है। कज्ज़ाक फ़ौज के बड़े अफसर कोमथूज, खोजानेप, खीवा और बुखारा मे बर्तानिया के हुक्म से गये है। बर्तानिया की फौजे ईरान मे ही नही बल्कि कास्पियन समुदर के इस तरफ़ और तुर्कमानिया में भी आ गई है। रूसी फौज के पीछे हट जाने के कारण बर्तानिया इधर आकर जर्मनी और तुर्कमानिस्तान से खुद लड़ेगा। उम्मीद है इस मुल्क मे जल्दी ही जर्मनी और बर्तानिवी फ़ौजों की ज़ोर से टक्कर होगी।"

आरोज़ सरदार की इस महत्व पूर्ण खबर पर भी दूसरे लोगों ने खास ध्यान नही दिया। जो जिस के मन मे आता बोलता चला जा रहा था। मुल्क पर आये ख़तरे को न तो कोई समझ ही रहा था और न किसी को उस की चिन्ता थी। प्रायः लोग आपस मे ही गप-शफ कर रहे थे। कोई उठ कर ज़रा घूमने और चाय पीने चले जाते और फिर लौट कर आ बैठते। अरतैक यही समझा कि यह लोग यहाँ दिल बहलाने के लिये आये है या इस खयाल में है कि पैसा बनाने का कोई अवसर हो तो उस की खबर रहे। अरतैक ने सोचा—फिजूल मै तेजेन से यहाँ तक आया! इन लोगो को जनता की क्या परवाह है? इन में और ज़ार के अफ़सरों में फरक ही क्या है? यह उन से ज्यादा मूर्ख ज़रूर हैं।

कान्फ्रेंस में सुनी बातों से एक बात ज़रूर उसे समझ मे आई कि सब लोग समझते हैं कि अज़ीज़ केवल अपना राज जमाने के लिये ही सहायता चाहता है। चर्नीशोव ने भी यही कहा था कि अज़ीज़ को जनता से कोई मतलब नही,

वह खुद खान बनने का स्वप्न देख रहा है। तो अज़ीज़ को जनता का हितैषी और रक्षक सिवा उस के और कौन समझता है ? कौन उस का विश्वास करता है ? खुद अरतैक भी क्या अज़ीज़ का विश्वास कर सकता है ?

अरतैक का माथा घूम गया। वह कान्फ्रेंस से उठ कर चल दिया। तेजेन के मामले में कान्फ्रेंस क्या करेगी ? इस विषय में वह कुछ जान नही पाया ! कान्फ्रेस मे स्वयं कुछ कहने का भी उसे कुछ फायदा न जान पड़ा। उस ने सोचा— इन स्वार्थी लोगों के सामने जनता के नाम पर, देश पर आते खतरे के नाम पर दुहाई देना व्यर्थ है। और फिर उस के मन में यह भी विश्वास न था कि अजीज़ को सहायता मिलने से जनता का भला हो जायगा। वह किसी भी भरोसे के नेता के पीछे चल कर जान लड़ा देने के लिये तैयार था परन्तु किसी खान की खुदगर्जी पूरी करने के लिये बेवकूफ बनना उसे मंज़ूर न था।

जिस समय अरतैक कान्फ्रेस से खिन्न हो कर स्टेशन की ओर लौट रहा था दूसरी ओर चर्नीशोव प्रादेशिक सोवियत के सामने अपनी बात कह रहा था। चर्नीशोव बड़ी कठिनाई में था। वह अच्छी तरह जानता था कि अश्काबाद की सोवियत में तिकड़म से चुने गये अधिकांश लोग जनता विरोधी थे और उस पर सन्देह करते थे। मेंशेविक और सोशलिस्ट लोगों के नेता फुन्तीकोव और दोखोव का अश्काबाद की सोवियत मे खूब ज़ोर जमा हुआ था। चर्नीशोव की बात लोग ध्यान से सुन अवश्य रहे थे परन्तु उन के चेहरों पर सन्देह और विरोध का भाव भी स्पष्ट था। सोवियत की इस बैठक में अश्काबाद के बोल्शेविक तेमया, झितनीकोव, मोली बोजकोव और बेतमानोव में से कोई भी मौजूद न था इसलिये चर्नीशोव और भी घबराहट अनुभव कर रहा था। यह उसे बाद में मालूम हुआ कि सोवियत के बोल्शेविक मेम्बरों को सभा का समय गलत बताया गया था ताकि वे लोग सभा में आ ही न सकें।

दिन बदिन अज़ीज़ की शक्ति बढ़ती जा रही है और उस का दुस्साहस भी बढ़ रहा है"—चर्नीशोव ने कहा, "उस का उद्देश्य क्या है ? यह किसी से छिपा नहीं है। जिस तरह वह चल रहा है, उस से सन्देह का भी कोई कारण नहीं है। जनता के लिये अन्न और भोजन के सम्बन्ध में उस ने जरूर कुछ काम ऐसे किये हैं जो वास्तव में हमारी सोवियत को करने चाहिये थे। इस का परिणाम यह हुआ है कि कुछ समय के लिये भूखे किसानों की सहानुभूति उस की ओर हो गई है। उस ने आज़ाद इस्लामी सल्तनत का नारा भी लगाया है। इस से मुस्लिम जनता को उस के प्रति विश्वास होने लगा है परन्तु

अज़ीज़ की यह आज़ाद इस्लामी सल्तनत मुस्लिम जनता की स्वतंत्रता के लिए नही है। यह आज़ाद इस्लामी सल्तनत कुछ जागीरदारो और तुर्कमानी पूंजी-पतियों की ही हुकूमत होगी। यदि हम समय पर अज़ीज़ का उचित उपाय नही करेगे तो परिणाम वही होगा जैसा ताशकंद मे इस्लाम की स्वतत्र हुकूमत कायम करने के नाम पर जनता के खून की नदियां बहने के रूप मे हुआ। इस हालत में अज़ीज़ खां की फौज को निशस्त्र कर देना बहुत ही आवश्यक है और जहां तक सम्भव हो सके यह काम बिना खून खराबी किये, कड़ाई बिना किये होना चाहिये। इस के लिए आवश्यक है कि हमारे पास उस की सेना से काफ़ी बड़ी सेना हो ! यह बात तेजेन की मौजूदा लाल फौज के बस की नही इसलिये मै अश्काबाद की प्रादेशिक सोवियत से सैनिक सहायता चाहता हूं।"

चर्नीशोव ने अनुभव किया कि सोवियत के लोग तेजेन की गम्भीर स्थिति की उपेक्षा कर उस का विरोध करने के लिये उतारू है। वह एक बार फिर बोला—"अन्त मे मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि यह समस्या केवल तेजेन की ही समस्या नही है। यदि तेजेन मे अज़ीज़ के उग़ते हुये संकट का उपाय उचित समय पर न कर दिया जायगा तो एक नही, सैकड़ों अज़ीज़ पैदा हो जांयगे और केवल तेजेन मे नही, यह लोग पूरे तुर्कमानिया पर छा जांयगे।"

"और यह लोग फिर से ज़ार को गद्दी पर ला बैठायेंगे !" फुन्तीकोव ने अपनी लम्बी गर्दन उठा कर मज़ाक किया।

"नही"—चर्नीशोव ने उत्तर दिया, "यह लोग पुराने ज़ार को ढूढ़ने नहीं जायंगे ! एक ज़ार की जगह एक सौ ज़ार जगह-जगह पैदा हो जायगे।"

दुख़ोव बहुत शांति और उपेक्षा से बोला—"अज़ीज़ के प्रश्न को ले कर हमे भड़क नही जाना चाहिये। इस प्रश्न पर हमें राजनैतिक दृष्टि से दूर-दर्शिता से विचार करना चाहिये। हमें यह समझ लेना चाहिये कि अज़ीज़ है क्या ? फर्ज़ कर लीजिये कि उस की शक्ति एक मामूली ततैये के बराबर ही है। एक ततैये की ताकत क्या है ? वह केवल कुछ समय के लिए परेशान कर सकता है परन्तु एक ततैये को छेड़ने का परिणाम होता है कि पूरा छत्ता आ पड़ता है। सोच लीजिये कि एक तुर्कमान को छेड़ कर कहीं हम पूरे तुर्कमानिया को तो नहीं भड़का देगे ? आखिर वह देश तो उन्हीं लोगों का है। इस से यह कही बेहतर होगा कि अजीज से स्वयं झगड़ा मोल न ले कर किसी प्रभावशाली को ही अज़ीज़ का सामना करने के लिये खड़ा किया जाय।"

"अज़ीज़ की फौज से हथियार रखा लेने का मतलब तुर्कमान लोगों से झगड़ा शुरू कर देना हरगिज़ नहीं है"—चर्नीशोव ने समझाना चाहा, "इस का मतलब है तुर्कमान जनता को अज़ीज़ के जुल्म से बचाना। इस का मतलब है तेजेन के किसानों को ज़मीन और सिचाई का पानी देना और उन्हें पंचायत के रूप में संगठित करना। इस के विरुद्ध आप के सुझाव का अर्थ होता है कि हम जनता के एक अंग को दूसरे अंग से लड़ा दें। अगर हम ऐसा करते है तो यह ज़ार की फूट की कूटनीति की नकल करना होगा।"

"तुम्हारे पक्ष मे कुली खाँ जैसे प्रभावशाली तुर्कमान है। जनता पर इन लोगों के प्रभाव का उपयोग होना चाहिये!"

"कुली खाँ पर हम लोग बिलकुल भी भरोसा नही कर सकते। कुली खाँ प्रत्येक बात मे सोवियत की नीति का विरोध कर रहा है।"

"तुम तेजेन की सोवियत के प्रधान हो! यदि तुम कुली खां जैसे आदमियो को भी अनुशासन में नही रख सकते तो तुम वहाँ कर क्या रहे हो"—दुखोव ने पूछा।

"आप लोगों को याद होगा कि मैंने अपनी रिपोर्ट मे यह कभी नहीं कहा कि हमारी सोवियत में बोल्शेविको का बहुमत है। हमारी सोवियत में जनता विरोधी लोग काफ़ी संख्या में घुसे हुये हैं और वह बात मै आप की सोवियत में भी देख रहा हूं।"

फ़ुन्तीकोव ने चर्नीशोव की ओर कनखियों से देखा और उस के माथे पर त्योरियाँ पड़ गई—"जो बात तुम कह रहे हो उस की जिम्मेवारी समझते हो?"—उस ने चर्नीशोव की ओर घूर कर प्रश्न किया।

"यदि आप की सोवियत में जन हित के समर्थकों का बहुमत है। यदि आप को अपनी शक्ति पर पूरा विश्वास है तो तेजेन की स्थिति सम्भालने में आप को हिचकिचाहट किस बात की है—और आज लोग कुली खां जैसे आदमी का पक्ष क्यों ले रहे है?"—चर्नीशोव ने प्रश्न किया, "हमारी सोवियत में कुली खां जैसे आदमियों के रहने के कारण ही अज़ीज़ खाँ को बढ़ने का मौका मिल रहा है। मुझे तो आश्चर्य है कि आप का कुली खां पर इतना भरोसा और विश्वास है!"

सोवियत की बैठक में मौजूद लोगों का व्यवहार देख चर्नीशोव ने साफ और कड़ी बातें कह देना आवश्यक समझा। कई उदाहरण पेश कर उस ने बताया कि अश्काबाद से परस्पर-विरोधी आज्ञायें मिलती रही हैं जिन के कारण

तेजेन में उलझनें पैदा हुई और जब हम ने इन सवालों पर रोशनी डालने के लिये आप को लिखा, आप के यहां से जवाब ही नही आया। चर्नीशोव की इन बातों से फुन्तीकोव बहुत बिगड़ उठा। वह बार-बार उठ कर चर्नीशोव का विरोध करने लगा कि चर्नीशोव अपनी बात कह ही न पाये परन्तु इसी समय किजाइल अर्वात के मजदूरों के बहुत से प्रतिनिधि और लाल फौज के लोग भी सभा में आ गये। चर्नीशोव ने फिर से अपनी बात दोहरा कर कही। अब फुन्तीकोव ने रंग बदल दिया—

"यह तो अजब तमाशा है"—फुन्तीकोव बोला, "यह आदमी हम लोगों पर तोहमत और इलजाम लगा रहा है, हम लोगों को क्रांति-विरोधी कहता है और फिर हम से सहायता मांगता है। अपने ऐसे ही व्यवहार के कारण इस आदमी ने तेजेन की सोवियत के सब लोगों को अपना विरोधी बना लिया है। हम तेजेन के मामले की उपेक्षा नही कर सकते! दोस्त चर्नीशोव, हम लोग जल्दी ही आकर तेजेन की स्थिति को स्वयं देखेंगे। तुम वहां झंझट और उलझनें पैदा करते जाओ और झंझटों को दूर करने हम वहां जाया करें तो काम कैसे चलेगा? यदि हम चर्नीशोव की बातें ठीक मान ले और मान लें कि तेजेन में इस समय स्थिति खराब है तो हम अपने आदमियों को वहां किस की जिम्मेदारी पर भेज सकते है?"

फुन्तीकोव ने अपने इस प्रबल तर्क से सब को चुप करा देने की आशा में सब लोगों की ओर घूम-घूम कर देखा—"ऐसी स्थिति मे कौन तेजेन जाने के लिए तैयार होगा?"—सब ओर चुप्पी देख फुन्तीकोव की आंखे चमक उठीं।

सहसा पीछे की ओर से आवाज आई—"हम जायंगे तेजेन!"

फुन्तीकोव का चेहरा फक हो गया—"कौन जायगा?" उस ने फिर प्रश्न किया।

लाल फौज का एक मामूली अफसर लोगों को हटाता हुआ आगे बढ आया। चर्नीशोव ने ध्यान से देखा—यह वही अलेक्सी तिशेंको था जो तेजेन की चुनाव सभा मे अरतैक को पूछता हुआ आया था। उस के बाद और कई आदमी तेजेन जाने के लिये खड़े हो गये। तिशेंको की लाल फौज की कम्पनी के साथ ही किजाइल अखातियन मजदूरों का एक स्वयं सेवक दल भी तेजेन जाने के लिये तैयार था। फुन्तीकोव के लिये चुप रह जाने के सिवा उपाय न रहा। सभा समाप्त होने के दो घंटे के भीतर चर्नीशोव दो सौ लाल सिपाहियों के साथ तेजेन की ओर चल पड़ा।

लाल फौज की एक और कम्पनी तेजेन में पहुंच जाने का समाचार अज़ीज़ को जल्दी ही मिल गया। उसने तुरन्त अपने सलाहकार दरबारियों को बुलवाया। आल्ती सोपी और अलनज़र वे खबर पाकर तेजेन आये परन्तु अज़ीज़ खां तेजेन में था नही। उन्हे कहा गया कि अज़ीज़ खां किसी आवश्यक काम से बाहर गया है—शीघ्र ही लौट आयेगा।

सूरज छिपने को था। पश्चिम की ओर छितराये बादल सुर्ख हो रहे थे। हवा बोझल और गरम हो रही थी। चिड़ियां भी सुस्ती अनुभव कर जहाँ-तहाँ पेड़ों पर शाखाओं मे जा छिपी थी। उन की चहचहाट मे भी उदासी जान पड़ती थी।

अलनज़र का मन भी उदास था। वह उठ कर सराय के आंगन मे चहल-कदमी करने लगा। संध्या की लाली लिये धुधलके मे वह आगन उसे कैदखाना सा लग रहा था। अज़ीज़ शाम तक भी न लौटा तो उसे विस्मय होने लगा। वह सराय की एक दीवार से दूसरी दीवार तक टहलता अपने दुर्भाग्य की बात सोचता जा रहा था। मेहली के भाग जाने के बाद से उस ने लोगों से मिलना जुलना बहुत कम कर दिया था। तब से वह शहर भी नही आया था। यहाँ वह बात भी करता तो किस से? आल्ती सोपी शहर मे अपने किसी मिलने वाले के यहाँ चला गया था। सराय मे कोई बात करने लायक आदमी था भी तो नही।

शहर में जाकर किसी से मिल न आऊं?—अलनज़र सोच रहा था। उस का मित्र अरतैन खर्जैन तेजन से चला गया था। इन्कलाब होते ही खर्जैन अपनी जायदाद समेट कर काकेशस चला गया था। उसे कोतूर की याद आई परन्तु साथ ही ख्याल आ गया—मेहली की बात उस ने भी सुनी होगी और वह कमबख्त खूब खुश हुआ होगा! उस का मन और भी भारी हो गया—क्या फ़ायदा कही जाने का?.........इस से तो अच्छा है लेट कर आराम ही किया जाय।

लेट जाने पर नीद भी नही आई। चुपचाप लेटने से दुश्चिन्ताओं से मन और भी व्याकुल हो रहा था—उस पर क्या नही बीती? बदनामी, माल का नुक़सान? क्या नही हुआ? अब जानवरों के लिये चारा भी नही मिल रहा है—उस की सैकड़ों भेड़ें और बीसियों ऊंट मर चुके थे। उस के डेरे के चारों ओर जानवरों की हड्डियाँ बिखरी पड़ी थी।....आखिर अल्ला मुझ से नाराज क्यों है? या अल्ला, मेरे गुनाह बख्श!....मुझे पनाह दे। या अल्ला, कहीं

खादिम की तरह मेरे लिये भीख मांगने की नौबत न आ जाय। मेरे खुदा रहम कर मुझ पर! बहुत देर तक इसी तरह के ख्यालों के बाद उस की आंख लगी।

गोलियाँ दगने की आवाज़ से उस की नीद उचट गई। वह पलंग पर से उछल पड़ा। वह एक लबादा पहने था। उस हालत मे आंगन की ओर दौड़ पड़ा। चारों ओर से गोलियाँ दगने की आवाजे, नींद में घबराहट से डर गये अजीज़ के सिपाहियों की चीखे सुनाई दे रही थीं और बन्दूकों की नालियों से अंधेरे मे उठते भभूके दिखाई दे रहे थे।

अलनजर ने घबरा कर पुकारा—"अज़ीज़ खाँ, अरतैक!"

एक गोली उस के सीने मे लगी। वह लड़खड़ा गया। उस का सिर चकरा कर आँखों के आगे धुन्ध छा गया। उस समय भी उस के मुह से निकला—"बेटा, अता—दयाली··· मै ·· दुश्मन नही······ मुआफ़··· "—वह कटे पेड़ की तरह फर्श पर गिर पड़ा।

अजीज़ खाँ की सेना से हथियार छीनने के लिये छापा मारने का काम बहुत चुस्ती और होशियारी से किया गया था। कुली खाँ को इस आयोजना की खबर भी नही दी गई। तेजेन की लाल फौज और अश्काबाद से आई मज़-दूरो और सिपाहियों की कम्पनी को मिला कर पूरी कमान तिशेको को सौंप दी गई और चर्नीशोव छापा मारने के समय स्वयं भी उस के साथ बना रहा। काफ़िला सराय मे अजीज़ के डेरे की देख-भाल एक दिन पहले ही कर ली गई थी। सोवियत सेना को दो टुकड़ियों मे बाँट कर पूरब की ओर से और रेलवे स्टेशन की ओर से भी घेर लिया गया। अज़ीज के सतरियों को घेरे का पता ही उस समय लगा जब उन के लिये कुछ कर सकने का अवसर न रह गया था। अज़ीज़ के सिपाही नीद से मदहोश और हमले से घबरा कर जिधर बन्दूक की नाली उठी, गोली चलाने लगे। इन की गोलियो के जवाब मे रेलवे लाइन की ओर से एक बौछार गोलियों की आई। असल मे तो इसी एक बौछार से लड़ाई का फैसला हो गया। अज़ीज़ के सिपाही अपनी बन्दूके फेक नंगे-उघाड़े सराय की नीची दीवारें फांद-फांद कर भाग निकले। अज़ीज़ के घोड़े, हथि-यार और अलनज़र बे की लाश सराय में पड़ी रह गई। सोवियत सेना ने सराय पर कब्जा कर लिया।

सोवियत के सिपाहियों ने अज़ीज़ के भागते हुये सिपाहियों का पीछा किया। कोई-कोई भागते हुये सिपाही पीछा करने वालों पर गोली चलाते जा रहे थे।

अरतैक भी इन्हीं में था। बेखबरी में घिर कर नीद से उठने पर भी अरतैक ने अपने सिपाहियों को रोक कर दुश्मन का सामना करने की कोशिश ज़रूर की परन्तु सिपाहियो को जमता न देख कर वह भी दीवार फाँद भाग निकला।

भागता हुआ अरतैक अपने बचाव के लिये पीछे की ओर गोली चलाता जा रहा था। मतलब था, कि पीछा करने वाले नज़दीक न आने पावें। लेकिन पीछा करने वाले लाल सिपाही गोलियां आने पर भी रुके नही। अरतैक के सिर के ऊपर से गोलियां सन्नाती हुई निकल रही थी। अरतैक ने समझा कि पीछा करने वालों की नज़र उस पर पड़ गई है और वे उसी पर गोली चला रहे है। वह एक छोटी सी दीवार की आड़ मे झुक गया और पीछा करने वालो की नज़र उस पर पड़ गई है और वे उसी पर गोली चला रहे हे। वह एक छोटी सी दीवार की आड़ मे झुक गया और पीछा करने वालो को देख उस ने गोली चलाई। पीछा करने वाला लाल सिपाही भी एक दीवार के कोने की ओर हो गया। दोनों के ही पास कारतूस थे ज्यों ही वे दूसरे को आड़ से बाहर सिर निकालते देखते, एक दूसरे पर गोली चला देते।

अंधेरे के कारण दोनों का ही निशाना खाली जा रहा था। अरतैक अपने ऊपर झुझलाया — घबराहट में कारतूस बरबाद करने से फ़ायदा ? उस ने अपना चित्त स्थिर करके निशाना लेने का यत्न किया फिर भी निशाना न बैठा। उस के कारतूस खत्म हो गये। अब उस के पास रिवाल्वर ही रह गया था। वह सोच रहा था कि जगह बदल ले। परन्तु उस ने देखा कि उस के विरोधी की बन्दूक भी चुप है। उस समय अरतैक को विरोधी की ओर से बन्दूक का घोड़ा चढ़ाने की आहट तो आई परन्तु उस की गोली नही दगी। अरतैक समझ गया कि दुश्मन की बन्दूक जाम हो गई है। अरतैक उस की ओर आँखे गड़ाये अपनी जगह से उठने लगा। उस का विरोधी लाल सिपाही भी खड़ा हो गया। तारों की छांव मे वह सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा था। अरतैक अभी सोच नहीं पाया था कि क्या करे, सहसा लाल सिपाही की बगल से गोली चलने का धड़ाका हुआ, उस के हाथ से बन्दूक गिर गई और वह धरती पर गिर पड़ा। गिरते-गिरते उस ने पुकारा—"तिशेको···· ·· अलमोशा, आओ !"

यह पुकार अरतैक के कलेजे में धंस गई। वह स्वर उसे पहचाना हुआ लगा। अरतैक दौड़ कर जख्मी सिपाही के पास पहुंचा। लाल सिपाही धरती पर धीमे-धीमे छटपटा रहा था। अरतैक उस पर झुक गया और कुछ सन्देह से पुकारा "अशीर !··· क्या तुम हो अशीर ?"

ज़ख्मी सिपाही ने आँखें खोल उत्तर दिया—"अरतैक ?"

"हा मै अरतैक हूँ।"

"क्या तुम ?·· नही यह नहीं हो सकता।"

"मैने तुम्हें ज़ख्मी नही किया अशीर"—अरतैक का गला रूंध रहा था।

"में जानता हूँ।"··· बहुत धीमे से अशीर की आवाज़ निकली, "मैं तुम पर गोली चला रहा था परन्तु मेरे हाथ हिल जाते। तुम भी मुझ पर गोली चला रहे थे। मै जानता हूं मुझे तुमने गोली नही मारी······।"

अशीर का सिर एक ओर लुढ़क गया। अरतैक ने उसे बाहों में उठा लिया और सोचने लगा उसे कहाँ ले जाय। काफिला सराय में या लाल सेना की बारिक मे ? जहाँ भी वह जाता, अज़ीज़ की सेना का कप्तान होने के नाते गिरफ़्तार कर लिया जाता परन्तु यह बात उस ने नही सोची। उसे चिन्ता थी, जैसे भी हो अशीर की मरहम पट्टी की जाय और उसे तकलीफ से बचाये।

अंधेरे मे समीप ही कदमों की आहट सुनाई दी। अरतैक ने उसी ओर पुकारा—"कौन है ?·· यहाँ आओ ? मदद करो !"

राइफल सम्भाले एक आदमी आगे बढ़ आया और संदिग्ध स्वर में उस ने प्रश्न किया—"क्यों, क्या बात है ?"

"तिशेको !"— अरतैक पुकार उठा, "अलेक्सी, मदद करो। इस ज़ख्मी आदमी को ले चलो ! ·· यह तुम्हारा सिपाही है, अशीर सहात !"

"अशीर ?······ जख्मी हो गया ? मैं तो इसी को खोज रहा था !"

तिशेको और कुछ नही बोला। अरतैक को पहचान लेने का भी कोई सकेत उस ने नही किया। अपनी राइफल कंधों से लटका उस ने तुरन्त अरतैक की क़लाइयों मे अपनी कलाइयाँ डाल कर कुर्सी बना ली और अशीर को उस पर टिका कर बोला— "चर्नीशोव के यहाँ चलो ! ····· उस का घर नजदीक है।"

बेहोश अशीर को उटाए वे दोनों धीमे-धीमे चर्नीशोव के मकान पर पहुंचे। चर्नीशोव मकान पर नही था उस की पत्नी अन्ना गोलियाँ चलने के धड़ाके से उठ बैठी थी और फिर लेटी नही। दरवाजे पर कदमों की आहट और जख्मी की कराहट सुन वह घबरा उठी—"हाय, क्या ; चर्नी को क्या हो गया ?"

"घबराओ नही अन्ना !—"तिशेंको ने गम्भीरता से कहा, "यह चर्नी नही है। दूसरा सिपाही है। इसकी मरहम पट्टी करो !"

अन्ना ने तुरन्त अशीर को एक बिस्तर पर लिटा दिया और उस के जख्म

को धोकर मरहम पट्टी करने लगी । कुछ देर बाद अशीर ने आँखें खोलीं । तिशेको को सामने देख उस ने कहा—"अलेक्सी, मुझे अरतैक ने गोली नही मारी ।"

अशीर की बात सुन तिशेकों ने अरतैक की ओर ध्यान से देख उसे पहचाना परन्तु बोला कुछ नही ।

"यह बात ठीक है"—अरतैक ने अशीर की बात का समर्थन किया, "परन्तु मैने गोली इस पर ज़रूर चलाई थी ।"

तिशेको ने उत्तर न दे मुँह फेर फिर अशीर की ओर देखा "घबराओ मत तुम ! यह बाद मे देखा जायगा कौन सोवियत और जनता का मित्र है और कौन उन का शत्रु ?"

तिशेको ने अरतैक को पहचान कर न सलाम दुआ की, न कुछ बातचीत न इतने दिनों बाद मिलने पर प्रसन्नता ही प्रकट की । जैसे उस के जेलखाने मे भाई बनने की बात उसे याद ही न हो ।

"अलेक्सी"—अशीर फिर तिशेको की ओर देख बोला, "कुछ नही कहा जा सकता भाई, जब किसी को समझ आ जाए........।"

अरतैक का चेहरा सुर्ख हो गया परन्तु वह कुछ बोला नही । उसे याद आ गया, चर्नीशोव ने कहा था—तुम अज़ीज़ की तरफ़ जा रहे हो । एक दिन खुद ही तुम अनुभव करोगे कि जनता के शत्रुओं का साथ देकर तुम स्वयं ही जनता के शत्रु बन जाओगे !....... जनता अपने शत्रुओं को कभी माफ़ नही करेगी !"

अरतैक के लिये वहाँ और खड़े रहना सम्भव न रहा । उस ने अन्ना को सलाम किया और चल दिया । न किसी ने उसे रोकने का यत्न किया और ना ही किसी ने उस से पूछा कि वह कहाँ जा रहा है ।

तारो की छांव में कठिनता से राह पहचानता वह रेल की लाइन के साथ शहर से बाहर चल दिया । उस के मन में बार-बार यह बात उठ रही थी—"मैंने सोवियत सरकार और जनता के विरुद्ध हथियार उठाये है........ जो जनता के लिये लड़ रहे हैं वे मुझे अपना शत्रु समझेंगे ही........चर्नीशोव ने ठीक ही कहा था ।"

१८

अंधेरी रात में अरतैक अपने गांव की राह चला जा रहा था। सुबह के पहर धुन्द कम होने लगा परन्तु चमकते तारों पर हल्की बदली का पर्दा छा गया। अरतैक सोचता जा रहा था—आज दुनिया मे जो कुछ हो रहा है, वह समझ लेना सम्भव नहीं। दुनिया की हालत तो इस अंधेरी रात से भी ज्यादा बुरी हो रही है। राह को सीधी और साफ़ समझ कर चलो। दो कदम जाते ही कांटेदार झाड़ियां आ जाती हैं। दाहिने घूमो तो दलदल है और बांयें घूमो तो नाला! लौटना चाहो तो राह भटक जांय!··· पर यह तो साफ़ है कि मै चर्नीशोव, तिशेको और अशीर का दुश्मन बन गया हूँ। अपने हार्दिक मित्र को मैंने मार ही डाला था·······? बचपन में हम लोगों का कितना मेल और प्यार था?·······भाइयों से बढ़ कर! आज हम एक दूसरे की जान ले रहे थे। हमें कौन जायदाद बांटनी है? हमारी लड़ाई किस बात पर? मैं अज़ीज़ खां के लिए इन लोगों से लड़ रहा हूँ! अज़ीज़ कौन मेरा अपना है?···· तो फिर लड़ाई किस बात की?······· यह दुनिया ही धोखा है!·······यह तो पागलपन है।······· यह उसूलों की लड़ाई है।·······मेरा बाप उम्र भर धरती जोत खेती करता रहा, क्या बना लिया उन्होंने? मैं ही बीस बरस एक तम्बू में पड़ा खेती करता रहा, क्या फ़ायदा हो गया उससे? भूखा रहा, नंगा रहा! दुनिया मज़ाक नहीं। कुछ करना है तो लड़ना पड़ेगा! अगर ज़िन्दा रहना है तो लड़ना पड़ेगा अपने लिए और अपने जैसे लोगों की ज़िन्दगी के लिए लड़ना पड़ेगा। बाबा खां और उस के दोस्तों से, जिन्होंने मेरे जैसे लोगों का खून पिया है, मुझे लड़ना पड़ेगा लेकिन तिशेंको, चर्नीशोव और अशीर भी तो यही कर रहे हैं!····वे लोग भी तो जनता के लिए लड़ रहे हैं। मेरा और

उनका झगड़ा क्या ? सहसा उसे खयाल आया— इन दोस्तों से मैं क्यों लड रहा हूँ ? यह मेरे कधों पर लगे अज़ीज़ के निशान ही मुझे इन लोगो से लड़ा रहे हैं।"

अपने कंधे से हरे निशान उतार अरतैक ने फेंक दिए। इतने दिन तक यह निशान लगाए रहने के लिए मन मे ग्लानि भी अनुभव हुई।

भूरे-भूरे बादल अब बरसने रहने लगे थे। बूदे महीन थीं परन्तु हवा की तेजी से चेहरे पर चुभती सी जान पड़ती थीं। अरतैक अपने मन की उलझन मे इतना खोया हुआ था कि बारिश और भीगने की ओर उसका ध्यान ही न गया। सूखा पडने के बाद से सन् १९१८ के बरस मे वह तीसरी बारिश थी।

सूरज निकलने के समय तक बारिश थम गई। बारिश से धूल बैठ गई थी इसलिए बादलों को उड़ाने वाली हवा चली तो उसमे धूल का नाम न था। भीगी धरती से बहार (बसंत) की गध उमड़ रही थी। सब ओर जीवन फूटने के चिन्ह दिखाई पड़ रहे थे। अभी तक अधेरे से दृष्टि बंधी रहने के कारण अरतैक को जान पड़ रहा था धरती और संसार सिमिट कर अंधेरा कुंआ बन गए हैं। अब प्रकाश फैलने से दुनिया उसकी आँखों के सामने फैल गई। खेतों में गेहूँ के अकुर फूट रहे थे। बरस भर से दबा बीज धरती में रस पा कर फूट उठा।

चारों ओर सजीवता से अरतैक के मन का दुख और शरीर को थकावट भी उड़ गई। उस का मन गुदगुदाने लगा, वह गुनगुनाने लगा और ऊंचे स्वर में गाने लगा। उसे पता भी न लगा कि राह कैसे कट गई और वह घर पहुँच गया।

ऐना उमे आया देख उसके सीने पर सिर रख ऐसे चिपट गई कि मानो वह उस के लौटने की आस खो बैठी हो। अरतैक को खूब प्रसन्न, और उस के कंधों पर से हरे निशान फटे देख ऐना का दिल बाग-बाग़ हो गया।

"ऐना को देख पाता हूँ तो मेरा दुख और चिन्ता भूल जाती है"— अरतैक ने सोचा क्यों मै व्यर्थ भटकता फिरता हूँ ? जो सुख और विश्राम घर में है उसे भी छोड़े बैठा हूं। अब चाहे जो हो, जैसा अमल चले, पहले जैसा जोर-ज़ुल्म तो हो नहीं सकता। मैं राजनीति समझता नहीं हूँ। खामुखा भटक रहा हूँ। बेहतर है घर पर ही चैन करूं ! ऐना भी तो यही चाहती है........।"

अरतैक को अपने गांव में जीवन, स्वप्न के सुख संतोष भरे ससार जैसे जान पड़ रहा था। ऐना आंखों के सामने दिखाई पड़ती रहने से जीवन में

पूर्णता और संतोष जान पड़ता था ! ऐना की बोली कितनी मीठी जान पड़ती ! उसका चलना-फिरना, उठना-बैठना उसका सब व्यवहार उसे सौन्दर्य की सब से बडी कल्पना जान पड़ती। ऐना भी सभी तरह उसे अधिक से अधिक संतोष देने का यत्न करती। ऐना यह सब कुछ पत्नी की दीनता से नहीं बल्कि अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से, परस्पर के प्यार को पूर्ण करने और सतोष पाने के लिए करती। उन का यह प्रेम निस्सीम जान पड़ता। ऐसा जान पड़ता एक ही हृदय अलग-अलग शरीरों में काम कर रहा था। एक के होठों पर आई मुस्कान दूसरे के मन को गदगद कर देती। दोपना मिट कर दोनों बिलकुल एक जान हो गये थे।

अरतैक का चाचा लड़के और बहू का यह व्यवहार देख विस्मित था—आजकल के लड़के लड़कियों के ढग निराले है। इन बेवकूफियों मे क्या रक्खा है ? आखिर औरत क्या है ? वह सोचता—अपनी बीबी के लिए पागल और परेशान होने का क्या मतलब ? नए घडे का पानी तो ठंडा मालूम होता ही है। चाहे इसे मुहब्बत कह लो या कुछ और ! ··· ·· देर तक प्यासा रहने के बाद जो भी पानी मिल जाय उस का स्वाद और गंध अच्छा ही होता है।"

अरतैक इस घरेलू जिन्दगी मे ऐसे बैठता चला गला गया कि उसे दूसरी तरह का जीवन केवल मूर्खता और अहंकार ही जान पड़ने लगा। वह सोचने लगा - बाप दादा से चला आया तरीका— देहात मे रह कर खेती करना ही सब से बड़ा संतोष है। वह सोचता—अब कौन अलनजर आकर उसे लूट ले जायगा। वह यह भी भूल गया कि अलनजर बेचारा तो मर ही चुका था और शायद अपने साथ ही वह अपनी निर्दयता, धूर्तता, क्रूरता और शोषण भी ले गया था। बात कही जाती है कि मकान गिर भी जाता है तो उस की नींवे रह जाती है वैसे ही अरतैक के मन में अलनज़र की छाया अभी बनी ही थी। गाँव में यह अफवाह फैल गई थी कि अरतैक ने ही अलनज़र को मार डाला है। हालाँ की अलनजर को मार डालने मे अरतैक को कोई आपत्ति नही थी और न वह इस तरह की लोक निन्दा की ही चिन्ता करता परन्तु इस नए जीवन की शान्ति का यह प्रभाव था कि अरतैक को इस अफवाह से मन ही मन अच्छा न लगता। वह मन ही मन कहता—"अरे कहते है तो कहने दो ! अलनजर का काम अगर मैंने तमाम नहीं किया तो अभी बाबा खाँ तो बचा ही है !"

अरतैक ने खेत के हल और दूसरे औज़ार ठीक कर डाले। बैलों के जए

सम्भाले ! दीमक लग कर यह सब बरबाद हो रहे थे। उस ने फावड़े और बेलचों को ठीक कर उन पर धार रखी।

इधर पानी का छींटा भी आकाश से रोज ही गिर रहा था। ज़मीन नरम देख किसानों ने खेत सम्भालने शुरू किए। अरतैक ने भी शहर के कपड़े बदल खेती के काम लायक कपड़े पहने। ईद के अगले रोज़ वह भी अपने चाचा के साथ हल लेकर जुताई करने खेतों में पहुँच गया। नमी भरी हवा उन के पसीने तर चेहरों को सहला जाती। नम धरती बड़ी उत्सुकता से हल के फाले के इशारे से उलटती जा रही थी और उस की महक जोतने वालों का उत्साह बढ़ा रही थी।

नये जुते हुये खेतों पर से एक चिड़िया (लार्क) चिल्लाती हुई निकल जाती—टू······टी·······टा ! टू······टी······टा। अरतैक को जान पड़ता चिड़िया कह रही है—"जो जोतेगा, खाएगा ! जो बोएगा, खाएगा।"

अरतैक को विश्वास था—यही नये युग का संदेश है !

१६

जिस रात लाल सेना ने काफ़िलासराय पर छापा मार कर अज़ीज़ के सिपाहियों के हथियार छीन लिये, अज़ीज़ शहर में न था। वह शहर से कुछ दूर एक गांव में टिका हुआ था। सराय से भागे सिपाहियों ने जाकर उसे दुर्घटना और अलनजर बे की मौत का समाचार दिया। दुख और चिन्ता का कारण था कि इस छापे में लाल सिपाहियों ने अज़ीज़ की दो सौ अठारह राइफ़लें और बारह हज़ार कारतूस हथिया लिये। इस भयंकर चिन्ता के समय वह बे की जान को क्या रोता ?

अज़ीज़ के सिपाहियों ने खोये हुये हथियार फिर से मिल सकने की आशा भी दिलाई। उन्होंने बताया कि लाल सेना के कमाण्डर कुली खां को हथियार पा कर लाल सेना की शक्ति बढ़ाने की उतनी चिन्ता नही जितनी कि यह छीने हुये हथियार बेचकर रुपया बनाने की है। इन सिपाहियों ने भेद पा लिया था कि कुली खां ने अजीज़ से छीने हुये हथियार तुरन्त ही एक धूर्त यहूदी चारी चमन को देकर तौशेज भेज दिया है। चारी चमन यह हथियार या तो जुनैद खां के हाथ या खुरासान के सरदारों के हाथ बेचेगा। खुरासान के सरदार जुनैद खां के विरुद्ध बग़ावत करने के लिये हथियार जुटा रहे हैं। चारी चमन अभी दूर नहीं गया होगा। अगर तेज़ सांडनियों पर उस का पीछा किया जाय तो हथियार लौटाये जा सकते हैं।

अज़ीज़ ने सोच विचार में समय बरबाद न कर छः तेज़ सांडनियों पर पलान कसवाये और अपने भरोसे के छः सिपाहियों को ले, चारी चमन के पीछे सरपट चाल से रेगिस्तान में निकल पड़ा। तेज़ सांडनियां रेत के टीलों को फांदती चली जा रही थीं और सरपट कड़ी धरती पाकर वे हवा के आगे

ऐसे उड़ने लगतीं कि हवा उन का पीछा कर रही थी। उसी राह पर चलने वाले दूसरे काफ़िले विस्मित थे कि यह लोग किस चाल से जा रहे हैं और कहां जाकर रुकेंगे। लोगों ने यही समझा कि यह डाकुओं का दल है और पीछा करने वालो से जान बचाने के लिये भाग रहा।

तेजेन की ओर जाते हुये भी कई काफ़िले उन्हें मिले। रेगिस्तान की लम्बी मंजिलों में भी व्यापारी काफ़िलों के ऊँट अपनी लहराती गर्दनें आकाश की ओर उठाये, दांये-बाये देखते हुये, धीमी मस्तानी चाल से चला करते हैं परन्तु इन काफ़िलों के ऊंटों के कोहान छिलकर खून बहते रहने से लकीरे जमी हुई थी। कुछ ऊंट बोझ उठाने लायक ही न रहे थे और खाली ही जैसे तैसे चल रहे थे। कुछ गधों पर बोझ लाद दिया गया था और वे ऊटों के लायक बोझ से टांगे फैलाये, काले-काले पसीने से लथपथ दम तोड़ते चल रहे थे। यह काफ़िला तेजेन में भूखे मरते अपने लोगो के लिये अनाज ढोकर ला रहे थे। इनके हृदय धड़क रहे थे कि अनाज घर पहुंचाने से पहले ही कही उन के परिवार भूख से दम न तोड़ बैठे।

राह चलते काफ़िलों को अज़ीज़ ध्यान से परखता जा रहा था और उन से आगे गये चारी चमन के विषय मे पूंछ लेता कि वह कितनी दूर पहुंचा होगा। पहले तो काफ़िले वाले कुछ समझ न पाते परन्तु काले ठिगने, चंचल से आदमी का हुलिया सुनकर बताते कि उसे तो हमने तीन दिन पहले देखा था, वह तो बहुत दूर निकल गया होगा!

अज़ीज़ अपनी सांडनियों को और तेज़ कर देता। वह बिना रुके पड़ाव पर पड़ाव पीछे छोड़ता जा रहा था। उस ने सांडनियों के पलान से पांव नीचे न रखा। काराकुम के रेगिस्तान में से पन्द्रह दिन की इस राह के दोनों ओर युगों से इस राह पर मरते चले आये ऊंटो के पंजर धूप से सफ़ेद होकर चमकते रहते हैं। कहीं झाड़ियों के आस-पास भटकते ऊंट भी दिखाई दे जाते जिन्हें उन के मालिक कभी साथ चलने मे असमर्थ जानकर मर जाने के लिये राह पर छोड़ गये थे परन्तु यह जानवर मरे नहीं बल्कि विश्राम पाकर चलने फिरने लायक हो गये। कहीं भेड़ों के गोल दिखाई दे जाते। रात के समय गड़रियों की बंसी की तानें भी सूने रेगिस्तान में गूंज उठतीं। १६१७ के सूखे ने इस दृश्य को और भी भयंकर बना दिया था। इस मंजिल पर जहां-तहां बने कुयें और सोते सूख कर पड़ोस में बसी छोटी मोटी बस्तियाँ भी उजड़ गई थीं। कहीं ही कोई बच रहा खेमा दिखाई दे जाता। झाड़ियों में पत्ते तो उग

ही न पाये थे। भूखे ऊंट झाड़ियों की टहनियाँ ही चबा गये थे। इस साल मरे जानवरों की लाशें पिछले दस बरस के पजरों से कहीं अधिक थी। भेडियों और लोमड़ियो की आवाजें अब पहले से कहीं अधिक सबल हो गई थी और यह जानवर भी खूब मुटा रहे थे। इन्हें अब शिकार की तलाश में भटकना न पड़ता था। जगह-जगह काफ़िलो से गिर पड़े ऊंटो की लाशें इन के खाये खतम न हो पाती! यह जानवर रात मे डेरो के पास निधड़क आ घिरते? इन के मन से इन्सानो का डर जाता रहा था। आदमियों को देख वे विस्मय से ऐसे कनौतियाँ खड़ी कर लेते मानों सोच रहे हो कि क्या अभी भी ज़िन्दा इन्सान और जानवर दुनिया मे बाकी है?

ओर्तकिक पहुंच कर अज़ीज ने काफ़िलो के डेरे मे फिर चारी चमन की बाबत पूछा। उसे उत्तर मिला कि काफिले को उन लोगों ने दो दिन पहले देखा था। वे लोग भी बहुत तेज़ी मे थे। अब तक तो वे लोग काराकुम का रेगिस्तान पार कर चुके होंगे।

अज़ीज़ और तेज़ी से चल पड़ा। अज़ीज़ को भरोसा था कि खुरासान पहुंच कर वह चारी चमन को पकड़ तो लेगा परन्तु भय यह था कि अज़ीज़ के पहुंचने से पहले ही चारी चमन हथियारों को बेच न डाले। चारी चमन भाव-तोल तो क्या करेगा? वह तो मिट्टी के मोल ही सब कुछ फेंक कर पैसा बटोरने की करेगा! अज़ीज ने सांडनियों को निर्दयता से और हांका! पन्द्रह दिन की राह वे लोग तीन ही दिन में पूरी किये डाल रहे थे।

'तख्त' पहुच कर उस ने फिर एक काफ़िले से चारी चमन के विषय मे पूछा। इन लोगों ने बताया चारी चमन उन्हे कल ही मिला था। बहुत जल्दी में था और हथियार बेच कर साठ ऊंट और साठ ऊंट के बोझ का चावल खरीद कर तेजेन लौटने की बात कर रहा था। इन लोगों से भी कह गया था, जिसे पुलाव खाना हो, थाली लकर तेजेन पहुच जाये।

अज़ीज ने पूछा—"ख्याल है, वह नौराज कब तक पहुच जायगा।" अज़ीज़ पछता रहा था, "अगर वह कुछ और पहले चल सका होता!"

अगले दिन दोपहर के बाद अज़ीज का दल काराकुम की सीमा पर पहुंच गया। सपाट रेत के मैदान के आगे तख्त के बाग दिखाई देने लगे थे। दिखाई दे जाने पर भी तख्त अभी दूर था। तेजेन से पन्द्रह दिन की मंजिल तीन दिन में पूरी करने से जितनी कठिनाई उन्हे हुई उस से अधिक दूभर हो गया रेगिस्तान की सीमा से तख्त तक पहुचना।

अज़ीज़ जब तौशेज और खुरासान के खान जुनैद खाँ के आँगन में पहुंचा तो सूर्यास्त हो चुका था। जुनैद के आदमियों ने अज़ीज के लिये ठहरने की जगह का इन्तज़ाम कर दिया परन्तु अज़ीज़ ने अपने आने की खबर जुनैद खाँ को तुरन्त दी जाने का आग्रह किया।

खबर पाकर जुनैद खाँ आया। जुनैद का शरीर भारी भरकम परन्तु गठीला था। उस के लाल चेहरे पर सफेद गोल दाढी खूब फब रही थी। आँखे उस की बाज़ की तरह पैनी थी। जुनैद ने अज़ीज़ को आलिंगन मे ले सलाम किया। कुशल मंगल पूछा और अज़ीज उस का हाथ अपने हाथ में थामे बोला—"मेरे भाई शुक्रिया है। तुम ने अपने बड़े भाई का इतना ख्याल किया और यहाँ आने की तकलीफ़ की। और तुम्हें अचानक आ पहुंचा देख कर तो मुझे और भी खुशी हुई

जुनैद अज़ीज को अपने खास मेहमानखाने मे लिवा ले गया। अजीज़ आँगन मे आते-जाते घुड़सवारों की संख्या से हैरान था। घोड़े भी बढिया और सजे धजे थे। भूरी दाढी वाले सभी सिपाही खान्दानी सर्दारों जैसे जंच रहे थे। कुछ घोड़ो के पीछे, हाथ बंधे, गलों मे फंदे पडे आदमी घसिटते चले आ रहे थे। अज़ीज़ और उस के साथ के लोगों के ऊँटों को पहले आँगन में खडे नौकरों ने थाम लिया। यहाँ बीसियों घोडे, ज़ीनसाज से लैस खूटों से बधे थे। दूसरे आँगन में माल-असबाब की गाँठों और बोरों के गंज लगे हुये थे। जुनैद का मकान तीसरे आँगन मे था। मकान बाहर से मामूली सा दिखाई देता था। परन्तु भीतर फर्श से छत तक सजावट से पटा हुआ था। सभी ओर भड़कीले रंगों मे बने फलों-फूलों से सजावट की हुई थी। एक कोने में आग की लपटे उगलते समावार और प्यालों में चाय उडेलती चायदानी का चित्र बना हुआ था। कालीनों से मढे फर्श पर जगह-जगह मखमली गाओ तकिये लगे हुए थे। रेशमी गद्दियों और रजाइयों के ढेर बने थे। एक कोने में आदमकद आइना लगा हुआ था।

एक नौकर हुक्का लेकर हाज़िर हुआ। चिलम में तौशेज़ का सफेद तम्बाकू जमा हुआ था। तम्बाकू पर दहकता हुआ अंगारा रख खादिम ने हुक्का मेहमान के सामने पेश किया। अजीज ने एक कश खींचा तम्बाकू की महक चारों ओर फैल गई परन्तु उस के साथ ही अज़ीज़ का सिर भी चकरा गया।

एक मिनिट भर सिर साफ होने के लिये प्रतीक्षा कर अज़ीज बोला—"कुर्बान मुहम्मद खाँ, भाई मुझे मुआफ करना। मैं आपको एक तकलीफ देने के लिए हाज़िर हुआ हूँ........।"

तैशेज़ के खान का नाम कुर्बान मुहम्मद ख़ाँ था। जुनैद उस के कबीले का नाम था। इतने बड़े ख़ान को नाम लेकर पुकारना और फिर घरबार के बिना पूछे ही, स्वयं मतलब की बात शुरू कर देना तुर्कमानी रिवाज़ से उचित बात नही थी। जुनैद ख़ाँ विस्मय से अपने मेहमान के मुख की ओर देखता रह गया और बोला—"अज़ीज़ ख़ाँ, कैसे अचानक तुम आ पहुचे, और बात भी कुछ अजीब ढग से कर रहे हो, खैरियत तो है ?"

"मालिक खान ! इस समय मैं खान की स्थिति में नही हूं बल्कि अपना सर्वस्व लेकर भागते डाकुओं के पीछे तुम्हारी सहायता मांगने आया हूं। यह डाकू आज सुबह या दोपहर आप के इलाके में आये है। मैं सब से पहले इन डाकुओं को खोजने की प्रार्थना करना चाहता हू।"

"तुम्हारा क्या नुकसान हुआ ? निजी नुकसान या तुम्हारे इलाके का ?"

"मेरा निजी नुकसान भी और मेरे इलाके का भी !"

"खैर, अगर वह डाकू मेरे इलाके की सीमा में है तो कल सुवह तुम्हारे बिस्तर से उठते ही तुम्हारा माल तुम्हारी नजरों के सामने मिलेगा।"

"हजार शुक्र है मालिक !"—अज़ीज़ ने चारी चमन की हुलिया और अपनी बन्दूको की संख्या जुनैद को बता दी। जुनैद ने तुरन्त अपने आदमियों को हुक्म दिया कि सभी गाँवों मे पड़ताल की जाय और चारी चमन, और उस के साथियों और इन लोगों को शरण देने वाले लोगों की मुश्के बाँध कर फौरन पेश किया जाय।

जुनैद ने मन ही मन सोचा, क्या अज़ीज़ ख़ाँ इतनी सी बात के लिये अकेला उस के पास दौड़ा आया है। ज़रूर मुसीबत मे फंसा है। अज़ीज़ को पहले विश्राम करने का अवसर देने के तकल्लुफ की परवाह न कर उस ने मेहमान को सम्बोधन किया—"अजीज़ ख़ाँ, हम तुम दूर-दूर रहते है तो क्या मन तो हमारा मिला हुआ है। जब कभी कोई यात्री उस ओर से आता है, मै सदा तुम्हारा कुशल क्षेम पूछ लेता हू। तुम्हारे बढ़ते इकबाल की बात सुन मुझे सदा बहुत प्रसन्नता होती है। आज क्या बात है ? क्या बहुत थके हुए हो ? तुम सुस्त और मुर्झाये से जान पड़ते हो ? मै यह नही पूछ रहा कि तुम्हारी यात्रा का प्रयोजन क्या है ? य ी सोच रहा हू कि मैंने सदा तुम्हारी बढ़ती की बाते सुनी थी परन्तु तुम उदास दिखाई दे रहे हो !"

अज़ीज़ जानता था कि जुनैद बहुत चतुर आदमी है। उस के स्थिति भाँप लेने से अजीज को कुछ आश्चर्य नही हुआ। जुनैद से कुछ छिपाने का यत्न

करना भी मूर्खता थी। अज़ीज चाय पीते-पीते धीमे-धीमे कहने लगा—"मालिक खान, मुझे तुम्हारी नसीहत याद है—अगर दुश्मन के हमले का इरादा जान पाये तो उस पर पहले ही वार करे इसलिये मैंने तेजेन मे सोवियत के मौका पाने से पहले ही अमीरों का गल्ला लेकर गरीब लोगो में बाँट दिया। लेकिन सब से बड़े मामले मे ही मै इस नियम से चूक गया और इसीलिये मार भी खा गया—अजीज ने तेजेन मे लाल फौज के छापे और उन के हथियार खो बैठने की घटना सुना दी।

अज़ीज की बात खतम होते ही जुनैद पूछ बैठा—"अज़ीज खाँ, तुम नहीं जानते मै खीवा मे क्यों नही रहता। वहाँ इसफन्दियार खाँ का आलीशान महल मेरे पास है? क्यों मैंने अपना घर यहाँ तख्त जैसी मामूली जगह में, तौशेज के वीरान इलाके में बनाया है?" अजीज कुछ न समझ सका, जुनैद कहीं रहे, उस की बला से? वह उस से यह प्रश्न क्यो पूछ रहा है?—"मालिक खान, मै कुछ जवाब नहीं दे सकता। शायद यह बात है कि आप जुनैद के खान है!"

जुनैद मुस्करा दिया और बोला—"ठीक है। तुम नही समझ सकते! सुनो, अगर मैं सीधा जाकर इसफन्दियार खाँ के महल में रहू तो लोग मुझे खान के बजाय शाह समझने लगेगे लेकिन असलियत क्या होगी? मै बुलबुल की तरह पिंजरे मे कैद हो जाऊंगा। खीवा किले की चारदिवारी से घिरा है। और राह है केवल नदी के पुल पर से! किले के चारों ओर इसफन्दियार खाँ के पुराने सहायक जमे हुये है वे लोग मुझ से जलते है। अभी तो उन की हिम्मत मेरा विरोध करने की नहीं परन्तु अगर मुझे कमज़ोर पायें तो झट चढ बैठे। यहाँ कोई आस-पास मुझे आँख दिखाने की हिम्मत करने वाला नही। यहाँ मुझे अगर खुरासान या खीवा में बगावत की खबर मिले तो सूरज डूबने से पहले मै उन लोगों का नामोनिशान मिटा दे सकता हूं। तुम वहाँ तेजेन शहर मे घिरे बैठे हो, वहां तुम किस पर हुकूमत करोगे? जार के अफसरों पर? एक तो वह रेलवे लाइन तुम्हारी छाती पर वार साधे बैठी रहती है। तुम उन लोगों के खिलाफ उंगली भी उठा दो तो वे सब ओर से घेर कर तुम्हारा सिर कुचल दे। मान लो मै तुम्हें पाँच हजार घुड़सवार दे दूं। तुम जाकर तेजेन को फूंक डालो! कल क्या होगा? रेल के रास्ते तेजेन में दोनों तरफ से दुशमन की फौजे आ घिरेगी। तुम तुर्कमान सिपाही हो। रेतीले मैदान में जन्मे, पले। शहर के घमासान में तुम्हारा क्या काम? तुम अगर तेजेन के अफसरों को खत्म करना चाहो—तेजेन को लूटना चाहो तो एक रात में यह

काम कर फिर अपनी जगह लौट कर चैन करो। ऐसी हालत में तुम्हारे दुश्मन सदा परेशान रहेंगे और तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे। तुम तेजेन पर कब्जा भी कर लो तो क्या? इस से पूरा तुर्कमानिस्तान थोड़े ही एक हो जायगा! अलबत्ता अगर तुम दुश्मन की पहुच से दूर रहो, उस से मार न खा सकोगे तो लोग तुम पर भरोसा कर सकेंगे। मैं हर तरह से तुम्हारी सहायता के लिये तयार रहूंगा। तुम भरोसा करते हो अश्काबाद के उन धूर्त शहरियों, रियाज़ बेग और ओराज़ सरदार का! यहाँ भी उन के दूत रोज़ ही चले रहते है। मै उन की बातें सुन कर चुप रह जाता हू। मुझे उन पर कोई भरोसा नहीं। यह लोग हम पर सवारी गाँठ कर अपना काम बनाना चाहते हैं। होशियारी यह है कि हम लोग इन पर सवारी गाठे। उन की सुने जाओ! अपनी कहो मत......!"

अब तक अज़ीज अपने आप को बहुत होशियार समझता था और उस का ख्याल था कि वह अपनी सल्तनत जमा लेने के योग्य हो गया है। जुनैद की बाते सुन उस की आँखे खुली और वह समझा कि इस चतुर आदमी के सामने वह केवल तुतलाता बच्चा ही है।

उन दोनों की बातचीत बहुत देर तक चलती रही। इसी बीच में एक खूब लहीम-शहीम आदमी, दोनो कन्धों से कमर तक पेटियाँ कसे भीतर आया। उस की कमर से एक पिस्तौल और कंधे से राइफल लटक रही थी। अज़ीज़ ने समझा यह आदमी ज़रूर किसी बड़े कबीले का सरदार और जुनैद की फौज का कोई कप्तान है। इस आदमी ने भीतर आ दोनों खानों को सलाम किया और जुनैद को सम्बोधन कर बोला—"मालिक, डाकू लोग एक गांव मे ठहरे हुए है और गांव का चौधरी मालिक की हुक्म उदूली कर रहा है। वह डाकुओं को पकड़ने नहीं देता। हमारे सिपाहियों के हथियार उस ने छीन लिये है और उन्हें धमका कर लौटा दिया है—जाओ जुनैद खा से कह दो! हम उस के गुलाम नहीं हैं। अपने गांव के हम खुद मालिक है।—मालिक की इजाज़त हो तो इन लोगों के होश ठीक कर दिये जायँ!"

यह समाचार सुन कर जुनैद के चेहरे पर कुछ परिवर्तन न आया। उस का रोम भी न फरका। केवल उस की चमकीली पैनी आंखें ज़रा और सिकुड़ गईं—"दो सौ सवार ले जाओ"—जुनैद ने धीमे से कहा, "गांव के सब मर्दों के सिर उतार दो! उन के खेमे जला दो और औरतों को कैद करके ले आओ। यह काम करके सुबह की नमाज़ के वक्त मुझे खबर देना।"

"मालिक का हुक्म पूरा किया जायगा।"—कप्तान ने सलाम किया और कमरे से बाहर चला गया। जुनैद फिर बेपरवाही से बातचीत करने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो !

क्या जुल्म है !—अज़ीज़ मन ही मन सोच रहा था। सैकड़ों आदमियों का कत्ल, सैकड़ो खेमे लूट कर फूंक देना, सैकड़ो औरतो को कैद कर लेना, सिर्फ एक मामूली गुस्ताखी के लिए ! लेकिन यही सही तरीका है ? एक गांव के साथ यह बरताव होगा हजारों दूसरे गांव अपने आप सीधे बने रहेंगे। सल्तनत ऐसे ही चल सकती है।

उन दिनों खुरासान के इलाके के सरदार कलामअली और गौस मुहम्मद जुनैद के खिलाफ बगावत करने के लिये सिपाही और हथियार बटोर रहे थे और कहते फिरते थे—जुनैद के माथे पर कौन चाँद सितारे लगे है। जैसा वह वैसे हम ! वह हम लोगों को कुछ समझता ही नही। कभी हमारी बात नही पूछता। जैसे हम लोग ढोर-डगर हो कि हाँक दिया लाठी से ! हमारे ही बूते पर तो सल्तनत चला रहा है। हम खुद ही क्यो न अपने सुल्तान बने ?"

जुनैद का वह जालिम हुक्म इन्ही लोगो को ठीक करने के लिये था। इस के बाद जुनैद अज़ीज़ से और आन्तरिकता से बातचीत करने लगा। अब्दुल करीम खां का चर्चा चला। अज़ीज़ ने पूछा—"मालिक खान, आपकी राय मे अब्दुल करीम खाँ असल मे कौन है ?"

जुनैद ने बताया कि वह उस के यहाँ भी आया था और अपने आप को अफगानिस्तान के अमीर का ही दूत बताता था परन्तु बातचीत मे उस की चतुरता और उस की राजनैतिक जानकारी से जुनैद को सन्देह था कि वह आदमी अफगानिस्तान से बहुत बड़ी किसी सल्तनत का आदमी है और उस का मतलब भी उस की बातो से कुछ और अधिक बड़ा और व्यापक था।

"मेरा ख्याल है उस ने अपना नाम बदला हुआ है और वह मुसलमान नही है। अगर कल वह ब्रिटिश अफसर की वर्दी पहन कर यहाँ आ खड़ा हो तो मुझे कोई आश्चर्य न होगा। अब्दुल करीम हमारी बला से कोई भी हो ! अपने मतलब की बात यह है कि वह अपने मालिक के हुक्म से मुल्क-मुल्क घूम रहा है। हम लोगो की बीसियो बोलियाँ जानता है ! पूरब के रग-ढंग समझता है। वह हमारे दुश्मन, रूसी बोलशेविकों के खिलाफ सब मुसलमानों को इकट्ठा कर रहा है, यह हमारे लिये अच्छा मौका होगा, अपना कदम जमा लेने का।"

"मालिक खान आप का क्या ख्याल है ? अब्दुल करीम की चाल चल जाय और उस के मालिकों का कदम यहाँ आ जाय तो हम लोगों का फायदा रहेगा ? हमारा क्या बनेगा ?"

"मेरा ख्याल है कि हिन्दुस्तान में अंग्रेज लोगों ने खानों की गद्दी नहीं छीनी ! अंग्रेज चाहता है रियाया को काबू में रखना। वह हमारी मदद करेगा। लेकिन अपना खिराज (राजकर) लेगा। वह अपनी चाल चल रहे हैं, हमें अपनी चलना है। हम अपनी गर्दन उन के हाथ में थोड़े ही दे देंगे।"

दोनों खान बहुत देर तक बैठे आपस मे रियाया को दबा कर अपना आतंक कायम रखने के दाँव-घात की बात करते रहे। दोनों ही जानते थे कि एक के गिरने से दूसरा भी कमज़ोर पड़ जायगा। इसलिये वे परस्पर ईमानदारी से एक दूसरे की सहायता करना चाहते थे। बातचीत करते समय जुनैद रेशम के छोटे-छोटे चिन्दियों जैसे छ: उंगली लम्बे चार उंगली चौड़े रूमालों से खेलता जा रहा था। अज़ीज इन टुकड़ों को ध्यान से देख रहा था। टुकडों पर १०, १०० और ५०० के अंक पड़े हुए थे। अज़ीज निरक्षर था परन्तु ज़ार की सरकार के नोटों पर यह अंक देख देख कर इन्हें पहचान गया था।

"मालिक ख़ान, यह क्या है ?"—आखिर वह पूछ बैठा।

"रूमाल"—जुनैद मुस्करा दिया।

अज़ीज़ ने टुकडों को उठाकर देखा वह खूब मजबूत रेशम से बने हुए थे। "नही मालिक, निरे रूमाल तो यह नही जान पड़ते।"

"तो फिर क्या हैं ?"

"मै समझा नही परन्तु इन पर मोहरे लगी हे। यह तो नोटों जैसे जान पड़ते है।"

"नोट जान पड़ते है ?"

"जान तो पड़ते हैं !"

जुनैद ने अपने यहाँ के देसी रेशमी कपड़े के नोट चला दिए थे। यह नोट मजबूत भी थे और सुन्दर भी। उसे अपने इन नोटों पर अभिमान था। इन नोटों से जुनैद को अभिमान से खेलते देख अज़ीज़ मन ही मन सोच रहा था इसने रेशम के नोट चलाये हैं, बड़ा खुश है। मैं कालीनों के नोट चलाऊँगा।"

मुर्गी का पुलाव आया और फिर तोशेज के सर्दे आये। खा पीकर अज़ीज़ की आंखें झपकने लगीं। वह तीन दिन से बिलकुल सोया न था। वह हुक्के के हल्के-हल्के कश खींचता हुआ जम्हाइयाँ लेने लगा। ज्यों ही जुनैद सलाम

कर जाने के लिए उठा अज़ीज नरम गद्दे पर पसर गया। एक बार उसे चारी चमन और अपनी खोई हुई राइफलों की याद आई और वह खुर्राटे भरने लगा।

चारी चमन दोपहर के समय ओकूज़ गांव मे पहुँच गया था। वहां उसने अपने ऊटों का बोझ उतार दिया। ओकूज़ तुर्कमानों में बहुत पुराना और मशहूर कबीला था। साँझ होने पर गाँव के ओकूज़ और ममूद लोग चारी चमन के चारों ओर घिर आये और राइफलों को जाँच कर उनकी कीमते पूछने लगे।

चारी चमन ने उत्तर दिया "अरे भाई, मैं भी तो ममूद हू। मै यहाँ सौदागरी करके मुनाफा कमाने थोड़े ही आया हू अपने यहाँ के बुजुर्गो का हुक्म है कि ज़ार की गद्दी गिरने का फायदा हो! अपने लोगों के हाथ मे हथियार आये। कीमत का क्या सवाल है? मुझे तो लागत भर दे दो!"

चारी चमन जिस घर मे ठहरा था आते ही वहाँ उस ने मालिक को एक राइफल भेट कर, राइफल का दाम जान लिया। घर का मालिक भी उस की सहायता के लिए तैयार हो गया। राइफलों का सौदा खूब सरगर्मी से हो रहा था। उसी समय सवारों के उस ओर आने की टापे सुनाई दी। ओकूज़ और ममूद लोग कुछ समझ न सके परन्तु चारी चमन आशंका से कांपने लगा। उस ने दूसरे लोगो से पूछा—"यह कौन लोग आ रहे हैं भाइयो?"

घर का मालिक अपने मेहमान की घबराहट भांप गया। वह खुद भी घबराया कि यह असमय कौन लोग इस तरह सरपट घोड़े दौड़ाये चले आ रहे है? परन्तु अपना भय छिपाकर उसने चारी चमन को ढाढस बंधाया —

"तुम मेरे मेहमान हो, तुम्हे क्या फिक्र? जुनैद खां का इकबाल कायम रहे। यहा तुम्हे कोई आंख उठा कर देख भी नही सकता। जब खान को मालूम होगा कि तुम इतनी राइफलें और कारतूस लेकर आये हो, वह तुम्हें दस्तरखान पर बैठायेगा और तोहफा देकर विदाई देगा।"

इतने में घुड़सवारों का दल आ पहुँचा। इन लोगों को घेर कर दल के कप्तान ने पूछा—"चारी चमन कौन है?"

घर के मालिक की बात से चारी चमन ने सोचा—"यह जुनैद के आदमी हैं। खबर पाकर मुझे लिवा ले जाने के लिये आये है। वह आगे बढ कर बोला —"मेरा नाम है चारी चमन!"

सवारों ने कुछ जवाब न दे चारी चमन की मुश्कें जकड़ना शुरू कर दिया। सब लोग हैरान थे। घर का मालिक घबरा कर बोला—"अरे ममूदो, ओकूज़ो! खड़े क्या देख रहे! मेरा दम रहते मेरे मेहमान को कौन छू सकता है?"

उस की बात पूरी न हो पाई थी कि सवारों ने उसे भी पकड़ उस की भी मुश्कें बांध दीं और सवारों के सरदार ने दूसरे लोगों को चेतावनी दी—"खबरदार, अगर कोई अपनी जगह से बाल भर भी हिला तो मैं पूरे गांव को आग लगा दूंगा।"

चांद चढ़ आया था। उसी प्रकाश में सवारों ने सब राइफलें और कारतूस ऊंटों पर लाद लिये। मालिक को भेंट में दी गई राइफल भी ले ली गईं। मुश्कें बंधे चारी चमन और घर के मालिक को भी साथ ले लिया गया। इस के बाद सवार लोग गांव के लोगों को कत्ल करने और गांव को लूटने के काम में लग गये।

सुबह की नमाज़ के समय जुनैद ने अपने हाथ पसार कर खुदा का शुक्र किया कि तेरे करम से मेरा हुक्म पूरा हुआ। अज़ीज़ ने भी अपना माल मिल जाने के संतोष मे भक्ति और श्रद्धा से अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर खुदा की मेहरबानी और इंसाफ के लिये शुक्रिया किया।

चारी चमन अज़ीज़ के सामने खड़ा कांप रहा था जैसे चूहा विवशता में बिल्ली के सामने खड़ा हो।

"तुम कितनी राइफ़लें लाये थे ?"

"मालिक, दो सौ अठारह"

"कारतूस कितने थे ?"

"बा........बारह हज़ार !"

"तुम्हें राइफलें और कारतूस किस ने दिये थे ?"

"कुलीखां ने !"

"तुमने कितनी बेची हैं अभी तक ?"

"एक भी नहीं !"

अपना माल वापिस मिल जाने से अज़ीज़ खां बहुत संतुष्ट था। उस ने जुनैद से सिफारिश की कि चारी चमन के सिवा दूसरे लोगों को रिहाकर दिया जाये।

अज़ीज़ जुनैद खां के साथ आंगन में आया तो वहां का दृश्य देखकर सिहिर उठा। सैकड़ों बच्चे और स्त्रियां नंगे उघाड़े बैठे रो रहे थे। इस भीड़ में एक भी मर्द न था। दस बरस से अधिक उम्र का कोई लड़का भी नहीं। इससे भी भयानक चीज़ थी पेड़ों पर लटके हुये गांव के बड़े बूढ़ों के सिर। इन सिरों की दाढ़ियां हवा में लहरा रही थीं और यह पथराई हुई आंखों से सामने

के दृश्य को देख रहे थे । हवा के झोंकों से यह सिर डोल जाते तो जान पडता कि अपने ऊपर हुये अत्याचार के लिये जुनैद खां के राज को कोस रहे हैं ।

अज़ीज़ कांप उठा परन्तु साथ ही अपने मन को उस ने समझाया —'यही मेरी भूल थी । मुझे कुली खां और दूसरे लोगों के परिवार का ऐसा ही प्रबंध करना चाहिये था ।"

अज़ीज खां चार पांच दिन जुनैद का मेहमान रहा। उस की मार्फत उस ने कुछ राइफलें बेच डालीं और फिर तेजेन की ओर लौट चला । तेजेन से दस मील उत्तर पच्छिम की ओर हट कर 'अगलान में' उस ने अपना डेरा जमाया और सिपाही जुटाने लगा ।

सोवियत से भयभीत जागीरदार लोग आल्ती सोपी, अन्ना कुर्बान, यारमुश काजी और करीमुल्ला वगैरा फिर उस के आसपास आ घिरे। ईशान और अखून लोग उस के यहां आने जाने लगे । अलनजर बे की मृत्यु के बाद मुहम्मदवली निस्सहाय हो गया था वह भी अज़ीज़ के यहां आ गया ।

अज़ीज़ अब अधिक दुस्साहस से काम ले रहा था । उस ने अपने सिपाहियों को घोड़े इकट्ठे करने का हुक्म दिया। "जहां भी अच्छा जानवर देखो पकड़ लो या ज़ब्त करलो !"– उस का हुक्म था। गरीब-अमीर का भेदभाव न रख वह जो आवश्यक समझता, सब से छीन लेता। अगलान की उस की छावनी में घोडो की संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही थी ।

अगलान एक छोटी सी पहाड़ी पर बसा था । नीचे दूर-दूर तक खेत चले गये थे । दो बड़े मकानों के समीप दो खेमे लगाकर अज़ीज़ ने अपंने लिये जगह बनाली थी यहां उस का बड़ा भाई भी साथ रहता था। तीसरा खेमा उस ने अपने पिता, चपैक सरदार के लिये लगवा दिया। इन मकानों और खेमों के चारों ओर उस के सिपाहियों के खेमे लगे थे जिनके सामने सैकड़ों रासी घोड़े हिनहिना कर धरती खोदते रहते । उस ने जनैद खां की सफलता और आतंक के उदाहरण से अपना मार्ग निश्चय किया। लूट-मार और खास कर ज़ार के पुराने अफ़-सरों को लूटना जिन्होने किसी समय उस का विरोध किया था, या जिन से किसी समय विरोध की आशका की जा सकती थी। खून और डकैती उस के दैनिक काम हो गये। आस-पास की जनता उस के नाम से थर्राने लगी ।

२०

तेजेन में अज़ीज़ की प्रभुता मिट चुकी थी। सब शक्ति सोवियत के हाथ में आ गई। अज़ीज़ का तन्दूर (रोटियों का सब से बड़ा कारखाना) और कई दूसरे कारखाने और खत्तियां जिन्हें अज़ीज़ ने हथिया लिया था, सोवियत के हाथ में आ गये। सोवियत ने दूसरे कारखाने और किराये के सब मकानों को भी अपने कब्ज़े मे ले लिया। आस-पास के गाँवों से आ-आकर किसान तेजेन मे घिरने लगे। पड़ोस के दो तीन गावों मे सोवियतों (पंचायतों) के चुनाव भी हो गये। ऐसे अवसरों पर कुलीखां खूब प्रचार करता कि सोवियत को सब सफलताओं का सेहरा उसी के सिर है। इस तरह वह अपने कदम मज़बूत करता जा रहा था।

चर्नीशोव यह सब देखकर भी चुप था। कुलीखां के मामले को लेकर झगड़ा करना वह अभी उचित न समझता था। वह प्रतीक्षा मे था कि कुलीखां को रंगे हाथों पकड़ पाये परन्तु अशीर का खयाल दूसरा था। घाव से बहुत खून बह जाने के कारण वह निर्बल तो बहुत हो गया था परन्तु कोई अंग-भंग न हुआ था। शीघ्र ही स्वस्थ होकर सेना मे लौट आया। यहां आकर उसे कुलीखां की बहुत सी करतूतों का पता चला। चर्नीशोव के अनेक झंझटों मे फंसा रहने के कारण यह बातें उस तक पहुंच ही न पाती थी। मावेद ने अशीर को बताया कि अज़ीज़ की फौज से छीने गये सब हथियार कुलीखां ने चारी चमन नाम के एक आदमी के हाथ तौशेज़ भेज दिये हैं। मैंने कुलीखाँ से पूछा कि हमारे हथियार कहा भेजे जा रहे है ? तो उस ने झुंझलाकर उत्तर दिया—"और कहां जायेगे ? अश्काबाद भेज रहा हूँ।" लेकिन मैंने अपनी आंखों

देखा कि चारी चमन का काफिला माल स्टेशन पर न उतर रेल की लाइन पार कर तेज़ी से तैशेज की ओर बढ़ गया। कुलीखां मनमानी कर रहा है, कोई बोले तो कैसे ? कुलीखां कुचल कर रख देगा !"

अशीर ने चुपचाप तौशेज की राह के गांवों में पूछताछ की और सेना के खलासियों और दूसरे लोगों से भी भेद ले लिया। मामला चर्नीशोव के सामने पेश करने से पहले वह कुलीखां से मिला और अजीज की सेना से छीने हथियारों के विषय में पूछा।

"तुम्हे इन बातों से क्या मतलब ?" कुलीखां ने उत्तर में भौं चढ़ाकर अशीर को डांट दिया।

"मुझे इस बात से बहुत मतलब है।"—अशीर ने उस की ओर घूर कर जवाब दिया। कुलीखां को आशा न थी कि कोई व्यक्ति उस से ऐसा प्रश्न पूछने का साहस कर सकता है। अशीर को वह समझता ही क्या था ! बल्कि वह उस से चिढ़ता भी था। परन्तु अशीर का व्यवहार देख उस ने अपना क्रोध वश कर मुस्कराकर बात बनाई—"अश्काबाद से जो सिपाही छापे में सहायता देने के लिये आये थे, वे लोग उन हथियारों को साथ ही ले गये।"

"ठीक बात कहो ! मुझे उड़ाओ नहीं।" अशीर बोला।

अपनी स्थिति के विचार से अशीर की बात सह जाना कुलीखां को अपना असह्य अपमान जान पड़ा।—"ज़बान सम्भाल कर बोलो", उस ने अशीर को धमकाया, "कम्पनी के कमाण्डर से इस तरह बात की जाती है ? तुम्हें मुझ से जवाब तलब करने का क्या हक़ है ?"

"तुम यह बताओ चारी चमन को किस ने भेजा है ?"

"किस ने कहां भेजा है ?"

"भूल गये ?—तौशेज ?"

"मैंने क्यों भेजा है ?"

"राइफलें बेचने के लिये !"

पल भर के लिये कुलीखां चकरा गया और फिर समझकर बोला -"मैंने तो इस बारे में कोई खबर नहीं सुनी !"

"तुमने नहीं सुनी, परन्तु मुझे पूरी खबर मिल गई है।"

"हूं, तो फिर फौज का कमाण्डर तुम्हीं को होना चाहिये।"

"वह बात बाद में देखी जायगी। तुम मुझे पहले हमारी मज़दूर किसान सरकार के हथियारों का हिसाब दो।"

"मैंने तुम से कहा है कि अपनी स्थिति और अधिकार के अनुसार ही बात करो !"

कुलीखां फिर झुंझलाया।

"तुम मुझे हथियारों का हिसाब दो।"

"तुम्हें हिसाब की ज़रूरत क्या है ? क्या अरतैक की दोस्ती में अज़ीज़ को भेद देना चाहते हो ? मैं जानता हू तुम अज़ीज़ की तरफ से हमारे यहां जासूसी कर रहे हो।"

"पहले तुम तो हिसाब दो ! मेरी जासूसी की पड़ताल फिर करना।"

कुलीखां आगबगोला हो गया और चिल्ला उठा—"कोई है ?······ इस आदमी को गिरफ्तार कर लो !"

अशीर ने अपनी राइफल सम्भाली। उसी समय अतादयाली भीतर आ गया और मजाक में बोला—"अरे भाई क्या हो रहा है। हम तो समझे थे अब तेजेन में शान्ति हो गई है यहाँ तो घर में ही जंग हो रहा है। अशीर क्या कर रहे हो ? अभी बिस्तर से उठे हो, फिर बीमार पड़ना चाहते हो ! चेहरे पर जरा खून तो आ लेने दो ! कुलीखाँ को तभी समझेंगे। चलो आओ ? एक प्याली चाय पिलायें तुम्हें। तुम तो गुस्से में कांप रहे हो !"

अशीर कमज़ोरी के कारण सचमुच गुस्से में काँप रहा था। अतादयाली उसे बाँह से थाम कर ले गया। अतादयाली हंसी मज़ाक की बातें कर रहा था परन्तु अशीर के दिमाग में कुलीखाँ की बेईमानी की ही बातें घुट रही थीं। उस का मन बहलने के बजाय क्रोध बढ़ता जा रहा था। वह अपने आपको रोक न सका और उठ कर चर्नीशोव की खोज में चला।

अशीर कुछ दूर तक बाजार में जा एक गली में घूमा ही था कि उसे सामने से कुलीखां, जेल का अफसर और दो सिपाही आते हुए दिखाई दिये। कुलीखाँ ने आंख से अशीर की ओर इशारा किया और अफसर के इशारे से सिपाहियों ने अशीर के दोनों हाथ पकड़ लिये। अशीर हैरान था। अफसर ने उसे कहा—"तुम गिरफ्तार हो !"

अशीर ने अपने हाथ छुड़ाकर कंधे से लटकी बन्दूक लेनी चाही। उस के हाथों में हथकड़ी डाल दी गई। तुरन्त ही उसे जेल में पहुंचाया गया और एक छोटी अंधेरी कोठरी में मूंद दिया गया। कुलीखाँ ने जेल के अफसर को चेतावनी दी—"इस आदमी की गिरफ्तारी और इस के यहां होने की खबर किसी को न हो।"

चर्नीशीव अपने दफ्तर में बैठा ताशकन्द की सोवियत के नाम पर एक पत्र लिख रहा था। अश्काबाद के अनुभव से वह बहुत हतोत्साह और चिन्तित था। वह जानता था, उस समय भी यदि तिशेको बीच मे न पड़ता तो उसे कुछ भी सहायता न मिलती! अश्काबाद पूरे तुर्कमानिया के इलाके का केन्द्र था और वहाँ की सोवियत मे अधिकांश बेईमान बूर्जुआ लोग भरे हुए थे। वह डर रहा था कि यदि फुन्तीकोव और दोखोव जैसे दगाबाज़ों के हाथ में व्यवस्था की बागडोर रही तो क्रान्ति का परिणाम क्या होगा? चर्नीशोव पत्र में अपनी इन सब आशंकाओ को स्पष्ट कर लिख रहा था कि तुरन्त ही किसी योग्य और विश्वासपात्र व्यक्ति को अश्काबाद भेज कर स्थिति जाननी चाहिए।

जब चर्नीशोव इस ज़रूरी पत्र में उलझा हुआ था, कोई आदमी बार-बार उस के कमरे का बन्द दरवाज़ा खटखटा रहा था। आखिर चर्नीशोव चिढ़ कर उठा और दरवाज़ा खोल दिया। बाहर मावेद को खड़े देख चर्नीशोव का चेहरा खिल उठा। चर्नीशोव कई दिन से मावेद की खोज में था। वह जानता था कि अज़ीज़ के हथियार रखा लेने की घटना का प्रभाव जनता पर क्या पड़ा है। इस बात के लिए साधारण लोगों से मिल जुल कर रहने वाले मावेद से अधिक उपयुक्त आदमी कौन हो सकता था। सोवियत की बदौलत ही मावेद अलनजर बे के पालतू पशु की स्थिति से निकल कर आत्मनिर्भर मनुष्य बन गया था। मावेद और अशीर जैसे तुर्कमानी नौजवान ही इस प्रदेश में सोवियत व्यवस्था के प्रमुख राष्ट्रीय सैनिक थे।

"आओ, भीतर आओ मावेद।"—चर्नीशोव ने उसे बुला लिया। मावेद चुपचाप हतोत्साह सा एक कुर्सी पर बैठ गया। चर्नीशोव ने उस के चेहरे पर चिन्ता और उदासी की झलक देख कर पूछा, "क्यों मावेद क्या बात है? तबीयत तो ठीक है?"

"तबियत क्या ठीक होगी....."

"क्यों बात क्या है?"

"बात क्या होगी, अब हमारा तो कोई साथी रहा नहीं।"

"मै समझा नहीं।"

"तेजेन में हमारे गाँव का एक आदमी था अरतैक वह दुश्मन के साथ चला गया। दूसरा अशीर था, वह भी गया।"

"अशीर कहाँ गया?"

"कहाँ जायगा? जहाँ तुम ने भेज दिया।"

"मैंने भेज दिया; कहाँ ?"

"जेल में और कहां ? तुम ने नहीं तो किस ने भेजा ?"

"क्या कह रहे हो ? अशीर जेल में ?"

"और नहीं तो क्या जेल में तो पड़ा है बेचारा।"

"किस ने कहा तुम से ? कहाँ से खबर मिली ?"

"लोग तो कहते हैं"—मावेद झिझकते हुए बोला, "तुम्हारे ही हुक्म से अशीर जेल भेजा गया है। तुम पूछते हो खबर कहां से मिली ? उसे काल कोठरी में बन्द रखा गया है। जेल वालों को कुलीखां ने हुक्म दिया है कि अशीर साहब की कोई खबर अगर किसी को मिली तो उन की खैर नहीं। खुद जेल के ही सिपाहियों से मैंने सुना है।"

चर्नीशोव सिर लटका कर चुपचाप सोचने लगा—कुली खाँ क्या कर रहा है ? पुराने बदले ले रहा है या जिन आदमियों से उसे भय है उन्हें चुन-चुन कर समाप्त कर रहा है ? मावेद की आखों में आँखें डाल उस ने पूछा—"मावेद मुझे तुम पूरी बात बताओ ! मामला क्या है ? तुम बात छिपा रहे हो ! तुम्हें क्या मुझ पर भरोसा नहीं ? क्या सोवियत के सिपाही आपस में विश्वास नहीं कर सकते।"

"नहीं, और मुझे कुछ मालूम नहीं"—मावेद ने आंखे झुका ली।

चर्नीशोव मावेद का हाथ अपने हाथों में ले बोला—"मावेद, अगर तुम लोग मेरा विश्वास नहीं करोगे, बातें छिपाओगे तो मैं क्या कर सकता हूँ ! यह मेरा नुकसान नहीं सोवियत का नुकसान होगा तुम्हारा अपना नुकसान होगा।

मावेद ने झिझकते-झिझकते दरवाजे की ओर बार-बार देख धीमे स्वर में अजीज के यहां से ली गई राइफलों के चारी चमन के हाथ तौशेज़ भेजे जाने, उस की और अशीर की बात, अशीर और कुलीखां का झगड़ा और अतादयाली के जाकर बीच बचाव करने की कहानी चर्नीशोव को सुना दी। उस ने बताया—"सभी लोग कुलीखां से बहुत डरते हैं। उस के विरुद्ध बात कहने की हिम्मत किसी में नहीं। मुझसे भी वह जला हुआ है। यदि उसे सन्देह हो गया कि मैंने तुम्हें यह बातें बतायीं हैं तो किसी न किसी बहाने वह मुझे भी खत्म कर डालेगा।"

"तुम डरो नहीं"—चर्नीशोव ने मावेद को आश्वासन दिया, "मुझे इस बात का कुछ पता ही न था। अशीर को मैं अभी छुड़वाता हूँ। कुलीखां से मैं खुद ही समझूंगा।"

साहस पाकर मावेद ने उत्तर दिया—"भैया, लड़कर मरने से मैं नहीं डरता। अशीर और तुम साथ हो तो मैं पूरी फौज का मुकाबला कर सकता हूँ। परन्तु कुलीखां तो चुपके से क़त्ल करवा देता है। इस का कोई क्या उपाय करे ?"

चर्नीशोव हाथ की मुट्ठी मेज़ पर मारकर बोला—"तुम डरो मत, यहां इन दग़ाबाजों को लाल सेना से चुन-चुनकर निकालना होगा। तुम लोगों की सहायता से मैं सब कुछ करूंगा। तुम अभी दो लाल सिपाही लेकर जेल जाओ और अफ़सर को मेरा हुक्म देकर अशीर को छुड़ा लाओ।"

उसी दिन साँझ को चर्नीशोव ने सोवियत की एक बैठक ज़रूरी काम के लिए बुलवाई। कमरा तम्बाकू के धुयें के बादलों से भर रहा था। पहले चर्नीशोव ने तेजेन और तुर्कमानिया की राजनैतिक स्थिति पर संक्षिप्त विवरण सुनाया - मध्य एशिया में कहाँ-कहाँ सोवियत को विजय और सफलता मिल रही है और जनता की सोवियत सरकार के सामने क्या-क्या कठिनाइयाँ आ रही हैं, ज़ार के पुराने अफसर, क्रान्तिकारी समाजवादी नाम धरने वाले लोग, मेंशेविक और दूसरे क्रान्ति विरोधी कैसे-कैसे अड़ंगे जनता की सरकार की राह में लगा रहे हैं, और कैसे वे लोग मध्य एशिया और तुर्कमानिया को शेष समाजवादी रूस से पृथक कर देना चाहते हैं। उस ने सीवनारकोम—प्रजातंत्र सोवियत की लेनिन के नाम और ताशकन्द-सोवियत की तार स्तालिन के नाम पढ़कर सुनाई। यह पहली तार थी:—

"तुर्किस्तानी प्रजातन्त्र अकाल से तड़प रहा है। काकेशस और साईबेरिया के मार्ग शत्रु ने रोक लिए हैं। समारा की राह तुरन्त अन्न और सैनिक सहायता भेजी जाय। विलम्ब का परिणाम भयानक होगा।"

दूसरी तार मे भी अकाल, महामारी, बेकारी में सहयता के लिए स्टैलिन से तुरन्त अन्न और एक करोड़ रुबल भेज कर सहायता के लिए अनुरोध किया या था।

चर्नीशोव का अभिप्राय स्थिति बताकर जनता को भयभीत करना नहीं था—"यदि पूँजीपति और ज़ार के पिट्ठू आशा करते हों कि ऐसी कठिनाइयाँ हमारे मार्ग में डाल कर वे हमें पराजित कर देंगे तो यह उन की भूल है"—चर्नीशोव ने समझाया, "यह लोग हमारी क्रान्तिवादी व्यवस्था का सम्बन्ध मास्को और पेत्रोग्राद से काट कर हमें निर्बल बना देना चाहते हैं परन्तु इन्हें सफलता नहीं मिल सकती। हम लोग अकेले नहीं है। समाजवादी

सोवियत रूस हमारे साथ है। हमारी क्रान्ति के नेताओं ने हमे भुला नहीं दिया है। जो तारे मैंने पढ़ कर सुनाई है, लेनिन और स्तालिन के विशेष निर्देशों से, इन तारों में किए गए अनुरोध पूरे किये जा चुके है। हमारे क्रान्तिकारी नेता सम्पूर्ण मज़दूर-किसान समाज के समान हितों और अधिकारो में विश्वास रखते हैं। मध्य एशिया की जनता को वे लोग जार सरकार की तरह अपने आधीन तुच्छ जातियां समझ कर हमारी उपेक्षा नही करते। हम भी जानते हैं कि हमारा राष्ट्रीय अस्तित्व समाजवादी रूस के सहयोग से ही बच सकता है इसलिए तुर्कमानिया की जनता पूँजीवादी और जारशाही के क्रान्ति विरोधी प्रयत्नों का मुकाबिला जी जान से करेगी और उन पर विजय पाकर ही विश्राम लेगी।"

इसके बाद चर्नीशोव ने तेजेन की स्थिति की चर्चा की—"तेजेन और उस के पड़ोस के गांवो के लिए सहायता रूस से भेजी जा चुकी है और शीघ्र ही वह पहुंच भी जायगी परन्तु रूस की सहायता पर ही निर्भर करना मूर्खता होगी। अपनी कठिनाइयो को दूर करने के उपाय हमे स्वयं सोचने होंगे और आवश्यक साधनों को भी जहां तक सम्भव हो स्वयं ही जुटाना होगा।" इसी प्रसग मे उस ने तेजेन की लाल फौज का चर्चा किया, "साथियो, हमारी लाल फौज ने बहुत आड़े समय मे हमारी सहायता की है और भविष्य मे भी हमे इसी का भरोसा है परन्तु हम लोगों ने अपनी लाल फौज की भीतरी व्यवस्था पर काफो ध्यान नही दिया है। हमे अपनी सेना मे दंगा और बेईमानी की गुजाइश नही रहने देनी चाहिए। यह खेद की बात है कि हमारी इस सेना में कुछ ऐसे आदमी भी है जो इस सेना के लिए कलंक है और जो जनता मे हमारे प्रति घृणा पैदा कर हमें निर्बल बना रहे है। लाल सेना के कमाण्डर केलूईखां की बात आप को याद है। उस ने 'मनेचियाख' गाँव मे डकैती की थी। उस पर मुकदमा चला कर हमने सेना से बरखास्त कर दिया है। हमे आशा थी कि केलूई खाँ का उदाहरण देख इस तरह के दूसरे लोग स्वयं सुधर जायंगे परन्तु लोग इस से भी अधिक घृणित कामो में लगे हुए है"—चर्नीशोव पल भर के लिए चुप रह कर फिर बोला। उस का स्वर पहले से ऊँचा और कठोर था, "मैं आप लोगों के सामने सोवियत के एक बड़े मेम्बर, हमारी सेना के कमाण्डर कुलीखाँ से जवाब चाहता हूँ।"

कुलीखाँ सहसा उठ खड़ा हुआ और मूछों पर हाथ फेर कर बोला—"मुझ से तुम क्या जवाब चाहते हो ?"

चर्नीशोव ने कुलीखाँ की ग्रोर घूर कर प्रश्न किया -"तुम जवाब दो कि ग्रशीर सहात कहां है ?"

कुलीखाँ ने भरोसे का सांस लिया। उसे भय था कि चर्नीशोव राइफलों की चोरी की ही बात कहेगा परन्तु केवल ग्रशीर के बारे में प्रश्न सुनकर उसे संतोष हुग्रा कि वह बात इसे मालूम नहीं हुई। कुलीखाँ ने निधड़क उत्तर दिया—"ग्रशीर सहात ग्रजीज़ का गुप्तचर है। वह हमारी सेना में बग़ावत फैला रहा है। मैंने उसे गिरफ्तार करवा दिया है। उस के मामले की जांच की जानी चाहिए।"

"हुं"—चर्नीशोव ने पूछा, "जो ग्रादमी तुम्हारी करतूतों का भण्डा फोड़ करे वह दुश्मन का गुप्तचर है। तुम ग्रब भी ज़ार की केन्द्रीय पुलिस के हथकंडे खेल रहे हो ?"

यह बात सुन कुलीखाँ घबराया परंतु ग्रपना भय छिपा कर बोला—"मैं तुम्हारी बात नहीं समझा। तुम साफ-साफ बात कहो ! कौन है ?"

कुलीखाँ सन्न रह गया। चर्नीशोव ने ग्रपना प्रश्न ग्रौर कड़े स्वर में दोहराया "मैं पूछता हूं, चारी चमन कौन है ?"

"क्या जानूं चारी चमन कौन है ?"—कुछ भयभीत स्वर में कुलीखाँ ने उत्तर दिया, "क्या दुनिया भर के लोगों को जानता हूँ ? क्या उड़ा रहे हो तुम ?"

"मैं उड़ा रहा हूं या तुम उड़ रहे हो ?"—मेज़ पर हाथ पटक चर्नीशोव गरज उठा, "सोवियत तुम से जवाब माँगती है कि ग्रज़ीज़ के यहाँ से ली गई दो सौ ग्रठारह राइफलें ग्रौर बारह हज़ार कारतूस कहाँ है ?"

कुलीखाँ का चेहरा फक हो गया परन्तु उस ने बात बनाकर उत्तर दिया—"चर्नीशोव, तुम ग्रशीर जैसे ग़द्दारों की बातों में ग्राकर मुझ पर कलंक लगा रहे हो ! ग्रगर ग्रज़ीज़ ग्रौर उस की फौज ग्रपने हथियार साथ ले गई तो इस में मेरा क्या दोष ? थोड़े बहुत जो हथियार मिले थे वे ग्रशीर ने चुरा लिये हैं……।"

"सब लोग जानते है कि हमारी सेना ने ग्रज़ीज़ की राइफलें छीन लीं थीं। तुम्हें उन का हिसाब देना होगा ? जुनैद खाँ को तुम ने राइफलें कहाँ से लेकर भेजी हैं ?"

सब लोग विस्मय से कुलीखाँ की ग्रोर देख रहे थे कि वह क्या जवाब देता है। सोवियत में सभी तरह के लोग घुस ग्राये थे। सोवियत की बैठक

अचानक बुलाई जाने से कुलीखां को सन्देह हो गया था और वह अपनी सहायता के लिये अपने साथी खोजा मुराद और दारोगा बाबाखां आदि कई आदमियों को लिवा लाया था। अपने साथियों की ओर देख कुलीखां ने साहस किया और बोला—

"यदि सोवियत चाहती है कि क्रान्ति विरोधी लोगों को हथियारों की चोरी का मौका न मिले तो मुझे हक़ होना चाहिये कि मैं जरूरत के मुताबिक अपने विश्वासी सिपाही भरती कर सकूं ताकि पड़ोस के गाँवो पर कड़ी नज़र रखी जा सके......"

"तुम हमारे सवालों का जवाब दो, बाते न बनाओ।"—चर्नीशोव ने टोका।

"तुम्हारा यह क्या तरीका है ?"—उत्तेजित स्वर में कुलीखां ने उत्तर दिया।

"तुम ज़ार के अफ़सरों और कर्नल बेलनोविच की तरह हम तुर्कमान लोगो पर आतंक बैठाना चाहते हो ?"

"बको मत"—चर्नीशोव क्रोध मे उछल पड़ा, "ज़ार की नीति पर हम चल रहे हैं या तुम ! उल्टे चोर कोतवाल को डांटे !"

"तुम कौन होते हो मुझे चुप कराने वाले ? तुम मेरी ज़बान नही पकड़ सकते !"

सभा मे शोर मच गया। कई लोग एक साथ बोलने लगे। चर्नीशोव हैरान था कि कुलीखां की इन करतूतों के बावजूद लोग उस का समर्थन कर रहे थे। खोजा मुराद उठ कर बोला—

"भाइयो, यह क्या जुल्म हो रहा है ? कुलीखां जैसे भले इज्जतदार आदमी पर तोहमत लगाई जा रही है कि वह हथियारों की चोरी करता है ! अगर शरीफ़ लोगों की इज्ज़त पर ऐसे हाथ डाला जायगा तो हम लोग कैसे जिन्दा रह सकेंगे।"

इन बातों पर कोई एतबार कर सकता है ? आप लोग तो कहेंगें कि रात में सूरज निकला है और हमें वह भी मान लेना पड़ेगा ! कुलीखां पर चोरी लगाना कितना बड़ा जुल्म है। उस ने तो कभी एक कारतूस भी किसी को नही दिया। बेचारा सोवियत की सहायता में अपनी जान गलाये दे रहा है। ऐसे आदमी की वफ़ादारी पर कलंक लगाना कितना बड़ा जुल्म है। बात यह है कि रूसी लोग हर बात में हम तुर्कमान लोगों का अपमान करना चाहते है।"

बाबाखाँ एक ओर खड़ा था। वहीं से हाथ उठा कर बोला—"यह आप लोग क्या जुल्म कर रहे हैं। कुलीखां जैसे ईमानदार और वफ़ादार आदमी की यों बेइज्ज़ती की जा रही है। शहर और गांवों में सोवियत की जो कुछ इज्जत है, कुलीखाँ की बदौलत है। अगर कुलीखाँ सोवियत में न रहा तो सोवियत को कोई पूछेगा भी नहीं। कुलीखाँ सोवियत में न रहे तो दारोगा लोग तो सोवियत की परवाह न कर अपनी खनातें बना बैठें!"

सभा में अपना साथ देने वाले लोग न देख चर्नीशोव झिझका परन्तु उस ने फिर साहस किया और इस सवाल पर वोट लेने का निश्चय किया। उस ने प्रस्ताव रखा:—

"कुलीखाँ ने अपने अधिकार का दुरुपयोग कर सोवियत सेना के हथियारों की चोरी की है। उस ने सोवियत के वफादार सिपाहियों पर अत्याचार किया है और वह क्रांति विरोधी तथा सोवियत विरोधी कामों में भाग ले रहा है इसलिये प्रस्ताव किया जाता है कि कुलीखां को सेनापति के पद से पृथक करके उस के अपराध पर सैनिक न्यायालय में विचार किया जाय।"

चर्नीशोव ने सामने बैठे लोगों की ओर देख उन का मत पूछा—बहुत कम लोगों ने प्रस्ताव के समर्थन में अपने हाथ खडे किये। कुछ आदमियों ने हाथ उठाये ही नहीं। अधिकांश ने उस के प्रस्ताव के विरुद्ध हाथ उठाये।

अब चर्नीशोव समझा कि सोवियत की भीतरी स्थिति वास्तव मे क्या है! बहुत से तुर्कमानी लोग जिन्हें चर्नीशोव सोवियत का विरोधी नहीं समझता था इस समय बाबाखाँ की—रुसियों के तुर्कमान लोगों का अपमान करने की बात से भड़क कर कुलीखाँ के ही पक्ष में राय दे रहे थे।

इस परेशानी में चर्नीशोव को याद आया कि अरतैक ने बार-बार चेतावनी दी थी कि कुलीखाँ कभी विश्वास योग्य नही हो सकता। अरतैक की ही बात ठीक थी। आज अरतैक सोवियत में होता तो ऐसी अवस्था में उस पर भरोसा किया जा सकता था परन्तु वह तो कुलीखां के कारण ही शत्रु के दल में जा मिला और अपने ही जैसे किसानों पर गोली चलाने लगा। अरतैक की ईमानदारी किस काम की जब कि उस में समझदारी न हो। उस रात अज़ीज़ की सेना और लाल सेना से लड़ाई के बाद तो अरतैक को अपनी भूल समझ आ गई होगी परन्तु अब अपनी भूल मान कर सोवियत के पक्ष में उसे संकोच अनुभव हो रहा होगा।........

चर्नीशोव ने अरतैक की ओर से ध्यान हटाकर वर्तमान समस्या को सुलझाने

का यत्न किया। जब लोग कुलीखां के जाल मे फंस उस की दग़ाबाज़ी का समर्थन करने के लिये तैयार है तो वह क्या करे ?

चर्नीशोव ने सोवियत की बैठक समाप्त कर दी और तुरंत तार घर जा कर अश्काबाद से तार का सम्बद्ध कराया। उस ने अश्काबाद के प्रतिनिधि से अनुरोध किया कि तेजेन में सोवियत का चुनाव नये सिरे से कराने और क्रांति के न्यायालय में कुलीखां के अपराध पर विचार करने की आज्ञा दी जाय। उस ने कहा कि इस के बिना तेजेन की स्थिति वश में न आ सकेगी। और यदि अश्काबाद की सोवियत उस के अनुरोध को अस्वीकार करेगी तो वह अपनी प्रार्थना, ताशकन्द मे तुर्कमानी प्रदेश की केन्द्रीय सोवियत के सामने रखेगा। उसे उत्तर मिला कि कुलीखां को तुरन्त अश्काबाद बुला कर मामले की पडताल की जायगी।

अगले दिन सुबह ही कुलीख़ां सोवियत के दफ्तर मे आकर चर्नीशोव से मिला और बोला—"मुझे अश्काबाद मे सैनिक विभाग के व्यवस्थापक (Commissar) ने बुलाया है। मै आज ही वहां जा रहा हूँ। जान पडता है मेरे प्रति तुम्हारे मन मे सन्देह जम गया है। ऐसी अवस्था में मै सोवियत का काम कैसे चला सकूगा। यदि तुम्हारा सन्देह मेरे प्रति दूर नही हो सकता तो तुम मेरी जगह किसी दूसरे व्यक्ति को कमाण्डर नियत कर लो।"

चर्नीशोव को अश्काबाद की प्रान्तीय सोवियत पर बहुत भरोसा नहीं था। उसे खूब याद था कि अज़ीज को सेना के हथियार रखवाने के लिये जब वह सहायता मांगने अश्काबाद गया था तो उस पर क्या बीती थी। जब तक अश्काबाद की सोवियत में फुन्तीकोव और दोखोव जैसे आदमी मौजूद है वहां से किसी प्रकार की सहायता की आशा करना व्यर्थ है। अश्काबाद सोवियत से विशेष आशा न होने पर भी चर्नीशोव ने नियमानुकूल कार्रवाई करना उचित जान ज़ाब्ते के तौर पर वहां फोन कर दिया था। इस के अतिरिक्त उस ने कुलीखां के विरुद्ध अपराधों का पूरा विवरण, अज़ीज के यहां से राइफलें और कारतूस मिलने के प्रमाणों और अशीर और मावेद के दस्तखती बयान अश्काबाद भेज दिये। यह सब कर लेने पर भी उसे कोई भरोसा न था इसलिये वह अपने विरुद्ध निर्णय हो जाने की सम्भावना के लिये तैयार हो गया।

चर्नीशोव की आशंका ठीक ही प्रमाणित हुई। कुछ ही दिन बाद कुलीखां अश्काबाद से निर्दोष साबित हो तेजेन की लाल सेना के कमाण्डर के पद पर

स्थायी रूप से नियत होकर लौट आया। कुलीखां के चेहरे पर विजय और प्रसन्नता की चमक छा रही थी। चर्नीशोव के प्रति उस ने निरादर और धृष्टता न दिखाई। इस का कारण चाहे तो अश्काबाद में अपने सहायकों और समर्थकों का परामर्श रहा हो, चाहे यह कि इतने दिनों में वह चर्नीशोव की दृढ़ता और लगन को खूब भांप चुका था।

२१

ज़ार के पिट्ठुओं और पूंजीपतियों को सहायता देकर विदेशी साम्राज्य-वादी शक्तियों ने कोकन्द मे एक स्वतन्त्र शासन कायम कर दिया था। कोकन्द का यह क्रान्ति विरोधी और नाम को स्वतंत्र शासन समाजवादी सोवियत पर निरंतर आक्रमण कर रहा था। सन् १६१८ के फरवरी मास में सोवियत सेना ने इस स्वतंत्र शासन की सेना को हरा कर पीछे भगा दिया। सोवियत शत्रु हार कर भी चुप न हुये। वे स्थान-स्थान पर सोवियत शासन के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे। १७ जून को इन लोगों ने अश्काबाद में भी विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को मज़दूरों की स्वयं सेवक सेना ने दबा दिया।

११ जुलाई को क्रान्तिकारी समाजवादियों, मेंशेविकों और राष्ट्रीयता का नारा लगाने वाले तुर्कमानी ज़ागीरदारों और पूंजीपतियों ने एक बार सोवियत शासन को तोड़ गिराने के लिये सम्मिलित प्रयत्न किया। ११ जुलाई के दिन इन लोगों ने अश्काबाद और किज़ाइलअखात में अपनी-अपनी सरकार की घोषणा कर दी। इस प्रदेश में सोवियत की ओर से नियत प्रतिनिधि फ्रोलोव को मार डाला गया और मजदूरों की स्वयं सेवक बोल्शेविक सेना को भी क़त्ल कर दिया गया। अवति की सोवियत के मेम्बरों गुबकिन, बाबकिन, बदनिकोव और कास्को को गोली से उड़ा दिया गया। तीन-चार दिन बाद की सोवियत के बोलशेविक मेम्बरों बातमानोव, भिल्तिकोव और लाल सेना के कमाण्डरों को भी बिना किसी प्रकार के अपराध आरोपण या जांच पड़ताल के अनाऊ ग्यारस स्टेशनों के पास गोली मार दी गई। अश्काबाद और उस के आस-पास के सब प्रदेश क्रान्ति विरोधी ज़ारशाही सेनाओं के हाथ जो कि अब ब्रिटिश साम्राज्यशाही सत्ता के हुक्म पर सोवियत शक्ति से लड़ रही थी, के हाथ पड़

गये। ज़ार की सेना के इस सैनिक शासन का प्रधान क्रान्तिकारी-समाजवादी दल के नेता फुन्तिकोव को बनाया गया परन्तु वास्तव में वह ब्रिटिश मेजर जनरल मैलिन्सन के इशारो पर चल रहा था। मैलिन्सन मध्य एशिया मे सोवियत के विरुद्ध बग़ावत कराकर ब्रिटिश सत्ता जमाने की आयोजना के प्रधान अफ़सर की स्थिति में काम कर रहा था।

जुलाई के अन्त तक कुछ फौजों को आग कर और वास्तव मे अपनी सेनाओं के बल पर ब्रिटिश सेनाओ ने पूरे रूसी तुर्किस्तान को घेर लिया। काशगर मे जमे हुये ब्रिटिश काउन्सल सर मैक-कर्टने ने फर्गना के अमीर को हथियार और हिन्दुस्तानी सिपाहियों की सेना सहायता के लिये देकर दक्षिण पूर्व के शहरो, खानो और तेल के कुओं पर अपना कब्जा जमा लिया। मैक-कर्टने ने सेमिरेचेस्क की कौसाक ग्रामीण आबादी को भी हथियारों की सहायता दे आल्माता मे सोवियत विरोधी सरकार स्थापित कर लेने के लिये भड़काया। पूर्व मे अतायान दुतोव विद्रोह कर बैठा और उस ने मास्को-ताशकद रेलवे लाइन उखाड़ डाली। बुखारा खीवा के डकैत खान जुनैदखाँ ने और कास्पियन समुद्र मे मौजूद ब्रिटिश जहाजी बेड़े ने उत्तर पच्छिम से ताशकन्द की सीमा को घर लिया। तुर्कमानिया के प्रजातन्त्र मे सभी जगह ब्रिटिश गुप्तचरो के जाल फैले हुये थे। अपन कारनामो का वर्णन करते हुये मेजर जनरल मैलिन्सन ने उस समय एक पत्र मे लिखा था कि इस समय हमारे एक हजार गुप्तचर फैले हुये है। बोल्शेविक सरकार के अनेक महत्वपूर्ण पद हमारे गुप्तचरो के हाथ मे है और सभी खास जगहो पर हमारी सेना की टुकड़ियां भी मौजूद है। मध्य एशिया भर मे ऐसा कोई रेलगाड़ी नही चलती जिस पर हमारे गुप्तचर मौजूद न रहते हो और कोई रेलवे स्टेशन ऐसा नही जहा हमारे दो तीन आदमी समय पर काम आने के लिए, मौजूद न रहते हो।

मेजर जनरल मैलिन्सन जुलाई के आरम्भ मे ही मशद मे पहुच गया था। रूस और ईरान की सीमा पर ब्रिटिश सेनायें जमा हो चुकी थी। १२ अगस्त के दिन ब्रिटिश फौजे रूसी सीमा मे अश्काबाद की ओर लगभग सत्तर मील भीतर धंस गई। ताशकन्द से ज़ार की सेना भी अश्काबाद की ओर बढ़ती चली आ रही थी।

तेजेन की सोवियत को समाचार मिला कि ज़ार की समर्थक क्रान्ति विरोधी सेना मारी और जार्दजोव पर आक्रमण करने के लिये बढ़ रही है और एक

दो दिन में तेजेन पहुँच जायगी। मारी और जार्दजोव से तेजेन में सहायता पहुँच सकने की कोई सम्भावना न थी। तेजेन की लाल सेना की छोटी सी टुकड़ी अज़ीज़ का सामना तो सफलता से कर सकती थी परन्तु इस बड़ी ज़ारशाही सेना का सामना इस टुकड़ी से करना केवल मज़ाक ही था। यह भी निश्चित था कि अवसर देख कर उसी रात या अगले दिन सुबह तेजेन पर छापा मारने वाला था।

इस परिस्थिति में चर्नीशोव ने तेजेन की सोवियत सरकार को ताशकन्द की ओर, पीछे मारी में हटा लेना उचित समझा। उस ने अपना प्रस्ताव तेजेन की सोवियत के सन्मुख रखा। कुलीखाँ ने इस प्रस्ताव का जोरों से विरोध किया और चर्नीशोव के विरुद्ध गद्दारी के अनेक आरोप भी लगाये। कुलीखाँ ने कहा—

"हम तो जानते ही थे कि तुम यहाँ केवल मेहमान बनकर मौज मारने के लिये आये हुए हो। जब तक कोई भय न था तुम बड़े तीसमार खाँ बने रहे और मुझ पर लाँछन लगाते रहे। मुसीबत आई है तो तुम बिस्तर लपेट कर जान बचाने की फिक्र में भागने की तैयारी कर रहे हो कि मुसीबत का सामना हम करे? काँटे तुम बो जाओ और उन्हे समेटने का काम हमारे सिर रहे। हम तेजेन को नही छोड़ेगे। हमारे शरीर मे जब तक खून की एक भी बूंद रहेगी हम ज़ार की फौज को अपनी तलवारों पर रोकेंगे। हम तुम्हे तेजेन के साथ हरगिज गद्दारी न करने देगे।"

कुलीखाँ की इस चालबाजी का मतलब चर्नीशोव खूब समझता था। वह समझ गया कि कुलीखाँ जब अश्काबाद गया था तभी अश्काबाद के क्रान्ति विरोधी दल के साथ यह षड़यन्त्र रच आया था। कुन्तिकोव और दोखोव ने कुलीखाँ को इसी अवसर के लिए अश्काबाद में बैठाया हुआ था। वह समझ गया कि कुलीखाँ हमें संगठित रूप से पीछे हट कर लड़ने से रोकना चाहता है और ज़ार की सेना के तेजेन मे आते ही वह उन से जा मिलेगा ......चर्नीशोव ने अनुभव किया कि अब सोवियत के भविष्य के भाग्य निर्माण का समय आ गया है और इस समय उसे दृढ़ता से काम लेना होगा। वह शान्त बना रहा और बोला—

"कुलीखाँ, तुम सदा से सोवियत के साथ दगा करते आये हो। आज भी तुम वही बात कर रहे हो! यह बात नहीं की तुम भोले हो और स्थिति को समझ नही सकते! तुम सब कुछ समझते हो और चाहते हो सोवियत को जाल

मे फंसा कर समाप्त कर देना । मै तेजेन मे मेहमान बनकर मौज मारने नही आया हूँ । तेजेन की भूमि के प्रत्येक ढेले के लिए मै जान दे दूँगा । समाजवादी प्रजातन्त्र सोवियत की सम्पूर्ण भूमि का प्रत्येक भाग हमारा अपना घर है । मैं इस भूमि के प्रत्येक व्यक्ति की जान को मूल्यवान समझता हूँ । मै झुझला कर इस देश के लोगो को मौत की भट्ठी मे झोंक देने के लिए तैयार नही हूँ । हम शत्रु से हार मान कर पीछे नही हट रहे है । हम शत्रु पर अधिक बल से हमला करने के लिए उचित जगह मोर्चा बना रहे है । मै यह समझता हूँ कि किसान मजदूर सरकार को सफल बनाने के लिये और सोवियत प्रजातन्त्र के शत्रुओ को समाप्त करने के लिए तेजेन की सोवियत के सदस्यों के जीवित रहने की आवश्यकता है । हम लोग तुम्हारे षड़यंत्र को खूब समझते हैं । हम समझते है ज़ार की सेना के तेजेन में कदम रखते ही तुम उन से जा मिलोगे और सोवियत के वफ़ादार लोगों चर्नीशोव, अशीर मावेद वगैरा को ज़ार की सेना के हाथ मे देकर तुम उन से ईनाम माँगोगे ।"

कुलीखां ने बीच में टोकने का यत्न किया परन्तु चर्नीशोव अपनी आवाज और ऊची कर बोलता गया—"कुलीखाँ याद रखो, सोवियत सरकार जनता की सरकार है और रूसी जनता के साथ इन सब देशों की जनता की सरकार है जो अपनी मुक्ति के लिये जनवादी क्रान्ति के मार्ग पर चल रही है । जनता की सोवियत सरकार को न तो बरबाद हो चुके ज़ार की सेना और न मूर्खों को अपने स्वार्थ का साधन बनाने वाली साम्राज्यशाही परास्त कर सकती है । किसानों और मजदूरो की हमारी सरकार आज कठिनाई में अवश्य है परन्तु हम लोग निरुत्साह और भयभीत नही है । हमे पूरा विश्वास है कि हमारी इस भूमि पर सोवियत का झण्डा—ईमानदारी से मेहनत कर पैदावार करने वालों का झण्डा लहरायेगा, हमारी विजय होगी । इस समय की परिस्थितियों में विजय को निश्चित बनाने के लिये यदि आज हमें कुछ पीछे हट कर शत्रु पर वार करना पड़ता है तो यह न तो हमारे लिए अपमान का कारण है और न हमारी हार है । आज हम चार कदम पीछे हटते है तो कल सोलह कदम आगे बढ़ेगे । इस समय यह हमारी जिम्मेवारी है कि हम यहाँ सोवियत की शक्ति को नष्ट न होने देकर आगामी आक्रमण के लिये उस की रक्षा करे । इस समय हमारे सामने एक ही रास्ता है कि हम अपनी सोवियत को मारी ले जाकर वहाँ सयुक्त मोर्चा बनायें । तेजेन की सोवियत का प्रधान और तेजेन की लाल सेना का प्रधान सेनापति मैं हूँ और मेरा फैसला है कि हमें तुरन्त यह काम

करना होगा। इस समय संकट उपस्थित है और रक्षा के काम को समुचित रूप से चलाने के लिये मै सब अधिकार अपने हाथ मे ले रहा हूँ। मेरी पहली आज्ञा है कि तेजेन की सम्पूर्ण लालसेना मारी जाने के लिये तुरन्त रेल पर सवार हो जाय। दूसरी आज्ञा है कि सोवियत की रक्षा करने वाले सभी नागरिक भी इस सेना के साथ जाये और आवश्यकता पड़ने पर इन सब लोगों को सिपाहियो का काम करना होगा।"

कुलीखा चर्नीशोव के व्यवहार से घबरा गया। वह ऐसी स्थिति की आशा नही कर रहा था। उसे भरोसा था कि तेजेन की सैनिक शक्ति स्वयं उस के हाथ मे है परन्तु चर्नीशोव ने सेना की कमान अपने हाथ मे ले ली। अब वह क्या करे? कुलीखां ने सोचा इस समय वह क्या कर सकता है? सेना में उस के भरोसे के सिपाहियो की सख्या कम ही थी। उस का साथ देने वाले लोग भी सोवियत की इस बैठक मे मौजूद न थे। चर्नीशोव का साथ देने वाले अशीर और मावेद सामने ही बैठे थे। इन लोगो से हाथापाई करना व्यर्थ था। इन लोगो से परे हट रेल से छूट जाने का बहाना करके पीछे रह जाने का भी कोई अवसर न था। और कोई लाभ भी न था। जार की फौज उस की कद्र तभी करती जब वह अपने साथ सेना लेकर उन के पक्ष मे चला जाता। यदि वे उसे अकेले पकड़ पायेगे तो बिना कुछ पूछताछ किये उस सोवियत में महत्वपूर्ण पद पर काम करते रहने के अपराध मे तुरन्त गोली से उडा देगे।

निराशा की एक गहरी सास लेकर वह बोला—"चर्नीशोव, अफसोस है कि मेरे विचार से सहमत न होने के कारण ही तुम मुझ पर विश्वासघात के षड़यत्र का आरोप लगा रहे हो। तुम जानते हो मे सिपाही आदमी हूँ। मरना मारना मेरा काम है। दुश्मन के सामने से भागना मुझे अच्छा नही लगता। परन्तु यदि तुम सोवियत का हित इसी बात मे समझते हो तो मै तुम्हारा हुक्म मानने के लिये तैयार हूँ।"

"तुम्हे यही करना भी चाहिए"—मुस्कराकर चर्नीशोव ने कहा, "अब मेरी आज्ञा है कि तुम अपने हथियार इन सिपाहियो को सौप दो। तुम इस समय गिरफ्तारी मे हो। अशीर और मावेद तुम लोग इस कैदी को ले जाकर पहरे मे रखो। यदि कैदी भागने की कोशिश करे या हाथापाई करे, उसे गोली मार दो।"

कुलीखाँ का चेहरा कागज की तरह सफेद पड़ गया। उस ने कुछ कहने के लिये मुह खोला परन्तु चर्नीशोव ने हाथ उठा कर उसे रोक दिया—"बस!"

अशीर और मावेद ने कुलीखाँ के हथियार उतार लिये। कुलीखाँ ने चुपचाप सिर झुका लिया और वैसे ही उन लोगों के साथ इशारा पार चलता गया।

जब अशीर कुलीखाँ को कोठड़ी में बन्द कर लौटा चर्नीशोव उसे अपने दफ्तर में ले गया और दरवाजा बन्द कर बोला—"अशीर, मैं तुम्हें एक काम सौंप रहा हूँ। हम लोग मारे जा रहे है। मुझे विश्वास है मारी की सोवियत सेना के साथ मिल कर हम दुश्मन को जरूर ही पीट देंगे और प्रायः एक सप्ताह के भीतर तेजेन लौट आयेंगे। यहाँ आकर हमें अश्काबाद पर भी हमला करना होगा। तुम्हें यहाँ पीछे रहना होगा। तुम आसपास के गाँवों मे जाकर किसानो को समझाओ कि वास्तविक स्थिति क्या है ? ज़ारशाही की सेना का साथ देने से उन का नाश होगा। तुम किसानों को संगठित करके सोवियत सेना की सहायता के लिये तैयारी करो।"

"लेकिन अज़ीज़ यह सब करने देगा ?"

"अज़ीज़ हो या और कोई हो ! यह काम तो करना ही होगा। मेरा ख्याल है अज़ीज़ ज़ार की सेना के साथ मिलकर हम लोगों का पीछा करने भागेगा लेकिन तुम्हें अपना काम करना है। यह काम सबसे जरूरी और इस मे सबसे अधिक खतरा भी है। दुश्मन के सामने डट कर, बन्दूक ले उस का सामना करना कहीं अधिक आसान है। यह याद रखो कि किसी भी हालत मे तुम्हे दुश्मन के हाथ नहीं पड़ना है। अगर तुम्हे सहायता की आवश्यकता है तो तुम मावेद को भी साथ रख सकते हो।"

"नही, मावेद को तुम अपने साथ रखो। तुम्हे एक भरोसे के आदमी की आवश्यकता होगी। मै किसी और को ढूंढ़ लूंगा।"

"अगर कहीं अरतैक से मुलाकात हो तो उसे समझाने की कोशिश करना। मेरा मन कहता है कि वह अब भी सोवियत का मित्र है। उस में न्याय बुद्धि है।"

२२

अरतैक का मन अपने घर मे रम गया था। ऐना ही उस का संसार थी। उस से परे की यह बात ही न सोचता था। उस वर्ष खूब वर्षा हुई। जहाँ तक नज़र जाती भूमि पर लहराती हरी घास का कालीन बिछा दिखाई देता था। तेजेन्का नदी भी जल की गर्वीली धारा से गरज रही थी। तेजेन की भूमि पर उस का पुराना जोबन उमड़ आया और अरतैक की नसों मे उस के किसान पूर्वजों का रक्त उमगने लगा। उस ने मुराद से बीज के लिये आवश्यक अनाज उधार लिया और अपने चाचा के साथ मिलकर सोवियत व्यवस्था से नयी मिली जमीन जोत कर बीज डाल दिया। मुख्य नहर से एक नाली खोद कर वह अपने खेतों की सिंचाई करने लगा।

एक दिन अरतैक खेतों से थका तीसरे पहर, घर लौट कर चाय पी रहा था। चाय के गरम घूंट गले से उतर उस की कल्पना और स्मृति को सचेत करने लगे। उसे अपने बचपन के खेल याद आने लगे। बचपन के साथी अशीर की याद आने लगी। वह सोच रहा था—अशीर जाने कहाँ होगा ?

उसी सयय एक चमत्कार हुआ—अशीर उस के सामने आ खड़ा हुआ। अरतैक पुरानी मित्रता के आवेग मे अशीर को गले लगा लेने के लिये झपटा परन्तु अशीर से झगड़े और अपने अपमान की बात याद आ जाने से उस का मन बुझ सा गया। दोनों मित्रों ने सलाम दुआ की और बातचीत भी कर रहे थे परन्तु जैसे कुछ कतरा कर !

अरतैक की मां नूरजहाँ को इन दोनों मित्रों के झगड़े की कोई खबर न थी परन्तु उन का परस्पर खिचाव उस ने भी अनुभव किया और मन ही मन चिन्ता कर रही थी—हाय, इन दोनों के बीच में यह बेगानापन कैसे आ गया ! क्या

बात है। छोटी बहिन शाकिरा भी हैरान थी कि क्या सचमुच यह अशीर है ? अशीर होता तो दोनों एसे बेगानेपन से मिलते ? ऐना बड़ी चतुर थी परन्तु इस स्थिति का कारण वह भी न भांप पाई। अरतैक ऐना से कोई बात छिपाता न था परन्तु अशीर से झगड़े की चर्चा उस ने ऐना से न की थी। सोचा, बेचारी का मन दुखाने से क्या लाभ ? और फिर इस झगड़े मे वह भूल भी अपनी ही समझता था।

अशीर का घाव ठीक हो जाने और अशीर के उस के घर मिलने आने के कारण अरतैक को बहुत संतोष हुआ तिस पर भी अहंकार के कारण वह अपनी भूल मान लेने के लिये तैयार न हो सका।

उस झगड़े की बात अशीर भी न भूला था। यह झगड़ा योंही मामूली छीना-झपट की बात तो थी नही, अपने-अपने विश्वास और सिद्धान्त की बात थी। इसी झगड़े के परिणाम स्वरूप वे एक दूसरे पर गोली चलाकर आपस मे खून बहाने के लिये तैयार थे। इस सब झगड़े के बावजूद अशीर यह भी न भूल सकता था कि उस के घायल हो कर गिर जाने पर अरतैक ने ही उस के प्राण बचाये थे। इस कृतज्ञता को वह कैसे भुला देता ?

एक दूसरे के कुशल क्षेम की बात हो चुकने के बाद अशीर ने तेजेन की अवस्था, ज़ार की सेना के आक्रमण, लाल सेना का मारी की ओर हट जाने और अरतैक से मिलने के लिये चर्नीशोव के आग्रह की बात भी कह सुनाई और पूछा—"इस स्थिति मे तुम्हारा क्या विचार है, क्या करना चाहते हो ?"

अरतैक ने भी अश्काबाद मे सोवियत के विरुद्ध विद्रोह का समाचार सुना था परन्तु वास्तविक स्थिति उसे मालूम न थी। उसे कुछ उत्तर न दे लगातार सिर झुकाये सोचते देख अशीर ने फिर सम्बोधन किया—"क्या सोच रहे हो ? क्या विचार है तुम्हारा ? चर्नीशोव को मै क्या उत्तर दूं ?"

"चर्नीशोव से कहना मै अपनी भूल मानता हूँ"- अरतैक ने सहसा सिर उठा कर उत्तर दिया, "मेरे कसूर की मुआफ़ी नही है"—यह शब्द कहते समय अरतैक का कलेजा कट कर रह गया। अरतैक अभिमानी आदमी था। अपना अपराध स्वीकार करने की अपेक्षा दुश्मन की गोली सीने पर सह लेना उस के लिये अधिक आसान था परन्तु जब मित्र के सामने उस ने दिल खोल दिया तो कुछ भी न छिपाया।

"अशीर मुझ से ग़ल्ती हो गई" वह बोला—"इतना कह देना ही काफ़ी नहीं। जब तक हम यह न समझे कि गल्ती क्या थी, कैसे हुई तब तक गल्ती

से बचा नहीं जा सकता । १९१६ में मैंने अज़ीज के साथ हथियार उठाये । उस में मेरा कुछ स्वार्थ न था । मैंने क्रांति मे जार के विरुद्ध हथियार उठाये । उस में भी मैंने कोई फायदा उठाने की बात नही सोची । मै जागीरदारों और ज़ार के अफ़सरों के विरुद्ध अपने किसान भाइयों की मुक्ति के लिये लड़ रहा था । चर्नीशोव मुझ से नाराज़ है । मै चर्नीशोव को अपना बडा भाई मानता हूँ । मे मानता हूँ कि वह निस्वार्थी नही, वह जनता की भलाई के लिये जान दे रहा है परन्तु उस ने ज़ार के पुराने बेईमान आदमियों का, कुलीखां जैसे बदमाशों का भरोसा किया । मैं कुलीखां जैसे आदमियों का विश्वास कभी नही कर सकता ? तुम्ही बताओ कुलीखां और बाबाखां हम लोगों का पेट काट कर जागीरदारों और ज़ार के अफसरों का पेट भरते रहे है कि नही ? अज़ीज चाहे जैसा रहा हो कम से कम उस ने लोगो की भलाई की बातों का एलान किया, जागीरदारों की जायदादे ले गरीबों को रोटी तो दी ! मैंने उस का साथ दिया तो क्या बुरा किया ? ·······"

'अरतैक, जब मैं रूस से लौटा था तो मैंने तुम से कहा नहीं था·······?" —अशीर ने टोका ।

'मुझे कह लेने दो ! टोको मत ! उस समय तुम्ही क्या जानते थे ? जो कुछ मै जानता था वही तुम भी जानते थे !"

"नही, यह बात नहीं है अरतैक, मैं रूस के संगठित मजदूरों में रह कर आया था । मुझे वहाँ काफी देखने सुनने का मौका मिला था ।"

"मान लिया तुम मां के पेट से ही इन्कलाबी पैदा हुये थे परन्तु मेरी भी बात सुन लो । मैंने अलनजर बे के दांत तोड़े, बाबखां को धूल चटाई । गांव के किसानों को सिर ऊचा करके चलने का मौका दिया । मैं अज़ीज़ की नौकरी में था परन्तु मैंने किया क्या ? लेकिन अज़ीज़ ने रंग बदल लिया । वह खुद ही सुल्तान बन बैठा । उसने किसानों के गले से जागीरदारों का जुआ तो हटाया परन्तु उन के कंधे पर स्वयं सवारी गांठ ली । मैं तो उस की नेकी मे विश्वास कर उस का साथ दे रहा था । वह धोखा दे गया तो मै क्या करूँ ? बताओ मेरी भूल क्या थी ?"

"यह तो साफ़ है ?"

"नही, अभी तुम नही समझे ! सुनो, मैने जो कुछ देखा उस पर ही विश्वास कर लिया । यह नहीं सोचा कि भीतरी बात क्या है ? मैं कुलीखां की दग़ा-बाजी से डरता रहा । यह नही सोचा कि जनता को साथ लेकर ही ऐसे दुष्टों

को कुचला जा सकता है। मेरी दूसरी भूल थी कि मैंने यह नहीं सोचा कि अज़ीज़ का स्वार्थ तो जनता के हित के विरुद्ध है। जो जनता पर शासन करना चाहता है वह जनता को आजादी कैसे दे सकेगा ? उस का साथ दे मैंने सोवियत के शत्रु की शक्ति बढ़ाई। सोवियत की राह मे रोड़े अटकाये। अब मै समझ रहा हूँ, परन्तु क्या फायदा ? अब तो बात हाथ से निकल गई !"

"हाथ से कुछ नही निकल गया। चर्नीशोव अब भी तुम्हें बुला रहा है ! उसे तुम्हारी ईमानदारी पर भरोसा है।"

"इतनी ही बात नही"— खिन्न स्वर में अरतैक बोला, "चर्नीशोव ने मुझे तभी समझाया था कि अज़ीज़ का साथ देकर मै सोवियत का विरोधी बन जाऊंगा। उस का कहना ठीक था। उस समय मैंने उस की बात नहीं मानी, परिणाम क्या हुआ ? जब अज़ीज़ की सेना से हथियार छीनने के लिये छापा मारा गया, मैंने सोवियत सिपाहियो पर गोली चलाई। मान लिया कि मै आत्म-रक्षा के [illegible]

अरतैक दिल भर आने से चुप हो गया। अशीर भी चुप रहा। वह जानता था, अरतैक को समझाने का कुछ लाभ नहीं। वह जिद्दी आदमी है। उस के मन में जो समा गया, वही करेगा। अरतैक यदि अपने अपराध का बदला चुकाना चाहता है तो वह उसे क्यों रोके ? उसे अपना मन हलका करने का मौका देना ही ठीक है।

अशीर उठ खड़ा हुआ और विदाई के लिये अपना हाथ अरतैक की ओर

बढा दिया। अरतैक की आंखे अशीर से मिलीं। इन आंखों की सफाई ने अरतैक के मन का संकोच और मैल धो दिया। दोनों मित्रों ने बहुत दिन बाद मन के पूरे उच्छ्वास से हाथ मिलाया। अशीर का हाथ थामे हुये अरतैक ने कहा—चर्नी से कहना मै आऊंगा, अपने अपराध का बदला चुका कर आऊंगा। मुझे भूल न जाना।"

उन दिनों किसी भी आदमी के किये राजनैतिक संघर्ष से निष्पक्ष बने रहना सम्भव न रहा था; या तो क्रान्ति के पक्ष मे होते या क्रान्ति के विरोध में! उसी सांझ, कई घुड़सवारों से घिरा किजिलखां अरतैक की छोलदारी के सामने आ पहुंचा। जीन से उतरे बिना, अरतैक को सलाम कर किजिलखा बोला—

"अरतैक, अजीजखाँ ने तुम्हे सलाम कहा है। वह मुद्दत से तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। आये नही। भाई अगर निमंत्रण की जरूरत थी तो मै निमंत्रण लेकर आ गया हूं। अब उठो, जल्दी आ जाओ!"

अजीजखां के साथियों मे किजिलखाँ बहादुर और ईमानदार आदमी था। अरतैक उस का भरोसा और आदर करता था—"यहां कैसे आये किजिलखाँ?"

अरतैक ने प्रश्न किया—"क्या दिहात मे गड़रियो को बटोरने आये हो?"

"क्या अजीजखाँ गड़रियों को खोजता फिरता है!"

"तुम समझते हो मै यहां दाता लोगों की प्रतीक्षा मे बैठा हू!"

"क्या बात करते हो अरतैक, क्यों बिगड़ रहे हो?"

"अजीजखा के यहाँ पुलाव सही पर यहाँ क्या तुम्हारे लिये सूखी रोटी का टुकड़ा भी नही है?"

"अरतैक तुम भी कहां से कहाँ बात उड़ा ले जाते हो!"—किजिलखां ने घूम कर अपने सवारों की ओर देख हुक्म दिया, "घोड़े एक तरफ बांध दो!"

अरतैक ने चाय से सिपाहियों की खातिर की और बोला—'किजिलखां भाई, मै चलने के लिये तो तैयार हूं परन्तु मेरे पास घोड़ा नहीं। अलनजर के तबेले में अजीजखाँ का फौज के लायक एक बढ़िया घोड़ा बंधा है। वही घोड़ा मंगवा लो। अलनजर की रूह जन्नत मे दुआ देगी।"

अलनजर के यहाँ से मालकौश आ गया। आधे घटे के बाद अरतैक चलने के लिये तैयार हुआ तो ऐना की आंखों में आँसू आ गये। अरतैक ने कहा—"वाह, यह क्या! तुम्हारे जैसी समझदार औरत की यह हरकत?"

ऐना मुस्करा दी उस की आँखों में छलकी बूदे ऐसे चमक उठीं जैसे पंखड़ियों पर खड़ी ओस की बूंदे बाल सूर्य की किरणों में झलमला उठती हैं।

२३

अगलान पहुंच कर अरतैक ने देखा—अज़ीज ने तीन सौ से अधिक घुडसवार जुटा लिये थे। अज़ीज़ अपने विचार मे अपने सब विरोधियों को समाप्त कर चुका था। उस की खून की प्यासी आंखे और भी खूनी हो गई थी। उस के सिपाही भी लूट-मार के अवसर के लिये उतावले हो रहे थे। वह लोग खूब खा-पी कर मुटा रहे थे और बेकार बैठे बात-बात पर आपस मे झगड़ बैठते और एक दूसरे का गला काटने के लिये झपटते रहते।

अज़ीज़ ने अरतैक का स्वागत आत्मीयता से किया। बातचीत विशेष न हो पाई। अज़ीज अपनी तैयारियो मे बहुत व्यस्त था। मदीर ईशान ने उसे अश्काबाद मे सोवियत के विरुद्ध बगावत हो जाने और 'तुर्कमान राष्ट्रीय कमेटी' के जार की सेना के साथ मिल जाने के फैसले की सूचना भेज दी थी। अज़ीज़ इस अवसर से लाभ उठाने का निश्चय कर चुका था। सिपाही आपस मे तेजेन और काहका रेल स्टेशन पर छापा मार कर कब्ज़ा कर लेने की बाते कर रहे थे लेकिन अज़ीज़ जाने किस ख्याल से समय टाले जा रहा था। अरतैक अज़ीज़ के यहां नित्य ही अंगरेज अफसरों को आते-जाते देख विस्मित था।

अज़ीज़ के यहाँ आने से पहले अरतैक ने बहुत धीरज से काम लेने का निश्चय किया था। उस ने यहाँ आते ही अनुभव किया कि उसे धीरज की बहुत कठिन परीक्षा देनी होगी। अज़ीज के खेमे में रहना ही उसे असह्य जान पड़ रहा था। जिस पर नित्य ही ऐसी घटनायें होती कि विरोध में उस का खून खौल उठता। इस के अतिरिक्त उसे अपनी कमान के सिपाहियों का ख्याल भी था। यह सिपाही उसे बहुत मानते थे, उस पर भरोसा कर जीने मरने के लिये तैयार थे। अरतैक ने अब की बार यहां आकर अज़ीज़ के पुराने सहायक

केलखां से भी घनिष्टता जमा ली थी। केलखां भी अजीज़ के अत्याचारों और नादिरशाही से उकता चुका था। उन लोगो ने आपस में निश्चय कर लिया था कि यदि दोनो मे से किसी पर संकट आया तो परस्पर सहायता करेंगे !

उन की इस आपसी निश्चय की परीक्षा का दिन भी जल्दी ही आ गया। एक जागीरदार ने अज़ीज के यहाँ आकर शिकायत की कि रात में आकर किसी ने उस के खेतों मे से आधी फसल काट ली है। जागीरदार को अपने गाव के एक नौजवान पर सन्देह था। अज़ीज ने घुड़सवार भेजकर नौजवान को पकड़ मंगवाया।

नौजवान ने गिड़गिड़ाकर दुहाई दी कि उस ने यह काम नही किया। उसे इस घटना के बारे मे कुछ पता भी न था।

"हम अभी तुम्हें सब बताये देते है" - अज़ीज़ ने नौजवान को उत्तर दिया। अज़ीज़ के इशारे पर दो सिपाही आगे बढ़ आये। उन लोगो ने फुर्ती से नौजवान के सब कपड़े उतार डाले। उसे धरती पर पट लिटा कर एक सिपाही उस की पिंडलियो पर और दूसरा कंधों पर बैठ गया। धूप मे दुबले पतले नौजवान की एक-एक पसली दिखाई पड़ रही थी। अजीज न फिर इशारा किया। दो और सिपाही चमड़े की बटी हुई रस्सियो के कोड़े लेकर आये और नौजवान के दोनो ओर खड़े होकर उस की पीठ पर कोड़े बरसाने लगे। कुछ ही पल मे नौजवान की पीठ लाल होकर नीली पड़ गई। वह अपनी पूरी ताकत से चीख रहा था—"हाय मै मर गया! मैने चोरी नही की।"

अपनी छोलदारी मे बैठे अरतैक ने यह दर्दनाक चीखे सुनी। उस से रहा न गया। वह इस दृश्य के चारो ओर घिरी भीड़ की ओर चला आया। भीड़ मे फस कर उस ने सिपाहियो के हाथ से कोड़े छीन लिये। नौजवान को दबा कर बैठे सिपाहियो को परे धकेल दिया। नौजवान की पीठ से मांस के लोथड़े उठ आये थे और खून बह रहा था। उस की बांह थाम अरतैक ने उसे पाव पर खड़ा किया।

अज़ीज की ओर देख वह बोला —"ऐसा अन्याय क्यों करा रहे हो ?" अज़ीज़ की आंखों मे खून उतर आया। झुझला कर उस ने कहा, "तुम कौन हो मेरे हुक्म मे दखल देने वाल।" सिपाहियो को उस ने हुक्म दिया, "इसे पकड़ कर गुस्ताखी के लिये अभी कोड़े लगाओ।"

सिपाही अरतैक की ओर बढे तो उस ने रिवाल्वर निकाल लिया -"जो आगे आयेगा, उस का सिर उड़ा दूंगा।"

इतने में केलखां और अजीज की कम्पनी के सिपाही आगे बढ आये। अज़ीज़ क्रोध में आपे से बाहर हो स्वयं ही अरतैक की ओर झपटा। अरतैक ने रिवाल्वर उस की ओर साधा। यह देख अज़ीज़ ठिठक गया और उस ने पुकारा—"केलखां ?"

"हुक्म मालिक ?"—केलखां ने जवाब दिया।

"मेरा हुक्म है, अरतैक को गोली मार दो।"

"मालिक कितने आदमियों को तुम गोली मार चुके हो ? अब हम लोगों को गोली मारने की बारी आ गई ?"—केलखां ने प्रश्न किया।

"हूँ, तुम भी उस का साथ दे रहे हो ?"

"मालिक मै इन्साफ़ का साथ दे रहा हूँ। मेरे खयाल में अरतैक भी इन्साफ़ की बात कर रहा है।"—केलखां ने उत्तर दिया।

अज़ीजखां इधर-उधर देख किजिलखां को ढूढ रहा था। उसे याद आया कि किज़िलखां को उस ने किसी काम से छावनी से दूर भेजा हुआ है। बेबस हो कर उस का हाथ अपनी कमर मे बधे रिवाल्वर की ओर गया। उसी समय भीड़ मे शोर मच गया।

अरतैक की टुकड़ी के सिपाही चिल्ला रहे थे—"अरतैक, हुक्म दो हम अभी इन लोगों को गोली मार दें !"

"ज़ालिम तबाह हो !"

"अरतैक हमारा खान है।"

यारमुश काज़ी अज़ीज़ को आस्तीन से थाम एक ओर ले गया और समझाया—"क्या बेवकूफ लोगों को मुह लगा रहे हो ? तुम इन लोगों को रहने दो। होश आयेगी तो अपने आप तुम से मुआफ़ी मांगेगे।" अज़ीज़ अभी शान्त भी न हो पाया था कि एक अर्दली ने आकर खबर दी, "अश्काबाद से सरकारी आदमी आये है।"

अज़ीज ने इन मेहमानों को ले जाकर बैठाने के लिये हुक्म दिया और अपना मन शान्त करने के लिये एकान्त में जा लेटा। वह सोच रहा था—जिन लोगों को अपने हाथों बनाया वही लोग आज मुझे मुह चिढ़ा रहे हैं। यह सब क्या हो रहा है ? अरतैक की यह हिम्मत कि मेरे हुक्म का विरोध करे ? खैर, अरतैक बेसमझ है तो इस केलखाँ को मुझ से क्या शिकायत है ? यह आदमी टुकड़ों के लिये भटक रहा था। दूसरे लोगों का बोझ ढो रहा था। मैंने इसे आदमी बना दिया। सौ घुड़सवारों का सरदार बना दिया। आज यह

मुझे आखें दिखा रहा है। यह मेरी बेवकूफी है कि मैंने इन लोगों को इतना मुह लगा लिया। अरतैक को तो मैं आज ही रात खत्म करवा दू परन्तु उस के साथ के सौ घुड़सवार उसी से मिल गये हैं। यह लोग बिगड़ खड़े होंगे। यह लोग घोड़े और हथियार लेकर मेरे ही दुश्मन बन जायंगे! क्या है मेरी किस्मत ? केलखाँ का भी क्या विश्वास ? वह भी अगर छोड कर चलदे तो मै निहत्था रह जाऊगा। जुनैदखाँ मे क्या बात है ? वह कैसे अपने दुश्मनों को पल भर में कुचल डालता है ?...... नहीं, अभी अरतैक से झगडा करने का वक्त नहीं है। उसे चुपके से खत्म करना होगा। अभी उसे बुलाकर समझा-बुझा कर शान्त किया जाय........।

यह निश्चय कर वह अश्काबाद से आये राजदूतों से मिलने के लिये गया। इन लोगों ने अजीजखाँ को नियाज़बेग और ओराज सरदार की ओर से उस की बीरता और सफलता के लिये बधाई देकर एक पत्र नियाजबेग की ओर से और दूसरा जारशाही सेना के कमाण्डर की ओर से दिया। इन पत्रों मे सोवियत के विरुद्ध विद्रोह में अजीज के सहयोग पर प्रसन्नता प्रकट करके उस से अपना सहायक बन जाने का अनुरोध किया गया था। उसे विश्वास दिलाया गया था कि आवश्यकता पड़ने पर हथियार, धन और योग्य अफसर भेज कर उस के सिपाहियों को युद्ध शिक्षा देने में सहायता दी जायगी और उसे तेजेन का स्वतंत्र खान स्वीकार कर लिया जायगा। उस के प्रबंध मे किसी प्रकार का दखल न दिया जायगा।

पत्र लाने वाले राजदूतों ने अजीज़ की खूब प्रशंसा कर उसे फुसलाया। इस पत्र से अजीज की बरसों की महत्वाकांक्षा पूर्ण हो रही थी। उस ने तुरंत ही एक संधि पत्र पर अपनी शर्तें देकर दस्तखत कर दिये। उस की मांगें थीं:—उसे आवश्यकतानुसार हथियार और धन सहायता के लिये दिये जायंगे और उस के राज प्रबंध में किसी प्रकार का हस्ताक्षेप न किया जायगा।

अज़ीज इस संधि पत्र पर हस्ताक्षर कर ही चुका था कि उसे बुखारा के अमीर के राजदूत तोगसा बे के आने का समाचार मिला। तोगसा बे अपने साथ अज़ीज के लिये अमीर की भेजी हुई भेंट लेकर आया था, पचास मन हरी चाय, बहुत कीमती पोशाकें और सूर्य के रूप में बना एक सोने का बड़ा पदक उस ने पेश किये। तोगसा बे को बोलशेविकों के डर से मारी का चक्कर काट कर आना पड़ा था। बुखारा का राजदूत स्वयं भी सुनहरी ज़री के चोगे पर रूपहली ज़री की पेटी लगा सिर पर खूब बड़ी पगड़ी बांध कर अज़ीज़ के

सामने पेश हुआ। बे का चेहरा अनार के फूल की तरह लाल हो रहा था। अपनी भारी तोंद को जैसे-तैसे सम्भाल अजीज के सामने कमर तक झुक सलाम कर उस ने कहा—

"ऐ वालिये दीनो दुनिया, अमीरुलअमीर, अफजलुलअकबर, आलिमुल आलमीन, खानेखाना, नूरुलइस्लाम ! शहनशाहे बुखारा जहांपनाह की खिदमत में अपने दोस्ताना सलाम अरसाल फर्माते हैं।"

"अमीर पर खुदा की बरकत हो !", अजीजखां नेतोगसा बे के लम्बे सम्भाषण के उत्तर में संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

"पाक बुखारा के बारा मुफ्ती, और शेख-उल-इस्लाम खानेखाना की सेहत के लिये दुआ देते है और खुदाबन्द से इल्तजा करते है कि जहांपनाह का का इकबाल दोबाला हो। खुदा का हजार शुक्र है मुझे अमीरेतेजन की मुनव्वर हस्ती का नियाज पाने मे कामयाबी हुई।........।"

अजीजखाँ तोगसा बे के मुह से झड़ते दुर्बोध शब्दों को आखे झपकता हुआ सुन रहा था। बे ने फिर एक बार झुक कर सलाम किया, और अजीज ने फिर यत्न से उचित शब्द याद कर अपना जवाब दोहराया, "शहनशाहे बुखारा पर खुदावन्द का करम हो !"

तोगसा बे ने अमीर-बुखारा के भेजे हुये उपहार अजीज के सामने पेश कर सोने का दमकता हुआ सूरज अपने हाथो से अजीज के सीने पर टांक दिया। अजीज का चेहरा खुशी से चमक उठा।

"अमीर बुखारा ने जो इज्जत मुझे बख्शी है उस के लिये मे उन का शुक्रिया कैसे अदा करू ! खुदा उन का इकबाल दोबाला करे"—अजीज ने फिर कहा।

इस कठिन काम को सफलता पूर्वक कर पाने के संतोष से तोगसा बे का सीना फूल उठा। वह फिर बोला, "जहाँपनाह, खानेखाना, अमीरे तेजेन ने इस्लाम की जो खिदमत की है उस के लिये शहनशाह बुखारा-हुजूर की खिदमत अपना शुक्रिया और एहतराम फर्मा कर पैगाम देते है कि अगर हुजूर को कभी किसी किस्म की मदद की जरूरत हो तो ऐसी खिदमत का मौक़ा शहनशाह बुखारा अपने लिये खुशकिस्मती खयाल करेंगे। शहर तेजेन बुखारा से अगरचे दूर है लेकिन अमीरे-बुखारा का दिल खानेखाना की याद से हमेशा पुर रहता है। शहनशाह बुखारा को उम्मीद है कि जमीन पर अमन कायम हो तो हुजूर के बुखारा तशरीफ लाने का मौका आयगा और अमीर बुखारा को खानेखाना के इस्तकबाल का खुशवार मौका हासिल होगा।"

"बशर्ते जिन्दगी मै अमीरे-बुखारा की खिदमत में हाज़िर होने की कोशिश करूंगा।"—अजीज ने उत्तर दिया।

तोगसा बे को इस बात की चिन्ता न थी कि अज़ीजखां उस की बात समझ रहा है या नहीं। वह उसे अपनी विद्वता से प्रभावित कर देना चाहता था। उस ने अरबी, फारसी के दुर्बोध शब्दों की बौछार मे बताया कि बुखारा के अमोर वर्तमान राजनैतिक स्थिति का लाभ उठा कर, इस्लाम की रक्षा के लिये अपने राज्य का विस्तार दूर तक कर लेना चाहते है और अजीजखाँ को तुर्कमानिया मे अपना सूबेदार (वायसराय) नियत कर देना चाहते है।

उस राजनैतिक गड़बड़ी मे अज़ीजखाँ अपने आप को सहसा ईरान के शाह की बराबरी का बादशाह समझने लगा था। दो बरस पहले उसे कोई पहचानता नही था और अब कई राज्यों के राजदूत उसे अपना सहायक बनाने के लिये उस के यहाँ पहुँच उस की खुशामद कर सभी प्रकार की सहायता देने के वायदे कर रहे थे। अज़ीज सोच रहा था—"मेंशेविको और क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी से मै नये ढंग की बन्दूके और तोपे ले लूँ और फिर बुखारा जाऊँ। बुखारा मे पहले अमीर के सामने सिर झुका कर सलाम करने से मेरा क्या बिगड़ जायगा ? तोगसा बे समझेगा मुझे फंसा लिया। कौन फंसता है, यह बाद मे पता लगेगा। बाद में मै फौजें बढ़ाकर अश्काबाद के मेंशेविकों को उन के ही हथियारों से कुचल डालूगा। सारे तुर्कमानिया की रियाया मेरे सामने सिर झुकायेगी..........।"

अश्काबाद और बुखारा के राजदूतों से बात खत्म कर अज़ीज ने अपने सलाहकारों से सलाह ली और फिर तेजेन की प्रजा के नाम फर्मान लिखवाया:—

"हमारे मौलवियों का फ़तवा है कि इस्लाम से मुनकिर हो जाने वाले काफ़िरों के खिलाफ़ जिहाद करना सब मुसलमानों का फर्ज़ है। शरीयत के हुक्म से हम जिहाद के लिये कमर बस्ता है। तेजेन की रियाया के नाम हमारा फर्मान है :—इलाके के तमाम दारोगा और मुशियों को हुक्म है कि बीस जुलाई के दिन सुबह के वक्त सब गाँवों से, हर पाँच घरों के पीछे एक आदमी तेजेन शहर में पहुंच जाये। जो हाकिम इस हुक्म की पाबन्दी में कोताही करेगा, सख्त सज़ा का मुस्तहिक होगा। जो रियाया इस हुक्म से एतराज़ करेगी, वह गद्दार करार देकर बोल्शेविक समझी जायगी और मौत की सजा की मुस्तहिक होगी।"

फर्मान को मुस्तैदी से पूरा करने के लिये अज़ीज ने गांव गांव अपने सवारों

के दस्ते भेजे कि बस्तियों से जरूरी सिपाही पकड़ लिये जाँय और बस्तियों के सब घोड़े भी कब्ज़ में ले लिये जांय।

यह सब कर चुकने के बाद उस ने अरतैक को बुलाया। अरतैक भी मन ही मन पछता रहा था कि उस ने जल्दबाज़ी मे अवसर से पहले अज़ीज़ से झगड़ा कर लिया। इस भूल से उस का पहले से सोचा हुआ ढंग सरजाम बिगड़ जायगा। अज़ीज़ उस पर सन्देह कर चाहे जो कर बैठे। अभी उसे कुछ दिन और सीने पर पत्थर रख प्रतीक्षा करना चाहिये था। अब सावधानी के लिये उस ने जीनसाज़ कस कर अपने घोड़े मालकौश को तैयार कर लिया। अपनी टुकड़ी के सिपाहियो को आशका से अपने चारो ओर मडराते देख उन से स्पष्ट बातचीत कर लेना ही उचित समझा।

"जवान,"—अपने सिपाहियो को उस ने सम्बोधन किया, "बहुत दिन से हम लोगो का साथ है। हम लोगो ने एक साथ खतरे झेले है। हम लोग भाई-भाई है। आप लोगो से बिदा होते मुझे बहुत दुख हो रहा है परन्तु मेरे लिये अब यहाँ रहना ठीक नही। भाइयो, मेरा कहा-सुना मुआफ करना।"

सिपाही सिर झुकाये चुप रह गये। अरतैक का दिल भर आया—"दोस्तो" यह दुनिया आनी-जानी है। आजकल का समय भी ऐसा है कि आदमी सुबह तख्त पर बैठा है तो शाम को सूली पर चढ जाय। तुम्हे छोड़ कर जाते नहीं बनता। पर बात ही ऐसी आ पड़ी है कि मै अगर यहाँ बना रहूँ तो मेरी जान पर और तुम्हारी जान पर भी मुसीबत पड़ेगी। मैं चला जाऊँ तो शायद अज़ीज़ खां तुम्हें मुआफ़ कर दे। खैर, ज़िन्दगी रही तो फिर कही मिलेंगे।"

एक बूढ़े सिपाही ने गर्दन उठा प्रश्न किया—"तुम कहाँ जाओगे?"

"क्या कह सकता हूँ कहाँ जाऊँगा"—अरतैक ने गहरी सांस ली, 'अपने गांव लौट जांऊ या फिर जैसा मौका हो ¨।"

"हमे अज़ीज़ खां से क्या लेना है? कहो तो अज़ीज खां से दो-दो हाथ कर देखें?"—सिपाही ने धीमे से कहा।

"नही, यह बात बनेगी नही"—अरतैक ने समझाया, "अज़ीज़ की ताकत हम लोगों से बहुत ज्यादा है।"

"तो हम लोगों को भी साथ ही ले चलो।"

अरतैक चुपचाप सोचने लगा, क्या करे? अपने साथ के घुड़सवारों को साथ लेकर लाल सेना में जा मिलने के उद्देश्य से ही वह अज़ीज़ के यहाँ आया था। परन्तु इस काम के लिये अभी अवसर उपयुक्त न था। सोवियत सेना

इस समय बहुत दूर थी और केवल एक सौ घुड़सवार लेकर अज़ीज़ और ज़ार-शाही सेना का सामना करना केवल अपने सिपाहियो को कटवा डालना होता। सोवियत सेना के समीप आये बिना और उन से सम्बन्ध स्थापित हुये बिना उन से जा मिलने का यत्न करना मूर्खता ही थी। अभी प्रतीक्षा करना आवश्यक था परन्तु उस के सिपाही बेचैन हो रहे थे।

"भाइयो"--उस ने साथी सिपाहियो को समझाया, "इस बात के लिये अभी ठीक अवसर नही है। मगर मै अकेला जाऊ तो किसी तरह छिप कर भाग भी सकता हूँ परन्तु एक सौ सवारो का छिप कर भाग जाना कैसे सम्भव हो सकता है ? अभी ह- लोगो का यहा बना रहना ही ठीक है परन्तु आप लोग वायदा कीजिये कि यदि अजीज ने मुझे यहां रहने न दिया तो मेरा इशारा पाते ही आप सब लोग मेरे साथ चले आयेंगे।" मन मे उस ने निश्चय किया कि अपना अवसर आने तक जैसे तैसे अज़ीज़ से सुलह बना कर रखनी होगी इसलिये जब केलखा अजीज़ का सन्देश लेकर आया, अरतैक चुपचाप उस के साथ चल दिया।

अज़ीज़ ने अपने दोनों सेनापतियो से बात करते समय उस दुर्घटना का कोई ज़िक्र न किया। इस समय वह अपनी ऊची और जिम्मेवार स्थिति से बात कर रहा था--'किज़िल खां तो अभी लौटा नही" वह बोला, "हो सकता है, आज सांझ तक आ जाये। जवानो, अभी तक तो हम लोग तेजेन के इलाके मे अपने कदम जमाने मे ही लगे रहे लेकिन अब हमे अपने कदम आगे बढ़ाने होगे। इस समय हमारे सामने बहुत गम्भीर स्थिति आ गई है। कल, नही तो परसों हमे बोल्शेविकों पर धावा बोलना होगा इसलिये तुम लोगों को बहुत ख्याल से पूरी तैयारी करनी होगी। हर बात को खूब ब्योरे से ध्यान देकर देख लेना चाहिये। एक-एक घोड़े के ज़ीन, लगाम और नाल तक जांच लेने चाहिये।"

अरतैक और केलखां दोनो चुप रहे—"तुम लोगों का क्या ख्याल है ?" अज़ीज़ ने पूछा। अरतैक से कुछ कहते न बन पड़ा। झूठी बात बनाना और खुशामद करना उसे आता न था। अपने साथी को चुप देख केलखां बोला, "खां, तुम हमारे मालिक हो ! हम तुम्हारी ताबेदारी में है लेकिन तुम हमारा कुछ खयाल नही करते !"

"ठीक है भैया केलखां" --अजीज़ ने उत्तर दिया, "कभी परेशानी में आदमी आपे से बाहर हो जाता है; जैसे आज हो गया।"

"ख़ान, तुम अपने दरबारियों मे राय लेकर सब बातें तय करते हो ! हमें इस में क्या शिकायत ? लेकिन हमे तो यह भी मालूम नही होता कि आज हमें क्या काम करना है । अगर हमें पता रहे कि हमें फलां काम के लिये तैयार रहना है तो हमें जो कुछ सुविधा होगी, उस मे तुम्हारा ही फायदा अधिक होगा । खून तो अपना हमीं को बहाना पड़ता है । हम भी तो आखिर आदमी है । हमें यही मालूम हो कि अपना खून बहा किस बात के लिये रहे है ।"

"केलखां, जो बात हो गई, उसके लिये मुझे भी दुख है पर अब उसे याद करने से क्या फायदा ? ऐसी बाते बार-बार नही हुआ करती"—अजीज़ ने अरतैक को सम्बोधन किया—"अरतैक, तुम जानते हो, मेरा मिजाज़ जरा गरम है । यह बात आई गई । मैंने तो अभी कहा कि मुझे खुद उस बात का दुख है । पिछली बातें छोड़ कर अब आगे के लिये सोचना चाहिये ! ज्यादा से ज्यादा परसों । मान लो, हम लोगो को अपने घोडे और सिपाही लेकर रेलगाड़ी पर चढना है । बताओ उस के लिये क्या-क्या तैयारी जरूरी है ?"

गहरी सांस खीच अरतैक ने उत्तर दिया—"अज़ीजखां, मेरे लिये यही अच्छा है कि अपनी तलवार तुम्हे लौटा दू ।"

"अरतैक, यह तुम्हारी ज्यादती है । उसी बात के पीछे पड़े हो । आदमी से और तो क्या, नमाज मे भी गलती हो सकती है । अब काम करो ; सवाल सिर्फ तेजेन का ही नही ....।"

"जैसे तुम आदमियो के साथ जुल्म करते रहे हो ऐसे ही तुम पूरे मुल्क के साथ करोगे"—अरतैक बोल उठा ।

"जब तक हम लोग पूरे तुर्कमानिया को आजाद नही कर लेते, हम लोग हथियार नहीं डाल सकते"—अजीज बोला जैसे उस ने अरतैक की बात समझी ही नही ।

हमे अज़ाद होना है तो सब से पहले तुम्हारे ही गले में फंदा डाला कर पेड़ से लटकाना पड़ेगा...मन ही मन अरतैक सोच रहा था । केलखॉ ने बात सम्भाली—"हम लोगों मे कोई आदमी ऐसा नहीं जो वक्त पर हथियार डाल कर दग़ा दे जाय । लेकिन सभी लोगों पर उन के सामर्थ्य भर ही बोझ डालना चाहिये ।"

अरतैक और अज़ीज़ की आंखे पल भर को मिल गईं । अज़ीज़ का भाव था—खैर, अभी तो मैं अपमान निगले ले रहा हूं, वक्त आने पर समझूंगा । अरतैक के मन में था—मैं तुम्हारे फंदों को खूब जानता हूं ! तुम्हारे जाल में अब नही फंसने का । मैं भी अपने मौके की तलाश में हूं ।

२४

तुर्कमानिया पर भयंकर दुर्दिन छा रहे थे।

अश्काबाद मे मेंशेविकों, समाजवादी क्रान्तिकारियों और सफेद (जारशाही) सेना ने मिल कर सोवियत के विरुद्ध बगावत कर शासन अपने हाथ मे ले लिया और रेलवे लाइन के साथ साथ, पूर्व-पश्चिम मे आतंक फैलाना शुरू किया। जगह-जगह तारे दे कर हुक्म दिया जाता कि सोवियत व्यवस्था को तुरन्त समाप्त कर दिया जाय! जगह-जगह रेलवे लाइने उखाड़ दी गई, जगह-जगह शस्त्रागार लूट लिये गये। शीघ्र ही 'क्रास्नोवोदस्क' पर भी इन का कब्जा हो गया। सोवियत से सहानुभूति रखने वाले लोगो को सामूहिक रूप से गिरफ्तार कर कत्ल किया जाने लगा। जारशाही सेना के अफसर बोल्शेविको और उन से सहानुभूति रखने वाले मज़दूरों से बर्बरता पूर्ण बदले ले रहे थे। जेलखाने ठसाठस भर गये। जो लोग इस आतंक से जगलो और पहाड़ों की ओर भाग रहे थे, उन्हे भी पकड़ कर कत्ल कर दिया गया।

इन अत्याचारों, लूटपाट और काली करतूतों मे भाग लेने के लिये शहरों के गुण्डे, चोर, उचक्के और दिहात के डाकू-क्रान्तिकारी समाजवादी दल जारशाही सेना के साथ आ मिले। अंग्रेज कूटनीतिज्ञों की सरक्षता मे जारशाही सेना के अफ़सरों ने आठ सौ आदमियो की एक स्थानीय स्वयं सेवक सेना बनाई जिस मे जागीरदारो, व्यापारियों के लड़के, उन के निजी नौकर और कुछ भोले-भाले किसान भी मिला लिये गये थे। इस स्वयं सेवक सेना मे से लग-भग तीन सौ आदमियों को मारी की ओर भेज दिया गया। २१ जुलाई तक प्रायः सम्पूर्ण तुर्कमानिया जारशाही सेना के हाथों आ गया। केवल 'कुश्क' का किला उन के हाथ न आ पाया। इस किले की रक्षा देशभक्त जनरल

'वोस्त्रोसाबलिन' की कमान में मजदूरों की एक सेना कर रही थी। इसी सेना की एक टुकड़ी चार्नीशोव से आने वाले रास्तों पर डटी जारशाही सेना को रोके हुये थी।

तुर्किस्तान के बोल्शेविकों ने सब अत्याचार और संकट सह कर भी जारशाही और अंग्रेज़ी सेना के सामने सिर नहीं झुकाया। अश्काबाद के शासन की बागडोर जारशाही के हाथ मे जाने की खबर पाते ही तुर्किस्तान की केन्द्रीय सोवियत और जनता की प्रतिनिधि सभा ने श्रम-कमिस्सार साथी पोल्तोरातस्की की अध्यक्षता मे एक प्रतिनिधि मण्डल तुर्कमानिया भेज दिया। पोल्तोरातस्की का प्रतिनिधि मण्डल रास्ते के सभी शहरों मे ठहर-ठहर कर आगे बढ रहा था। वही सभी स्थानों मे सार्वजनिक सभायें करके राजनैतिक स्थिति सम्भालता और जनता की भावना समझने का यत्न करता। स्थानीय सोवियतों के प्रतिनिधि भी इन के साथ सम्मिलित होते जा रहे थे। कगान मे जारशाही के समर्थकों ने उसे सभा नहीं करने दी। मण्डल को गिरफ्तार करने की कोशिश की। प्रतिनिधि मण्डल बडी कठिनाई मे गिरफ्तारी से बच पाया।

इस पर भी पोल्तोरातस्की डरा नही। वह पुराना और अनुभवी क्रांतिकारी था। सं० १६०५ मे प्रजातंत्रवादी दल का मेम्बर और बाकू के मजदूर आंदोलन में भाग ले चुका था। वह मजदूर परिवार की संतान था। बचपन से प्रेस में कम्पोजिटरी करके अपना निर्वाह करता आया था। इतनी अवस्था में उसे बुखारा के मज़दूरो ने 'अखिल रूसी कांग्रेस' के लिये अपना प्रतिनिधि चुना था। इस के बाद वह बोल्शेविक पार्टी का मेम्बर बन गया। ताशकन्द मे वह लाल सेना के सिपाही की स्थिति से मोर्चे पर जम कर क्रातिविरोधी जारशाही सेना से लड़ चुका था। वह 'राष्ट्रीय आर्थिक आयोजन समिति' का सदस्य भी था और क्रान्ति के पश्चात् तुर्किस्तान के पहले समाजवादी पत्र 'सोवियत तुर्किस्तान' का संस्थापक और सम्पादक भी था। सोवियत के प्रतिनिधि मण्डल के प्रधान की स्थिति से वह शत्रु से घिरे नगरो में निधडक चला जाता। पोल्तोरातस्की को पूरा विश्वास था कि वह अमर उद्देश्य और जनता की अजेय शक्ति का प्रतिनिधि है।

चार्दिज़ोव में क्रान्तिकारी मजदूरों की बहुत बडी भीड़ ने पोल्तोरातस्की का स्वागत किया और क्रान्ति की विजय के लिये आमरण युद्ध की प्रतिज्ञा की। मारी की सोवियत के अधिकांश सदस्य विश्वास के योग्य नहीं है। उन की सहानुभूति ज़ारशाही के प्रति है। पोल्तोरातस्की को मिलने आने वाले लोगों

में चर्नीशोव भी था। मारी पहुंच कर चर्नीशोव ने स्थानीय राजनैतिक स्थिति को समझने का यत्न किया। यहाँ उसे अश्काबाद से आया हुआ तिशेंको भी सहायता के लिये मिल गया। तिशेंको इस इलाके की कठिन स्थिति और शहर की सन्दिग्ध स्थिति से पहले ही परिचित हो चुका था।

तिशेको ने चर्नीशोव से करगेज ईशान, का परिचय कराया। करगेज की दाढ़ी घनी और काली थी, आंखें तीखी और उज्वल। करगेज ईशान मारी की सोवियत का सदस्य था। मजदूरो और किसानो को उस पर बहुत विश्वास था। करगेज कठिनाई के समय सोवियत सिपाहियों को लगातार राशन पहुचा रहा था। चर्नीशोव को भी यह आदमी विश्वासपात्र और बहुत समझदार जान पड़ा। उस ने सोचा, यह आदमी स्थानीय जनता से सोवियत का सम्बन्ध बनाये रखने में सहायक हो सकेगा।

चर्नीशोव ने करगेज ईशान का परिचय पोल्तोरातस्की से करा दिया। पोल्तोरातस्की को भी करगेज ईशान भरोसे का आदमी जचा और उसे भी प्रतिनिधि मण्डल में सम्मिलित कर लिया गया।

चर्नीशोव और दूसरे विश्वासपात्र साथियों से बातचीत करने के बाद पोल्तोरातस्की को मालूम हुआ कि मारी की अवस्था अनुमान से कही अधिक चिन्ताजनक थी। जनता को बहकाने वाले लोग शहर के चारों ओर घिर आये थे और जगह-जगह सोवियत के विरुद्ध खुला प्रचार हो रहा था? चर्नीशोव ने सोवियत सेना के लिये गावों से कुछ घोड़े इकट्ठे किये थे। गाँव वालों ने बहकावे में आकर इन घोड़ो को इधर-उधर कर छिपा लिया। लाल सेना सफेद सेना के आक्रमण का सामना करने की तैयारी में लगी हुई थी। शहर में अभी हुई गड़बड़ की ओर ध्यान देने का किसी को अवसर न था। रेलवे में काम करने वाले मजदूर साथियो ने खबर भेजी कि अश्काबाद से फौजों से भरी गाडियां चली आ रही थी। चर्नीशोव का अनुमान था—कम से कम छः सौ सफ़ेद सिपाही मारी पर आक्रमण करने के लिये आ रहे है।

ताशकन्द से चलते समम पोल्तोरातस्की को आशा थी कि सोवियत विरोधी बग़ावत रक्तपात के बिना ही वश की जा सकेगी परन्तु अब उसे दूसरी बात दिखाई दे रही थी। उस ने मारी में एक सार्वजनिक सभा कर जनता को समझाने का यत्न किया। इस सभा का प्रभाव भी अच्छा हुआ परन्तु ज़ारशाही के छः सौ सिपाहियों से मोर्चा ले सकने की सामर्थ्य सोवियत सेना में न थी। पूरी तैयारी के लिये समय भी न था। सफ़ेद सेना उसी सांझ पहुंचने वाली थी।

पोल्तोरातस्की ने प्रतिनधि मण्डल के सब लोगों को चर्नीशोव के साथ मारी से छब्बीस मील दूर बैरमग्रली की मज़दूर बस्ती मे भेज दिया। स्वय लाल सेना की एक छोटी टुकड़ी ले उस ने चार्दीज़ोव जाकर ज़ारशाही सेना को राह रोके रहने का निश्चय किया। चर्नीशोव उसे ग्रकेला छोड़ कर जाने के लिये तैयार न था। पोल्तारातस्की ने उसे समझाया कि वह ताशकन्द से सोवियत सेना को बुला आया है। यदि उसका निश्चय किया कार्य-क्रम ठीक से निभ गया तो आशका की कोई बात नही और यदि हालत ख़राब होगी तो वह स्वयं ही बैरमग्रली पहुंच जायगा। यह खबर मिल चुकी थी कि ताशकन्द से आने वाली सेना कगान तक पहुच चुकी है।

पोल्तोरातस्की ने तैयारी का अवसर पाने के लिये और ज़ारशाही सेना को राह मे अटकाने के लिये ग्रश्काबाद मे टेलीफोन कर फुन्तिकोव से समझौते की राह निकालने की बातचीत शुरू की। पोल्तोरातस्की ने पहला प्रश्न फुन्तिकोव से पूछा—"ग्रश्काबाद मे क्या हालत है?"—फुन्तिकोव ने टालने के लिये उत्तर दिया, "तुम ग्रश्काबाद आ जाग्रो! यहा की हालत भी मालूम हो जायगी और बात-चीत भी ठीक ढंग से हो सकेगी। पोल्तोरातस्की को इस जाल मे फसना स्वीकार न था। वह तार-घर से लौट रहा था कि उस समय दफ्तर की घड़ी रात के तीन बजा रही थी। काले आकाश मे उज्वल तारे टिमटिमा रहे थे। दिन की गरमी शीतल बयार मे स्टेशन पर शन्टिग करने वाले इजनो की सीटियां और फुफकारो के सिवा और कोई शब्द न सुनाई दे रहा था।

पोल्तोरातस्की तुर्किस्तानी जनता के प्रतिनिधि मण्डल के प्रधान से टेलीफोन पर बात करने के लिये स्टेशन पर पहुंचा। प्रधान से फोन मिलाने मे देर हो रही थी इसलिये पोल्तोरातस्की तिशेको के साथ स्टेशन के प्लेटफार्म पर टहल रहा था। सहसा पूर्व की ओर लाल सेना के मोर्चे से गोली चलने का शब्द सुनाई दिया। फाइंरिगं की आवाज़ बढती जा रही थी। तिशेंको को चौकते देख पोल्तोरातस्की ने कहा—"यह शहर की गड़बड़ी ही है और कुछ नही" परतु जब गोली चलना बहुत देर तक न रुका तो उस ने तिशेको से कहा, "साथी मेरा ख़याल है तुम जा कर देखो बात क्या है।"

"मै तुम्हे अकेले कैसे छोड़ जाऊ?"

"यहाँ एक हुआ या दो, कोई ख़ास फरक नही पड़ेगा। यह शोर बन्द होना चाहिये नही तो सारा शहर बौखला जायगा।"—पोल्तोरातस्की ने आग्रह किया।

तिशेंको झिझक रहा था, क्या करे? पोल्तोरातस्की ने उस के कंधे पर हाथ

रख कर कहा—"साथी, अब झिझकने का समय नहीं। जैसे भी हो इस स्थिति को सम्भालना है। इस काम की जिम्मेवारी पार्टी ने हमें दी है। यहाँ हम दोनो रहें या एक क्या अन्तर पड़ेगा ? मुझे तुम अकेले नहीं छोड़ना चाहते परन्तु वहाँ इतने आदमी खतरे मे है। वहाँ की स्थिति सम्भाल कर तुम तारघर मे आ जाना। मै वहाँ मिलूगा।"

ताशकन्द से टेलीफोन मिलाने में प्रायः एक घटे का समय लग गया। पोल्तोरातस्की ने जन-सभा के प्रधान को मारी की स्थिति समझाई। प्रधान ने आश्वासन दिया कि पहले भेजे गये सिपाहियों के अतिरिक्त वह एक और टुकड़ी तुरन्त मारी की ओर भेज रहा है।

पोल्तोरातस्की बहुत थक गया था। कुछ मिनिट विश्राम कर लेने के लिये वह एक ओर बैठ गया। उसी समय जारशाही के सैनिकों की फौलादी गाड़ी स्टेशन पर आ पहुँची। एक बन्दूक चलने की आवाज से स्टेशन गूंज उठा। पोल्तोरातस्की तुरंत उठ स्टेशन के बाहर खड़े अपने घोड़े की ओर चला परन्तु ज़ारशाही सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और उस के हथियार छीन लिये।

पौ फट रही थी। शहर भर मे जगह-जगह गोलियाँ दग रही थी। स्टेशन का प्लेटफार्म जारशाही के सिपाहियों से भर गया था। तिशेंको अभी तक लौटा न था।

तिशेंको ने अपने सिपाहियों के पास पहुंच कर देखा कि जारशाही सेना की हरावल से उन की मुठभेड़ हो गई है। उस ने हथियारों और गोली बारूद का गोदाम और आवश्यक कागजात तुरंत पीछे भेज देने की आज्ञा दी और अपने सिपाहियों को धीमे धीमे बैरमअली की ओर हट जने के लिये कह दिया। उसे तारघर पहुँचने की जल्दी थी। सोचा, दो सिपाही साथ ले। फिर खयाल आया, यों भी मुझे कौन पहचानता है। यहां आदमियों की ज़रूरत ज्यादा है।

लौटते समय तिशेंको जिधर से भी बचकर निकलना चाहता, ज़ारशाही सिपाही साम . पड़ जाते। वह समझ गया, पोल्तोरातस्की के पास पहुंच पाना कठिन होगा। वह अर्याक बाग की दिवारों की आड़ में होकर आगे बढ रहा था। तार-घर के पास पहुंच कर देखा कि वहां ज़ारशाही सिपांहियों का कब्जा हो चुका था। आड़ में ही ठिठक कर वह सोच रहा था क्या करें ? उसी समय उसे किसी की आवाज सुनाई दी—"यह किस का घोड़ा है।"

"एक बोल्शेविक इस पर सवार था। वह ताशकन्द का कमिस्सार निकला"—उत्तर सुनाई दिया।

'कमिस्सार कहाँ है ?"

"क्या मालूम ? जेल भेज दिया गया कि गोली ही मार दी हो।"

तिशेको के शरीर से पसीना छूट गया। क्या करे ? बैरामअली लौट जाय ? परन्तु पोल्तोरातस्की को खोकर वह चर्नीशोव और दूसरे साथियों को क्या मुंह दिखायेगा ? कुछ तो करना ही होगा ? अपनी जान बचा लेना ही कौन बहादुरी है ? यों ही लौट जाने मे कौन बोल्शेविकपन है ? पर करूं क्या ? कैसे मालूम हो कि पोल्तोरातस्की है कहाँ ?

अचानक याद आया जेल का सुपरिण्टण्डण्ट उस का पुराना परिचित है। अश्काबाद मे दोनों साथ-साथ जेल मे सिपाही थे। सुपरिण्टेण्डेण्ट पुराने ढग का सीधा आदमी था, राजनीति और किसी पार्टी-वार्टी से बेमतलब ! तिशेको ने सोचा दांव चलाया जाय ! शायद सीधा ही पड़ जाय ! दिन भर वह छिपा रहा। रात पड़ने पर अपनी राइफल एक जगह छिपा कर वह निधड़क जेल के दफ्तर मे पहुचा। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उसे पहचाना तो विस्मित देखता रह गया। उसे खूब मालूम था कि तिशेको लाल सेना का कमिस्सार है। जारशाही सेना का कब्जा हो जाने पर वह कैसे वहाँ आ पहुंचा ?

तिशेको सुपरिण्टण्डण्ट की घबराहट भांप कर स्वयम ही बोला—"मैं तुम पर भरोसा करके आया हूं। इस समय तुम्ही मुझे बचा सकते हो !"

"क्यो क्या बात है ?...... मै क्या कर सकता हूं ?"

मै लाल सेना से भाग कर आया हूं। अगर सफ़ेद सेना में सीधे चला जाऊ तो वे लोग गोली मार देंगे या मुझे फिर मोर्चे पर भेज देगे। मैं इस लड़ाई में अपनी जान नही देना चाहता। पुरानी दोस्ती का खयाल कर मुझे यहा कोई काम दे दो। यहाँ का काम मै सब समझता हू।"

सुपरिण्टेण्डेण्ट सन्देह से उस की ओर देखता रहा। तिशेको फिर बोला—मैं अपनी राइफल और रिवाल्वर यहाँ पास ही छिपा आया हू, तुम्हे जरूरत हो ला दूं? मुझे उन का क्या करना है ? तुम चाहो बेच लेना ! हथियार आज कल चौगुनी कीमत पर बिक रहे है।'

सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कुछ पल आंखे झपक कर उत्तर दिया —"अच्छा, सोचूगा। दो चार दिन मे बताऊंगा।"

"मै जाऊं कहाँ ?" तिशेको अधीरता से बोला, "तुम सब बात जानते हो। कहाँ जाऊं ? मुझे कोई काम देदो, मेहतर का, भिश्ती का, जान बचे किसी तरह !"

सुपरिण्टेण्डेण्ट कुछ देर सिर खुजाता सोचता रहा और फिर बोला— "भीतर के चक्कर मे पहरेदार की जगह दे सकता हू।" उंगली उठाकर चेतावनी दी, "देखो, कोई शरारत या धोखा न करना!" स्वर धीमा कर उस ने समझाया, "भीतर के चक्कर में कमिस्सार पोल्तोरातस्की बन्द है। अगर कही वह निकल भागा तो मेरा और तुम्हारा, दोनो का सिर काट लिया जायगा।" आधे घंटे बाद तिशेको जेल के सिपाही की रिवाल्वर लगी पेटी कमर पर कस जेल के भीतर के चक्कर मे पहुंचा।

पोल्तोरातस्की एक काल कोठड़ो मे चुपचाप अकेला बैठा था। उसे मालूम हो गया था कि उसे गोली मार देने का हुक्म हो चुका है। कुछ घण्टो की ही बात थी। अपने बीते जीवन का बाते याद आ रही थी:—बचपन मे धूप में खेलते समय उस के सुनहरी बाल खूब चमका करते थे। कम्पोजीटर की नौकरी की। मजदूरों का प्रतिनिधि बन वह पेत्रोग्राद कांग्रेस मे गया। वहाँ लेनिन का व्याख्यान सुना और बोल्शेविक पार्टी मे सम्मिलित हो गया। फिर ताशकन्द मे बिताये दिन! उस के मन मे असतोष था कि सोवियत के लिये सकट के समय मे, जब एक भी आदमी का खो जाना सोवियत की शक्ति को धक्का पहुचा रहा है, वह मर रहा है। उस का काम अपूर्ण ही रह गया है। सिर झुकाये बैठा वह इसी विचार मे डूबा था। पल पल बीत कर उस की मौत का समय समीप आता जा रहा था......।

पीठ पीछे, कोठरी मे झाकने के लिये दरवाजे मे बने छेद के खुलने और मुदने की आहट दो तीन बार सुनाई थी। पोल्तोरातस्की ने उस ओर ध्यान देना व्यर्थ समझा। उसे जान पड़ा कोई फुसफुसा कर पुकार रहा है—"कामरेड कमिस्सार!"

पोल्तोरातस्की ने घूम कर देखा। छेद से झांकती हुई आखे उसे परिचित जान पड़ी। वह उठकर दरवाज़े पर आ गया। तिशेको ने उसे सिपाही बन कर जेल मे पहुंच जाने की बात बता कर कहा कि वह अवसर की प्रतीक्षा मे है।

पोल्तोरातस्की क्षण भर सोच कर बोला, "तुम ने व्यर्थ मे अपने आप को फंसाया। यहाँ से बच के निकलने की कोई आशा नही। हो सके तो मुझे कागज पेंसिल ला दो।"

तिशेको की जेब मे काग़ज और पेंसिल का टुकड़ा था। वह उस ने पोल्तारातस्की को दे दिया। दरवाजे का छेद मूद कर तिशेको आगे बढ़ा ही था कि उसे जेल दफ़्तर में पहुचने का हुक्म मिला।

सुपरिंटेडेंट घबराया हुआ था, बोला –"बड़ी आफ़त आई। तुम्हें पहचान लिया गया है। हुक्म मिला है कि तुम्हे पहरे से हटाकर पहरे में रखा जाय !"

"मैंने तो पहले ही कह दिया था, अपनी जान तुम्हारे हाथों सौंप रहा हूं" तिशेंको ने धैर्य से कहा—"मै और क्या कह सकता हूँ। तुम जो समझो !"

"मैंने तो उन लोगों को समझाया कि पहचानने में भूल हो रही है। तुम तिशेको नहीं हो। कमाण्डर ने हुक्म भेजा है कि तुम्हें कोठडी में बन्द कर दिया जाय और कल सुबह वह खुद आकर देखेगा। सुनो, तुम अश्काबाद चले जाओ—"

"अश्काबाद ?"

"हाँ, मै तुम्हें पास दे दूंगा। वहाँ जाकर तुम अपनी पुरानी जगह काम शुरू कर दो। इस से किसी पर बात न आयेगी।"

तिशेंको चाहता था जेल से जाने से पहले एक बार पोल्तोरातस्की से मिल ले। सुपरिंटेण्डेण्ट ने तिशेको को यात्रा का पास और जाकर नौकरी लेने के हुक्म की चिट्ठी दे दी। तिशेंको ने कहा—"अश्काबाद के लिये गाड़ी सुबह पौ फटते समय छूटती है। तब तक मुझे जेल मे रहने दो !" उसी समय फोन की घण्टी बजी। फोन पर सफेद सेना के कमाण्डर का हुक्म आ रहा था कि पोल्तोरातस्की को तैयार रखा जाय। उसे गोली मारने के लिये सिपाहियों की टुकड़ी भेजी जा रही है।

तिशेंको तुरन्त अवसर पाकर पोल्तोरातस्की की कोठड़ी के दरवाज़े पर पहुँचा। पोल्तोरातस्की ने एक पत्र लिख रखा था। वह पत्र तिशेको को देकर उस ने कहा—"मुझे जो कुछ कहना था इस में लिख दिया है। यह पत्र साथियों तक पहुंचा दो।" तिशेंको के लिये कुछ उत्तर देने का समय न था। बाहर के बरामदे से सिपाहियों के मिले कदमों के समीप आते जाने की आहट आ रही थी। गोली मारने के लिये सिपाहियों की टुकड़ी आ पहुँची थी। तिशेंको हट कर दूसरी ओर के बरामदे में चल गया।

पोल्तोरातस्की की कोठडी का ताला खोला जाने की आहट तिशेंको ने सुनी और पोल्तोरातस्की की ऊँची निर्भय आवाज सुनी—"तुम लोग अपनी मनुष्यता खो चुके हो। तुम लोगों को शिकारी कुत्तों की तरह काम में लाया जा रहा है। तुम लोग मुझे गोली मार सकते हो परन्तु इस से क्रान्ति की सफलता में बाधा नहीं पड़ सकती। मेरे खून की एक-एक बूंद से क्रान्ति के सैकड़ों बहादुर सिपाही पैदा होंगे !"

सिपाहियों के कोठड़ी से लौटते कदमो की आहट सुन तिशेंको से रहा न गया। वह भी लौट कर सिपाहियों की टुकड़ी के पीछे-पीछे चलने लगा और एक हाथ से अपनी पेटी से लटके रिवाल्वर को खोलता जा रहा था। परन्तु जल के आंगन मे पहुचकर उस ने देखा कि पोल्तोरातस्की को बचा सकना सम्भव न था। आंगन सशस्त्र घुड़सवार सिपाहियों से भरा था। मै अपनी जान चाहे दे दूं परन्तु कमिस्सार को बचा सकने की कोई सम्भावना नहीं —उसने सोचा— अपनी सेना का एक आदमी और घटेगा और फिर कमिस्सार का पत्र, इस पत्र मे अवश्य ही बहुत आवश्यक बाते होगा, यह पत्र भी बीच में रह जायगा, शत्रु के हाथ पड़ जायगा।

उसी समय तिशेको के समीप खड़ा सवार अपने घोड़े से उतर समीप के नल पर पानी पीने लगा। तिशेको के दिमाग मे बिजली सी चौक गयी। वह लपक कर घोड़े की जीन पर जा बैठा और घोड़े को जोर से एड़ लगा कर जल के खुले हुये फाटक की ओर घुमा दिया।

दूसरे सिपाही कुछ समझ पाये इस से पहले ही तिशेको फाटक से सौ गज परे निकल चुका था। उस के पीछे धड़ाधड़ गोलिया चलाई गई परन्तु घने अंधेरे मे उसे कोई देख न पाया। पोल्तोरातस्की भी यह घटना देख रहा था। अपने सिपाही की इस विजय और अपना पत्र साथियो के हाथ मे पहुच जाने के विश्वास से वह सीना फुला कर दुश्मन की गोली का सामना करने के लिये तैयार हो गया।

बैरमअली बहुत छोटा सा कस्बा था। यहाँ लाल सेना को बहुत निराशा हुई। यहाँ लाल सेना की कोई टुकड़ी पहले से न थी। ताशकन्द से भेजी गई सेना भी अभी तक न आई थो। रात भर में गावो से किसान बटोर कर उन्हे हथियार चलाना सिखाकर सफ़ेद सेना का सामना कैसे किया जा सकता था। सफ़ेद सेना तेजी से बैरमअली की ओर बढती आ रही थी। चर्नीशोव परेशान था, क्या करे? मारी सफद सेना ने ले लिया था। वहाँ से लाल सेना पीछे हटकर बैरमअली मे आ गई थी। इस सेना के लगभग आधे सिपाही बैरमअली मे खेत रहे थे। तिशेको और पोल्तोरातस्की का कुछ पता न था। एक बार उस के मन मे आया कि किसी आदमी को, करगेज-ईशान को मारी भेज कर उन दोनो की खोज कराये परन्तु खबर लेने जाने वाला इतनी जल्दी लौट कर न आ सकता था।

चर्नीशोव ने साथियों को बुला कर राय ली। तय हुआ कि बैरमअली

छोड़ चार्दीजोव में मौजूद माल सेना के साथ मिला जाये। दो ट्रेनें तैयार की गईं। गाड़ियां छोड़ी जाने से पहले चर्नीशोव रेत के एक टीले पर चढ कर अन्तिम बार इस स्थान को देख रहा था। उन से पहले पूरब की ओर और फिर पश्चिम की ओर आँखें दौड़ाई। पूर्व में सूर्य अभी ही 'सुलतान संजर' के किले के पीछे धरती से ऊपर उठा था। किरणे अभी स्टेशन की छत और रुई के कारखाने की चिमनी को ही छू रही थी। चिमनी से धुआं नही निकल रहा था। कारखाने ने एक सीटी दी परन्तु वह बीच मे ही रुक गई। मजदूर भी आते हुये दिखाई नहीं दिये। बल्कि बहुत से लोग अपने बीबी बच्चों और असबाब के साथ स्टेशन की ओर चले आ रहे थे।

यह रुई का कारखाना सोवियत ने अभी हाल में मजदूरों के सहयोग से बनाया था - "मजदूरों के पसीने से बना यह कारखाना क्या शोषकों के हाथ चला जायगा? जिस मजदूर वर्ग को हमने उत्पीड़न से मुक्त कर स्वतंत्र मनुष्य बनाया है, क्या वे फिर पूंजीपति शोषको द्वारा कुचले जायँगे? ... नही, यह न हो सकेगा।"- चर्नी मन ही मन सोच रहा था। मारी की ओर से तोपों की गरज सुनाई दे रही थी। चर्नीशोव ने अनुमान किया यह सफेद सेना और ताशकन्द सेनाओं की मुठभेड़ हो रही है। अब चलने में अधिक विलम्ब करना उचित नहीं। उस ने पहली ट्रेन छोड़ी जाने का हुक्म दे दिया। उसी समय उसे दूर से एक घुडसवार मारी की ओर से आता दिखाई दिया। पहले तो उस ने समझा कि यह उस के खोजी सिपाहियों में से कोई होगा जिन्हें उस ने सफ़ेद सेना की खोज खबर लेने भेजा था परन्तु सवार के समीप आजाने पर उस ने देखा यह कोई और है, घोड़ा बहुत थका टूटा पसीने से तर और लड़-खड़ाता सा मालूम हो रहा था।

सवार समीप आकर घोड़े से कूद पड़ा। यह तिशेंको था। चर्नीशोव ने पूछा "पोल्तोरातस्की कहाँ है?"

तिशेंको कुछ उत्तर न दे सिर झुकाये खड़ा रह गया। बहुत से सशस्त्र मजदूर सिपाही चारों ओर से घिर आये थे और चिन्ता तथा उत्सुकता से तिशेंको के चेहरे की ओर देख उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। तिशेको ने कुछ उत्तर न दे अपनी जेब से पत्र निकाल चर्नीशोव को थमा दिया। पत्र लेते समय उस के हाथ काँप रहे थे। पत्र ले चर्नीशोव ने सब को सुनाने के लिये पढ़ना शुरू किया। उस का स्वर भी काँप रहा था:—

"प्यारे सोवियत मजदूरो और सिपाही साथियो, सफ़ेद सेना के अफ़सरों

ने मुझे गोली मार देने का हुक्म दिया है। मैं कुछ ही घंटों के लिये और जीवित हूँ। इस थोड़े से मूल्यवान समय में मैं अपना यह सदेश लिखकर आप को भेज रहा हूँ।

"प्यारे साथियो, क्रान्ति विरोधी लोग मेरी जान ले रहे हैं। मुझे विश्वास है कि मेरी मृत्यु से क्रान्ति की सफलता मे बाधा नही पड़ेगी। मेरा स्थान मुझ से अधिक योग्यता और दृढता से काम करने वाले साथी ले लेंगे और मेहनत करने वाली श्रेणी अपने बधनो से मुक्त होकर मनुष्य-समाज को विकास और स्वतंत्रता की ओर ले जायगी।

"साथियो, आज मै बिदाई ले रहा हूँ। मै स्वयं एक मजदूर हूँ। मृत्यु के समय मुझे केवल यह चिन्ता है कि मेरी मृत्यु से आप लोग हतोत्साह और निराश न हों। मेहनत करने वाली श्रेणी की मुक्ति के संघर्ष में यदि किसी भी प्रकार की शिथिलता आयेगी तो यह न केवल तुर्किस्तान की मेहनत करने वाली श्रेणी के साथ विश्वासघात होगा बल्कि इस से सम्पूर्ण संसार की मेहनत करने वाली श्रेणी के भविष्य को धक्का लगेगा। आप की यह शिथिलता और उत्साह की कमी अक्टूबर की समाजवादी क्रान्ति मे अपने प्राण निछावर करने वाले वीरो के प्रति विश्वासघात होगी।"

"साथियो, मै आप को विश्वास दिलाता हूँ कि मौत कोई बहुत बड़ी बात नही, न मुझे उस के लिये दुख है। मुझे दुख है इस बात के लिये कि हमारे अपने कई साथी ज़ारशाही के बचे हुये भूतो के भय और प्रभाव से स्वयं क्रान्ति विरोधी मार्ग पर चल कर प्रजातंत्र और समाजवाद की सफलता की राह मे अड़चने डाल रहे है, यह लोग स्वयं अपनी, अपने परिवारों और अपनी श्रेणी की कबरें खोद रहे हैं। इन की यह कायरता और गद्दारी हमारी श्रेणी के उद्धार के लिये आत्म-बलिदान करने वाले वीरों की स्मृति के लिए कलंक बन रही है।"

"साथियो, आज मेहनत करने वाली श्रेणी को बहुत फूट फरेब और जालसाजी से वश मे करने की कोशिश की जा रही है। हमारे शोषक सामंत-शाही और पूंजीपति खुली लड़ाई मे मेहनत करने वाली श्रेणी से परास्त होकर हमें धोखे और फरेब से वश में कर रहे है। आपको समझाया यह जाता है कि क्रान्ति विरोधी शक्तियाँ सोवियत के विरुद्ध बग़ावत नहीं कर रहीं वह केवल सोवियत के कुछ लोगों के 'अत्याचार' के विरूद्ध लड़ रही हैं। साथियो इस धोखे को पहचानो। हमारी श्रेणी का राज व्यक्तियों का राज नहीं। यह

श्रेणी का राज है। हमारे शासन को चलाने वाले हमारे प्रतिनिधि हैं। उनके अच्छे बुरे काम की जांच हम स्वयं करेंगे। यदि शत्रु हमारी श्रेणी के किसी भी व्यक्ति पर हाथ उठाते हैं तो यह सम्पूर्ण श्रणी पर हमला है। राष्ट्रीयता और आज़ादी के नाम पर इस सोवियत विरोधी बग़ावत के नेता अज़ीज़ खाँ बुखारा का अमीर, ज़ार के पुराने अफ़सर और पूँजीपति लोग तथा इन के विदेशी सहायक हैं जो अपने शोषण के अधिकार को कायम रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारी शक्ति का सामना वे नहीं कर सकते इसलिये वह हमारी श्रेणी मे फूट डालकर हमे निर्बल करने की चाल चल रहे हैं! आप क्या इन लोगों से यह आशा कर सकते हैं कि यह लोग अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार कर आपका हित करने के लिए ही सब कुछ कर रहे हैं?

"साथियो, जब तक तुम्हारे हाथ मे शस्त्र है तुम दुर्जेय शक्ति हो! सम्पूर्ण समाज का जीवन तुम्हारे हाथो मे है, शहरों और गात्रो की सब पैदावार, यातायात, बिजली, पानी भोजन सब कुछ तुम्हारे हाथ मे है, फिर तुम असमर्थ क्यों हो? केवल इसलिए कि तुम अपनी सम्मिलित श्रेणी शक्ति को भूल जाते हो! साथियो, आज तुम अपनी मुक्ति के और अधिकार प्राप्त करने के मार्ग पर बहुत आगे बढ़ चुके हो। इस के लिये हमारी श्रेगी ने बहुत बड़ा मूल्य दिया है। आज कदम पीछे हटाना बड़ी भारी भूल होगी। इस भूल से हमने जो कुछ पाया है, सब कुछ खो बैठेंगे। अब हमारे पीछे दुश्मन और भी अधिक बलवान, चौकन्ने और तैयार हो जायँगे और दुबारा आगे बढ़ने के लिए हमे पहले से चौगुनी कुर्बानी और कीमत अदा करनी पड़ेगी।

"साथियो, मेरा अन्तिम संदेश यही है कि अपनी सेना मे से विश्वासघाती और क्रान्ति विरोधियो को चुन-चुन कर निकाल दीजिये और अपनी मुक्ति के संग्राम मे अपनी पूरी शक्ति से आगे बढिये। इस क्रान्ति की सफलता मे यही आप के जीवन की सम्भावना है?

आपका साथी,

पी० पोल्तोरातस्की"

"प्यारे साथियो यही मेरा संदेश है। मुझे अपनी मृत्यु के लिए कोई खेद या दुःख नही। मुझे विश्वास और संतोष है कि मै अपने और अपनी श्रेणी के जीवन के उद्देश्य को विश्वस्त और योग्य हाथों में सौप रहा हूँ।

आधी रात जुलाई २१, १९१८ पी० पोल्तोरातस्की"

इस पत्र को सुन कर सिपाहियों ने दांत पीस लिये। उन की आंखों में

आँसू छलक आये थे, उन्हें छिपाने के लिये वे इधर-उधर देखने का बहाना कर रहे थे।

पत्र समाप्त कर चर्नीशोव चुप रह गया। वह कुछ कह न सका। पोल्तोरातस्की के शब्द पढ़ दिये जाने पश्चात् कुछ और कहने की आवश्यकता भी क्या थी ? फिर भी दाँतों से ओंठ काट कर वह बोला —

"हम लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि साथी पोल्तोरातस्की के संदेश को पूरा करेंगे।"

तुरन्त पोल्तोरातस्की के इस पत्र की सैकड़ों लिपियाँ लिखी गईं और स्टेशन कारखानों और ट्रेनों में जगह-जगह यह लिपियाँ चिपका दी गईं।

चर्नीशोव ने करगेज़ ईशान को कुछ साथियो के साथ पीछे छोड़ दिया। उसे वही काम सौंपा गया जो तेजेन में अशीर को सौंपा गया था। पोल्तोरातस्की के पत्र की एक कापी करगेज को देकर चर्नीशोव ने कहा—"इस पत्र की जितनी अधिक लिपियां बन सकें बनवा कर गाँव-गाँव बाँट दी जाये। हमारी सब से बडी शक्ति हमारी श्रेणी-चेतना और अपनी श्रेणी की शक्ति को पहचानना ही है।"

२५

तेजेन पर कब्जा कर लेने के बाद जनता पर अपना आतंक जमाने के लिये अज़ीज़खाँ ने क्रूरता के नये ढग और तौर शुरू किये। उस ने अनाचार और अपराध को जड़ से खोद डालने की घोषणा कर दी। चोरो को चौक बाज़ार मे खड़ा कर कोड़े लगा कर खाल उतार दी जाती। नशाखोरों को इस से भी विकराल दण्ड दिया गया।

होराज बक्शी की आयु बहुत अधिक हो चुकी थी। हाथ पांव से भी रह गया था। उस की अफ़ीम की आदत छोड़े न छूटी। अज़ीज़खाँ ने उसे चौक के एक खम्भे से फाँसी लगवा दिया और बक्शी के सीने पर इश्तहार चिपका दिया गया—"यह अफ़ीम खाने का दण्ड है।"

जनता अज़ीजखाँ के नाम से काँपने लगी। अज़ीज के लिये यही सब से अधिक सतोष की बात थी।

तेजेन स्टेशन से मारी की ओर सफ़ेद सेना के सिपाहियों से भरी बीसियों ट्रेनें आ चुकी थी। अब लगातार माल गाड़ियों के खुले ठेलो पर लम्बी-लम्बी सूड़ों वाली बड़ी-बड़ी तोपे उस ओर जा रही थी। यह तोपें पल में हज़ारों आदमियों को भस्म कर देने के लिये क्रोध भरी अपनी सूंड़े आकाश की ओर उठाये चली जा रही थीं।

अज़ीज़ ने अपने पुराने सिपाहियों और नये भरती किये सिपाहियों को पल्टनों और कम्पनियों में बांट कर संगठित कर लिया। प्रत्येक कम्पनी में सफ़ेद सेना का एक-एक अफ़सर भी लगा दिया गया। शहर के व्यापारियों और अमीर घरानों के जवानों ने एक स्वयं-सेवक सेना अज़ीज़ की सहायता के लिये बनाली। शहर के नंगे-भूखे ग़रीबों को भी अज़ीज़ ने भरती कर लिया। जो कुछ जैसा

कुछ कपड़ा उन्हे मिला बाँट कर बन्दूकें भी दे दीं। कोई सिर्फ कोट पहने था तो कोई सिर्फ बनियान कोई सिलवार पहने था तो कोइ निकर या पायजामा। इस नई सेना को भी अज़ीज़ ने ट्रेन पर सवार करा कर सफ़ेद सेना के पीछे युद्ध के मोर्चे की ओर भेज दिया।

इस धावे मे अरतैक भी अपनी कम्पनी के साथ भेजा गया। अरतैक निरंतर अवसर की प्रतीक्षा मे था कि सोवियत सेना से सम्पर्क हो तो उन से जा मिले परन्तु सोवियत सेना की स्थिति के विषय में उसे कुछ भी मालूम न था।

सफ़ेद सेना और अजीज़ की पचमेल सेनाओ की ट्रेनों का यह काफिला मारी के स्टेशन पर बहुत देर तक रुका रहा। अरतैक के लिये यह विलम्ब असह्य हो रहा था। रात के ग्यारह बजे थे। वह अपनी गाड़ी से उतर अधेरे मे प्लेटफार्म पर टहलने लगा। उस समय भी गाड़ियो के आपस मे टकराने के शब्द इंजन की सीटियों और सिपाहियों के हो-हल्ले से उस का मन और भी खिन्न हो रहा था। वह स्टेशन के सूने भाग की ओर निकल गया। टहलने से उसे कुछ भी शान्ति न मिली। अपरिचित कोलाहल और दुर्गंध से उस का सिर दर्द करने लगा। लेट जाने के विचार से वह अपनी गाड़ी की ओर लौटने को था कि अधेरे मे एक आदमी एक गाड़ी के नीचे से दुबक कर निकलता हुआ दिखाई दिया। जान पड़ता था कि आदमी या तो किसी दूसरे आदमी को खोज रहा है या अपनी गाड़ी भूल गया है। यह आदमी अरतैक की ओर ही आ रहा था। अधेरे मे भी उस का गोरा चेहरा गोल दाढी से घिरा जान पड़ रहा था परन्तु पहचान पाना कठिन था। अरतैक को देख आदमी उस की ओर बढ़ आया और सहमते हुये बोला—"भैया, यह क्या अजीज़खा की फौज है?"

"हूं"—अरतैक ने उत्तर दिया, "तुम्हे अजीज़खां से क्या काम है?"

"नही, मुझे एक दूसरे आदमी से काम है, शायद तुम उसे जानते हो?"

"इस फ़ौज मे ऐसा कौन आदमी है जिसे मै नही जानता?"

"मै अरतैक बबाली से मिलना चाहता हूँ।"

अरतैक ने उस के चेहरे को घूर कर देखा और प्रश्न किया—"अरतैक बबाली से तुम्हें क्या मतलब है?"

"उसे एक सन्देश देना है भैया।"

"मै ही हूँ अरतैक बबाली।"

अब इस व्यक्ति ने अरतैक की ओर सन्देह से देख प्रश्न किया—"तेजेन के रूसियों में कोई तुम्हारा परिचित था?"

अरतैक को सब से पहले चर्नीशोव का ही नाम याद आया उस ने उत्तर दिया—"चर्नीशोव को मैं खूब जानता हूँ।"

"चर्नीशोव ने तुम्हें सलाम कहा है........"

अरतैक ने अपना हाथ इस आदमी के कंधे पर रख दिया। आदमी कुछ सहम कर चुप हो गया। अरतैक ने आश्वासन दिया—"घबराओ नहीं, भरोसा रखो, डरने की बात नहीं है? तुम्हारा नाम क्या है?"

"करगेज़ ईशान!"

"चर्नीशोव से कहाँ मिले?"

करगेज ने चारों ओर नज़र फिरा कर देखा कि आस-पास कोई सुनने वाला तो नहीं और अरतैक को 'मारी' और 'बैरमअली' की पूरी घटना सुना दी। उस ने यह भी बताया कि सोवियत के निर्णय से कुलीखां को जनता के हथियारों की चोरी करने के अपराध मे गोली मार दी गई है।".....चर्नीशोव तुम्हें बहुत याद करता है। तिशेको, और अशीर भी तुम्हे बहुत याद करते है और कहते है कि अब तो तुम खूब समझ गये होगे कि जनता का शत्रु कौन है और मित्र कौन? यदि तुम्हे जनता के हित का खयाल है तो अब और देर कये बिना तुम्हें सोवियत की सहायता के लिये तुरंत कदम उठाना चाहिये।

करगेज़ से बातचीत करते समय अरतैक को सन्देह हो रहा था पिछली गाड़ी से कोई आदमी उन्हें ताक रहा है। वह करगेज़ को बांह से थाम गहरे अंधेरे में ले गया परन्तु अरतैक के मन मे खटका बना ही रहा कि कोई उस का पीछा कर रहा है इसलिये बहुत धीमे स्वर में उस ने करगेज को समझाया "मै केवल अवसर की प्रतीक्षा मे हूं। यहाँ पल-पल काटना मुझे मुसीबत हो रहा है। अभी दिखाने को मै अज़ीजखां की सेना के साथ हू परन्तु मै इस की ओर से लड़ूंगा, नहीं। मौका पाते ही चर्नीशोव की सेना से जा मिलूंगा।" अरतैक ने बात समाप्त कर करगेज़ से अपनापन जताने के लिये हाथ मिला कर बिदा ली। करगेज़ समीप खड़ी गाड़ी के नीचे दुबक कर किसी ओर चला गया और अरतैक अपनी गाड़ी में जा बैठा।

करगेज कुछ कदम ही जा पाया था कि सफ़ेद सेना के जासूसों ने उसे घेर कर गिरफ्तार कर लिया। करगेज़ की तलाशी लेने पर उस के पास पोल्तो-रातस्की के पत्र की कई प्रतियाँ मिलीं। उस के कम्युनिस्टों का जासूस और प्रचारक होने में कोई सन्देह न रहा। सफ़ेद सेना के लोगों ने अज़ीज़ को स्थानीय शासक मान कर करगेज़ को उसी के हाथ सौंप दिया। करगेज़ तुर्कमान था

तिस पर मौलवी भी। सफ़ेद सेना के ज़ारपक्षी अफ़सरों की चाल थी कि अज़ीज़ख़ाँ करगेज़ ईशान को सज़ा देगा तो तुर्कमान लोगों में परस्पर झगड़े का कारण बन जायगा। यह अफ़सर तुर्कमान लोगों की एकता फूटी आंखों न देख पाते थे।

मारी के बे लोगों ने गवाही दी कि कुछ दिन पहले करगेज़ ईशान ने मारी के बाज़ार में सभा करके प्रजा को बोल्शेविकों का साथ देने के लिये उकसाया था। अज़ीज़ खां को और क्या चाहिये था ? वह तो सदा मौके की खोज में रहता था कोई ऐसी बात कर पाये जिस का चर्चा दूर तक हो और लोगों पर उस का आतंक गहरा हो जाय।

करगेज़ को अज़ीज़ के सामने रात के एक बजे पेश किया गया। उस समय अज़ीज़ के साथ उस की गाड़ी मे यात्रा करने वाले उस के दरबारी और दूसरे सब अफ़सर सो रहे थे। अरतैक अजीज़ की गाड़ी से अगली गाड़ी मे था। इस गाडी मे भी लोग सो रहे थे। अज़ीज़ के साथ इस समय केवल मदीर ईशान था। दो सिपाहियो को अजीज़ ने बुलवा लिया।

अज़ीज़ ने करगेज़ से बड़ी सज्जनता से बातचीत की और बातचीत समाप्त हो जाने पर उस ने अपने नौकर पेलॉग को हुक्म दिया -"जाओ, ईशान को कुत्तों से बचाकर पहुचा आओ !"

पकड़े जाने के बाद से करगेज़ बहुत भयभीत था परन्तु अज़ीज़ के व्यवहार से उसे बहुत कुछ भरोसा हो गया। कुत्तों से बचकर पहुँचा आने के हुक्म से उसे फिर सन्देह हुआ। शहर मे कोई खास कुत्ते न थे और गाड़ियों के आस-पास तो कोई कुत्ता दिखाई न दिया था। करगेज़ ने सोचा, शायद अज़ीज़ का सकेत मारी के बे लोगों से है या वह सफ़ेद सेना के अफ़सरों को ही कुत्ता पुकारता है ? या मुझे ही कुत्ता कह रहा है ......सहमती हुई धीमी आवाज़ मे उस ने अज़ीज़ से निवेदन किया—"मालिक की मेहरबानी है, क्या तकलीफ़ कीजियेगा मैं खुद ही चला जाऊगा।"

अज़ीज होंठ सिकोड़ मुस्कराकर बोला—"मौलाना, रात बहुत हो गई है। ज़माना खराब है। किसी का क्या भरोसा ? यह लोग तुम्हें कुत्तों से बचाकर पहुंचा देगे।"

कुत्तों से बचाने की बात करगेज़ ईशान को फिर खटकी। उस ने फिर अपनी बात दोहराई—"कोई ज़रूरत नही मालिक, कुत्तों का कोई डर नही है आप परेशान न हों।

"नहीं नहीं"—अज़ीज़ ने आग्रह दिया, "कुत्तों का डर सदा ही है और खास कर लड़ाई के समय ! बेपरवाही ठीक नही ।" अपने नौकर की ओर देख अज़ीज़ बोला, "ले जाओ !"

"ले जाओ !" हुक्म सुन कर तो करगेज़ कांप उठा । उस के पाँव पत्थर हो गये । उसे चलते न देख सिपाही उतावला हो बोल उठा—"चलो मौलाना देर न करो ।"

सिपाही की इस रुखाई से करगेज़ का दिल और भी बैठ गया । फिर भी उस ने साहस कर, अज़ीज़ को ओर कातर दृष्टि से देख विनय की—"मालिक खान,···· ।"

"अजीज़खाँ झुँझला उठा । उस ने अपने नौकर को धमकाया—"पेलांग ।"

प्राय: अठाइस वर्ष की आयु के एक कुरूप जवान ने आगे बढ करगेज ईशान को दोनों कंधों से थाम दरवाजे की ओर घुमा दिया । उस ने करगेज़ के कधों को इतने ज़ोर से दबोचा कि कंधे प्राय: सुन्न हो गये । इस पर भी करगेज़ के कदम आगे न बढे । वह फिर पीछे घूम कर अजीज से प्रार्थना करना चाहता था । इतने मे उस की पीठ पर बन्दूक का एक कुन्दा जोर से पड़ा । उस के पाँव उखड़ गये । घसीटता हुआ वह कमरे से बाहर चला गया ।

इस के बाद करगेज ईशान का कुछ पता न चला ।

अगली संध्या अज़ीज़ की सेना का काफिला बरखानी स्टेशन पर पहुंचा । वहाँ से चार्दीज़ोव एक पड़ाव आगे था । यहाँ सिपाहियो से भरी वड़ी-बड़ी बारह ट्रेनें पहले से खडी थीं । सिपाहियों और उन के घोड़ों को गाड़ियों से उतारा गया । स्टेशन के समीप फैले रेत के टीलों पर दूर-दूर तक सिपाही छा गये ।

इतनी बड़ी सफ़ेद सेना को देख अज़ीज़ मन ही मन सोच रहा था, यहाँ इतनी बड़ी सेना इकट्ठी करने का क्या मतलब है ? चार्दीजोव को तो मै अपनी सेना से ही दिन भर में जीत सकता था ?"

पौ फटने से पहले ही सफ़ेद सेना ने चार्दीजोव की ओर कूच कर दिया । अज़ीजखां भी मदीर ईशान और अपने जंट अफ़सर के साथ घोड़ों पर सवार हो सेना के साथ चला । केवल सफ़ेद सेना के पादरी, अज़ीज़खाँ के साथ के मौलवी और फौजी रसोईये ही पीछे रह गये । एक साथ मिल कर खड़ी, सिपाहियों से खाली ट्रेनें शहद की मक्खियों के खाली छत्तों जैसी जान पड़ रही थीं ।

दोपहर तक सफ़ेद सेना आगे बढ़ती और अपने मार्ग में आये इलाकों पर

कब्ज़ा करती हुई डीपो तक पहुँच गई। इस समय लाल सेना की ओर से उन की कज़ान रेजिमेण्ट आगे आई और उन्होंने पीछे हटती लाल सेना की ओर से पलट कर धावा बोल दिया। लाल सेना की सब कम्पनियां पीछे हटना छोड़ उलट कर हमला करने लगीं। सफ़ेद सेना चारों ओर से सिमिट कर पीछे हटने लगी। अज़ीज़ खाँ की घुड़सवार सेना ने पीछे न हट कई पैंतरे बदले परन्तु उस की पैदल सेना को पीछे लौटना पड़ा।

अरतैक अपने सौ सवारों को लिये सफ़ेद सेना के हमले का जोर घटा देने के लिये कई मोर्चे बदल चुका था। वह अपने सवारो को ले दख्खिन की ओर से शहर का चक्कर लगाता हुआ, आमू के रेलवे पुल की ओर बढ गया। उसे आशा थी वहाँ लाल सेना से सम्पर्क हो सकेगा लेकिन इस ओर भी सफेद सेना जमी हुई थी। अरतैक ने समझा कि शहर सफेद सेना के हाथो आ गया है और वह लौट पड़ा। अपने सवारों को लिये वह दल-दल में रुका रहा और सूर्यास्त के समय अज़ीज़खाँ की छावनी मे लौटा। लौट कर उसे अपनी भूल मालूम हुई, सफ़ेद सेना शहर पर कब्जा नही कर सकी थी बल्कि असफल हो कर आमू के पुल से पीछे हट रही थी। यदि वह उस समय इस सेना पर हमला कर देता तो इस सेना का पीछा करती लाल सेना इन्हे समाप्त कर देती और अरतैक लाल सेना से जा मिलता परन्तु अवसर हाथ से जा चुका था।

२८

चार्दीजोव के मोर्चे पर लाल सेना से मार खा कर सफेद सेना तेज़ी से पीछे हटती जा रही थी। अंग्रेज अफसरों ने सफ़ेद सेना की सहायता के लिये बैरमअली मे हिन्दुस्तानी फौज की एक मशीनगन कम्पनी भेजी थी। इस कम्पनी ने रात भर के लिये लाल सेना की राह रोक दी परन्तु दिन चढ़ते ही इन्हें भी पीछे हट जाना पड़ा। चार दिन तक कदम-कदम पर सफ़ेद सेना को धकेलती लाल सेना लड़ती रही और उन्होंने मारी शहर पर कब्जा कर लिया। सफ़ेद सेना और उस की सहायक ब्रिटिश सेना बहुत नुकसान उठा कर पीछे हट गई।

सफेद सेना और ब्रिटिश हिन्दुस्तानी सेना के साथ-साथ अज़ीज़ भी अपनी सेना को लिये पीछे हट रहा था और मन ही मन पछता रहा था कि इन लोगों के साथ मैं किस झमेले मे आ फंसा ? उसे जुनैदखाँ की नसीहत याद आ रही थी कि हमारी शक्ति रेतीले मैदानों में ही है। रेलों के चक्कर में फंसे तो मारे जायंगे। शहरों पर कब्जा करने के सैनिक ढग से उसे क्या मतलब था ? वह चाहता था जैसे-तैसे बच निकले और अलगान के अपने डकैती के किले मे जा छिपे जहाँ से समय पर, राह चलते निस्सहाय काफिलो पर अपनी शक्ति बढाता जाय ! परन्तु चारों ओर से घिर आई लाल सेना निकल भागने का अवसर ही न दे रही थी।

सफ़ेद सेना तीन दिन तक लगातार पीछे हट कर तेजेन पहुंची तो यहाँ भी लाल सेना ने पीछा न छोड़ा और उन पर आ पड़ी। अभी पौ भी न फट पाई थी कि अंधियारे अकाश को चीर कर सुर्ख दहकती हुई गोलियाँ चलने लगीं। तुरंत ही गोला-बारी भी शुरू हो गई। अज़ीज़ ने अपनी सेना को तुरंत पीछे हट जाने का हुक्म दिया।

अरतैक सोच रहा था कि अपने सौ सवारों को ले दक्खिन की ओर से रेलवे लाइन पार कर, शहर की ओर जा लाल सेना से मिल जाये। उसे भरोसा था कि अपने गांव और घर की इस भूमि मे वह कदम-कदम धरती से परिचित है और यहाँ वह सुविधा से अपने साथियों से जा मिलेगा।

वह अपने सवारों के साथ रेलवे लाइन के पार पहुंचा ही था कि एक ट्रेन चली आती दिखाई दी। इस मे सफेद सेना का काम करने वाले मजदूरों की कम्पनी थी। इस ट्रेन के पीछे-पीछे दूसरी ट्रेन आ रही थी इस में ब्रिटिश हिन्दुस्तानी फौज का मशीनगन का रिसाला था। अरतैक ने दांतों से होठ काट कर मन ही मन सोचा—यह है इन सम्राज्यवादियों की चाल ! खतरे मे पहले रूसी सेना को भेजते है और उस के पीछे अपनी सेना को ! वह भी हिन्दुस्तानी सेना ! एक देश को गुलाम बना, उसे लडा कर दूसरे देशों पर कब्जा करना; यह है साम्राज्यवाद की चाल।

तैक प्रतीक्षा के सिवा और क्या करता ? सूर्योदय के समय लाल सेना ते शहर मे घुस चुकी थी हालांकि शहर के उत्तर-पश्चिम की ओर ों मे अज़ीज की सेना का रिसाला लाल सेना से अब भी उलझ रहा रतैक और उस के सवारो ने लड़ाई में कोई भाग न लिया। वे लोग ाड़ियों के जगल को चीरते हुये तेजेन की ओर बढ रहे थे। इन्हें देख त्रु समझ लाल सेना इन पर भी गोली बरसाने लगती इसलिये खुले मं ी राह शहर की ओर आगे बढना सम्भव न था।

अरतैक को शहर की ओर दूरी पर तिशेको दिखाई दिया। अरतैक ने चिल्ला कर उसे नाम से पुकारा। बन्दूकों की गरज मे अरतैक की पुकार तिशेको तक न पहुंची। तिशेको ने अपनी ओर बढ़ते शत्रु के रिसाले को देख लिया था। उस से अपनी कम्पनी को झाड़ियों में दुबक कर इस ओर बढने और शत्रु के रिसाले पर हमला करने का हुक्म दे दिया। अरतैक यह सब देख रहा था परन्तु वह रुका नही। उस ने सवारों को हुक्म दिया कि "सरपट शहर की ओर बढो" वह स्वयं सब से आगे हाथ उठाये तिशेको को पुकारता चला जा रहा था।

तिशेंकों ने अपने नाम की पुकार सुनी और अरतैक की आवाज़ पहचानी। अपने सिपाहियों को 'फायर' रोकने का हुक्म दिया परन्तु इस से पहले ही चल चुकी एक गोली अरतैक के कंधे में जा धंसी। उस के हाथ से राइफल गिर गई और घोड़े की लगाम भी छूट गई। गिरने से बचने के लिये अरतैक

ने दूसरे हाथ से घोड़े के श्रयाल थाम लिये । अरतैक का घोड़ा, मालिक के ज़ख्मी हो जाने और गोलियों की बौछार से घबरा कर लौट पड़ा और अरतैक को लिये सरपट भागा जा रहा था। तिशेको उस के पीछे-पीछे अरतैक को पुकारता दौड़ा आ रहा था। अरतैक उस की पुकार सुन न सका। वह अपने घोड़े को वश न कर सकता था। घोड़े की पीठ पर सम्भले रहना ही उस के लिये दूभर हो रहा था।

तेजन मे हार कर सफ़ेद और ब्रिटिश सेना काहका स्टेशन की ओर पीछे हट रही थी। अश्काबाद की राह मे सफ़ेद सेना को कई सुरक्षित मोर्चे मिल गये। ईरान की ओर से नयी ब्रिटिश फौजें भी उन की सहायता के लिये आ मिली। यहां सफेद और ब्रिटिश सेना ने नये सिरे से पक्के मोर्चे जमा लिये। लड़ाई जम कर होने लगी।

अज़ीज़खां तेजेन से ही अपनी सेना को ले अलगान भाग गया था। लाल सेना काहका मे सफ़ेद सेना के मुकाबिले मे उलझी हुई थी। इस अ[illegible] लाभ उठा अज़ीज़ ने तेजेन और अलगान के बीच अपनी सेना का एक [illegible] लगा दिया और अलगान मे स्वतंत्र खान बन बैठा।

अज़ीज ने लाल सेना का मुकाबिला करने के नाम पर सफेद सेना से [illegible] तो काफ़ी हथिया लिये थे परन्तु रसद राशन की उस के यहा कमी थी [illegible] कठिनाई का भी उस ने उपाय तुरन्त कर लिया। उस ने इलाके के [illegible] और मुल्लाओ को इकट्ठा कर उन्हे खिला-पिला कर, कुछ दबा-धमका [illegible] फतवा ले लिया कि अज़ीज़खां इलाके का मुसलिम बादशाह है और उसे प्रजा से राजकर लेने का अधिकार है। शरीयत के अनुसार राजा को प्रजा का दसवां भाग और पशुओं की पैदावार का चालीसवां भाग लेने का अधिकार होता है। शरीयत से यह अधिकार पाकर अज़ीज़खां के अफ़सरो और गुमाश्तो ने राज-कर इकट्ठा करना शुरू किया। जब कर लेने का अधिकार हो गया तो दसवाँ भाग कितना है, यह निश्चय करना उन के अपने हाथ की बात हो गई। इस उपाय से अज़ीज़खां, उस के दरबारियों और सेना का पेट मज़े मे पलने लगा।

× × ×

अरतैक ज़ख्मी हालत में जैसे-तैसे अपने गांव पहुँचा। उसे क्या आशा थी ऐसी हालत मे अपने घर लौटेगा। भविष्य उस के सामने अस्पष्ट और अंधकारमय था। मानसिक चिन्ता के बावजूद ऐना का स्नेह, माँ की ममता और नये उत्पन्न पुत्र के प्रति उस के आकर्षण ने अरतैक को सजीव करना शुरू

किया। अब अरतैक समस्या को अपने परिवार और पुत्र के भविष्य की दृष्टि से सोचने लगा:—क्या यह लोग सदा ही साधनहीन, दूसरों की दया के मोहताज गुलाम बने रहेंगे ? क्या इन्हें अपने जीवन की राह बनाने का, उस राह पर कदम उठाने का अधिकार आत्मनिर्णय का अधिकार कभी प्राप्त न होगा; यह कभी मनुष्य न बनेंगे ?

२७

पतझड़ आ गया। अरतैक का ज़ख्म लगभग ठीक होकर उस का स्वास्थ्य भी बहुत कुछ सुधर गया था। अपने गांव मे ही उस ने सुना कि लाल सेना चार बार कहाका स्टेशन को लेने का प्रयत्न कर चुकी है परन्तु सफल नहीं हुई। उसे भरोसा हुआ, चार बार असफल हो कर भी यदि लाल सेना डटी हुई है तो उस में सफलता पा लेने की शक्ति ज़रूर होगी।

अक्टूबर का महीना बीत रहा था। एक दिन एक आदमी अरतैक के लिये अजीज़खां का ज़रूरी सन्देश लेकर आया --"तुरन्त अलगान पहुँचो! अंग्रेजी सेना लाल सेना पर भारी हमला करने वाली है और अंग्रेजो ने हमे लाल सेना के पीछे भागने के रास्तों में 'दुशाक' स्टेशन के पास रेलवे लाइन तोड़ने का काम सौंपा है।"

अरतैक का मन नहीं मान रहा था परन्तु फिर भी वह अज़ीज़ खां के बुलावे पर चला! अंग्रेज़ों से मिलकर तुर्कमान जनता की सोवियत के विरुद्ध अज़ीज़ की विश्वासघात की नीति से अरतैक का मन उस के प्रति घृणा और क्रोध से भर रहा था। अरतैक को विशेष क्रोध इसलिये था कि अज़ीज़ विदेशी साम्राज्यवादी शक्ति के हाथों बिक रहा था। उस ने यह भी सुना कि ब्रिटिश जनरल मालिन्सन के हुक्म से कहाका के अंग्रेज अफ़सर प्रायः नित्य ही हवाई जहाज़ पर चढ़कर अलगान पहुँचा करते हैं।

अरतैक कुछ विलम्ब से पहुँचा। अज़ीज़ खां का रिसाला तकीर स्टेशन पर पहुँच चुका था परन्तु स्टेशन पर मौजूद लाल सेना की फौलादी गाड़ी से मशीन गन की मार खा कर उसे पीछे लौट आना पड़ा। उसी समय अरतैक ने सुना कि दुशाक में लाल सेना पर हमला कर अंग्रेजी फौज हार गई है और

टुकड़ियों मे तितर-बितर हो कर कहाका की ओर लौट रही है। इस समाचार से अरतैक को बहुत संतोष हुआ।

यह स्थिति देख अज़ीज़ ने अपनी सेना को तेजेन की ओर बढ जाने का हुक्म दिया। इस समय लाल सेना दुशाक में लड़ रही थी। तेजेन की रक्षा करने वाला कोई न था। अरतैक समझ गया अज़ीज़ को यह सलाह अंग्रेज अफसरों ने दी है ताके लाल सेना का ध्यान तेजेन की ओर बट जाय। तेजेन पर इस हमले मे अज़ीज़ के साथ अलीयारखाँ भी साझीदार था। अलीयारखाँ ज़ार की कज्जाक फौज का पुराना अफसर था। इस समय वह अंग्रेजों की सहायता से अपनी छोटी सी स्वतत्र सल्तनत बना लेने की फिक्र में अंग्रेजो के इशारे पर नाच रहा था।

अरतैक ने तेजेन को इस लूट मे भाग न लेने का निश्चय कर लिया। उस का जख्म अभी पूरे तौर से ठीक नही हो पाया था इसलिये वह दर्द का कारण बता कर लेटा रहा और दिन चढ बहुत देर मे अलगान से तेजेन की ओर चला।

अज़ीज़खाँ और अलीयारखाँ के रिसाले रात रहते ही तेजेन पहुंच गये थे। उनका सामना करने वाला कोई था नही। बाज़ारो औरगलियो में जा उन्होने दुकानों और मकानों को लूटना शुरू किया, स्त्रियो और लड़कियों को घरों से खीच गलियो और बाजारो मे उन के साथ बलात्कार के प्रदर्शन किये। जो मर्द बूढे जवान या बच्चे या औरते सामने आये, सब को कत्ल कर दिया। कटे हुये मुड या बिना मुड के शरीर जगह-जगह खम्भो और वृक्षो पर लटका दिये गये। शहर के दफ्तरों, बड़ी-बड़ी दुकानों और रुई के कारखाने में भी आग लगा दी गई।

केलखां की कम्पनी के सवार नदी किनारे एक ईसाई स्कूल मे जा घुसे। स्कूल मे एक तुर्कमान ईसाई पादरी था। इन लोगों को देख कर भी वह भागा नही, शान्त खड़ा रहा। केलखाँ के सिपाहियों ने उसे पकड़ कर उस के कपड़े फाड़ दिये। पादरी इस व्यवहार से कुछ मूढ़ सा हो गया। साहस कर उस ने मुह खोला—

"भाइयो, क्या करते हो? मै भी तो तुर्कमान हूँ।"

"तुम गद्दार हो! गद्दारी की सज़ा कत्ल है"—उसे उत्तर मिला।

"मै गद्दार नही हूँ और न किसी का दुश्मन हूँ।"

"हम दुश्मन पर रहम कर सकते है परन्तु गद्दार को मुआफ़ नहीं करेंगे!"

"भाइयो, मुझे खान अज़ीज़ख़ाँ के सामने ले चलो ! अगर मै कसूरवार हूँ तो वह मुझे सजा देगा।"

"इस झमेले की जरूरत क्या ?"— उसे रूखा उत्तर मिला।

एक सिपाही ने अपनी राइफल उठा उस की छाती पर निशाना साधा। इतने में केलखाँ आ पहुँचा। यह दृश्य देख वह चिल्ला उठा—"अरे बेवकूफो क्या कर रहे हो ?" परन्तु सिपाही ने गोली दाग ही दी।

अरतैक दोपहर के समय तेजेन पहुंचा। सैकड़ों जले हुये मकान अभी सुलग रहे थे। आकाश धुये से भरा था और चिरांध आ रही थी। बाज़ारों और गलियों में खून फैला हुआ था। जगह-जगह अंग-भंग मुर्दे पडे थे और वृक्षों से लाशें झूल रही थीं। सिपाही छीनी हुई गायों को रस्सियों से थामें दो-दो चार-चार शहरी नंगी औरतों के साथ हांके लिये जा रहे थे। अलियार खाँ के सिपाहियों को शराब का एक गोदाम मिल गया था वे मन मानी पीकर बौखले हो रहे थे। अज़ीज़खाँ के सिपाही अब भी लूट में लगे हुये थे। जिस घर में जो कुछ मिल जाता, जेवर, कपड़ा, कालीन, रजाई, तकिया सब घसीटे ला रहे थे।

अज़ीज़ का नौकर पेलांग रूसी ढंग का कोट पहने फिर रहा था। अरतैक का ध्यान उस ओर गया। वह कोट उसे पहचाना सा जान पड़ा। यह तो चर्नीशोव का कोट है ? क्या इन जालिमों ने उसे भी मार डाला ?—क्रोध से अरतैक का सिर चकरा गया। उस का हाथ अपने रिवाल्वर की मूठ पर जा पहुंचा।। वह पेलांग को गोली मार देने को ही था परन्तु उस ने अपने आप को सम्भाला। पेलांग के कोट पर हाथ रख उस ने पूछा—"बहुत बढ़िया कपड़ा है। कहाँ से लिया ?"

"पिछली रात की लूट में" पेलांग ने उत्तर दिया, "बडे ज़ोरदार आदमी हो यार ? कोट वाले को मार डाला ?—ऐसा बड़िया कोट यों भला क्यों देने लगा ?"

"पचासों मार डाले लेकिन यह कोट ऐसे ही मिल गया। कोट वाला घर में था नहीं।"

"तो किसी दूसरे ने उसे खत्म किया होगा ?"

"नहीं घर में बस एक रूसी औरत थी। उस साली ने कोट पकड़ लिया और मुझ से लड़ने लगी। मकान स्टेशन के पास ही था। वहां कई लाल सिपाही थे। वे लोग खटका सुनते ही गोली चला दे रहे थे। मैं झटके से कोट छीन कर भाग आया।"

अरतैक को संतोष हुआ कि चर्नीशोव और उस की स्त्री अभी जीवित है लेकिन बाकी शहर तो ध्वंस हो चुका था। उस ओर देख उस का मन भर-भर आता। वह पीछे रह जाने के लिये पछताने लगा। समय पर आ जाता तो शायद चर्नीशोव, मावेद या अशीर में से कोई मिल जाता और वह उन के साथ मिल कर शहर को बचाने के लिये कुछ प्रयत्न कर सकता! अब जाने वे लोग कहाँ होंगे! लाल सेना में वह कैसे पहुचे ?

लाल सेना ने दुशाक में सफ़ेद सेना और ब्रिटिश फौज को हरा कर भगा दिया परन्तु इन का पीछा न कर सकी। इस के कई कारण थे। दूसरे मोर्चों पर अभी तक सफेद सेना का ज़ोर बना हुआ था, दुशाक मे लाल सेना के रसद गोदाम और लड़ाई के सामान में आग लगा कर बहुत नुकसान हो गया था और यह भी भय था कि सफेद सेना का पीछा करने के लिये आगे बढ जाने पर पिछले मोर्चों से सम्बन्ध न टूट जाये। तेजेन पर अज़ीज़ख़ाँ और अलियारखाँ के हमले से एक बात स्पष्ट हो गई कि ब्रिटिश सेना सहायता पा कर लाल सेना को परेशान करने वाले बडे-बडे डकैत दल, चाहे अपने राज स्थापित करने मे सफल न हो सकें परन्तु यह लोग जनता को परेशान और निराश कर रहे है और लाल सेना को काफी नुकसान भी पहुचा रहे है इसलिये उचित यही था कि एक स्टेशन और पीछे, राविना में लौट कर आगे बढने से पहले पीछे से आने वाले भय का प्रबंध कर लिया जाय!

दुशाक में लाल सेना से मार खाकर ब्रिटिश फौजों ने फिर आगे बढने और सेना से टक्कर लेने का प्रयत्न न किया। सोवियत के हाथ जो शहर छीने गये थे उन पर प्रकट में सफेद सेना का कब्जा रखा गया। अज़ीज़ख़ाँ भी इस अव्यवस्थित परिस्थिति में फायदा उठा रहा था। तेजेन में जो कुछ करतूत उस ने की थी वही उस ने मारी में भी की। उस के विचार मे अपनी सत्ता बढाने और जमाने का यही उपाय था।

अज़ीज़ अपने रिसाले को ले मारी पहुँचा। इस नये कस्बे में आते ही वह बस्ती पर अपना आतंक बैठाने का नया उपाय सोचने लगा। मारी में तेजेन की लाल सेना का एक अफसर अतादयाली उस के हाथ पड़ गया था। अज़ीज़ को याद था कि अतादयाली ने तेजेन में उस की सेना पर छापा मार कर उस के हथियार छीनने में भाग लिया था। अज़ीज़ख़ाँ ने अतादयाली की मुश्कें बंधवा दीं। एक लम्बी रस्सी दयाली के कंधे में और दूसरी पाँव में बांध कर दो घोड़ो की जीनों से बाँध दिया गया। घोड़ों को चाबुक मार कर बाजारों में खूब

दौड़ाया गया । दयाली का शरीर शहतीर की तरह बंधा ज़मीन पर रगड़ता, उछलता छिन्न-भिन्न हो गया । इस के बाद अज़ीज़ ने मारी के कस्बे में ढोंडी पिटवा दी: —

"होशियार, खबरदार ! फिर न कहना हमने सुना नहीं, जो कोई आदमी किसी भी तरह बोल्शेविकों को सहायता देगा, उसे अतादयाली की तरह सजा दी जायगी !"

अगले दिन उस ने दो और आदमियों को पकड़ मंगवाया । उन्हे भी वही सज़ा दी गई । मारी की बस्ती अज़ीज के आतंक से कापने लगी ।

अरतैंक अपने सौ सवारों को लिये अर्ज़ाज़ की सेना के पीछे पीछे आ रहा था । मारी के काण्ड का समाचार उसे रास्ते में ही मिल गया । क्रोध और घृणा से व्याकुल हो उस ने सोचा – जनता के इस खूंखार जल्लाद के साथ मेरा निबाह कैसे हो सकता है ? अब चाहे जो हो, मुझे इस के विरुद्ध आवाज उठानी ही पड़ेगी । इन्ही विचारों में रह अज़ीज़ की छावनो की ओर चला जा रहा था ।

अरतैंक अभी अलगान की छावनी के भीतर जा नहो पाया था कि बाहर ही उस की मुलाकात अज़ीज़खाँ से हो गई । अज़ीज़, केलखाँ, किज़िलखाँ और मदीर ईशान के साथ घोड़े पर सवार था । अरतैंक अपने सवारों के साथ उस की ओर बढ़ता चला गया । दस कदम का अंतर बीच में रह जाने पर उस ने अपने सवारों को रुकने का हुक्म दिया और सलाम दुआ किये बिना, रूखे स्वर मे अज़ीज़ को सम्बोधन किया—

"अज़ीज़ खाँ, कभी तुम ने सोचा है कि तुम क्या कर रहे हो ?"

अज़ीज ने एक ही नजर मे समझ लिया कि अरतैंक इस समय क्रोध के कारण बिगड़ा हुआ है । उस ने भी रूखा उत्तर दिया—"मुझे तुम्हारी सलाह की जरूरत नही।"

"तुम्हारे यह जुल्म मैं नही सह सकता । अतादयाली के कत्ल के बाद मेरा सब्र खतम हो गया है ।"

"तुम हो कौन मुझ से जवाब तलब करने वाले ?"

"मै कौन हूँ, यह तुम्हे मालूम हो जायगा !"

"अतादयाली क्या तुम्हारा भाई लगता था ? जान पड़ता है तुम बोल्शे-विकों से रिश्वत खाने लगे हो ?"

"यह भी तुम्हें जल्दी ही मालूम हो जायगा !"

"हूँ"—अज़ीज ने आंखें नीची कर क्रोध में होंठ दबा लिये। उस का चेहरा सुर्ख हो गया। पल भर सोच उस ने अरतैक की ओर देख गहरी सास लेकर कहा, "जब गधा बहुत मुटा जाता है तो मालिक पर ही दुलत्ती झाड़ने लगता है।" उत्तेजना से रकाबों पर तन कर वह जीन से उठ गया। हाथ का हंटर घुमा कर उस ने अरतैक को हुक्म दिया, "मै तुम्हे बर्खास्त करता हूँ। मेरे हथियार लौटा दो!"

"मै तुम्हारी नौकरी बहुत दिन पहले ही छोड चुका हूँ। तुम अंग्रेजों के पालतू डाकू हो और तुर्कमानो लोगों को खाये जा रहे हो!"

"किज़िल खाँ! केलखाँ!"—अज़ीज़ ने क्रोध मे पुकारा।

केलखाँ चुप रह गया। किजिल खाँ अपना घोड़ा अरतैक की ओर बढा कर बोला—"अरतैक, लाओ भाई हथियार मुझे दे दो।"

अरतैक ने अपना रिवाल्वर किज़िल खाँ की ओर साध कर उत्तर दिया—"किजिल खाँ, तुम बीच मे न पड़ो। अगर आगे बढोगे तो मै गोली मार दूँगा।"

किज़िल खाँ रुक गया। मदीर ईशान का चेहरा भी फक हो गया था परन्तु बीच-बचाव करना अपना कर्तव्य समझ वह समझाने के ढग से बोला—

"भैया अरतैक, क्या कर रहे हो? कुछ ख्याल करो!"

अजीज खाँ को कमर मे बंधे रिवाल्वर की ओर हाथ बढाते देख अरतैक ने चेतावनी दी—"अजीज खां, जान प्यारी है तो हाथ उधर मत ले जाओ"

अरतैक का एक सवार पीछे से बोल उठा—"अरतैक खाँ, क्या बात बढ़ा रहे हो? गोली मारो।"

अजीज खाँ ने अरतैक के सौ सवारों की ओर नजर डाली। अब तक वह उन्हें भूला ही हुआ था। अपने आपको वश मे कर बोला—"अरतैक खाँ, मैं जानता हूँ तुम बहादुर आदमी हो। तुम ने दुश्मनों को नीचा दिखाया है, यह क्या आपस में झगड़ने का समय है? इन बातों को जाने दो! हमारे तुम्हारे सम्बन्ध पुराने हैं……।"

अरतैक मन ही मन सोच रहा था—अज़ीज और मदीर को अभी गोली मार कर लाल सेना की ओर भाग जाऊँ परन्तु ख्याल आया, मेरे साथ सौ सवार भी तो हैं। इन्हें भी तो साथ ले जाना है। लाल सेना का मोर्चा बहुत दूर है। अगर यहाँ घिर गये तो इन सवारों का क्या होगा? वह सोचता रहा और फिर उस ने अजीज खां को उत्तर दिया, "हमारी तुम्हारी नहीं निभ

सकती। अब मै तुम्हारे यहां नहीं रहूंगा। मै जा रहा हूँ लेकिन एक बात कहे देता हूँ, अगर तुम मुझे रोकोगे, या पीछा करोगे तो तुम भी बच नही सकोगे!"

वह अपने सवारो की ओर घूम गया—"भाइयो, जो मुझे मानता हो मेरे साथ आ जाये!"

सौ सवारो का पूरा दस्ता अरतैक की ओर बढ़ आया। अरतैक पीछे लौट पड़ा और उस के सवार उसे घेर कर उस के साथ मारी की ओर चल दिये।

अज़ीज़ ने आपे से बाहर हो अपना रिवाल्वर निकाल लिया। उस का निशाना बहुत पक्का था। वह उड़ते हुये कौए को गिरा देता था परन्तु केलखाँ ने उसे रोका—"क्या करते हो? देखते नही सौ सवार है! तुम्हारे जिस्म की धूल भी नहीं मिलेगी।"

अज़ीज़ दात पीसता हुआ अपनी छावनी की ओर लौट चला। वह सोच रहा था—मेरी शक्ति क्या धूल बढ रही है? ''यह आदमी मेरे मुह पर थूक गया। सौ घुड़ सवार हाथ से गये'' दूसरों पर ही क्या भरोसा है? इन से क्या लड़ूं?

× × ×

अज़ीज़ से विदा हो अरतैक अपने सवारों के साथ 'सकारचग' से पूर्व की ओर चला जा रहा था। 'कुर्बानकला' के पास उसे ब्रिटिश फौज का एक हिन्दुस्तानी रिसाला मिला। इन लोगों ने उसे नियाजबेग का रिसाला समझ कर कुछ नही कहा।

आगे बढ़ 'अनेकोवो' मे उसे नियाज़बेग का ही रिसाला मिल गया। वह लोग लाल सेना की खोज खबर लगाते फिर रहे थे। अरतैक ने उन्हें बताया कि वह भी अज़ीज़ की सेना की ओर से लाल सेना की स्थिति समझने के लिये इधर चक्कर लगा रहा है। यहां उसे पता चल गया कि सफ़ेद सेना और लाल सेना मे अनेकोवो से राविना तक मोर्चा लगा हुआ है। लाल सेना राविना मे छावनी डाले पड़ी है। उस ने इन लोगों से राविना की राह भी पूछ ली।

अरतैक ने निश्चय किया लाल सेना की ओर रात के समय जाना ठीक न होगा। उस ने अपने सवारों को रेलवे लाइन से काफ़ी दूर रेत के मैदानों में उगी ऊँची घास मे विश्राम के लिये टिका दिया। पौ फटते ही उस ने एक सफ़ेद झण्डा ऊंचा किया और सीधा राविना की ओर बढ़ चला। इस से पहले काहाक में ब्रिटिश हिन्दुस्तानी फौज सफ़ेद झण्डा दिखाकर लाल सेना को धोखा दे

चुकी थी इसलिये उन्होंने अरतैक को नजदीक नहीं आने दिया। लाल सेना की फौलादी ट्रेन से गोली चलने लगी। गोली की बौछार में अरतैक के रिसाले के घोड़े तितर-बितर होने लगे।

अरतैक पीछे हट गया। उस ने दक्खिन की ओर से राविना की ओर जाने का निश्चय किया और सफेद झण्डा उठाकर उस ओर बढ़ा परन्तु इस ओर से भी उस पर गोलियों की बौछार पड़ने लगी। राविना पहुँच कर लाल सेना मे मिलने का कोई उपाय न देख वह निराश हो पंदीन के रेगिस्तान की ओर चल दिया।

इस समय अलीयार खां भी अपना रिसाला लेकर पंदीन मे आया हुआ था। बात यह थी कि अजीज और अलीयार खां ने तेजेन मे जो अत्याचार किये, उन के कारण अश्काबाद तक का इलाका काप उठा। 'मरता क्या न करता' कि मिसाल लोग मरने मारने के लिये उठ खड़े हुये। जनता को अपने विरुद्ध भड़कता देख ब्रिटिश अफसरो और सफेद सेना को इस मामले में जांच पड़ताल करनी पड़ी। अजीज खा और अलियार खा से जवाब तलब किया। अजीज ने सब उत्तरदायित्व अलीयार पर डाल दिया। अलीयार खां को जाँच पड़ताल के लिए अश्काबाद की फौजी अदालत मे पेश होने के लिये बुलाया गया। वह इस झझट में न पड़ना चाहता था। वह तेजन छोड़ पदीन के मैदानो मे आ गया कि आसानी से लूट-मार कर अपना निर्वाह कर लेगा।

इस इलाके मे अलीयार खा जब चाहता सिरयाक के गड़रियों की भेड़े पकड़वा लेता। उन के दूसरे ढोरो को भी वह अपनी ही सम्पत्ति समझता था। अलीयार खाँ गाव-गांव घूम रहा था। उजड़ और बरबाद गाँवो को देख कर उस का रास्ता मालूम हो जाता था। वह जहाँ से गुजरता कत्ल और बलात्कार के चिन्ह छोड़ जाता। तेजेन से वह अपने लिये एक खूबसूरत औरत पकड़वा लाया था। कुछ दिन बाद उसे सन्देह हुआ कि वह औरत उस के किसी सिपाही से मिल गई है। इस औरत को उस ने अपने प्रेमी के साथ गढा खुदवा कर जिन्दा ही गड़वा दिया। अलीयार की इस क्रूरता पर उस के सिपाहियों मे सनसनी फैल गई। एक सरदार ने इस पर आपत्ति की। अलीयार ने इस सरदार को रात मे क़त्ल करवा दिया। इस के बाद किसी को कुछ कहने का साहस न हुआ।

अरतैक खूब समझ चुका था कि सफेद सेना, रूस के मामले मे दखल देने आई अंग्रेजी फौज, अजीज खां और अलीयार खां में कोई अन्तर न था।

अलीयार खां इन सब से मूर्ख और बेहूदा था। अरतैक ने सोचा पहले अलीयार खां से ही समझा जाय। अरतैक का रिसाला आस-पास की बस्तियों में लूट मार न करता था इसलिये इलाके गांवों के लोगों और चरवाहों को उस से सहानुभूति थी, वे उसे रसद पहुँचा देते और आवश्यकता होने पर राह भी बताते।

अरतैक ने अपने एक सिपाही के हाथ अलीयार खाँ के पास सन्देश भेजा—'या तो तुम आकर मुझ से मिलो या इस इलाके से बाहर चले जाओ!"

अलीयार खाँ ने इस सिपाही की मूछें मुडवा दी और उस के घोडे की दुम कटवा दी और बोला—"चले जाओ वापिस और अरतैक से कह दो, यह है मेरा जवाब!"

इस अपमान से अरतक को बहुत क्रोध आया। दूसरे दिन पौ फटने से पहले ही उस ने अपना रिसाला ले अलीयार खाँ का खेमा जा घेरा और नंगी तलवारों से हमला बोल दिया। अचानक हमला हो जाने के कारण अलीयार खाँ के सिपाहियो के सिर और शरीर के दूसरे अंग कट-कट-कर ठडी रेत पर गिरने लगे। जिस सरदार को अलीयार खां ने कत्ल करवा दिया था, उस के साथी भी समय देख अलीयार खाँ के ही आदमियों पर टूट पडे। थोड़ी ही देर में लड़ाई समाप्त हो गई। मैदान खून से तर हो कटे हुए अंगों से छितरा गया। बिना सवारी के घोड़े इधर-उधर भागते फिर रहे थे। अलीयार खाँ लगभग सौ जख्मी सिपाही लेकर भाग गया। अरतैक के चार आदमी खेत रहे परन्तु उसे चालीस सवार और मिल गये और बहुत से बढिया घोड़े भी मिले। इन्हें उस ने अपने सवारों में बाँट दिया।

अरतैक फिर लाल सेना से मिलने का प्रयत्न करना चाहता था परन्तु बीच मे दूसरी बाधा आ पड़ी। अलीयार खाँ के अत्याचारों से पीड़ित हो इलाके के लोग रोते-पीटते ब्रिटिश फौज की छावनी में फरियाद करने पहुंचे थे। इस इलाके की सहानुभूति अपनी ओर करने के लिये अंग्रेजों ने अपने हिन्दुस्तानी रिसाले के अफ़सरों की एक कम्पनी अलीयार खाँ को पकड़ लाने के लिये भेज दी। लेकिन अब अलीयार खाँ की जगह आ बैठा था अरतैक! इलाके के चरवाहों और गड़रियों ने आकर प्रसन्नता से अरतैक को खबर दी की हमारी-तुम्हारी सहायता के लिये और अलीयार खाँ से बदला लेने के लिये अंग्रेज़ी फौज आ रही है। अरतैक जानता था कि यह लोग उसे कैसी सहायता देंगे।

हिन्दुस्तानी रिसाला रेतीले मैदान की राह आने वाला था। अरतैक ने

इस राह में अपने कुछ सवारों को एक मील तक रास्ते के दोनों ओर की झाड़ियो ने छिपा दिया और अपने शेष सवारो को ले एक नीची जगह मे जा दुबका। रिसाला आया तो छिपे हुए सवारो ने उसे चुपचाप आगे निकल जाने दिया। जब रिसाला स्वय अरतैक के बिलकुल समोप पहुँच गया तो सहसा एक सौ राइफलो की गोलियों की बौछार इन पर आ पड़ी और सौ सवारों का दल नगी तलवारें ले इन पर टूट पड़ा। अफसर लोग बौखला गये। सहसा पीछे लौटन मे एक दूसरे से टकरा कर घोड़ो से गिर पड़े। पीछे लौटे तो अरतैक के छिपे हुय सवार इन पर टूट पड़े। आधे से अधिक हिन्दुस्तानी अफसर मारे गये, कुछ पकड़े गय। अरतैक को कई और घोड़े और बहुत सी, कई-कई गोली भरने वाली बढ़िया राइफले मिल गई!

अरतैक ने लाल सेना से सम्बन्ध जोड़ने की फिर कोशिश की। इस बार उस ने अपने रिसाल को राविना की ओर कुछ दूर ले जाकर दक्खिन पच्छिम के जगल मे छिपा दिया और दो घुड़सवारो को सफेद झडा और अपना सदेश देकर लाल सेना की ओर भजा। सवार दूर जा कर नज़र से ओझल हो गये। दूसरी ओर स गोली चलने की कोई आहट नही आई। अरतैक इन सवारो के हाथ उत्तर आन की प्रतीक्षा उत्सुकता से कर रहा था। सवारो को गये तीन घटे बीत गये परन्तु कोई उत्तर न आया। उसे चिन्ता होने लगी— क्या उन लागों को मेरा विश्वास नही? शायद सवारो को गिरफ्तार कर लाल सेना हमारे चारो ओर घेरा डाल रही है। यदि हमे घेर कर उन लोगों ने गोला चलाई तो मै क्या करूगा? क्या गोली का जवाब गोलो से दूं?.... क्या करूँ? जवाब न मिल ता, मै क्या करू?........यहाँ कब तक प्रतीक्षा करूं?....... पदोन लौट जाऊ या तेजन चला जाऊं?.... नही अब लौट नही सकता। मुझे हर हालत मे लाल सेना मे जाना ही है। मै चर्नीशोव और अशोर के सामने जाऊंगा यदि उन लोगो को मेरा विश्वास नही तो वे मुझे गोला मार सकते है? मै अब लौटूगा नही... ...। एक घण्टे के करीब और बीत गया। कोई उत्तर नही आया। उस ने सोचा एक बार फिर सन्देश भेजू? उस न दो और सवारो तैयार होने के लिये हुक्म दिया। सवारो ने रकाबो मे पाव रखे ही थे कि सामने पाच सवार राविना की ओर से आते दिखाई दिये। अरतैक ने सान्त्वना का दीर्घ श्वास लिया।

अरतैक राविना से अपनी ओर आते इन सवारों को लगातार दूरबीन से देख कर पहचानने का यत्न कर रहा था। वे अभी बहुत दूर थे। कभी दृष्टि

से ओझल हो जाते और फिर पहले से कुछ स्पष्ट और नज़दीक दिखाई देने लगते। बीच की भूमि ऊची-नीची होने के कारण गहराई मे चले जाने पर वे दिखाई न पड़ते थे। कुछ देर बाद अरतैक ने अपने दोनो सवारों को पहचान लिया। बाकी तीन को वह पहचान न सका। उस की आँखें उत्सुकता के कारण थकी जा रही थीं। सवारों के कुछ और समीप आने पर वे कुछ पहचाने हुये जान पड़े। इन में से दो तो ''....

"अशीर ! तिशेको !"—अरतैक चिल्ला उठा और उन लोगों की ओर दौड़ पड़ा।

व्यग्र उत्सुकता में अरतैक की आखें धोखा खा गई थीं। इन सवारों मे न अशीर था और न तिशेंको; और न कोई उस का अपना आदमी ! यह लाल सेना के पाच सवार थे जो अपने मोर्चे के आस-पास जांच पड़ताल के लिये गश्त कर रहे थे लेकिन अशीर और तिशेको का नाम परिचय शब्द (पासवर्ड) का काम कर गये।

दो घण्टे बाद अरतैक लाल सेना के मुख्य दफ्तर में बैठा था। मावेद, अशीर और तिशेको उसे घेरे हुये थे। तिशेको इस कम्पनी का कमान अफसर था। वह कीचड़ मे लथपथ मे कहीं से लौटा ही था और मुह हाथ धोता हुआ अरतैक से बातचीत कर रहा था—"तुम्हें चार्दीजोव जा कर हमारे कमाण्डर-इन-चीफ़ से मिलना होगा। वही तुम्हे किसी रेजीमेट में नियुक्त करेगा।"

"कमाण्डर-इन-चीफ़ ? मै क्या जानू कौन है कमाण्डर-इन-चीफ़ ? और वह मुझे क्या जाने ?"

"घबराओ नही। तुम्हारे साथ आदमी जायँगे और फिर कमाण्डर-इन-चीफ़ को भी तुम शायद पहचान लो, उस का नाम है—चर्नीशोव !........ क्यों पहचान लोगे ?"

अरतैक का चेहरा खिल उठा।

× × ×

चर्नीशोव और अरतैक आमू नदी के किनारे टहलते हुये बातचीत कर रहे थे। उन्होंने आपस में युद्ध की स्थिति, ब्रिटिश सेना की दखल देने की नीति, सफ़ेद सेना की शक्ति और लाल सेना के पीछे के मोर्चे, सभी विषयों पर बात-चीत की। अरतैक आमू नदी के विस्तृत प्रवाह की ओर विस्मय से देख रहा था। अब तक उस ने इस नदी की चर्चा ही सुनी थी, देखने का यह पहला ही अवसर था। दृष्टि की पहुँच तक मटियाले जल की लहरें बल-

खाती चली जा रही थीं। दोनों किनारों पर सधा हुआ, बहुत लम्बा फौलादी पुल तना हुआ था। उसी समय परले पार से एक भारी मालगाडी प्रबल बेग से दौडती पुल के भीतर घुस गई। गाडी के बोझ और चाल का कुछ भी प्रभाव पुल पर न जान पड़ता था। पुल के नीचे चौडे-चौडे दृढ खम्भे स्वयं छोटे-मोटे मकानों की तरह थे। उसे याद आ रहे थे अपने गाँव के आस-पास की नहरों पर बने हुये बासों और रस्सी के छोटे-छोटे पुल जो एक आदमी या एक गधे के गुजरने के बोझ से ही लचक-लचक जाते थे। वह सोच रहा था—धन्य है तू, इस पुल को बनाने वाले।

तेजेन्का नदी की ही भांति आमू से भी कई नहरे निकली हुई थी परन्तु यह नहरें स्वयं तेजेन्का नदी से भी बडी और चौड़ी थी। इन नहरों में पाल उड़ाती नावे आ-जा रही थी। आमू मे बडे-बडे स्टीमर सैकडों आदमी और हजारों मन बोझ उठाये दौड़ रहे थे। किनारों पर मछवी मार डोंगे लंगर डाले खड़े थे। इन पर से बडी-बडी मछलियां उतारी जा रही थीं। मटियाले जल में हवा के थपेड़ों से बौखलाई लहरे एक दूसरे पर चढ जाना चाहती थी और उन की भिड़न्त से सफेद फेन उठ रहा था। लहरे जाती और अपना फ़ेन किनारों पर छोड़ जाती। दूसरी लहर आकर इस फेन को समेट ले जाती। अरतैक जल के इस विस्तार को देख विमूढ सा हो बोल उठा—

"भैया चर्नीशोव, पानी है यहाँ! इस से तो पृथ्वी और आकाश सभी भर जांय और यह खत्म न हो! कहां से आता है इतना पानी और कहां समाता होगा?"

"क्यों?" चर्नीशोव ने उत्तर दिया, "यह कोई छोटी-मोटी नदी तो है नही। अफ़ग़ानिस्तान क्या, हिन्दुस्तान की सीमा तक का चक्कर लगाती है। इस के जल से कर्की का इलाका, चार्दीजोव का इलाका पलता है फिर यह दैनू, दानिता, खीवां तौशेज़ की भूमियों को सींचती है। तब कही जाकर अराल के समुद्र में गिर जाती है।"

"समुद्र में दिन और रात बरसो से इतना पानी गिर रहा हैं और उस का पेट नहीं भरा। तभी लोग कहते हैं, समुद्र का पेट कभी नहीं भरता।"

"नहीं भरता तभी ठीक है यदि समुद्र अघा कर यह पानी लौटाना शुरू कर दे तो पृथ्वी पर खड़े होने की जगह न रहे।"

अरतैक चुप था परन्तु उस की कल्पना में तेजेन के इलाके के अपने गांवों की सूखी धरती घूम रही थी जो जल बिना बरसों दरारों से फटा करती है।

'हाँ कोपेतदाग की छोटी पहाड़ी से निकलने वाले सोते के जल की नालियों र चुल्लू-चुल्लू भर जल के लिये झगड़े होते रहते हैं और हर साल इन झगड़ो कई खून हो जाते हैं। पंदीन के रेतीले मैदानों में जल के बिना सैकड़ों पशु ग्रासे मर जाते है ? पानी के बिना कितने काफिले अपनी लम्बी यात्राओ मे ग्रासे मर जाते हैं ? और यहाँ आमू नदी का विस्तृत जल पर्याप्त स्थान न ाने के कारण क्रोध मे गरज रहा है, लहरें आपस में भिड़ रही हैं और जाकर मुद्र में स्थान ढूँढ़ रही है ? यदि समुद्र मे गिर कर व्यर्थ होने वाला आमू ा यह जल, अखाल और तेजेन की ओर बहे तो क्या हानि है ? यदि एसा । सके तो तेजेन की उपजाऊ धरती धूप मे सूख कर जल के बिना चटकेगी हीं। हमारी धरती अघा कर फूलो से मुस्करा उठगी। हमारे किसान भूख ौर प्यास से न तड़पेंगे।"

अरतैक ने सुना था कि आमू नदी को बड़ी महिमा है। उस के जल से ानेक रोगों का नाश हो जाता है। उस मे अपार शक्ति है शायद इस विश्वास ।, या किसी दूसरे भाव से आमू को सम्बोधन कर वह बोल उठा—"हे सुन्दर ौर समृद्ध नदा, तू इतनी कठोर और निर्दय क्यो है ? हमारे प्यासे सूखे गावो ी ओर भी एक नज़र डाल !"

यह सुनकर चर्नीशोव मुस्कारा दिया अरतैक को यह भला न लगा—'तुम्हें सी क्यो आ रही है ?" उस ने पूछा।

'क्या नदी के कान है जो तुम्हारी बात सुनेगी।"

"क्यो नही, यह लहरे इस के कान नही तो क्या है ? यह गरज रही है तो ुन नहीं सकेगी ?"

"मान लिया परन्तु यदि भूमि जोते बोये बिना उस से अन्न मांगो तो मलेगा ?"

अब अरतैक चुप रह गया। चर्नीशोव बोला—"आमू का जल तुर्कमानिस्तान हुचाने के लिये हमें बाध बांधने होगे और नहरे खादनी होगी।"

"यह कौन कर पायेगा ? किस मे है इतना सामर्थ्य ?"

"सोवियत मे जनता की सम्मिलित शक्ति मे है यह सामर्थ्य ! और सोवियत ह काम करेगी।"

"तुम्हारी यह बात भी उतनी ही भोलेपन की है जितनी कि मेरी थी।"

"खेतों से फसल पाने के लिये तुम्हें मेहनत करनी पड़ती है या नहीं ?"

"खेत में पानी आये तभी तो श्रम करके फसल पाई जा सकती है।"

"ठीक है, जैसे फसल के लिये श्रम की आवश्यकता है वैसे ही खेतों में पानी पहुंचाने के लिये भी श्रम की आवश्यकता है। यह काम अकेले आदमी के बस का नहीं परन्तु यदि हम लोग इस के लिये सगठित रूप से श्रम करें तो देश के कोने-कोने में जल पहुच सकता है।"

"अगर मेरे श्रम से तेजेन मे पानी पहुंच सके, मैं उम्र भर नहर खोदने के लिये तैयार हूं।"

"तुम्हारी तरह जी जान से परिश्रम करने के लिये तैयार करोड़ों आदमी हमारे देश में है। उन के श्रम से हम सभी कुछ कर मकते है। यदि यह विदेशी यहाँ आकर दखल न दें और हमारे देश की जनता का श्रम चूसने वाले, हमारे देश के जमीदार और पूंजीपति हमारी जनता को अपनी भलाई के लिये संगठित होकर काम करने दें तो हम सब कुछ कर सकते है। परन्तु जो लोग हमारी जनता का श्रम हथिया कर शासन का अधिकार भोगते आये हैं और गुलछर्रे उड़ाते आये है, हमारी राह में रोड़े अटका रहे हैं। पहले उन के हाथ से मुक्ति पाना आवश्यक है।"

अरतैक चुपचाप आमू के जल की ओर दृष्टि लगाये खड़ा रह गया। चर्नीशोव ने उसे पुकारा—"अब लौटोगे नही ?"

अरतैक आमू के जल की ओर से अपनी प्यासी आंखें न हटा पा रहा था। जैसे भूखे बच्चों के लिये मिठाई की ओर से दृष्टि हटाना कठिन हो जाता है। जब लौटना ही पड़ा तो, भविष्य में उस जल को पाने की आशा में उस ने उस जल को स्पर्श कर उस से अपना मुंह धो अपने को शांत करने का प्रयत्न किया।

२८

कई दिन, सप्ताह और मास बीत गये। दुशाक मे लाल सेना से मार खाने के बाद ब्रिटिश सेना ने फिर आगे बढने का साहस न किया। सन १९१९ मे मार्च महीने के अन्त मे एक रात यह ब्रिटिश सेना अपनी जगह डेनिकिन की सेना को छोड़ चुपचाप खिसक गई। यह लोग अपनी याद के रूप मे पीछे अपनी केवल एक पल्टन क्रास्नोवोदस्क में छोड़ गये। यो तो तुर्किस्तान भर मे इन के दलालों का जाल बिछा था, जो जनता मे भ्रम फैलाकर सोवियत के विरुद्ध असंतोष फैला रहे थे। यह लोग सोवियत के कार्यक्रम को विदेशियों के बल पर बरबाद करने की और सावियत को हटाने की चेष्टा कर रहे थे। सफेद सेना को विदेशियों की सहायता से सोवियत को हटाने की चेष्टा करते देख तुर्कमान जनता समझने लगी थी कि न तो यह विदेशी हमारे हित चिन्तक हा सकते है और न इन विदेशियों के नौकर सफ़ेद सेना वाले ही। तिस पर लाल सेना से मुठभेड़ मे ब्रिटिश फौजों को जन-धन का नुकसान भी बहुत उठाना पड़ रहा था इसलिये अंग्रेज़ों ने तुर्कमानिस्तान मे भी अपनी पुरानी साम्राज्य-वादी चाल चलने का ही निश्चय किया। सोवियत के विरुद्ध अपनी बन्दूक सेना के कंधों पर रखकर ही चलाई जाये। ब्रिटेन को अपनी इस चाल में भी सफलता न मिली। कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के सैनिक नेतृत्व मे लाल सेना और रूसी और तुर्कमानी जनता ने शीघ्र ही ब्रिटेन की कठपुतलियों, इन सफ़ेद सेनाओं को भी मैदान से भगा दिया।

जुलाई, १९१९ में कास्पियन सागर की लाल सेना के अफ़सरों ने अपनी सरकार को रिपोर्टें भेजी:—

"कास्पियन-पार की हमारी बहादुर सेना दुरुह अड़चनों को पार कर

कहाक पहुच गई है। इस सेना के एक भाग ने भागते हुए शत्रु के पिछले भाग पर हमला बोल उसे मुख्य सेना से काट कर तितर-बितर कर दिया ...

"कहाक मे हमारी सेना ने सफ़ेद सेना की सब रसद और युद्ध का सामान छीन लिया है...... "

"सफ़ेद सेना को हमने पूरी तरह परास्त कर धूल में मिला दिया है। उस के कुछ दल तितर-बितर हालत मे भाग कर समीप के पहाड़ों और रेगिस्तान में जा छिपे हैं। हम उन का पीछा कर, चुन-चुन कर उन्हें समाप्त कर रहे हैं।"

क्रास्नोवोदस्क में अभी ब्रिटिश फौज की एक पल्टन शेष थी। परन्तु क्रास्नोवोदस्की कास्पिया-पार से सैकडों मील दूर है और मार्ग में रेगिस्तान और उजाड़ पहाड फैले हुए हैं। इन सब अडचनों को लाँघ कर शत्रु पर धावा बोलना आसान काम न था। सफेद सेना हार कर भागते समय जितना भी बन पड़ता नुकसान कर जाती। शहरों और गोदामों को जला देती, पुलों और बांधों को तोड़ जाती। इस पर भी लाल सेना ने उन का पीछा न छोड़ा।

इस ऐतिहासिक युद्ध में भाग लेने वाली लाल सेना की कम्पनियों के सब से योग्य और बहादुर कमाण्डरों में अरतैक बबाली का भी नाम था। अरतैक की रेजीमेण्ट का कमिस्सार तिशेको था। अशीर और मावेद उस के मुख्य सहायकों में थे। इस सेना ने सफेद सेना को पराजय पर पराजय देकर अपनी तुर्कमान मातृभूमि को स्वतंत्र करके ही चैन की सांस ली।

लाल सेना की इस पल्टन का मोर्चा कजान्दिक में रेलवे लाइन के समीप लगा हुआ था। मोर्चे के चारों ओर की धरती दूर-दूर तक तोपों के गोलों से खुदे गढों और लड़ाई के मोर्चों के लिये खोदी गई टेडी-मेढी खन्दकों से ऊबड़-खाबड हो रही थी। लाइन पर एक छिन्न-भिन्न फौलादी ट्रेन खडी हुई थी और परखचे उडी हुई गाडियाँ लाइन के चारों ओर बिखरी हुई थीं। जहां-तहाँ लडाई के टूटे हुए हथियार बिखरे हुए थे। तोपों के पहिये और जले हुए कुन्दों वाली राइफलें सब ओर पडी नजर आती रहतीं। सम्पूर्ण प्रदेश लडाई की आग से झुलसा हुआ जान पडता था परन्तु इस मोर्चे पर डटी हुई सेना के लोग इस प्रकार की परिस्थितियों और वातावरण के प्रति अभ्यस्त हो चुके थे। उन की वर्दियां तार-तार हो रही थीं और पहाडों से आती बर्फानी हवा उन के शरीर को छेदे दे रही थी। रात में पूरी नीद सोना उन के लिए दूभर था परन्तु इस पर भी सिपाही खिन्न और हताश न थे। रात पड़ने पर कहीं

कोई आदमी इकतारा या दुतारा बजाने लगता और दूसरे सिपाही गोल बाँध कर उस के चारों ओर नाचने लगते। वही बहुत से सिपाही टोलियां बना गीत छेड देते। भय और कठिनाइयो की उन्हें कोई चिन्ता न थी, क्योंकि यह लोग अपने मानवी अधिकारों के लिए, मनुष्य बनने के लिये, स्वयं अपनी इच्छा से अपने शोषकों से लड रहे थे।

एक दिन सुबह लाल सेना के इस मोर्चे का मुख्य सेनापति (कमाण्डर-इन-चीफ़) अपने सहायक और सलाहकार अफसरों और अर्दलियों को लिये स्टेशन के तार घर से बाहर निकला और उस ने खबर दी की क्राति की युद्ध समिति का सदस्य, एक बहुत जिम्मेवार व्यक्ति कामरेड कुइबशेव इस मोर्चे के निरीक्षण के लिये आ रहा है। छावनी में खबर पहुँचते ही सब दृश्य एकदम बदल गया। सिपाही अपनी फटी पुरानी वर्दियों को झाड़ पोंछ कर पहनने लगे। बूटों, पेटियो और बटनों पर पालिश होने लगी। घोडों के जीन साफ और रकाबे ठीक से बाँधी जाने लगी और पल्टन के डाक्टर दौड़-दौड़ कर सफाई देखने और बावर्चीखाने का इन्तजाम ठीक कराने लगे।

खबर पा कर सब कम्पनियों के कमाण्डर भी हजामत बना, वर्दी ठीक कर एक साथ इकट्ठे हो, स्टेशन पर आ पहुँचे।

कमाण्डर-इन-चीफ स्टेशन पर खडा अपने सलाहकारों से बात कर रहा था। उस के चेहरे पर गहरी चिन्ता और उलझन दिखाई दे रही थी। बात-चीत करते समय वह बार-बार अश्काबाद से आने वाली लाइन की ओर देख रहा था। सब ओर स्तब्ध उत्सुकता का आतंक छा रहा या।

अग्तैक और तिशेको एक साथ खड़े थे। तिशेको पर भी परिस्थिति का प्रभाव पड रहा था। शरीर के तनाव से उस के रोंगटे खड़े हो रहे थे।

अग्तैक ने उस की ओर देख मुस्कराकर पूछा— "तिशेको, क्या बहुत जाड़ा मालूम हो रहा है?"

"हां देखो तो हवा कितनी सर्द है?...... कपड़ों को छेदे दे रही है!"

"कपडे तो मेरे भी तुम्हारे जैसे ही है।"

"अरे भाई घबराने की तो बात ही है"—तिशेंको ने स्वीकार किया, "यह आदमी तुर्किस्तान की क्रान्तिकारी युद्ध समिति का सदस्य है, तुर्किस्तान की केन्द्रीय पार्टी की कार्य-कारिणी का मेम्बर है जानते भी हो?"

"मैं जानता हूँ कामरेड कुइबशेव दौरे पर आ रहा है परन्तु वह यहाँ खामुखा नुकताचीनी करने और हमें फटकार बताने तो नहीं आ रहा।"

"यह तो ठीक है। वह हमारा उत्साह बढाने आ रहा है। वह हमें जल्दी से जल्दी लड़ाई जीतने के लिये उपाय बतायेगा। फिर भी भाई एक बड़े आदमी का कुछ रोब होता ही है। दुश्मन की गली का सामना कर लेना और बात है? यह उत्तरदायित्व की बात है।"

अरतैक तिशेको की परेशानी पर मुस्कराता रहा परन्तु जब स्पेशल ट्रेन सनसनाती हुई स्टेशन पर आ पहुँची तो वह स्वयम भी स्तब्ध सा रह गया। मोर्चे का कमाण्डर-इन-चीफ का० चर्नीशोव स्थानीय अफ़सरों के साथ कुइब्रशेव की गाड़ी की ओर गया। स्पेशल ट्रेन में साथ चलने वाले सिग्नेलर तुरन्त गाड़ी से उतरे और उन्होंने स्टेशन के टेलीफोन से तारें लेकर कुइबशेव की गाड़ी मे टेलीफोन लगा दिया। अरतैक भी कौतूहल से उस गाड़ी की खिड़कियों की ओर देख रहा या। खिड़की मे से उसे एक दुबला पतला आदमी फौजी कोट पहने दिखाई दिया। उस का माथा ऊँचा और चौड़ा था, सिर पर बाल बहुत कम थे। यह आदमी खिड़की मे से चुपचाप पहाड़ियों की ओर देख रहा था। अरतैक ने कुइबशेव को पहचान लिया। फौजी अखबार में वह उस का चित्र कई बार देख चुका था।

कुछ देर बार चर्नीशोव इस गाड़ी से बाहर निकला। उस का चेहरा प्रसन्न और उत्साहित था। अरतैक और तिशेको को देख वह इन की पल्टन के बारे मे पूछ-ताछ करने लगा।

मौका देख अरतैक ने मुस्कराकर पूछा—"साथी कमाण्डर-इन-चीफ, यह कामरेड कुइबशेव क्या हम जैस लोगों से भी बात कर लेता है?"

चर्नीशोव ने भी मुस्करा दिया—"तुम से बात करेगा तो अपने आप ही देख लेना।"

"मुझ से बात करेगा?"- अरतैक ने विस्मय से पूछा।

"हाँ"

अरतैक चुप रह गया। और फिर सोच कर गम्भीर स्वर में बोला—"साथी कमाण्डर-इन-चीफ, अगर मेरे काम से तुम सतुष्ट नही हो, या मुझ पर तुम्हें कुछ संदेह है तो तुम स्वयम ही साफ-साफ बात कर सकते थे?"

"तुम्हारी बात मै नही समझा"—अब चर्नीशोव के चेहरे पर विस्मय दिखाई दे रहा था, "क्या कहते हो तुम?"

"तुम जानते हो मैं अजीजखाँ के साथ था। मैने सफेद सेना मे भी काम किया है। मैने इन बातों को कभी छिपाया भी नही।"—अरतैक का चेहरा

लाल हो गया, "अब यह बातें मुझे कामरेड कुइबशेव के भी सामने स्वीकार करनी पड़ेंगी। यह अपमान मैं न सह सकूगा।"

चर्नीशोव के माथे पर बल पड़ गये—"अरतैक बवाली, क्या कूढमगज आदमी हो तुम ? खबरदार अगर तुम ने इन बेहूदा बातों को दोहराया। मैं किसी भी आदमी के मुह से ऐसी बात सुनने के लिये तैयार नही हूं। कामरेड कमिस्सार ?" चर्नीशोव ने तिशेंको की ओर देखा, "सेना के सिपाहियों को तुम क्या राजनैतिक शिक्षा दे रहे हो ? इतने बड़े जिम्मेवार अफसरों के मन से भी तुम व्यर्थ और मिथ्या भावनायें अब तक दूर नहीं कर सके ?"

तिशेंको ने फौजी सैल्यूट कर उत्तर दिया—"मुझे अपनी भूल के लिये अफ़सोस है कमाण्डर-इन चीफ़।"

अरतैक हैरान रह गया—बात ने यह क्या रूप ले लिया ? वह फिर बोला—"कामरेड कमाण्डर-इन-चीफ मै कुछ कहना चाहता हूँ !"

"क्या कहना चाहते हो ? ·· ····कहो !"

"इस मामले में कमिस्सार तिशेंको का कोई दोष नहीं !"

"यह कमिस्सार का ही दोष है"—दृढता से चर्नीशोव बोला, "कमिस्सार का कर्तव्य है कि लाल सेना के सिपाहियों और अफसरों को उचित राजनैतिक शिक्षा दे कर उन के व्यर्थ सन्देह को दूर करे। कमिस्सार तिशेंको, मै तुम्हें इस उपेक्षा के प्रति चेतावनी दे रहा हूँ, याद रहे !"

"आप की बात ठीक है कमाण्डर-इन-चीफ़"—तिशेंको ने फिर सैल्यूट कर स्वीकार किया।

अरतैक मूढ सा रह गया। अपनी परेशानी में वह यह भी न देख सका कि चर्नीशोव ने आंख से तिशेंको को क्या इशारा किया और तिशेंको ने इशारे से क्या उत्तर दिया।

"अच्छा भाई"—चर्नीशोव का स्वर फिर कोमल हो गया, "तुम लोग अपनी पल्टन में लौट कर तैयार रहो। हो सकता है, कामरेड कुइबशेव तुम लोगों से बातचीत करने वहीं आये।"

अरतैक खिन्न मन से लौट पड़ा। रास्ते में वह तिशेंको से बोला—"भाई तिशेंको, जो कजरौटे को छुयेगा, उस के हाथ काले होंगे। मुआफ़ करना, मेरे कारण आज तुम्हें भी इतना सुनना पड़ा। इस के लिये मुझे अफ़सोस है परन्तु इस में मेरा क्या बस था ?"

"अरतक, अभी पाँच मिनिट नहीं हुये कि हम दोनों पर डाँट पड़ी है"—

तिशेंको ने उत्तर दिया, "तुम फिर वैसे ही बातें कर रहे हो। कमाण्डर-इन-चीफ़ की बात बिलकुल ठीक है। तुम्हारे माथे पर तो कोई मोहर लगी नही। मनुष्य अपनी समझ और विश्वास के अनुसार ही काम करता है। तुम्हे अजीज़ पर विश्वास था इसलिये तुम उस का साथ दे रहे थे। बात समझ आ जाने पर तुम ने उस का साथ छोड़ दिया। कौन नही जानता कि पूरे एक बरस से तुम जान हथेली पर लिये सोवियत और जनता की रक्षा के लिये लड़ रहे हो! इस पर भी तुम समझो कि तुम पर शत्रु का साथ देने का दाग लगा हुआ है तो, क्या इलाज ? अज़ीज़ के साथ कुछ दिन रहने का तो तुम्हारे मन पर इतना प्रभाव है परन्तु सोवियत के पक्ष मे रहने की बात ही भूल जाते हो! आखिर यह क्या बात है ?"

"कोढ का भी कोई इलाज होना है ?"—आह भर अरतैक ने पूछा।

"मरने पर तो शरीर के साथ कोढ भी खत्म हो जाता है।"—तिशेंको ने समझाया, "सोवियत के लिये तुम ने कितनी बार मौत का सामना किया ? कोढ़ अभी तक घुला नही ? अज़ीज के साथ का कोढ तो तभी दूर हो गया था जब तुम उसे लात मार आये थे। अब तो तुम पूर्ण स्वस्थ सोवियत सैनिक हो! उस बात का चर्चा अब न करना, याद रहे।"

"अच्छा भाई अब नही करूँगा।"

कुइबशेव बहुत देर तक गाड़ी में ही बैठा स्थानीय मोर्चे के सम्बन्ध में रिपोर्ट सुन कर पूछताछ करता रहा। अपने मन को समझाने के लिये अरतैक को काफ़ी समय मिल गया। वह सोचता रहा—कुइबशेव यह प्रश्न करेगा तो मै यह उत्तर दूगा, वह बात पूछेगा तो ऐसा उत्तर दूगा। परन्तु जब उस ने कमाण्डर को अपनी पल्टन की ओर आते देखा तो सब कुछ भूल गया।

कुइबशेव जब बिलकुल समीप आ गया तो अरतैक ने अपने घोड़े की रकाबों पर तन कर अपनी पल्टन को सलामी देने का हुक्म दिया—"पल्टन सावधान !"

कुइबशेव ने पल्टन के सवारों को एक सिरे से दूसरे तक पैनी नज़र से देखा। अरतैक ने उस के सामने आकर फौजी सलाम किया और अटेंशेन (सावधान) में खड़ा रहा।

कुइबशेव ने हुक्म दिया—"स्टैंड एट ईज़" आराम से हो जाओ! और हाथ बढा कर अरतैक से मिलाया। कुइबशेव बहुत देर तक अरतैक और तिशेंको को उन के नाम से सम्बोधन कर, मुस्करा-मुस्करा कर उन से बात

करता रहा। वह बात-बात मे मज़ाक़ कर देता और उस की बातों से दूसरे लोग भी मुस्करा देते।

कुइबशव के चले जाने पर भी अरतैक उस की आँखों की गम्भीरता और बात करने के सरल ढग को याद कर सोचता रहा—यह है असल फौलादी आदमी, जो किसी भी परिस्थिति से घबरा नहीं सकता। ऐसे व्यक्ति का नेतृत्व मिले तो मेरे जैसे दिहाती किसान भी काम लायक सिपाही बन सकते हैं।

कुइबशेव के शब्द उसे याद आ रहे थे—"कामरेड कमाण्डर, सोवियत सरकार जानती है कि आपकी सेना दुर्गम और बीहड़ रास्तों पर, जान की बाज़ी लगा कर लड़ती हुई एक हज़ार मील से अधिक सफ़र तय कर चुकी है। क्रास्नवोदस्क पहुँचन के लिये अभी आप लोगो को सैकड़ो मील रेगिस्तान पार करना होगा। रास्ते मे कई और विकट मोर्चे पड़ सकते है। आपका क्या ख्याल है, आप के सवार थक नही गये होगे ?"

अरतैक ने उत्तर देने का यत्न किया—"क्रान्ति·······क्रान्ति युद्ध, युद्ध कमेटी के मेम्बर ··· ··।"

कुइबशेव बोला उठा—"अरे भाई, वह इतना बड़ा नाम रहन दो न ! मेरा नाम कुइबशेव है। मेरा नाम ले कर बात करो !

"कामरेड कुइबशेव, हमारे यहाँ कहावत है—तलवार मियान मे पड़ी रहे तो जंग खा जाती है। हमारे सवार तो खाली बैठे रहने से ही घबराते है। हम लोग तो किसान है। किसान तो तभी आराम करता है जब फसल बटोर कर घर ले आता है।"—अरतैक ने उत्तर दिया।

"अच्छा !"—कुइबशेव जोर से हस कर बोला, "तो आप सफ़ेद सेना को अपनी फसल समझते है ; खूब !"

"नहीं नही, हमारे यहाँ एक दूसरा कहावत भी है, बैरी, रोग, साँप चिगारी, कब हूँ छोटे न गानै विचारी !"

"हूँ, तो आप इन सफ़ेद सापो को कुचले बिना आराम न करेगें ?"

"कभी नही।"

"इस कूच मे आप मुझे साथ ल चल सकते है !"—मुस्कराकर कुइबशेव ने पूछा।

"क्या कीजियेगा अपना समय नष्ट करके ? कूच मे मुसीबत भी रहती है। आप क्यो यह सब झेलें ?"

"मैं स्वयं देखना चाहता हूं हमारी लाल सेना और उस की तुर्कमानी पल्टन और रिसाले कैसी वीरता से शत्रु को पछाडते है।"

कुइबशेव ने यह बात तुर्कमानी पल्टन को दिल रखने के लिये ही नही कही थी। वह अरतैक के सवारों के साथ कूच में शामिल हो गया। सैनिकों में सनसनी फैल गई –"कामरेड कुइबशेव पल्टन के साथ कूच कर रहा है।" और उन के हौंसले दूने-चौगने हो गये।

'अक्चा कुइमा' स्टेशन पर लाल सेना ने सफेद सेना पर सामने और बाईं बगल से एक साथ चोट की। सफेद सेना सामना किये बिना ही भाग निकली और 'पेरेवाल' से भी आगे भागती चली गई।

अक्चा कुइमा और पेरेवाल के बीच मे कुइबशेव तार के खम्भों पर मीलो के नम्बर देखता जा रहा था। दो सौ सात नम्बर के खम्भे के पास वह रेलवे लाइन से तीस कदम परे हट अपने घोडे से उतर गया और सिर से टोपी उतार हाथ मे ले ली। वहाँ रेत पर कोई भी चिन्ह दिखाई न दे रहे थे। परन्तु उस के साथ चलने वाले दूसरे अफसरों ने भी वैसा ही किया। गले में आँसू भर आने के कारण भर्राये हुये स्वर मे कुइबशेव बोला—"कम्युनिस्ट पार्टी, उस के नेता लेनिन, स्तालिन और लाल सेना की ओर से हम लोग कामरेड शामयान और उसके साथी छब्बीस कमिस्सारों के प्रति, जो दगाबाज ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा इस स्थान पर गोली मार कर दफना दिये गयें थे, हम आदर प्रकट करते हैं। हम प्रतिज्ञा करते है कि जब तक देश और जनता के शत्रुओं को समाप्त नहीं कर देगे और बाकू को शोषकों के पंजे से स्वतंत्र कर अपने वीर साथियों की इस समाधि पर स्वतंत्र मानवता का हंसिये हथौड़े का लाल झण्डा न फहरा देगे, आराम न लेंगे।"

वीरों के इस स्मृतिस्थान को पूरी पल्टन ने सलामी दी और बाकू को स्वतंत्र करने की प्रतिज्ञा कर आगे बढी।

'लाल सेना के' आदिन में पहुँचने की घटना अरतैक कैसे भूल सकता था? शत्रु पर लाल रिसाले के हमला करने का समय निश्चित हो चुका था। लाल पैदल फौज की स्थिति जानने और उन्हें इस हमले की सूचना देने के लिये अरतैक ने सवार भेज दिये थे। हमले का समय बिलकुल समीप आ रहा था परन्तु पैदल सेना को सूचना देने गये सवार अभी तक न लौटे थे। अरतैक बहुत चिन्तित था। चारों ओर खूब घना कोहरा छाया हुआ था। कुइबशेव का अनुमान था कि सूचना देने गये सवार कोहरे मे राह भूल गये है। पैदल

सेना हमला करने के लिये अपने स्थान पर तैयार खड़ी सूचना और आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही है। कुछ सवारों और अरतैक को साथ ले कुदबशेव ने स्वयं ही उस ओर जाने का निश्चय किया।

कुइबशेव के पल्टन के साथ होने पर अरतैक बिलकुल निर्भय रहता और उस का हौसला बढ़ा रहता। परन्तु कुइबशेव की उचित रक्षा के उत्तरदायित्व का बोझ भी कम न था। इस गहरे धुन्ध मे, जब चार हाथ परे की चोज़ भी दिखाई न देती थो, और साथ केवल बीस ही सवार थे, पार्टी की युद्ध समिति के एक बहुत महत्व-पूर्ण व्यक्ति को साथ ले जाना अरतैक को निरापद मालूम न हो रहा था उस ने कुइबशेव से पीछे रहने के लिये अनुरोध किया परन्तु कुइबशेव ने निरपेक्ष शान्ति से उत्तर दिया "तुम परवाह मत करो, मेरे साथ आओ !" अरतैक चुप रह गया।

कुइबशेव आगे-आगे चल रहा था और शीघ्र ही उस ने पैदल सेना की जगह का पता लगा लिया। कोहरा भी कुछ झीना होने लगा था। सफेद सेना के मोर्चे और उन की फौलादी ट्रेन का इधर आना-जाना भी सूझ पड़ने लगा था। कुइबशेवने हमला बोलने का स्थान और मार्ग निश्चय किया और पैदल सेना को यह सब कुछ समझा देने के लिये एक सवार उस ओर भेज दिया।

सफ़ेद सेना की खोजी पार्टी ने अपने अफसरों को सूचना दे दी थी कि लाल सेना चार मील के अन्तर पर पहुँच चुकी है। सफ़ेद सेना के अफ़सरों को इस बात पर विश्वास ही न हुआ। उन्हें सन्देह हुआ कि खोजी पार्टी का नेता शरारत कर हमारी सेना को डराना चाहता है। इन अफ़सरों ने आज्ञा दी कि उसे गिरफ्तार कर लिया जाय। इस अफ़सर के गिरफ्तार किये जाने से पहले ही सफ़ेद सेना पर लाल तोप खानों के गोले आ पड़े और लाल सेना ने हमला बोल दिया।

बहुत घमासान लड़ाई हुई। कुइबशेव पूरे मोर्चे पर बिजली की तरह नाचता फिर रहा था। वह कभी रिसाले के पीछे दिखाई देता और कभी पैदल सेना के साथ ! जहाँ भी वह अपनी सेना का हमला धीमा होता देखता, तुरंत स्वयं पहुंच जाता। अरतैक भी कुइबशेव की ढाल बना, उस के शरीर पर आते वार को अपने ऊपर लेने के लिये आतुर, उस के साथ बना रहा।

सफ़ेद सेना ने सूर्य छिपे तक सामना किया परन्तु अंधेरा होते-होते उन के पांव उखड़ गये। लाल सेना के हाथ हज़ारों सफ़ेद सैनिक क़ैद हो गये और लड़ाई का भी बहुत सा सामान उन के हाथ लगा।

अगले दिन सूर्योदय के समय क्रास्नोवोदस्क लाल सेना की आंखों के सामने झलमला रहा था और लाल सेना अपने लक्ष पर टूट पड़ने के लिये तैयार खड़ी थी।

क्रास्नोवोदस्क के दाये-बायें दोनों ओर पहाड़ है। पीछे की ओर कास्पियन समुद्र राह रोके है। लाल सेना शहर पर केवल सामने से ही हमला कर सकती थी। और इस रास्ते मे एक जबरदस्त किला मौजूद था। शहर के चारो ओर मोर्चे बने थे और लम्बे कांटे लगी तारो के घेरे बने हुए थे। मोर्चो पर दूर और नजदीक मार करने वाली तोपे कतारों मे जड़ी हुई थी। शहर के पीछे समुद्र मे पन्द्रह जंगी जहाज़ बड़ी-बड़ी तोपे लिये तैयार खड़ थे। सफ़ेद सेना की सब से बहादुर 'शेर दिल' 'चीता दल' 'खूखार दल' वग़ैरा पल्टने और एक ब्रिटिश पल्टन भी क्रास्नोवोदस्क मे डटी हुई थी। सफद सेना के सब से बड़े सेनापति डनिकिन के जनरलो को विश्वास था कि क्रास्नोवोदस्क का किला अजेय है।

लाल सेना ने अपना हमला ६ फरवरी १९२० की रात मे आरम्भ किया। आधी रात के समय राइफलो के फायर की पहली बौछार हुई और कुछ ही देर मे भारी-भारी तोपो के फायरों से पहाड़ गूजने लगे।

सुबह होते ही बरफ पड़ने लगी। घाटी की हवा जले बारूद की चिरांध से भारी हो गई। आकाश बादलो से पटा हुआ था।

लाल सेना छोटी-छोटी पहाड़ियो और कोहरे की आड़ लकर तेजी से आगे बढ़ रही थी। सफेद सेना दानो ओर की पहाड़ियो पर जमी हुई थी। नीचे लाल सेना की गतिविधि उन्हे स्पष्ट दिखाई न दे रही थी पर वे ओलों की तरह दनादन गोली-गोला बरसा रहे थे। लाल सना इस मार पर भी न रुकी और उन्होने सफेद सेना का पहला मोर्चा छीन ही लिया। उजेला हो जाने के कारण सफेद सेना के लिये लाल सेना पर निशाना लेना और आसान हो गया। गोला-गोली मूसलाधार बरसने लगे। समुद्र मे खड़े पन्द्रह जहाज भी शहर के पीछे से लगातार गोले बरसा रहे थे। अब लाल सेना के लिये और आगे बढ़ना सम्भव न रहा।

लाल सेना का एक छोटा तोपखाना चट्टानों की आड़ ले एक पहाड़ी पर चढ़ गया और उस ने जहाजो पर निशाना बांध गोले बरसाने शुरू कर दिये। एक जहाज मे आग लग गई। काजल से काले धुये के गुबार आकाश की ओर उठने लगे। जहाज के गोला गोदाम में आग पहुंचने पर गोले फट-फट कर

आस-पास के जहाज़ों पर और शहर मे भी गिरने लगे। शत्रु के मोर्चों में गड़बड़ी और घबराहट फैल गई। अवसर देख लाल सेना की पैदल पल्टन ने शहर पर हल्ला बोल दिया।

अरतैक ने अपने रिसाले को सफ़ेद सेना के एक बड़े मोर्चे पर हमला करने का हुक्म दिया। सवार हाथों में नंगी तलवारे लिये बाजो के झुण्ड की तरह झपट पड़े। अरतैक रिसाले के बीचों-बीच स्वयं हमले का नेतृत्व कर रहा था। एक जहाज ने इस रिसाले पर छर्रे भरे हुए गोले बरसाने शुरू किए। एक गोला अरतैक के बिलकुल सामने आकर फटा। गोले के धक्के से अरतैक का घोड़ा पीछे की ओर धसक गया परन्तु अरतैक ने उसे सम्भाल कर एड़ी लगाई और फिर आगे बढाया। दूसरा गोला फटा और लोहे का एक बड़ा टुकड़ा घोड़े के सीने में धंस गया। घोड़ा गिर पड़ा और अरतैक भी दूर जा पड़ा।

तिशेको समीप ही था। वह तुरन्त अपने घोडे से कूद पड़ा और अरतैक की बाँह में बाँह दे उसे खड़ा करने की कोशिश करने लगा। वह बार-बार अरतैक का नाम लेकर पुकार रहा था परन्तु अरतैक सुन नही रहा था। उस का चेहरा पीला पड़ गया था।

"अरतैक उठो, देखो हमने मोर्चा ले लिया"— तिशेंको, ऊँचे स्वर मे चिल्लाया।

"हूँ" करके अरतैक ने आँखें खोलने की चेष्टा की। उस की आँखे पथराई हुई थी, वह कुछ देख न पाया। उस की गर्दन फिर झुक गई।

इतने में "हुर्रा हुर्रा"—लाल सेना का गगन भेदी विजय का नारा गूंज उठा। अरतैक की आँखें खुल गईं परन्तु अब भी वे पथराई हुई थी।

तिशेंको तुम हो ?"—अरतैक ने बहुत धीमे स्वर से पूछा।

"हाँ, अरतैक मैं हूँ हम जीत गये।" उत्साह से ऊँचे स्वर में तिशेंको ने उत्तर दिया। अरतैक अपनी गर्दन न उठा सका। तिशेको उसे अपनी बाँहों मे सम्भाले था। अरतैक के सवार तीर की तेजी से झपटते हुये उस के समीप से निकल आगे बढ़ रहे थे, चारों ओर शत्रुओ की लाशें पड़ी थी। अरतैक के चेहरे पर जीवन की हल्की छाया झलक आई थी। उस की आँखे आधी खुल गई थीं।

दोपहर बीत गई। हल्की हवा ने बादलों को तितर-बितर कर दिया। वर्षा से भीगे-भीगे सूर्य की किरणें शहर पर फैलने लगीं। किरणों में चम-चमाते

समुद्र की सतह पर सफेद सेना के भागते हुये जहाज वहुत दूरी पर धब्बे जैसे दिखाई दे रहे थे। इन जहाज़ों से बरसे आखिरी गोलो मे से एक गोला स्टेशन के समीप बने पैट्रोल के गोदाम पर पड़ गया था। गोदाम में आग लग गई थी और काजल का एक विस्तार धरती से आकाश तक फैल रहा था। इस काले पर्दे पर शोषितों की विजय का लाल झण्डा नवजीवन के दीपक की शिखा की तरह झलमल कर रहा था।

तिशेको की बाहों में सम्भला हुआ ज़ख्मी अरतैक अधमुदी आँखों से आशा की इस लाल प्रकाश शिखा को देख रहा था। इस प्रकाश से उस की कल्पना में कास्पियन समुद्र से लेकर आमू नदी और तेजेन तक का प्रदेश जगमगा उठा। उस के बीते सम्पूर्ण जीवन के दृश्य प्रकाशित हो उठे—अपनी जनता के लिए स्वतंत्रता से जी सकने के अधिकार के सघर्ष का मार्ग उद्भासित हो उठा। जीवन की भूलो और पश्चात्ताप का छाया, विश्वस्त मित्रों के साथ मिल कर जीवन की स्वतत्रता के लिये लड़ कर सफलता पाने के प्रकाश मे मिट गई........।